युवक की चाकू से गोदकर हत्या, शव सड़क पर रख परिजनों ने लगाया जाम

स्थानीय लोगों ने पुलिस पर लगाए गंभीर आरोप, आरोपी पहले भी दे चुका हत्या की वारदात को अंजाम

इसी जगह आरोपी द्वारा वारदात को दिया गया अंजाम। फोटो : नीरज

विकास मार्ग पर सड़क के बीच शव रखकर जाम लगाते परिजन व अन्य।

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): ईस्ट डिस्ट्रिक्ट के शकरपुर इलाके में रविवार शाम एक युवक की चाकू मारकर हत्या कर दी गई। पुलिस ने मृतक की पहचान शकरपुर खास निवासी देव (22) के रूप में की है। पुलिस ने सोमवार को शव पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया है। वहीं वारदात के बाद गुस्साए लोगों ने शव को लेकर आ रही वैन को लक्ष्मी नगर मेट्रो स्टेशन के पास विकास पार्क पर सड़क के बीचों-बीच खड़ा कर चक्का जाम कर दिया।

मृतक देव

स्थानीय लोगों व मृतक देव के परिजनों ने पुलिस पर कई तरह के गंभीर आरोप लगाए हैं। उनका कहना है कि आरोपी पहले भी हत्या कर चुका है। मगर बाहर आने के बाद उसने फिर से हत्या की वारदात को अंजाम दिया। पुलिस उस पर शिकंजा कसने में नाकाम हो रही है। वह फिर पकड़ा जाएगा और फिर बाहर आकर किसी और की हत्या करेगा। वहीं सड़क पर चक्का जाम करने की सूचना मिलते ही एसीपी व एसएचओ पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। लोगों को समझाकर शांत किया और आरोपी पर सख्त कानूनी कार्रवाई का आश्वासन दिया।

एसीपी व एसएचओ पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे, लोगों को सख्त कार्रवाई का दिया आश्वासन

वहीं जिला के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि आरोपी की पहचान कर ली गई है। अभी झगड़े में हत्या की बात सामने आई है। मृतक और आरोपी दोनों एक-दूसरे को जानते हैं। बताया जा रहा है कि आरोपी नाबालिग है, हालांकि पुलिस उसकी तलाश में जुटी है। आरोपी के पकड़े जाने के बाद उसकी उम्र की भी जांच की जाएगी। अगर आरोपी नाबालिग पाया भी गया तो पुलिस जेजे बोर्ड से कुख्यात आरोपी पर बतौर व्यस्क कानूनी कार्रवाई चलाए जाने की सिफारिश करेगी।

डीसीपी अभिषेक धानिया ने बताया कि रविवार शाम करीब 5:28 बजे शकरपुर पुलिस को सूचना मिली कि इलाके में एक युवक पर चाकू से हमला किया गया है। सूचना पर पुलिस टीम राम टेंट हाउस, मेन मार्केट, शकरपुर पहुंची। पुलिस ने देखा कि चारों तरफ खून बिखरा हुआ था और भीड़ जमा थी। पूछताछ में पता चला कि घायल युवक को दो लड़के बाइक से नजदीकी अस्पताल ले गए हैं। एक पुलिस टीम ने घटनास्थल से साक्ष्य एकत्र किए, जबकि दूसरी टीम अस्पताल पहुंच गई। घायल युवक की पहचान देव के तौर पर की गई। उसकी जांघ पर चाकू से वार किए गए थे। हालत नाजुक होने के चलते उसे एलएनजेपी अस्पताल में रेफर कर दिया गया। जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

नए फोन की पार्टी नहीं देने पर भी की थी हत्या

आरोपी

स्थानीय लोगों का आरोप है कि देव की हत्या करने वाला आरोपी लड़का अपने कुकर्मों की वजह से इलाके में काफी कुख्यात है। वह लोगों को डराने के लिए सोशल मीडिया पर हथियार के साथ अपना स्टेटस लगाता है और पुलिस उस पर कोई कार्रवाई नहीं करती। देव के बड़े भाई सुनील ने बताया कि कुछ दिनों पहले भी आरोपी ने एक लड़के पर कातिलाना हमला किया था। इससे पहले उसने नए फोन की पार्टी देने से इंकार करने पर एक लड़के की चाकू मारकर हत्या कर दी थी।

गोवा अग्निकांडः पत्नी को बचाने के बाद सालियों को बचाते वक्त मौत के मुंह में समा गया विनोद

फ्लाइट से सोमवार को दिल्ली पहुंचे चारों शव, पति और तीन बहनों को खोने वाली भावना की मानसिक हालत बिगड़ी

भावना अपनी तीनों बहनों के साथ।

करावल नगर में शव पहुंचने के बाद विलाप करते परिजन। -फोटो : अमित श्रीवास्तव

वसीम सैफी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): गोवा के एक नाइट क्लब में लगी आग ने दिल्ली की रहने वाली भावना की खुशियां हमेशा के लिए छीन ली हैं। भावना ने अपनी आंखों के सामने पति और तीन सगी बहनों को आग के आगोश में हमेशा के लिए समाते हुए देखा है। इस दर्दनाक हादसे के बाद उसकी मानसिक स्थित बिगड़ गई है और गहरे सदमे में है। वह उस खौफनाक मंजर को एक पल के लिए भी भूल नहीं पा रही है। दरअसल क्लब में आग लगने के बाद विनोद जोशी पत्नी भावना को क्लब से खींचकर बाहर की ओर ले आया था। इसके बाद विनोद भावना की तीनों बहनों (कमला जोशी, अनीता और सरोज) को बचाने के लिए दोबारा क्लब के अंदर घुस गया। मगर वह लौटकर नहीं आया। इस दर्दनाक हादसे में विनोद अपनी तीनों सालियों के साथ आग के आगोश में समा गया। कमला रिश्ते में विनोद की भाभी भी थी। उसकी शादी विनोद के बड़े भाई नवीन जोशी से हुई थी।

सादतपुर से एक साथ उठी चार अर्थियां, हर आंख हुई नम

भावना अपने पति और तीनों बहनों के साथ हंसी खुशी गोवा घुमने के लिए गई थी। सोमवार दोपहर जब विनोद, कमला, अनीता और सरोज के शव सफेद चादर में लिपटे फ्लाइट से दिल्ली के करावल नगर स्थित सादतपुर एक्सटेंशन पहुंचे तो पीड़ित परिवारों में कोहराम मच गया। जब चारों की अर्थियां एक साथ उठीं तो हर एक आंख आंसू से नम हो गई। परिजनों ने चारों का निगमबोध श्मशान घाट पर अंतिम संस्कार किया।

चारों बहनों ने गोवा घूमने का बनाया था प्लान...

दिल्ली की रहने वाली चार बहनों भावना, कमला, सरोज और अनीता करीब डेढ़ साल से गोवा में घूमने का प्लान बना रही थीं। मगर हर बार पारिवारिक कारणों से उनका प्लान कैंसिल हो जाता था। बड़ी मुश्किल से पांच दिसंबर का प्लान बन पाया था। चारों बहनें काफी खुश थी। उन्होंने विनोद को भी साथ चलने के लिए मना लिया था। जब क्लब में आग लगी तो विनोद पत्नी व तीनों सालियों के साथ अंदर ही मौजूद था। विनोद के एक रिश्तेदार ने बताया कि परिवार मूल रूप से अल्मोड़ा का रहने वाला है। विनोद का परिवार गली नंबर-15, एन-ब्लॉक, सादतपुर एक्सटेंशन करावल नगर में रहता था। परिवार में बुजुर्ग मां के अलावा पत्नी भावना जोशी, 5 साल की बेटी, 11 साल का बेटा है। वहीं बड़े भाई नवीन के परिवार में कमला जोशी, 19 साल की बेटी और 14 साल का बेटा है। कमला और भावना जोशी दोनों सगी बहनें हैं, इनकी एक ही घर में शादी हुई थी। विनोद का परिवार कुछ सालों पूर्व करावल नगर से वैशाली गाजियाबाद शिफ्ट हो गया था। विनोद का फाइनेंस का काम था, जबकि नवीन अशोका होटल में जॉब करता हैं। अनीता की पिछले साल 11 दिसंबर 2024 को लखनऊ के रहने वाले विवेक जोशी से शादी हुई थी। वहीं सरोज अभी अविवाहित थीं। वह अपने पिता बाल किशन जोशी के साथ रोहिणी सेक्टर-23 में रहती थीं। बाल किशन दिल्ली जल बोर्ड से रिटायर हैं।

तीन बेटी और दामाद की मौत से टूटा बुजुर्ग पिता

मूल रूप से उत्तराखंड के रहने वाले बुजुर्ग बाल किशन जोशी इस हादसे के बाद पूरी तरह टूट गए हैं। उन्होंने गोवा के क्लब में हुए हादसे में अपनी तीन बेटियों कमला, अनीता, सरोज और दामद विनोद को खोया है। इस हादसे के बाद उनका रो-रोकर बुरा हाल है। कमला और विनोद के बच्चों का भी रो-रोकर बुरा हाल है। शादी के महज एक साल के भीतर ही पत्नी को खो देने वाला विवेक भी अपने आंसुओं को नहीं रोक सका।

विनोद जोशी

चाकू से हमला कर 36 लाख लूटे

पश्चिमी दिल्ली, (पंजाब केसरी): नॉर्थ वेस्ट जिला की ज्वाइंट पुलिस टीम ने हाल में जहांगीरपुरी में स्कूटी सवार एक युवक के साथ हुई 36 लाख रुपए की लूट की गुत्थी को सुलझा लिया है। पुलिस ने आरोपियों के पास से पीड़ित से लूटी गई स्कूटी, वारदात में इस्तेमाल दो बाइक, लूट की रकम में से करीब 10.40 लाख रुपए, एक कार और अपराध की राशि से खरीदे गए दो कीमती फोन बरामद कर लिए हैं। आरोपियों की पहचान मोहम्मद इरफान, नितेश, अमन, मनीष, प्रिंस और अरशद के रूप में की है। डीसीपी नॉर्थ वेस्ट भीष्म सिंह ने बताया कि आरोपी पूर्व में भी जघन्य अपराध जैसे हत्या, आर्म्स एक्ट के मामले, वाहन चोरी एवं स्नैचिंग में शामिल रहे हैं। आरोपियों को एसीपी जहांगीरपुरी योगेंद्र सिंह खोखर, एसीपी ऑपरेशन रणजीत सिंह की देखरेख में इंस्पेक्टर सोमवीर, इंस्पेक्टर नेत्रराम, रवि सैनी आदि की टीम ने संयुक्त ऑपरेशन में गिरफ्तार किया है। डीसीपी भीष्म सिंह ने बताया कि 28 नवंबर को शिकायतकर्ता रोशन लाल (निवासी जे.जे. कॉलोनी, शकूरपुर, दिल्ली) ने पुलिस को सूचना दी कि शाम करीब पौने आठ बजे वह अपनी स्कूटी पर एक बैग में 36 लाख रुपए लेकर अपने फर्म मालिक लक्ष्य लाम्बा को देने जा रहा था।

नॉर्थ-वेस्ट डिस्ट्रिक्ट पुलिस की ज्वाइंट टीमों ने कार्रवाई करते हुए छह आरोपियों को किया गिरफ्तार

रेकी और टिप के बाद लूट

पुलिस के मुताबिक आरोपी नितेश गांधीनगर में काम करता है। वह जानता था कि पीड़ित गांधी नगर से रोहिणी तक बड़ी मात्रा में नकदी ले जाता है। उसने यह जानकारी आरोपी इरफान को दी। इरफान ने साथियों के साथ मिलकर लूट की योजना बनाई। सभी आरोपियों ने पहले रेकी की और 28 नवंबर की शाम, जब नितेश की टिप के बाद लूट की वारदात को अंजाम दिया।

लाल किला ब्लास्टः चार आरोपियों की एनआईए कस्टडी 4 दिन बढ़ी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): दिल्ली में लालकिले के बाहर हुए ब्लास्ट के मामले की जांच लगातार आगे बढ़ रही है। इसी सिलसिले में पटियाला हाउस कोर्ट ने सोमवार को गिरफ्तार चार आरोपियों की एनआईए कस्टडी चार दिन और बढ़ा दी है। इन आरोपियों में डॉ. मुजम्मिल, डॉ. शाहीन सईद, मुफ्ती इरफान अहमद और आदिल अहमद के नाम शामिल हैं। इन आरोपियों को 10 दिन की पिछली कस्टडी पूरी होने के बाद अदालत में पेश किया गया था।

आरोपियों को 10 दिन की पिछली कस्टडी पूरी होने के बाद अदालत में किया गया था पेश

अब एजेंसी को उनसे आगे की पूछताछ के लिए अतिरिक्त समय मिल गया है। इससे पहले पांच दिसंबर को अदालत ने एक अन्य आरोपी शोएब की एनआईए कस्टडी 10 दिन और बढ़ाने की मंजूरी दी थी। एनएआई का आरोप है कि शोएब ने धमाके से ठीक पहले आतंकवादी उमर नबी को पनाह दी थी और उसे लॉजिस्टिक सपोर्ट प्रदान किया था। एनआईए का कहना है कि शोएब की भूमिका साजिश के महत्वपूर्ण हिस्से को समझने में बेहद अहम है। दो दिसंबर को एनआईए ने इस केस के मुख्य आरोपी आमिर रशीद अली की कस्टडी सात दिन और बढ़ा दी थी। आमिर को 16 नवंबर को गिरफ्तार किया गया था और एजेंसी को पहले उसकी 10 दिन की रिमांड मिली थी। शुरुआती पूछताछ के दौरान एनआईए को कई अहम सुराग मिले, जिसके आधार पर हिरासत बढ़ाने की मांग की गई। जांच में यह सामने आया कि धमाके में इस्तेमाल की गई कार का मालिक खुद आमिर था। एजेंसी के अनुसार उसने न सिर्फ आत्मघाती हमलावर के साथ साजिश रची बल्कि हमले की तैयारियों में भी सक्रिय भूमिका निभाई।

नाइट क्लब के सह-मालिकों की तलाश में दिल्ली पहुंची गोवा पुलिस की टीम

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): गोवा पुलिस की एक टीम सोमवार को 'बर्च बाय रोमियो लेन' नाइट क्लब में शनिवार को लगी आग की घटना की जांच के सिलसिले में क्लब के सह-मालिकों गौरव और सौरभ लूथरा की तलाश में दिल्ली पहुंची। गोवा पुलिस दिल्ली विश्वविद्यालय के पास स्थित उनके आवास पर पहुंची। मगर वे नहीं मिले। इस दौरान दिल्ली पुलिस भी गोवा पुलिस के साथ थी। यहां बता दें कि इस नाइट क्लब में शनिवार रात भीषण आग लग गई थी। इस हादसे में 25 लोगों की मौत हो गई थी।

अधिकारी ने बताया कि पुलिस के पहुंचने पर इस मामले के मुख्य आरोपियों में शामिल लूथरा बंधु हडसन लेन स्थित अपने आवास पर नहीं पाए गए हैं। पुलिस सूत्रों ने बताया कि टीम ने गौरव और सौरभ के वर्तमान ठिकाने का पता लगाने के लिए लूथरा परिवार के सदस्यों से पूछताछ की और उनकी हालिया गतिविधियों, संभावित ठिकानों और उनके संपर्कों के बारे में जानकारी मांगी। उत्तरी गोवा के अरपोरा स्थित 'बर्च बाय रोमियो लेन' में शनिवार रात आग लग गई थी। इस घटना में मारे गए 25 लोगों में से ज्यादातर नाइट क्लब के कर्मचारी थे। इस हादसे में दिल्ली के चार लोगों की भी मौत हुई है।

अधिकारी के अनुसार गोवा पुलिस की एक टीम क्लब से जुड़े कथित उल्लंघनों और खामियों के सिलसिले में लूथरा बंधुओं से पूछताछ करने दिल्ली पहुंची। टीम ने हडसन लेन स्थित उनके घर का दौरा किया और स्थानीय पुलिस से पूछताछ की।

अधिकारी ने बताया कि दिल्ली पुलिस आरोपियों का पता लगाने और गोवा पुलिस की जांच में मदद के लिए शहर में कई जगहों पर तलाशी ले रही है। अब तक गोवा पुलिस ने इस मामले में क्लब के मुख्य महाप्रबंधक राजीव मोदक, महाप्रबंधक विवेक सिंह, बार प्रबंधक राजीव सिंघानिया और गेट प्रबंधक रियांशु ठाकुर को गिरफ्तार किया है।

क्लब का कर्मचारी दिल्ली से पकड़ा

गोवा पुलिस ने दिल्ली के सब्जी मंडी निवासी भरत कोहली को भी पूछताछ के लिए अपनी हिरासत में लिया है। वह नाइट क्लब के दैनिक कामकाज की देखरेख के लिए जिम्मेदार था और क्लब के एक प्रबंधक से पूछताछ के दौरान उसका नाम सामने आया था। पुलिस उसे जांच के सिलसिले में अपने साथ गोवा ले जाएगी।

आईजीआई एयरपोर्ट पर 10 करोड़ की ड्रग्स पकड़ी

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय (आईजीआई) हवाई अड्डे पर सुरक्षा एजेंसियों ने जांच के दौरान एक यात्री को भारी मात्रा में प्रतिबंधित मादक पदार्थ के साथ गिरफ्तार किया है। सुरक्षा एजेंसियों का कहना है कि आरोपी यात्री के पास से करीब 13.12 किलोग्राम मारिजुआना बरामद हुआ है। जिसकी कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में करीब दस करोड़ रुपए से भी अधिक की आंकी गई है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि आरोपी हवाई यात्री को एनडीपीएस अधिनियम के प्रावधानों के तहत गिरफ्तार कर लिया गया है। इससे आगे की पूछताछ की जा रही है। अधिकारी ने बताया कि आरोपी को रविवार को बैंकॉक से आते समय जांच के दौरान रोका गया था। सीमा शुल्क विभाग की दिल्ली इकाई द्वारा जारी एक बयान में कहा गया है कि यात्री के ट्रॉली बैग की जांच में पॉलीथीन के 13 पाउच मिले। जिनमें हरे रंग का एक मादक पदार्थ था इसके मारिजुआना होने का संदेह है। बयान में कहा कि प्रतिबंधित सामग्री की अनुमानित कीमत 10.5 करोड़ रुपये है।

आरोपी यात्री के पास से करीब 13.12 किलोग्राम मारिजुआना किया बरामद

तीन दोस्तों पर चाकू से हमला, एक की मौत दो घायल

दक्षिणी दिल्ली, (पंजाब केसरी): कालिंदी कुंज इलाके में रविवार शाम दो पक्षों के बीच झगड़े ने खूनी रूप ले लिया। एक पक्ष के लड़कों ने तीन दोस्तों पर चाकू से हमला किया और मौके से फरार हो गए। पुलिस ने घायलों को तुरंत नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया। जहां डॉक्टरों ने एक युवक को मृत घोषित कर दिया, जबकि दोनों घायल युवकों का अस्पताल में उपचार चल रहा है। डीसीपी (साउथ-ईस्ट) डॉ. हेमंत तिवारी ने बताया कि मृतक युवक की पहचान 19 वर्षीय विकास के रूप में हुई है। शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। इस बाबत कालिंदी कुंज थाने में हत्या और हत्या की कोशिश के तहत केस दर्ज कर लिया गया है। एसएचओ विजय कुमार के नेतृत्व में एटीओ सुरेंद्र, हेडकांस्टेबल मनीष तोमर, संजीव कुमार, कंवरपाल, कांस्टेबल अभय आदि की टीम ने वारदात के कुछ घंटे बाद ही कार्रवाई करते हुए मुख्य आरोपी रवि उर्फ पव्वा को गिरफ्तार कर लिया है। फिलहाल पुलिस अन्य आरोपियों की तलाश में छापेमारी कर रही है। डीसीपी हेमंत तिवारी ने बताया कि विकास अपने परिवार के साथ जेजे कॉलोनी मदनपुर खादर इलाके में रहता था। घायल युवक अरुण और विकास भी इसी इलाके में रहते हैं। रविवार की शाम कालिंदी कुंज थाने में एक पीसीआर कॉल मिली। बताया गया कि जेजे कॉलोनी मदनपुर खादर में चाकूबाजी हुई है। जिसमें कुछ लड़के घायल हुए हैं। सूचना मिलते ही एसएचओ कालिंदी कुंज विजय कुमार टीम के साथ मौके पर पहुंच गए। हमले में घायल तीन युवकों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती किया गया। जहां डॉक्टरों ने विकास को मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने कार्रवई करते हुए मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर लिया।

कालिंदी थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए मुख्य आरोपी को किया गिरफ्तार

एक्सप्रेस-वे खतरे का ट्रैक, लोग दे रहे हादसों को दावत

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेस-वे को ट्रायल रन के लिए खोल दिया गया है, लेकिन गांधी नगर मार्केट के पास सड़क पार करने के लिए न तो फुटओवर ब्रिज बनाया गया है और न ही कोई सुरक्षित क्रॉसिंग की व्यवस्था की गई है। ऐसे में दुर्घटनाओं का खतरा बढ़ गया है। लोग तेज रफ्तार से गुजरते वाहनों के सामने से डिवाइडर कूद कर सड़क पार कर रहे हैं। ऐसे में पैदल यात्रियों की यह लापरवाही से कभी भी गंभीर हादसा हो सकता है। स्थानीय लोगों का कहना है कि जब तक यहां सुरक्षित क्रॉसिंग नहीं बनाई जाती, तब तक ट्रायल रन यात्रियों के लिए जोखिम भरा ही रहेगा।

गांधी नगर मार्केट से हर रोज हजारों लोग खरीदारी के लिए आते हैं। कई लोगों ने एक्सप्रेस-वे के पास सड़क किनारे अपनी अस्थाई दुकानें लगा रखी हैं, जिन पर लोग खरीदारी करने के लिए पहुंचते हैं। ऐसे में राहगीरों के लिए सड़क के एक ओर से दूसरी ओर जाने के लिए कोई समुचित व्यवस्था न होने के कारण लोग जान जोखिम में डालकर ही सड़क पार कर रहे हैं। कई बार राहगीर और खरीदार डिवाइडर चढ़कर सीधे हाईवे पर उतरते हैं, जबकि इसी दौरान वाहन 80 से 100 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से गुजरते हैं। ऐसी स्थिति में यदि कोई पैदल यात्री अचानक सामने आ जाए, तो वाहन चालक के पास बचाव का समय ही नहीं बचता। ऐसे में पैदल राहगीरों को सड़क पार करने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

एक्सप्रेस-वे शुरू हो गया और लोग पैदल ही सड़क पार कर रहे हैं, जिससे कभी भी दुर्घटना होने का खतरा है। - **शिक्षित जिंदल, गांधी नगर**

सड़क पार करने के लिए फुटओवर ब्रिज या अंडरपास बनाया नहीं है। लोग मजबूरी में डिवाइडर कूद कर सड़क पार करने को मजबूर हैं। - **मयंक तिवारी, गांधी नगर**

डेटिंग ऐप की आड़ में ठगी, युगांडा का नागरिक बुराड़ी से गिरफ्तार

पश्चिमी दिल्ली, (पंजाब केसरी): डेटिंग ऐप पर अपनी प्रेमिका की तस्वीरों का इस्तेमाल कर साइबर ठगी करने वाले युगांडा के नागरिक को साउथ-वेस्ट डिस्ट्रिक्ट पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपी ने लड़की बनकर दिल्ली के एक युवक से भी करीब 1.9 लाख रुपये की ठगी की थी। इसी मामले की जांच करते हुए पुलिस ने युगांडा के 38 वर्षीय एक नागरिक को गिरफ्तार कर लिया। डीसीपी (साउथ-वेस्ट) अमित गोयल ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी की पहचान माइकल इगा के रूप में हुई है। वह दिल्ली के बुराड़ी में बिना वैध दस्तावेजों के रह रहा था। उसने पीड़ित युवक को ठगने के लिए असम से एक 'दुर्लभ तेल' खरीदने से संबंधित 'लाभदायक व्यवसाय' की पेशकश की थी।

डीसीपी ने बताया कि किशनगढ़ निवासी अमित (बदला हुआ नाम) एक डेटिंग ऐप के माध्यम से एक महिला से जुड़ा था। महिला ने कथित तौर पर एक सौंदर्य उत्पाद कंपनी में काम करने का दावा करके उसका विश्वास हासिल किया और उसे असम से एक दुर्लभ तेल की खरीद और फिर उसे बाजार में बेचने पर भारी मुनाफे का झांसा दिया। अमित ने महिला पर भरोसा कर कई बैंक खातों में एक लाख 90 हजार रुपए भेज दिए। रुपए आने के बाद महिला ने उसे ब्लॉक कर दिया। ठगी का एहसास होने के बाद अमित ने पुलिस में शिकायत दी। पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू की। साइबर थाने की टीम ने रुपयों की ट्रांजेक्शन, तकनीकी निगरानी और डिजिटल जानकारी का विश्लेषण कर आरोपी माइकल इगा का पता लगाया।

कार ने बाइक सवार दो भाइयों को मारी टक्कर, एक की मौत

पूर्वी दिल्ली, (पंजाब केसरी): शाहदरा डिस्ट्रिक्ट के कृष्णा नगर इलाके में एक तेज रफ्तार कार ने एक बाइक पर सवार दो भाइयों को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में दोनों भाई सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। कार डिवाइडर से टकराकर रुक गई। कार चालक भी हादसे में घायल हो गया। सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने तीनों घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया। जहां डॉक्टरों ने शहबाज (22) को मृत घोषित कर दिया। वह बाइक पर पीछे बैठा था, जबकि उसका भाई समीर (21) बाइक चला रहा था। हादसे में घायल समीर और कार चालक ऋषभ (28) का अस्पताल में उपचार जारी है। पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

डीसीपी (शाहदरा) प्रशांत गौतम ने बताया कि सोमवार तड़के करीब 4.10 बजे कृष्णा नगर पुलिस को सड़क हादसे की सूचना मिली थी। पुलिस को मौके पर एक बुलेट बाइक और एक लाल रंग की कार क्षतिग्रस्त हालत में मिली। हादसे में बाइक सवार सेहबाज, समीर और कार चालक ऋषभ घायल हो गए थे। तीनों को अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां डॉक्टरों ने शहजाद को मृत घोषित कर दिया। शुरुआती जांच में पता चला है कि दोनों भाई, खुरेजी खास के रहने वाले हैं। परिवार में पिता शमीम व अन्य सदस्य हैं। दोनों भाई लोनी निवासी अपने ताऊ के घर से लौट रहे थे। तभी रास्ते में यह हादसा हुआ।

एनएचआरसी मानवाधिकार रक्षकों के साथ सदैव खड़ा रहेगाः वी. रामसुब्रमण्यन

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): मानवाधिकार रक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) के अध्यक्ष न्यायमूर्ति वी. रामसुब्रमण्यन ने मानवाधिकारों की रक्षा के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने भारत सहित दुनियाभर के मानवाधिकार रक्षकों को संबोधित करते हुए कहा कि एनएचआरसी भारत आपके अधिकारों की रक्षा करने, आपकी आवाज को बुलंद करने और यह सुनिश्चित करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराता है कि मानवाधिकार रक्षक बिना किसी भय या पक्षपात के अपना मिशन जारी रख सकें।

वी. रामसुब्रमण्यन

एनएचआरसी अध्यक्ष ने मानवाधिकारों की रक्षा के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराई

एनएचआरसी मानवाधिकार रक्षकों के साथ खड़ा रहेगा। जैसा कि हम जानते हैं कि 9 दिसंबर, 1998 को संयुक्त राष्ट्र की महासभा ने सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त मानव अधिकारों और मौलिक स्वतंत्रताओं को बढ़ावा देने और उनकी रक्षा करने के लिए व्यक्तियों, समूहों और समाज के अंगों के अधिकार और जिम्मेदारी पर घोषणा को अपनाया था, जिसे लोकप्रिय रूप से 'मानवाधिकार रक्षकों पर घोषणा' के रूप में जाना जाता है। गौरतलब है कि मानवाधिकार रक्षकों (एचआरडी) पर घोषणापत्र को मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा की 50वीं वर्षगांठ मनाने के अवसर पर अपनाया गया था।

उन्होंने कहा कि 16 अक्टूबर 2025 को एनएचआरसी ने अपना 32वां स्थापना दिवस मनाया, जहां आयोग ने मानव संसाधन विकास अधिकारियों विशेष रूप से महिलाओं के कार्यों का समर्थन करने के अपने रुख को दोहराया। एशिया-प्रशांत देशों के 28वें सम्मेलन में भारतीय लोकाचार को समाहित करते हुए सर्वसम्मति से 'दिल्ली घोषणापत्र' प्रस्तुत किया गया। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने मानवाधिकार रक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता दी।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्
भगवान इस जग के कण-कण में विद्यमान हैं।

संस्थापक: शहीद शिरोमणि लाला जगतनारायण जी, अमर शहीद रमेश चन्द्र जी एवं कलम के योद्धा अश्विनी कुमार जी

आदित्य नारायण चोपड़ा
adityachopra@punjabkesari.com

बाबरी बनाम गीता पाठ

पश्चिम बंगाल की सियासत में अगले वर्ष होने वाले विधानसभा चुनावों का नेरेटिव सैट हो चुका है और यह नेरेटिव है ध्रुवीकरण का। राज्य में एक तरह से धर्मयुद्ध छिड़ता दिखाई दे रहा है। धार्मिक प्रतीकों के जरिए राजनीतिक ध्रुवीकरण का नया दौर शुरू हो चुका है। मुर्शिदाबाद जिले में तृणमूल कांग्रेस के निलंबित विधायक हुमायूं कबीर ने बेलडांगा क्षेत्र में बाबरी मस्जिद की तर्ज पर एक नई मस्जिद का शिलान्यास किया जिससे सियासत में हलचल मच गई है। विधायक हुमायूं कबीर के इस कदम को मुस्लिम बहुल इलाकों में अल्पसंख्यक वोटों को एकजुट करने की रणनीति के रूप में देखा जा रहा है। कबीर ने तो ओवैसी की पार्टी के साथ मिलकर अगला चुनाव लड़ने की घोषणा भी कर दी है।

दूसरी ओर कोलकाता में आस्था का अलग ही सैलाब देखने को मिला। ब्रिगेड परेड ग्राउंड में जो हुआ उसे सामान्य नहीं कहा जा सकता। सनातन संस्कृति संसद के झंडे तले लगभग 5 लाख लोगों ने गीता का सामूहिक पाठ किया। मंच पर संतों की मौजूदगी थी। इस धार्मिक आयोजन में बंगाल भाजपा का शीर्ष नेतृत्व भी मौजूद रहा। इस कार्यक्रम में महामंडलेश्वर स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज, साध्वी ऋतंभरा, योग गुरु बाबा रामदेव, बागेश्वर धाम के धीरेन्द्र किशन शास्त्री और अनेक संत-महात्मा शामिल हुए। तीखी बयानबाजी हुई। बयानों का संदेश स्पष्ट था, हम गजबा-ए-हिंद नहीं, भगवा हिंद चाहते हैं। यह राष्ट्र राम का है राम का ही रहेगा। गीता पाठ के आयोजन के बाद हुमायूं कबीर ने भी एक लाख मुसलमानों को लेकर कुरान का पाठ कराने की घोषणा कर दी। उनका तर्क है कि अगर राम मंदिर बन सकता है तो बाबरी की याद में मस्जिद क्यों नहीं बन सकती। यह सीधे-सीधे ध्रुवीकरण की कोशिश है। पश्चिम बंगाल में साम्प्रदायिक तनाव बढ़ने की आशंका पैदा हो गई है।

> **गीता पाठ करने वालों का तर्क है कि भारत में हमें सनातनी चाहिए, तनातनी नहीं। सनातनी एकता ही विश्व शांति का सबसे बड़ा साधन है। भारत में सभी धर्मों का सम्मान किया जाता है। कोई मंदिर बनाये या मस्जिद बनाए इस पर किसी को क्या आपत्ति है। आस्था पूरी तरह से व्यक्तिगत होती है लेकिन बाबर के नाम पर मस्जिद का निर्माण कर समाज में जहर घोलना ठीक नहीं। बाबर एक आक्रांता था। उसने सैन्य ताकत के बल पर भारत में मुगल साम्राज्य स्थापित किया था। मुगलों ने 300 से अधिक वर्षों तक भारत पर राज किया। बाबरी मस्जिद का विवाद भी उसी से जुड़ा हुआ था। बाबर ने भारत में बहुत लूट मचाई।**

गीता पाठ करने वालों का तर्क है कि भारत में हमें सनातनी चाहिए, तनातनी नहीं। सनातनी एकता ही विश्व शांति का सबसे बड़ा साधन है। भारत में सभी धर्मों का सम्मान किया जाता है। कोई मंदिर बनाये या मस्जिद बनाए इस पर किसी को क्या आपत्ति है। आस्था पूरी तरह से व्यक्तिगत होती है लेकिन बाबर के नाम पर मस्जिद का निर्माण कर समाज में जहर घोलना ठीक नहीं। बाबर एक आक्रांता था। उसने सैन्य ताकत के बल पर भारत में मुगल साम्राज्य स्थापित किया था। मुगलों ने 300 से अधिक वर्षों तक भारत पर राज किया। बाबरी मस्जिद का विवाद भी उसी से जुड़ा हुआ था। बाबर ने भारत में बहुत लूट मचाई। मुगल शासन में सदियों तक भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य को प्रभावित किया। मैं उसके इतिहास में नहीं जाना चाहता लेकिन ऐसे मुगल शासक को स्वतंत्र भारत में महिमा मंडित करने का कोई औचित्य मुझे नजर नहीं आता। श्रीमद्भागवद गीता का भारत के बहुसंख्यक हिन्दुओं के लिए बहुत महत्व है। यह एक जीवन दर्शन है। मनुष्य को जीवन की सही दिशा की अनुभूति गीता ही कराती है। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कुरुक्षेत्र की रणभूमि में सही निर्णय लेने के लिए न सिर्फ गीता का उपदेश दिया था, बल्कि उन्हें साक्षात अपने विराट रूप के दर्शन भी कराये थे। द्वापर युग में दी गई भगवान श्रीकृष्ण की सीख आज भी इंसान को सुख-शांति और मुक्ति प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शक का काम करती है। गीता के उपदेश को यदि कोई व्यक्ति अम्ल में लाएगा तो उसका जीवन ही बदल जाएगा। फल की चिंता किए बिना कर्म करने का संदेश गीता में ही दिया गया है। पश्चिम बंगाल में सत्ता का रास्ता मुस्लिम मतों से होकर गुजरता है इसलिए पश्चिम बंगाल में धार्मिक आधार पर ध्रुवीकरण का युद्ध शुरू हो चुका है। भारतीय जनता पार्टी ने पश्चिम बंगाल में चुनाव जीतने के लिए पूरी तरह से तैयारी शुरू कर दी है। चुनाव किस तरह लड़ा और जीता जाता है इस समय भाजपा से बेहतर कोई नहीं जानता। कभी पश्चिम बंगाल में भाजपा का कोई जनाधार नहीं था। पिछले एक दशक में जिस तरह से भाजपा ने वहां अपने पांव जमाये हैं उससे समझा जा सकता है। अगर हुमायूं कबीर और ओवैसी मुस्लिम मतों का विभाजन कराने में सफल हो जाते हैं तो तृणमूल कांग्रेस को भारी नुक्सान हो सकता है। ममता के पारंपरिक मुस्लिम वोट बैंक में सेंधमारी का खतरा पैदा हो चुका है। भाजपा हिन्दुत्व की पिच पर आक्रामक बैटिंग कर रही है। पश्चिम बंगाल के हिन्दुओं को बाबरी के नाम पर मस्जिद निर्माण कराना भावनात्मक रूप से आहत कर रहा है।

अगर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी बाबरी मस्जिद निर्माण का विरोध करती हैं तो उनका कोर वोट बैंक खिसक सकता है। अगर ममता खामोश रहती हैं तो भी इसे तुष्टिकरण ही माना जाएगा। जिन हवाओं में सोनार बांग्ला के वादे गूंजने चाहिए उन हवाओं में अब उन्मादी नारे गूंज रहे हैं। सारी सियासत हिन्दू- मुसलमान के बीच सिमट कर रह गई है। सत्ता का महल कौन बनाएगा। यह तो चुनाव परिणाम ही बताएंगे लेकिन बहुसंख्यकों की भावनाओं को लामबंद करने का खेल शुरू हो चुका है। डर इस बात का है कि पश्चिम बंगाल की सियासत कहीं खूनी न हो जाए। मुस्लिम समुदाय बहुसंख्यकों की भावनाओं को समझे और बाबरी की तर्ज पर मस्जिद निर्माण का ईरादा त्यागे तो ही साम्प्रदायिक सद्भाव का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। देखना होगा कि सियासत क्या करवट लेती है।

हादसों से सीख जरूरी...

गीता पाढा

"नियम-कायदों को ताक पर रखकर सैकड़ों व्यापार चलाएं जाते हैं,
जहां-तहां-वहां मासूम लोग अपनी जान गंवाते हैं,,
समाज के यह मार्मिक दृश्य हर बार हम सभी पर प्रश्नचिन्ह लगाते हैं,
आखिर क्यों नहीं हम सभी इन हादसों से कुछ सीख पाते हैं...।।"

विजय दर्डा
संपादक : लोकमत समूह
पूर्व राज्यसभा सांसद

ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे...!

एक पुरानी कहावत है कि जिस इमारत की नींव गहरी, बहुत ठोस और बहुत मजबूत होती है, वह इमारत झंझावातों की फिक्र नहीं करती। भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने भारत-रूस की सदाबहार दोस्ती के संदर्भ में इस कहावत की फिर याद दिला दी है। दोनों की मुलाकात के बाद नरेंद्र मोदी ने कहा कि ये दोस्ती नई चुनौतियों के लिए तैयार है तो दूसरी तरफ पुतिन ने कहा कि भारत को हर हाल में रूस ईंधन की निर्बाध आपूर्ति करता रहेगा। दोनों का संदेश सीधे तौर पर अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प के लिए है।

डोनाल्ड ट्रम्प पिछले कुछ दिनों से लगातार कह रहे हैं कि नरेंद्र मोदी ने उन्हें भरोसा दिलाया है कि रूस से तेल खरीदना बंद कर देंगे। इस पर भारत ने जब कहा कि हम अपनी जरूरतों के अनुरूप निर्णय लेते हैं तो ट्रम्प ने अपने बयान में यह जोड़ दिया कि तेल खरीदना बंद करने में भारत को कुछ वक्त लग सकता है। रूस से तेल खरीदने के कारण ही भारत पर ट्रम्प ने 25 प्रतिशत टैरिफ का जुर्माना लगाया हुआ है। कुछ लोग यह सोचने लगे होंगे कि क्या जुर्माने के दबाव में भारत झुक जाएगा और क्या रूस से दोस्ती में कुछ कमी आ सकती है? कई लोगों ने मुझसे यह बात पूछी भी थी। मैंने हमेशा यही कहा कि हिंदुस्तान न पहले झुका था, न आज झुका है और न कल झुकेगा। हम अहिंसा में विश्वास करते हैं लेकिन किसी के आगे नहीं झुकते। हम केवल वहीं झुकते हैं, जहां श्रद्धा होती है।

भारत और सोवियत यूनियन (अब रूस) के रिश्ते किसी आर्थिक वजह से नहीं बने हैं। दिलों के रिश्ते मैत्री, सद्भाव, आचार-विचार की समानता और सांस्कृतिक कारणों से बने हैं। भारत में ऐसे भी प्रधानमंत्री आए जो विचारों से अमेरिका के नजदीक थे लेकिन उन्होंने जब फाइलों के माध्यम से गहराई से जानकारी ली तो उन्होंने भी रूस के साथ दोस्ती बरकरार रखी।

दोस्ती दरअसल दोनों देशों के दिलों के बीच है, जब मैं वर्ल्डकप फुटबॉल देखने के लिए मास्को गया तब पहली बार मैंने महसूस किया कि भारतीयों के प्रति रूस के लोगों के मन में कितना स्वाभाविक प्रेम और सम्मान है। उसके पहले संसद के सेंट्रल हॉल में मि. पुतिन से मैं मिल चुका था। मास्को में फुटबॉल मैच के दौरान हाथों में तिरंगा लिए मैंने जब हिंदुस्तान और रूस जिंदाबाद के नारे लगाए तो नीचे बैठे पुतिन हाथ हिलाते हुए मुस्कुराए। मैं पाठकों को बता दूं कि सोवियत यूनियन भले ही साम्यवादी विचारधारा का देश रहा और रूस का रुख भी वही रहा लेकिन क्रेमलिन में आप उनका ऑफिस देखेंगे तो उसकी भव्यता अमेरिका और चीन के कार्यालयों से भी बेहतर है, वहां सोने की परतें लगी हुई हैं। शायद वे साम्यवाद के माध्यम से अपनी जनता के जीवन में भव्यता लाना चाहते होंगे, मगर अब केवल नाम का ही साम्यवाद बचा है। नई पीढ़ी के पाठकों के लिए यह जानकारी मैं साझा करना चाहता हूं कि भारत को ब्रिटेन से आजादी मिल गई थी लेकिन गोवा, दमन और दीव पर पुर्तगाल अपना शासन छोड़ने को तैयार नहीं था। दिसंबर 1961 में हमारी फौज ने हमला किया और गोवा को आजाद करा लिया। उस वक्त यूरोप से लेकर अमेरिका तक हमारे विरुद्ध थे लेकिन तत्कालीन सोवियत संघ ने भारत का साथ दिया। यूनाइटेड नेशन में उसने हमारे पक्ष में वीटो किया था। 1971 में पाकिस्तान की मदद के लिए अमेरिका ने अपना 7वां नौसैनिक बेड़ा बंगाल की खाड़ी की ओर रवाना किया ताकि भारत को धमकाया जा सके लेकिन सोवियत संघ की पनडुब्बियां वहां पहले ही पहुंच चुकी थीं। सोवियत संघ का संदेश अमेरिका के लिए साफ था कि पीछे हट जाओ वरना खैर नहीं। भारत के पास इस वक्त दुनिया की चौथे नंबर की सबसे ताकतवर फौज है तो उसमें रूस का बहुत बड़ा सहयोग है। उसने भरोसेमंद हथियार तो हमें दिए ही हैं, बिना किसी हील-हुज्जत के हथियारों की तकनीक भी हमें दी है। न केवल अमेरिका बल्कि उसके साथ खड़े देशों को भी समझना होगा कि रूस के साथ भारत की दोस्ती तोड़ने की कोई कोशिश, बल्कि यूं कहना चाहिए कि कोई चालबाजी कामयाब नहीं होने वाली है। जी हां, चालबाजियां ! पुतिन 4 दिसंबर को भारत पहुंचने वाले थे और 1 दिसंबर को भारत के एक बड़े अंग्रेजी अखबार में भारत में पदस्थ जर्मनी के राजदूत फिलिप एकरमैन, फ्रांस के राजदूत थिरी मथोउ और ब्रिटेन की उच्चायुक्त लिंडी कैमरुन का एक लेख छपता है जिसका शीर्षक था- दुनिया चाहती है कि यूक्रेन युद्ध का अंत हो लेकिन रूस शांति को लेकर गंभीर नहीं दिख रहा है। इसे आप चालबाजी नहीं कहेंगे तो और क्या कहेंगे? मगर पुतिन इस बात को बखूबी समझते हैं, इसलिए उन्होंने चालबाजी करने वालों के जले पर, नरेंद्र मोदी के साथ मिलकर नमक छिड़क दिया। मोदी और पुतिन ने भारत-रूस की दोस्ती को ऐसा परवान चढ़ा दिया कि दुनिया दंग रह गई।

नरेंद्र मोदी ने कहा कि सहयोग को नई ऊंचाइयों पर ले जाना हमारी साझी प्राथमिकता है। 2030 तक के लिए दोनों देशों ने आर्थिक साझेदारी योजना पर सहमति बनाई है। हम अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा, चेन्नई-व्लादिवोस्तोक समुद्री गलियारा जैसी योजनाओं पर नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ेंगे।

इधर पुतिन ने बड़े साफ शब्दों में कहा कि मेक इन इंडिया में रूस हर तरह से सहयोग के लिए तैयार है। दोनों देश रूबल और रुपए में व्यापार कर रहे हैं। पुतिन ने ट्रम्प के लिए ही शायद इस बात का जिक्र किया कि भारत और रूस, ब्रिक्स देशों के साथ मिलकर ज्यादा न्यायपूर्ण और बहुध्रुवीय दुनिया की दिशा में काम कर रहे हैं। नरेंद्र मोदी और पुतिन की ये भाषा ट्रम्प को निश्चय ही बड़ी कड़वी लगी होगी मगर दोनों देशों की दोस्ती को तोड़ना ट्रम्प के बूते में नहीं है।

रोहित माहेश्वरी

आशा जगाती ड्रग तस्करी के खिलाफ साझा पहल

भारत विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है लेकिन आज यह अनेक सामाजिक समस्याओं से जूझ रहा है। इनमें से एक समस्या नशे की बढ़ती लत है, जिसने न केवल समाज की जड़ों को कमजोर किया है, बल्कि नई पीढ़ी के भविष्य को भी अंधकारमय बना दिया है। युवा किसी भी राष्ट्र की रीढ़ होते हैं। उनकी ऊर्जा किसी भी देश की प्रगति और विकास की दिशा तय करती है। भारत विश्व का सबसे युवा देश है। यहां 65 फीसद से अधिक आबादी 35 वर्ष से कम उम्र की है लेकिन दुखद है कि देश आज नशे की समस्या से जूझ रहा है।

नशा एक ऐसी बुराई है जो युवा वर्ग की क्षमता, नैतिकता और उनके उज्ज्वल भविष्य को निगल रही है। यह समस्या केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं, बल्कि इसका प्रभाव समाज और राष्ट्र के विकास पर भी पड़ता है। आजकल युवाओं में नशे की लत तेजी से बढ़ रही है। शराब, तंबाकू, गांजा, अफीम और नशीली दवाइयों के अलावा, आधुनिक समय में कोकीन, हेरोइन और 'सिंथेटिक ड्रग्स' का प्रचलन भी खूब बढ़ा है।

देश के लगभग हर राज्य में नशीले पदार्थों का बढ़ता घातक कारोबार गंभीर संकट की आहट सुना रहा है। आये दिन विभिन्न राज्यों में नशीले पदार्थों की बड़ी-बड़ी खेप बरामद होना इस संकट की भयावह तस्वीर उकेरता है। अब वयस्क ही नहीं, किशोर भी नशे की चपेट में आ रहे हैं, फिर वे अपने नशे के लिए पैसा जुटाने को अपराध की गलियों से गुजरने में गुरेज नहीं करते। हाल ही के कुछ गंभीर अपराधों का खुलासा होने पर किशोरों ने स्वीकार किया कि वे नशे हेतु पैसा जुटाने के लिए अपराध करने निकले थे। कमोबेश, ऐसा ही संकट नकली दवाइयों की आपूर्ति का भी है।

बीते दिनों देश के कई राज्यों में घातक कफ सिरप पीने से कई बच्चे अपनी जान गंवा बैठे। इस आसन्न संकट को महसूस करते हुए नकली दवाइयों और मादक पदार्थों पर अंकुश लगाने के लिए सात राज्यों के ड्रग्स कंट्रोलरों, पुलिस और सीआईडी अधिकारियों का एक महत्वपूर्ण सम्मेलन केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ में आयोजित किया गया, जिसका मकसद इन अधिकारियों को एक मंच पर लाकर कार्रवाई को अधिक कारगर बनाना था।

इस रणनीतिक महत्व के सेमिनार का आयोजन हरियाणा के खाद्य और औषधि प्रशासन ने किया था, जिसका मकसद सीमावर्ती राज्यों के बीच बेहतर समन्वय, सूचना साझेदारी और तेज प्रवर्तन तंत्र विकसित करना था। यह स्वागत योग्य है कि देश में पहली बार सात राज्यों ने इस संकट को महसूस करते हुए इस दिशा में साझी पहल की। उल्लेखनीय है कि इस पहल में सीमावर्ती राज्यों पंजाब, राजस्थान, हिमाचल, उत्तराखंड व दिल्ली, महाराष्ट्र तथा हरियाणा के औषधि नियंत्रकों व वरिष्ठ अधिकारियों समेत 70 अधिकारियों ने भाग लिया। इन अधिकारियों ने अनुभव साझा करके भविष्य के लिए कारगर रणनीति को अंजाम देने पर गंभीर मंथन किया। बैठक में स्वीकार किया गया कि नशीले पदार्थों व नकली दवाइयों का कारोबार मात्र एक राज्य की समस्या नहीं है, बल्कि इससे कई राष्ट्रीय मुद्दे भी जुड़े हैं। यह जहरीला कारोबार सिर्फ स्थानीय मुद्दा नहीं है, बल्कि विभिन्न राज्यों के बीच साझा चुनौती बना हुआ है, जिसका मुकाबला डेटा साझेदारी और पारदर्शी समन्वय से ही संभव है। खासकर सीमावर्ती राज्यों को तो अंतर्राष्ट्रीय व अंतर्राज्यीय तस्करों से मुकाबले के लिए मिलकर काम करना बेहद जरूरी है। सवाल यह भी उठा है कि यदि नशीले पदार्थों की इतनी बड़ी मात्रा बरामद हुई है तो चोरी-छिपे कितनी बड़ी मात्रा में नशीला पदार्थ देश में पहुंच रहा होगा। पंजाब के सीमावर्ती जिलों में सीमा पार से ड्रोन के जरिये लगातार नशीले पदार्थ व हथियार भेजने के मामले प्रकाश में आए हैं। संकट का एक पहलू यह भी है कि सीमावर्ती जिलों में किशोरों को नशे की आपूर्ति के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। पंजाब सरकार के विशेष अभियान के दौरान भी बड़ी मात्रा में नशीले पदार्थों की बरामदगी हुई है। अनेक तस्कर व दोहरी भूमिका निभाने वाले पुलिस कर्मियों तक भी कानून के हाथ पहुंचे हैं लेकिन अभी भी इस दिशा में बहुत किया जाना बाकी है।

पंजाब पुलिस का युद्ध नशे के विरुद्ध अभियान जारी है। पुलिस ने बीते 7 दिसंबर को प्रदेश के 204 स्थानों पर रेड की। इस दौरान पूरे राज्य में 52 एफआईआर दर्ज कर नशा तस्करी में 71 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। आरोपियों के कब्जे से 834 ग्राम हेरोइन, 1.5 किलो अफीम, 281 नशीली गोलियां और 20,920 रुपये की ड्रग मनी बरामद की गई। 100 से अधिक पुलिस टीमों ने राज्यभर में 204 स्थानों पर रेड की और 224 संदिग्ध व्यक्तियों की जांच की, साथ ही 38 व्यक्तियों को नशा छोड़ने और पुनर्वास केंद्रों पर उपचार कराने के लिए राजी किया गया। हिमाचल प्रदेश में भी कमोबेश ऐसे ही हालात हैं। बीते दिनों मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने तपोवन विधानसभा परिसर में नारकोटिक्स को-ऑर्डिनेशन सेंटर की छठी राज्य स्तरीय बैठक के बाद बातचीत में बताया कि चिट्टा तस्करी में 60 सरकारी कर्मचारी संलिप्त पाए गए हैं, जिनमें 15 पुलिसकर्मी भी शामिल हैं। इनमें से पांच पुलिस कर्मियों को बर्खास्त किया जा चुका है, जबकि अन्य के खिलाफ कानूनी कार्रवाई जारी है। कमोबेश ऐसे ही हालात देश के अन्य राज्यों के भी हैं।

इसमें दो राय नहीं कि देश के लिए घातक साबित हो रहे नशे के कारोबार पर अंकुश राज्यों के संयुक्त प्रयासों से ही संभव है। इसके लिए जरूरी है कि विभिन्न राज्यों के जिम्मेदार अधिकारी समय-समय पर इससे जुड़े डेटा साझा करने, पारदर्शी समन्वय और 'एक टीम, एक रणनीति' पर काम करें। साथ ही जरूरी है कि संबंधित अधिकारी जिम्मेदारी और संवेदनशीलता के साथ काम करें। इस दौरान सात राज्यों के अधिकारियों ने नशीली दवाओं के दुरुपयोग रोकने व नकली दवाइयों पर रोक लगाने के लिए सहयोग करने पर सहमति जताई। इस नई चुनौती के मुकाबले के लिए विशेष प्रशिक्षण और सात राज्यों के ड्रग कंट्रोलरों और पुलिस अधिकारियों के बीच सूचनाओं के आदान-प्रदान पर सहमति बनी।

नशे की समस्या राष्ट्र की प्रगति और विकास को भी बाधित करती है। युवा पीढ़ी नशे के कारण कमजोर हो जाती है। इससे देश की उत्पादकता और विकासशील क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसके कारण होने वाले अपराध और दुर्घटनाएं भी देश की अर्थव्यवस्था पर भार डालती हैं। मादक पदार्थों की तस्करी अक्सर आतंकवादी गतिविधियों को फंड करने का जरिया बनती है। इससे देश की आंतरिक सुरक्षा को भी खतरा होता है। देश के भविष्य निर्माण में युवाओं की अहम भूमिका है। एक स्वस्थ युवा ही देश को संपन्न बनाने का काम कर सकती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का साफ मानना है कि अगर भारत को वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनना है तो युवाओं को स्वस्थ और फिट होना होगा।

अपने-अपने संविधान की प्रति साझा करें राजनीतिक दल : निर्वाचन आयोग

> **प्रत्येक पंजीकृत राजनीतिक दल को दस्तावेज देने के लिए 30 दिन का समय दिया**

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): निर्वाचन आयोग ने सोमवार को राजनीतिक दलों से कहा कि वे अपने नवीनतम संविधान की प्रतियां 30 दिनों के भीतर अद्यतन संशोधनों के साथ साझा करें, क्योंकि उसने पाया कि कई दलों ने अब तक यह महत्वपूर्ण दस्तावेज उसे नहीं सौंपा है। आयोग ने पार्टी अध्यक्षों को लिखे पत्र में कहा कि दलों का संविधान एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जिसमें पार्टी के उद्देश्यों और लोकतांत्रिक तरीके से कार्य करने के लिए आवश्यक प्रक्रियाओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी होती है। पत्र में कहा गया कि प्रत्येक पंजीकृत राजनीतिक दल अपने संविधान में किए गए सभी संशोधनों की जानकारी निर्वाचन आयोग को देने के लिए बाध्य है। इसमें कहा गया, ''यह अनुरोध किया जाता है कि पार्टी के नवीनतम संविधान की प्रति, इसके सभी अद्यतन संशोधनों के साथ, 30 दिनों के भीतर निर्वाचन आयोग को उपलब्ध करा दी जाए, ताकि नवीनतम संविधान को निर्वाचन आयोग की वेबसाइट पर अपलोड किया जा सके।'' अधिकारियों ने इंगित किया कि कुछ दलों ने काफी समय से निर्वाचन आयोग को अपने नवीनतम संविधान की प्रति नहीं सौंपी है। उन्होंने कहा, '' यह एक अनुस्मारक है।'' निर्वाचन आयोग ने कहा कि चुनावी प्रक्रिया को समग्र रूप से मजबूत बनाने के लिए यह आवश्यक है कि सभी दल अपने पार्टी संविधान में निहित प्रावधानों का पालन करें। इसमें कहा गया, ''इस उद्देश्य के लिए, निर्वाचन आयोग ऐसे राजनीतिक दलों के संविधान को अपनी वेबसाइट पर अपलोड करता है और इसका आकलन कोई भी कर सकता है।''

इस्लाम अपनाकर खाया धोखा, वापस हिंदू बना

भोपाल, (पंजाब केसरी): मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में एक मुस्लिम लड़की से प्रेम के बाद दो वर्ष पूर्व धर्म परिवर्तन करने वाले युवक ने धार्मिक अनुष्ठानों के साथ पुन: हिंदू धर्म में वापसी कर ली। जहांगीराबाद निवासी शुभम गोस्वामी ने मुस्लिम बनने के बाद अपना नाम अमन खान रख लिया था। उसने दावा किया कि प्यार में मिले धोखे और लड़की के परिवार वालों की प्रताड़ना से परेशान होकर उसने हिन्दू धर्म में वापसी का फैसला किया। सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री विश्वास कैलाश सारंग की उपस्थिति में युवक ने प्राचीन गुफा मंदिर में वैदिक मंत्रोच्चार के बीच विधि-विधान से घर वापसी की। गोस्वामी ने बातचीत में कहा, '' मैंने दबाव में धर्म परिवर्तन किया था और उसके बाद मैं अवसाद में आ गया था और यहां तक कि आत्महत्या की योजना बना रहा था। सारंग ने कहा 180 दिनों तक 'जमात' में भेजकर उसे पूरी तरह मानसिक और धार्मिक रूप से तोड़ने का षड्यंत्र रचा गया था। उन्होंने कहा कि इतना ही नहीं, सुनियोजित तरीके से युवक को पांच महीने जेल तक भिजवा दिया गया था। सारंग ने कहा, 'लव जिहाद' से पीड़ित हिंदू युवक-युवतियों के साथ हम मजबूती से खड़े हैं। धर्मांतरण, धमकियों और मानसिक शोषण का कोई भी प्रयास हमारे समाज और संविधान के खिलाफ है। इसे किसी भी सूरत में सहन नहीं किया जाएगा।

महिला वकीलों के लिए 30 प्रतिशत सीटें आरक्षित रखने का आदेश

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को निर्देश दिया कि जिन राज्य विधिज्ञ परिषदों में चुनाव प्रक्रिया शुरू नहीं हुई है, उनमें 30 प्रतिशत सीटें महिला वकीलों के लिए आरक्षित रखी जाएं। प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने कहा कि चालू वर्ष के लिए, जिन राज्य विधिज्ञ परिषदों में अभी चुनाव होने हैं, उन्हें 20 प्रतिशत सीटें महिला उम्मीदवारों से भरनी चाहिए और यदि चुनाव लड़ने के इच्छुक वकील ज्यादा नहीं हैं, तो 10 प्रतिशत सीटें विशेष चयन (को-ऑप्शन) के माध्यम से भरी जानी चाहिए। बार काउंसिल के सदस्य चुनाव के संदर्भ में 'सह चयन' उस प्रक्रिया को कहा जाता है, जिसमें काउंसिल के मौजूदा या नवनिर्वाचित सदस्य, बार के सभी सदस्यों द्वारा होने वाले प्रत्यक्ष और सामान्य चुनाव की बजाय, आपस में वोट करके अतिरिक्त सदस्यों का चयन करते हैं। शीर्ष अदालत ने निर्देश दिया कि उन राज्य विधिज्ञ परिषदों के संबंध में विशेष चयन का प्रस्ताव अदालत के समक्ष रखा जाएगा, जहां चुनाव लड़ने वाली महिला वकीलों की संख्या अपर्याप्त है। शुरुआत में वरिष्ठ अधिवक्ता और भारतीय विधिज्ञ परिषद (बीसीआई) के अध्यक्ष मनन कुमार मिश्रा ने पीठ को सूचित किया कि न्यायालय के पूर्व निर्देश के अनुसार चुनाव की अधिसूचना के साथ छह बार निकायों में चुनाव प्रक्रिया शुरू हो गई है।

शिकायतकर्ता का घर 'सार्वजनिक स्थल' नहीं : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): उच्चतम न्यायालय ने अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 के तहत कथित अपराध के लिए कुछ आरोपियों के खिलाफ शुरू की गई कार्यवाही सोमवार को रद्द कर दिया और कहा कि शिकायतकर्ता के घर को 'सार्वजनिक स्थल' नहीं माना जा सकता। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने हालांकि स्पष्ट किया कि आईपीसी के तहत कथित अपराधों के लिए उनके खिलाफ कार्यवाही कानून के अनुसार जारी रहेगी। पीठ ने आरोपियों द्वारा इलाहाबाद उच्च न्यायालय के इस वर्ष जुलाई के आदेश को चुनौती देने के लिए दाखिल अपील पर फैसला सुनाया। उच्च न्यायालय ने सुनवाई के दौरान अधीनस्थ अदालत के आदेश को बरकरार रखा था। अधीनस्थ अदालत ने आरोपियों को आईपीसी और अनुसूचित जाति एवं जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989, जिसे एससी/एसटी अधिनियम भी कहा जाता है, के तहत कथित अपराधों के लिए मुकदमे का सामना करने के लिए तलब किया था। शीर्ष अदालत ने अपील पर सुनवाई करते हुए कहा कि उच्च न्यायालय ने माना था कि शिकायतकर्ता के बेटे को आरोपियों ने सार्वजनिक सड़क पर सबके सामने पीटा था, जिससे यह घटना एससी/एसटी अधिनियम के प्रावधानों के तहत अपराध के दायरे में आती है। पीठ ने एससी/एसटी अधिनियम की धारा 3(1)(एस) का उल्लेख किया जो अत्याचार के अपराधों के लिए दंड से संबंधित है और सार्वजनिक स्थान या लोगों के समक्ष किसी भी स्थान पर जातिसूचक शब्त कहने संबंधित है। शीर्ष अदालत ने कहा कि मामले में शिकायतकर्ता द्वारा पहले दायर आवेदन से पता चलता है कि कथित जातिसूचक शब्द शिकायतकर्ता के परिसर के अंदर अपीलकर्ताओं द्वारा इस्तेमाल किये गए थे। पीठ ने कहा, ''पहली नजर में यह परिस्थिति वैधानिक आवश्यकता को पूरा नहीं करती है कि दुर्व्यवहार 'सरेआम किसी भी स्थान पर' किया गया था, जो एससी/एसटी अधिनियम की धारा 3(1)(एस) के तहत अपराध का एक अनिवार्य घटक है।''

दिल्ली आर.एन.आई. नं. 40474/83
पंजाब केसरी
दिल्ली कार्यालय :
फोन आफिस: 011-30712200, 45212200,
प्रसार विभाग: 011-30712224
विज्ञापन विभाग: 011-30712229
सम्पादकीय विभाग: 011-30712292-93
मैगजीन विभाग: 011-30712330
फैक्स : 91-11-30712290, 30712384, 011-45212383, 84
Email: Editorial@punjabkesari.com

स्वत्वाधिकारी दैनिक समाचार लिमिटेड, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली-110035 के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक अनिल शारदा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रैस, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा 2, प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से प्रकाशित।

चिंतन

स्वतंत्रता आंदोलन का उद्घोष बन गया था वंदे मातरम्

वंदे मातरम् भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई का एक शक्तिशाली प्रतीक है, जिसने करोड़ों लोगों को एकजुट किया। यह केवल एक गीत नहीं, बल्कि इसने लाखों भारतीयों में देशभक्ति की भावना को जागृत किया है। अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई में यह भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का एक प्रेरणादायक उद्घोष बन गया था। जिस मंत्र, जिस जयघोष ने देश के आंदोलन को ऊर्जा और प्रेरणा दी थी, त्याग और तपस्या का मार्ग दिखाया था, उस वंदे मातरम् का स्मरण करना देश का बहुत बड़ा सौभाग्य है। वंदे मातरम् केवल भारत का राष्ट्रीय गीत ही नहीं, स्वतंत्रता आंदोलन का प्राण भी है। यह बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की प्रथम उद्घोषणा है। इसने हमें याद दिलाया कि भारत केवल जमीन का एक टुकड़ा नहीं, बल्कि एक भू-सांस्कृतिक राष्ट्र है, जिसकी एकता उसकी संस्कृति और सभ्यता से आती है। हमारे लिए यह गर्व की बात है कि वंदे मातरम् के 150 साल पूर्ण हो रहे हैं और हम सभी इस ऐतिहासिक अवसर के साक्षी बन रहे हैं। वंदे मातरम् पर पीएम मोदी ने सोमवार को लोकसभा में चर्चा की शुरुआत की। उन्होंने कहा, 'वंदे मातरम्' अंग्रेजों को करारा जवाब था, ये नारा आज भी प्रेरणा दे रहा। आजादी के समय महात्मा गांधी को भी यह पसंद था, उन्हें यह गीत नेशनल एंथम के रूप में दिखता था। उनके लिए इस गीत की ताकत बड़ी थी। उन्होंने विपक्ष पर हमला बोलते हुए कि पिछले दशकों में वंदे मातरम् के साथ इतना अन्याय क्यों हुआ। वंदे मातरम् के साथ विश्वासघात क्यों हुआ। वो कौन सी ताकत थी, जिसकी इच्छा पूज्य बापू की भावनाओं पर भी भारी पड़ी। वंदे मातरम् की 150 वर्ष की यात्रा अनेक पड़ावों से गुजरी है। जब वंदे मातरम् के 50 वर्ष पूरे हुए थे, तब देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। जब इसके 100 वर्ष पूरे हुए, तब देश आपातकाल के अंधेरे में था। आज जब इसके 150 वर्ष हो रहे हैं, तो भारत विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है और तेजी से आगे बढ़ रहा है। 150 वर्ष उस महान अध्याय और उस गौरव को पुनः स्थापित करने का अवसर है। मोदी ने कहा कि मेरा मानना है कि देश और सदन, दोनों को इस अवसर को जाने नहीं देना चाहिए। यही वंदे मातरम् है, जिसने 1947 में देश को आजादी दिलाई। अब सदन में इस पर चर्चा की जरूरत क्यों पड़ी। दरअसल, सरकार चाहती है कि वंदे मातरम् पर चर्चा से देश में राष्ट्रभावना, सांस्कृतिक गौरव और एकता का संदेश जाए। यह विषय जनता में भावनात्मक जुड़ाव भी पैदा करता है। बता दें कि वंदे मातरम् का प्रकाशन 1882 में हुआ और यह आनंद मठ के उपन्यास में शामिल हुआ। पहली बार इसे 1896 में कांग्रेस के अधिवेशन में गाया गया और उस समय जल्द ही यह स्वतंत्रता आंदोलन का अनौपचारिक राष्ट्रगान बन गया। 1905 में बंग-भंग आंदोलन के दौरान यह गीत सड़कों पर गूंजने लगा और इसने लोगों को एकजुट करने का काम किया। इसी गीत ने आजादी की तड़प को लोगों के दिलों में और मजबूत किया। महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू जैसी महान हस्तियों ने भी इसकी भावना को सराहा। 1950 में जब भारत गणराज्य बना, तो जन-गण-मन को राष्ट्रगान चुना गया, लेकिन वंदे मातरम् को राष्ट्रीय गीत का दर्जा दिया गया। वंदे मातरम् का सम्मान करना चाहिए। इस गीत का महत्व कभी कम नहीं हो सकता। यह गीत हमारी मातृभूमि की सेवा और उसकी एकता के लिए प्रेरणा का स्रोत बने, न कि विभाजन का।

दिवस विशेष
बाल मुकुन्द ओझा

भ्रष्टाचार के मकड़जाल में फंसी है पूरी दुनिया

दुनिया के लगभग हर देश में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। लाख प्रयासों के बाद भी भ्रष्टाचार की इस महामारी से विश्व मुक्त नहीं हो पाया है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा लोगों में जन जागरण और चेतना जगाने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक दिवसों का आयोजन किया जाता है, इनमें एक दिवस भ्रष्टाचार के खिलाफ भी है। 9 दिसंबर को अंतरराष्ट्रीय भ्रष्टाचार विरोधी दिवस मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र का कहना है, भ्रष्टाचार का मुकाबला करने की खातिर वैश्विक प्रतिबद्धता सुनिश्चित करने के लिए सभी देशों को मिलकर काम करना होगा। एक रिपोर्ट के मुताबिक दुनियाभर में रिश्वत की वार्षिक मात्रा एक ट्रिलियन डॉलर आंकी गई है। भ्रष्टाचार के कारण वैश्विक अर्थव्यवस्था को 2.6 ट्रिलियन डॉलर का नुकसान होता है, जो वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद के पांच प्रतिशत से अधिक है। यह अकाट्य सत्य है कि दुनियाभर में भ्रष्टाचार की वजह से न केवल आर्थिक विकास पर असर पड़ता है बल्कि लोकतंत्र के प्रति विश्वास को भी ठेस पहुंचती है। विश्व का कोई भी देश भ्रष्टाचार से सुरक्षित नहीं है। भ्रष्टाचार आर्थिक विकास में बाधक है, लोकतंत्र को नुकसान पहुंचाता है। भ्रष्टाचार से सामाजिक असामानता फैलती है। हर साल ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल जैसी वैश्विक संस्था अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रैंकिंग भी जारी करता है, जिसमें भ्रष्टतम देश शामिल किए जाते हैं। मगर लाख प्रयासों के बाद भी भ्रष्टाचार पर कोई प्रभावी अंकुश नहीं लगाया जा सका। यह हमारे सिस्टम का फेलियोर है या सत्ताधीशों का, इस पर चिंतन और मनन की जरूरत है। संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक भ्रष्टाचार अपराध है जो सामाजिक और आर्थिक विकास को कमजोर करता है। वर्तमान में भ्रष्टाचार से कोई देश, क्षेत्र या समुदाय बचा नहीं है। इससे लोकतांत्रिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है। भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है भ्रष्ट आचरण यानि जिसका आचार बिगड़ गया हो। स्वार्थ में लिप्त होकर किया गया गलत कार्य भ्रष्टाचार होता है। भ्रष्टाचार के कई रूप हैं- रिश्वत, कमीशन लेना, काला बाजारी, मुनाफाखोरी, मिलावट, कर्तव्य से भागना, चोर-अपराधियों आतंकियों को सहयोग करना आदि आदि। इसका सीधा मतलब है जब कोई व्यक्ति समाज द्वारा स्थापित नैतिकता के आचरण का उल्लंघन करता है तो वह भ्रष्टाचारी कहलाता है। यहां भ्रष्टाचार से हमारा तात्पर्य अनैतिक और गलत तरीके से अर्जित आय से है। भारत में भ्रष्टाचार ने लगता है संस्थागत रूप धारण कर लिया है। भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने खुलेआम यह कहा है कि वे न तो खाएंगे और न खाने देंगे। मोदी अपनी बात पर कायम रहे, मगर भ्रष्टाचार पर काबू नहीं पाया जा सका है। दुनिया के भ्रष्टाचार पर नजर रखने वाली संस्था ट्रांसपरेंसी इंटरनेशनल इंडिया के द इंडिया करप्शन सर्वे 2024 के भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक में भारत 180 देशों में 96वें स्थान पर रहा। इससे पहले साल 2023 में 93 और 2022 में भारत की रैंकिंग 85 थी, जो इस साल बढ़कर 96 हो गई है। दुनिया में सबसे भ्रष्ट देश सोमालिया है, जबकि सबसे कम भ्रष्ट डेनमार्क है, जो लगातार छठे साल भी ग्लोबल करप्शन इंडेक्स में टॉप पर है।

140 करोड़ की आबादी का आधा भारत आज रिश्वतखोरी के मकड़जाल में फंसा हुआ है। स्थिति यह हो गई है कि बिना रिश्वत दिए आप एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते। हमारे देश में भ्रष्टाचार इस हद तक फैल चुका है कि इसने समाज की बुनियाद को हिलाकर रख दिया है। जब तक मुट्ठी गर्म न की जाए तब तक कोई काम ही नहीं होता। एनसीआरबी और लोकल सर्कल इंडिया करप्शरन सर्वे रिपोर्ट में यह भी उल्लेकख किया गया है कि लोगों को सबसे ज्यादा घूस जमीन से जुड़े मामलों में देनी पड़ रही है। इसके बाद दूसरे सबसे भ्रष्ट महकमों में पुलिस शामिल है। भ्रष्टाचार एक संचारी बीमारी की भांति इतनी तेजी से फैल रहा है कि लोगों को अपना भविष्य अंधकार से भरा नजर आने लगा है और कहीं कोई भ्रष्टाचार मुक्त समाज की उम्मीद नजर नहीं आ रही है। मंत्री से लेकर संतरी और नेताओं तक पर भ्रष्टाचार के दलदल में फंसे है। भ्रष्टाचार हमारे सामाजिक, आर्थिक और नैतिक जीवन मूल्यों पर सबसे बड़ा प्रहार है। भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कठोर कानून और दंड-व्यवस्था की जानी चाहिए। जब तक समाज एकजुट होकर भ्रष्टाचार पर हमला नहीं करेगा तब तक इस बीमारी को जड़मूल से समाप्त नहीं किया जा सकता।

(लेखिका स्वतंत्र पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

शीत सत्र
अजीत लाड़

गतिरोध में थमती संसद की उत्पादकता

सत्र की शुरुआत से पहले ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जो संदेश दिया कि संसद का हर क्षण देश के विकास के लिए होना चाहिए, वह सिर्फ एक राजनीतिक टिप्पणी नहीं थी, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की मूल आत्मा का स्मरण था। संसद केवल एक इमारत या सामूहिक बैठकों का स्थल नहीं, वह केंद्र है जहां राष्ट्र के भविष्य की रूपरेखा बनती है। परंतु जैसे ही सत्र आरंभ हुआ, ठीक वही दृश्य सामने आया जो पिछले वर्षों की एक स्थायी प्रवृत्ति बन चुका है। नारे, हंगामा, वेल में उतरना और अंततः कार्यवाही स्थगित होना। ऐसे में समझना जरूरी है कि लोकतंत्र विरोध की व्यवस्था पर चलता है, किंतु विरोध जब निरंतर अवरोध में बदल जाए, तो यह केवल सरकार या विपक्ष की समस्या नहीं रहती। यह लोकतांत्रिक संस्कृति की समस्या बन जाती है।

भारत की संसद का यह शीतकालीन सत्र ऐसे समय शुरू हुआ है जब देश तेजी से बदलती वैश्विक परिस्थितियों, आर्थिक चुनौतियों और व्यापक नीतिगत निर्णयों के बीच खड़ा है। सत्र की शुरुआत से पहले ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जो संदेश दिया कि संसद का हर क्षण देश के विकास के लिए होना चाहिए। वह सिर्फ एक राजनीतिक टिप्पणी नहीं थी, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की मूल आत्मा का स्मरण था। संसद केवल एक इमारत या सामूहिक बैठकों का स्थल नहीं, वह केंद्र है जहां राष्ट्र के भविष्य की रूपरेखा बनती है। परंतु जैसे ही सत्र आरंभ हुआ, ठीक वही दृश्य सामने आया जो पिछले वर्षों की एक स्थायी प्रवृत्ति बन चुका है। नारे, हंगामा, वेल में उतरना और अंततः कार्यवाही स्थगित होना। ऐसे में यह समझना आवश्यक है कि लोकतंत्र विरोध की व्यवस्था पर चलता है। असहमति लोकतांत्रिक प्राण है। किंतु विरोध जब निरंतर अवरोध में बदल जाए, तो यह केवल सरकार या विपक्ष की समस्या नहीं रहती। यह लोकतांत्रिक संस्कृति की समस्या बन जाती है। पिछले कुछ सत्रों का डेटा स्पष्ट संकेत देता है कि संसद अपेक्षित स्तर पर काम नहीं कर पा रही। 2024 के मानसून सत्र में लोकसभा अपने निर्धारित समय का मात्र 29 प्रतिशत चली और राज्यसभा 34 प्रतिशत। सूचीबद्ध प्रश्नों में से 419 प्रश्नों पर केवल 55 उत्तर प्राप्त हुए। 2024 का शीतकालीन सत्र भी औसत से कम रहा। इससे पहले भी 2023 का बजट सत्र और कई अन्य सत्र, विभिन्न विवादों और बाहरी रिपोर्टों को आधार बनाकर, लगातार बाधित होते रहे। कुछ मुद्दे बाद में तकनीकी रूप से संदिग्ध या अधूरे पाए गए, लेकिन तब तक संसद का अनमोल समय नष्ट हो चुका था। यह प्रवृत्ति किसी एक दल की आलोचना नहीं, यह बताने योग्य चेतावनी है कि राजनीति की मौजूदा शैली अधीर होती जा रही है और बहस की परंपरा कमजोर पड़ रही है।

संसद का हर मिनट लगभग लाखों रुपये खर्च करता है और यह राशि जनता के टैक्स से आती है। संसद का बाधित होना केवल एक प्रशासनिक समस्या नहीं, यह आर्थिक संसाधनों के दुरुपयोग, नीति निर्माण की रुकावट और नागरिकों के विश्वास को कमजोर करने वाली स्थिति है। लोकतंत्र में विपक्ष की भूमिका अनिवार्य है। वह सरकार को कठोर प्रश्न पूछकर जवाबदेह बनाता है, गलतियों का खुलासा करता है और वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। फिर भी विपक्ष की शक्ति तभी सार्थक होती है जब वह सदन के भीतर बहस में सक्रिय हो। नारे बहस की जगह नहीं ले सकते और शोर रणनीति का विकल्प नहीं हो सकता। इसके विपरीत, सरकार ने पिछले 11 वर्षों में यह दिखाया है कि नीति-निर्माण और सुधार उसकी प्राथमिकता है व संसद के बाधित होने के बावजूद वह अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने में सक्षम रही है। नए संसद भवन का निर्माण, संसद की कार्यप्रणाली का डिजिटलीकरण, कागज-रहित कामकाज, अप्रासंगिक 1576 कानूनों को हटाना और 421 बिलों को पारित कराना, यह सब किसी भी सरकार के लिए असाधारण उपलब्धियां हैं। यह कार्य ऐसे समय में संभव हुआ है जब लगभग हर सत्र में किसी न किसी मुद्दे पर व्यवधान पैदा हुआ। वर्तमान शीतकालीन सत्र में सूचीबद्ध 13 महत्वपूर्ण विधेयक देश की अर्थव्यवस्था, सुरक्षा और प्रशासनिक ढांचे को सीधे प्रभावित करते हैं। परमाणु

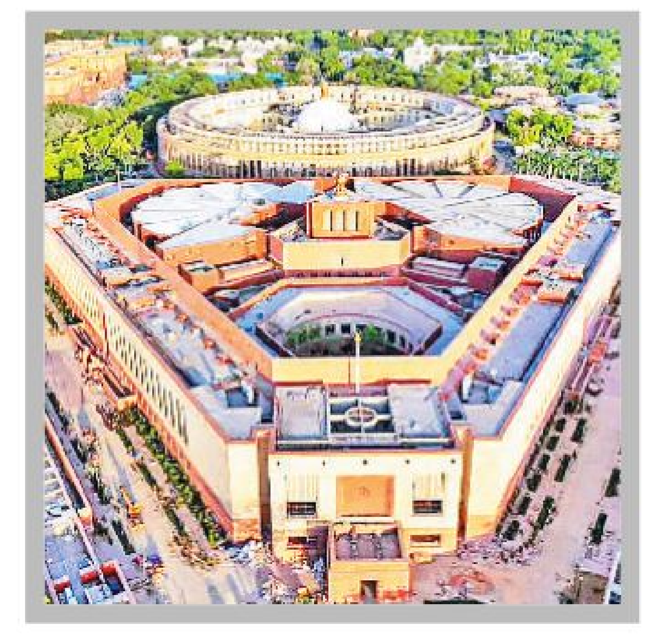

ऊर्जा प्रबंधन, राष्ट्रीय उच्च शिक्षा आयोग, दिवालियापन प्रक्रिया सुधार, सिक्योरिटीज मार्केट कोड, राजमार्ग संशोधन, बीमा और कर संबंधी कानूनों में बदलाव। ये सभी ऐसे निर्णय हैं जो भारत की उभरती अर्थव्यवस्था को अगले दशक की दिशा देंगे। ऐसे में जनता को यह जानने का अधिकार है कि इन महत्वपूर्ण विधेयकों पर गंभीर चर्चा क्यों नहीं हो पाती और सत्र बार-बार अवरोध का शिकार क्यों बनता है? आज भारत वैश्विक मंचों पर नीति-स्थिरता, सुधारवादी दृष्टि और प्रशासनिक दक्षता के कारण सम्मान प्राप्त कर रहा है। जब दुनिया ऊर्जा सुरक्षा, सप्लाई-चेन स्थिरता, तकनीकी प्रतिस्पर्धा और भू-राजनीतिक संतुलन की चुनौती देख रही है, भारत को अपनी नीतियों में त्वरित निर्णय और स्पष्ट दृष्टिकोण की आवश्यकता है। इस संदर्भ में संसद का हर सत्र देश की सामरिक और आर्थिक दिशा तय करने वाला निर्णायक क्षण बन जाता है। ऐसे समय में अवरोध की राजनीति केवल घरेलू नीतियों को नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत के प्रति विश्वास को भी प्रभावित कर सकती है। लोकतंत्र में बहस की संस्कृति केवल सत्ता बदलने का साधन नहीं, यह शासन की गुणवत्ता तय करती है। सरकार पर कठोर सवाल उठाना विपक्ष की जिम्मेदारी है, पर उन सवालों को प्रश्नकाल, शून्यकाल और विधायी बहसों में उठाया जाना चाहिए, न कि हंगामे में खो जाने देना चाहिए। लोकतंत्र को शोर की जरूरत नहीं, जवाबदेही की जरूरत है। फिर भी यह मानना गलत होगा कि सारा दोष केवल एक प्रवृत्ति या समूह का है। भारत की राजनीति में टकराव स्वाभाविक है, और कभी-कभी भावनाएं उग्र भी हो जाती हैं। इन सबसे परे परिपक्व लोकतंत्र वे हैं जो उस उग्रता को नियंत्रित कर लेते हैं, उसे बहस में ढाल देते हैं और नीति-निर्माण को प्राथमिकता देते हैं। यही वह राजनीतिक परिपक्वता है जिसे भारत को और मजबूती से अपनाने की आवश्यकता है। सरकार को जनता ने लगातार इसीलिए समर्थन दिया है क्योंकि उसका जोर रोजमर्रा की राजनीति के शोर से ऊपर उठकर परिणामों पर रहा है। जनधन योजना, जीएसटी, दिवालियापन कानून, डिजिटल पेमेंट संरचना, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, यूपीआई विस्तार, महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य ढांचे का विकास, राष्ट्रीय सुरक्षा पर स्पष्ट नीति। ये वो सुधार हैं, जिन्होंने भारत की विकास दिशा तय की है। यही कारण है कि जनता सरकार से यह उम्मीद करती है कि वह अपनी नीतिगत प्रतिबद्धताओं पर मजबूती से आगे बढ़ती रहे और इस प्रक्रिया में विपक्ष का सहयोग या कम से कम, उसका संवैधानिक आचरण उतना ही आवश्यक है।

संसद का समय राष्ट्र का समय है। यह किसी दल या नेता का निजी परिसर नहीं, यह 140 करोड़ भारतीयों की सामूहिक आकांक्षा का केंद्र है। इसलिए संसद की गरिमा केवल भाषणों में नहीं, आचरण में दिखनी चाहिए। बहसें हों, कठोर सवाल उठें, सरकार घिरे, लेकिन यह सब प्रक्रिया के भीतर हो। जब संसद रुकती है तो देश रुकता है। जब कार्यवाही ठप होती है, तो भविष्य ठहर जाता है। भारत आज निर्णायक मोड़ पर है-आर्थिक उछाल, वैश्विक भरोसा, युवाओं की बढ़ती आकांक्षाएं और तकनीकी क्रांति। ये सब संकेत देते हैं कि आने वाला दशक भारत का हो सकता है। फिर भी यह तभी संभव है जब संसद अपनी मूल भूमिका में लौटे। बहस, तथ्य, नीति और राष्ट्रहित के आधार पर निर्णय हों। सरकार अपनी उत्पादकता बनाए रखे और विपक्ष अपनी सार्थक भूमिका निभाए। लोकतंत्र की सुंदरता इसी संतुलन में है। यही वह संतुलन है, जिसे इस सत्र में पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है, क्योंकि अंततः लोकतंत्र की वास्तविक आवाज बहस में है, शोर में नहीं।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया haribhoomi@gmail.com पर दे सकते हैं।

मंदिर जैसे उपासना स्थल क्यों बनाए जाते हैं?

संकलित
दर्शन

जब ईश्वर का वास हृदय में माना गया है, तो मंदिर जैसे उपासना स्थल क्यों बनाए जाते हैं? मंदिरों की स्थापना के पीछे उद्देश्य था कि पूजा, अर्चना और यज्ञ आदि द्वारा पवित्र तन्मात्रओं यानी पंचभूतों के सूक्ष्म रूप की सृष्टि की जाए। किसी साधु हृदय व्यक्ति को पूजा का कार्यभार सौंपा जाए। स्थान का मन पर अदृश्य प्रभाव पड़ता है। चिकित्सालय में व्यक्ति को हर तरफ रोग और रोगी ही दिखते हैं। स्वस्थ व्यक्ति भी वहां अशक्त महसूस करने लगता है। हमारे शरीर से प्रतिदिन शुभ या अशुभ अदृश्य सूक्ष्म शक्ति-राशि का उत्सर्जन होता रहता है। मंदिर जाने वाला व्यक्ति काम, क्रोध और आलस्य बाहर छोड़कर ईश्वर के प्रति भक्तिभाव से जाता है। यह सामूहिक भक्ति या उपासना शुभ तन्मात्रओं व तरंगों का सृजन करती है। अतः यहां आगमन दुर्बल मन वाले मनुष्यों में ऊर्जा का संचार करता है। सज्जनों से ही प्रार्थना स्थलों की पवित्रता बनी रहती है। यदि मंदिर में असाधु व्यक्तियों का आवागमन बढ़ जाए तो स्थान अपनी पवित्रता खोने लगता है। पवित्र श्रवण मास में शिवलिंग पर दुग्ध, बेलपत्र, फल-फूल आदि चढ़ाकर पुण्य अर्जित करने की होड़ लगी रहती है। यदि ईश्वर है और वह हमारी प्रार्थना से प्रसन्न होता है तो वह एक बेलपत्र, अंजुली भर दूध या एक पुष्प से भी प्रसन्न हो जाएगा। सावन के महीने से इतर भी ये दृश्य आमतौर पर मंदिरों में आम होते हैं। यदि यह व्यवस्था सुचारु न हो तो अव्यवस्था स्वाभाविक है। इसी कारण कई मंदिरों में व्यक्तिगत रूप से भोग-अर्पण की मनाही है।

बच्चों को अच्छे संस्कार देने पर दें ध्यान

संकलित
प्रेरणा

महाभारत में दो खास परिवार हैं, पहला पांडव और दूसरा है कौरव। पांडव परिवार में कुंती और पांच पुत्र थे। जबकि कौरव परिवार में धृतराष्ट्र और गांधारी के साथ ही सौ पुत्र थे। पांडवों के पास सुख-सुविधाओं का अभाव था, जबकि कौरवों के पास सारी सुख-सुविधाएं थीं। महाभारत में कुंती अपने पांच पुत्रों के साथ वन में रह रही थीं, क्योंकि धृतराष्ट्र और दुर्योधन नहीं चाहते थे कि पांडु के पुत्रों को राज्य मिले। धृतराष्ट्र का पुत्र दुर्योधन अधर्मी था। वह बचपन से ही पांडव पुत्रों को परेशान कर रहा था। कुंती के पति पांडु शाप की वजह से मर चुके थे। पांडु की दूसरी पत्नी माद्री भी जीवित नहीं थी। इन दोनों के बाद कुंती को पांच पुत्रों का पालन करना था। तीन पुत्र कुंती के थे और दो पुत्र माद्री के थे। कुंती जानती थीं कि जंगल में तो कोई सुख-सुविधा तो मिलेगी नहीं, इसलिए कुंती ने बच्चों का पालन करते समय संस्कारों पर ज्यादा ध्यान दिया। दूसरी ओर कौरव पक्ष में धृतराष्ट्र अंधे थे, गांधारी ने भी आंखों पर पट्टी बांध ली थी। दुर्योधन और उसके भाई लगातार गलत काम कर रहे थे, लेकिन माता-पिता ने उनकी ओर ध्यान ही नहीं दिया। नतीजा ये हुआ कि सभी कौरव पुत्र अधर्मी हो गए। महाभारत युद्ध में जब श्रीकृष्ण को ये निर्णय लेना था कि किसके पक्ष में रहेंगे, तब उन्होंने धर्म मार्ग पर चल रहे पांडव पुत्रों को चुना। धृतराष्ट्र और गांधारी ने अपने पुत्रों को सुख-सुविधा की हर एक चीज दी थी, लेकिन अच्छे संस्कार नहीं दिए थे। संतान के मोह में धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को सही-गलत का फर्क नहीं बताया।

अंतर्मन

आज की पाती

अन्याय कभी भी सहन मत करो

यदि आज हम किसी अन्य के साथ हो रहे अन्याय का विरोध नहीं करते, तो यकीन मानिए एक दिन हम स्वयं भी उसी अन्याय का शिकार अवश्य ही होंगे। यही समय है, यही पल, यही क्षण है। ये इंतजार कभी भी नहीं कीजिए, कि केवल हमारे ही साथ कहीं कभी अन्याय होगा, तभी हम किसी सड़ी हुई विकृत व्यवस्था का विरोध करेंगे। फिर उस वक्त व्यर्थ के रुदन, रोने-धोने से कोई लाभ, कोई सकारात्मक प्राप्ति होना अत्यंत ही कठिन या संभवतः असंभव हो सकता है। एक बहुत प्रसिद्ध उक्ति है कि न्याय में देरी, लगभग अन्याय के ही बराबर है। देश, समाज, दुनिया में कहीं एक जगह, किसी एक के साथ हो रहा अन्याय, हर जगह अन्याय होना भी माना जा सकता है। आम तौर पर लोग अन्याय का विरोध नहीं करते हैं, जिसके परिणाम भयंकर होते हैं। इसलिए अन्याय कभी भी सहन मत करो। – पवन सोनी, धमतरी

करंट अफेयर

अमेरिकी रक्षा नीति में भारत से व्यापक संबंध बनाने पर जोर

अमेरिका के वार्षिक रक्षा नीति विधेयक में भारत के साथ विशेषकर 'क्वाड' के माध्यम से सहभागिता बढ़ाने पर जोर दिया गया है ताकि हिंद-प्रशांत क्षेत्र को मुक्त एवं खुला बनाए रखने के साझा लक्ष्य को आगे बढ़ाया जा सके और चीन से उत्पन्न चुनौतियों का सामना किया जा सके। रविवार को संसदीय नेताओं द्वारा जारी वित्त वर्ष 2026 के लिए राष्ट्रीय रक्षा प्राधिकार अधिनियम (एनडीएए) में हिंद-प्रशांत क्षेत्र में रक्षा गठबंधनों और साझेदारियों पर अमेरिकी संसद की राय को रेखांकित किया गया है। विधेयक में कहा गया है कि रक्षा मंत्री को चीन के साथ रणनीतिक प्रतिस्पर्धा में अमेरिका की तुलनात्मक बढ़त को बढ़ाने के लिए इस क्षेत्र में अमेरिकी रक्षा सहयोगियों और साझेदारियों को मजबूत करने के प्रयास जारी रखने चाहिए। इन प्रयासों में 'भारत के साथ अमेरिकी संबंधों को व्यापक बनाना, जिसमें चतुष्पक्षीय सुरक्षा संवाद (क्वाड) के माध्यम से द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संबंधों तथा सैन्य अभ्यासों में भागीदारी, रक्षा व्यापार का विस्तार तथा मानवीय सहायता और आपदा प्रतिक्रिया पर सहयोग के माध्यम से एक स्वतंत्र और खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र के साझा उद्देश्य को आगे बढ़ाना शामिल है।'

ऑफ बीट

क्या कॉफी वाकई कैफीन मुक्त होती है

डिकैफ़िनेटेड या 'कैफीन मुक्त' कॉफ़ी व्यापक रूप से उपलब्ध है, और इसकी खपत में वृद्धि होने की सूचना है। यहां आपको कैफीन मुक्त कॉफ़ी के बारे में जानने की आवश्यकता है: यह कैसे बनाई जाती है, स्वाद, लाभ – और क्या यह वास्तव में कैफीन मुक्त है। डिकैफ़ कैसे बनता है? कॉफ़ी बीन की सुगंध और स्वाद को बरकरार रखते हुए कैफीन को हटाना कोई आसान काम नहीं है। डिकैफ़ कॉफ़ी हरे, बिना भुने कॉफ़ी बीन्स से उनकी कैफीन सामग्री को हटाकर बनाई जाती है और इस तथ्य पर निर्भर करती है कि कैफीन पानी में घुल जाता है। कैफीन को हटाने के लिए तीन मुख्य तरीकों का उपयोग किया जाता है: रासायनिक सॉल्वैंट्स, तरल कार्बन डाइऑक्साइड (सीओ2), या विशेष फिल्टर वाला सादा पानी। इन सभी प्रसंस्करण विधियों में आवश्यक अतिरिक्त कदमों के कारण डिकैफ़ कॉफ़ी अक्सर अधिक महंगी होती है। अधिकांश डिकैफ़ कॉफ़ी विलायक-आधारित तरीकों का उपयोग करके बनाई जाती है क्योंकि यह सबसे सस्ती प्रक्रिया है। यह विधि दो और प्रकारों में विभाजित है: प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष। प्रत्यक्ष विधि में कॉफ़ी बीन्स को भाप में पकाना और फिर उन्हें बार-बार एक रासायनिक विलायक (आमतौर पर मेथिलीन क्लोराइड या एथिल एसीटेट) में भिगोना शामिल है जो कैफीन से बंध जाता है और इसे बीन्स से निकालता है।

ट्रेंड

नई चेतना का संचार

'सुप्रभातम कार्यक्रम में मैं एक विशेष हिस्से की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। यह है संस्कृत सुभाषित। इसके माध्यम से भारतीय संस्कृति और विरासत को लेकर एक नई चेतना का संचार होता है। यह है आज का सुभाषित।'
-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

मन को संतुष्टि मिली

'श्री हरमंदिर साहिब में शीश नवाने के बाद मेरे मन को संतुष्टि मिली। वाहेगुरु जी, आप अपनी कृपा दृष्टि सभी पर बनाए रखें।' मैं दिल्ली के लाल किले में गुरु तेग बहादुर के 350वें शहादत दिवस कार्यक्रम के सफल आयोजन के बाद शुक्रिया अदा करने आई हूं।
-रेखा गुप्ता, सीएम, दिल्ली

आप हमेशा मेरे साथ रहेंगे

धरम जी, जन्मदिन मुबारक हो..आपको गए हुए दो सप्ताह से अधिक समय बीत चुका है। मैं धीरे-धीरे खुद को संभाल रही हूं। आप हमेशा मेरे साथ रहेंगे" आपके साथ बिताई जीवन की 'खुशनुमा यादें' कभी मिट नहीं सकतीं। इन पलों को याद करके बड़ा सुकून व खुशी मिलती है।
-हेमा मालिनी, सांसद

बेहतर महसूस कर रहा

मैं अब काफी बेहतर महसूस कर रहा हूं। मुझे लगता है कि जिस दिन मैं यहां आया था, उस दिन से लेकर आज तक मैंने कौशल विकास और अभ्यास के कई सत्रों में हिस्सा लिया है। सीओई ने खेलने की अनुमति दे दी है।
-शुभमन गिल, उपकप्तान, भारतीय टी20 टीम

अपने विचार
हरिभूमि कार्यालय
टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से hbcgpati@gmail.com पर भेज सकते हैं।

खबर संक्षेप

रिलायंस इंफ्रा सौर विनिर्माण सुविधा करेगी स्थापित

नई दिल्ली। उद्योगपति अनिल अंबानी नीत रिलायंस समूह की इकाई रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर भारत के सबसे उन्नत, पूर्णतः एकीकृत सौर विनिर्माण परिवेश में से एक की स्थापना कर रही है जिसमें इन्गोट, वेफर्स, सेल और मॉड्यूल शामिल होंगे। विनिर्माण सुविधा अगली पीढ़ी की प्रौद्योगिकी से लैस होगी।

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल का आईपीओ 12 को खुलेगा

नई दिल्ली। आईसीआईसीआई बैंक की अनुषंगी कंपनी आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल एसेट मैनेजमेंट कंपनी (एएमसी) ने अपने आगामी आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के लिए 2,061 से 2,165 रुपये प्रति शेयर का मूल्य दायरा तय किया है। इससे कंपनी का मूल्यांकन 1.07 लाख करोड़ रुपये (करीब 11.86 अरब डॉलर) आंका गया है।

रुपया 14 पैसे टूटकर 90.09 प्रति डॉलर पर हुआ बंद

मुंबई। कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों और विदेशी पूंजी की लगातार निकासी के बीच रुपया सोमवार को 14 पैसे टूटकर अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 90.09 के भाव पर बंद हुआ। विदेशी पूंजी की निकासी और भारत-अमेरिका व्यापार समझौते पर अनिश्चितता जैसे कई दबावों के कारण निवेशकों की धारणा कमजोर बनी हुई है।

गिरता रुपया और एआई चिप की कमी से महंगा हो सकता है स्मार्ट टीवी व स्मार्टफोन

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

सितंबर 2025 में जीएसटी कट में कई प्रोडक्ट्स की कीमत कम हुई। इन प्रोडक्ट्स की लिस्ट में स्मार्ट टीवी भी हैं, जिन पर पहले 28 फीसदी जीएसटी लगता था। अब इन स्मार्ट टीवी पर 18 प्रतिशत जीएसटी लगता है। जीएसटी कम होने के साथ ही स्मार्ट टीवी भी सस्ते हुए है, लेकिन अब इनकी कीमत बढ़ सकती है।

- पिछले चार महीने में एआई चिप की कीमतों में 6 गुना तक वृद्धि हो गई

स्मार्ट टीवी की कीमत बढ़ने की दो वजह हैं। एक तो स्मार्ट टीवी में इस्तेमाल होने वाले एआई चिप और दूसरा लगातार गिरता रुपया। दोनों ही वजह से टीवी की कीमत आने वाले दिनों बढ़ सकती है।

रुपया अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 90 के पार पहुंच चुका

चिप्स की सप्लाई भी बनी चुनौती

ऐसे में चिप्स की कमी को पूरा करने के लिए एआई डेटा सेंटर्स को डीडीआर3 और डीडीआर4 चिप्स भी सप्लाई किए जा रहे हैं। इसकी वजह से स्मार्टफोन और स्मार्ट टीवी मेकर्स को चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। ज्यादातर फ्लैश मेमोरी चीन से इंपोर्ट होती हैं। इनका इस्तेमाल टीवी, मोबाइल, लैपटॉप, फ्लैश ड्राइव और यूएसबी डिवाइसों में होता है।

मेमोरी चिप्स हुई महंगी : सीईओ ने बताया कि पिछले चार महीनों में मेमोरी चिप्स की कीमत 6 गुना तक बढ़ गई है। इसकी वजह से टीवी की कीमतों में जीएसटी कट की वजह से जो रियायतें मिली थीं, वो खत्म हो सकती हैं। इसकी वजह से टीवी की मांग जो हाल में बढ़ी थी, उसे झटका लग सकता है।

फ्लैश मेमोरी की शॉर्टेज

दरअसल, पिछले कुछ वक्त से बाजार में फ्लैश मेमोरी की शॉर्टेज है। इसका असर सिर्फ टीवी के बाजार पर ही नहीं बल्कि स्मार्टफोन्स पर भी देखने को मिल रहा है। बीते कुछ दिनों में लांच हुए ज्यादातर फोन्स अपने पिछले वर्जन के मुकाबले काफी ज्यादा कीमत पर आए हैं। इंडस्ट्री से जुड़े लोगों का कहना है कि डीडीआर3 और डीडीआर4 मेमोरी चिप्स की सप्लाई कम हुई है। इसकी वजह एआई डेटा सेंटर हैं। एआई डेटा सेंटर्स में डीडीआर6 और डीडीआर7 चिप्स का इस्तेमाल होता है। लेकिन मांग बढ़ने से चिप मेकर्स सप्लाई पूरी नहीं कर पा रहे हैं।

कमजोर होता रुपया

पहले बात करते हैं रुपया की, जो अपने निचले स्तर पर पहुंचा हुआ है। रुपया डॉलर के मुकाबले 90 के पार पहुंच गया है। जिन प्रोडक्ट्स को इंपोर्ट किया जाता है, उनकी कीमत पर इसका असर होगा। एसपीपीएल के सीईओ अवनीत सिंह मरवाह के अनुसार रुपये के गिरने और मेमोरी चिप्स की कीमत बढ़ने से जीएसटी का जो फायदा लोगों को मिला था, उसके पूरी तरह से खत्म होने का डर नजर आने लगा है।

वाहन डीलर संगठन फाडा ने दी जानकारी

मोटर वाहन की खुदरा बिक्री नवंबर में बढ़ी, पंजीकरण में दो फीसदी तेजी: फाडा

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

त्योहारों के बाद मोटर वाहनों की खुदरा बिक्री में तेजी बनी रही और नवंबर में पंजीकरण में सालाना आधार पर दो प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसे यात्री वाहनों, तिपहिया वाहनों, वाणिज्यिक वाहनों और ट्रैक्टर की मजबूत मांग से बल मिला। वहान डीलर के संगठन फाडा ने सोमवार को यह जानकारी दी।

फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (फाडा) के अनुसार, नवंबर 2024 में 32,31,526 इकाइयों की तुलना में पिछले महीने कुल खुदरा बिक्री बढ़कर 33,00,832 इकाई हो गई। पिछले साल दीपावली एवं धनतेरस अक्टूबर के अंत में पड़े थे और वाहनों का पंजीकरण नवंबर में हुआ था, जिससे बिक्री में उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी।

त्योहारों के बाद भी बिक्री में तेजी जारी

फाडा के अध्यक्ष सी. एस. विग्नेश्वर ने बयान में कहा, ''जीएसटी दरों में कटौती और मूल उपकरण विनिर्माताओं (ओईएम) के डीलर द्वारा की जा रही खुदरा पेशकशों से ग्राहकों ने खरीद की योजना बनाई जिससे त्योहारों के बाद भी ग्राहकों की संख्या में लगातार बढ़ती रही।

- त्योहारों के बाद खुदरा बिक्री में तेजी बनी रही
- तिपहिया, वाणिज्यिक व ट्रैक्टर की मजबूत मांग रही
- जीएसटी दरों में कटौती का फायदा ग्राहकों को मिला

यात्री वाहनों का पंजीकरण 20 फीसदी बढ़ा

उद्योग निकाय के अनुसार, नवंबर में यात्री वाहनों का पंजीकरण 20 प्रतिशत बढ़कर 3,94,152 इकाई हो गया जो पिछले वर्ष की समान अवधि में 3,29,253 इकाई से अधिक है। माल एवं सेवा कर (जीएसटी) में कटौती, विवाह संबंधी मांग, उच्च प्रतीक्षा वाले मॉडलों की बेहतर आपूर्ति और कॉम्पैक्ट एसयूवी से निरंतर बढ़ावा के कारण इस खंड में वृद्धि देखी गई।

दोपहिया वाहनों की खुदरा बिक्री में गिरावट

नवंबर में दोपहिया वाहनों की खुदरा बिक्री में पिछले साल की तुलना में तीन प्रतिशत की गिरावट के साथ 25,46,184 इकाई रह गई। इस प्रकार, वाहनों का भंडार (स्टॉक) का समय 53-55 दिन से घटकर 44-46 दिन रह गया जो बेहतर मांग-आपूर्ति अनुशासन का संकेत है। नवंबर में दोपहिया वाहनों की खुदरा बिक्री सालाना आधार पर तीन प्रतिशत की गिरावट के साथ 25,46,184 इकाई रही।

कीमतों में कटौती से अक्टूबर में अच्छी बिक्री रही

विभिन्न श्रेणियों में कीमतों में कटौती से अक्टूबर में अच्छी खरीदारी हुई और नवंबर में भी ग्राहकों की संख्या में बढ़ोतरी जारी रही।'' उन्होंने कहा कि नवंबर 2025 में त्योहारों के बाद की पारंपरिक मंदी को दरकिनार कर दिया गया तथा पिछले वर्ष के असामान्य रूप से उच्च तुलनात्मक आधार के बावजूद मजबूत प्रदर्शन किया गया।

ट्रैक्टर पंजीकरण में 57 फीसदी की वृद्धि

उद्योग निकाय ने बताया कि ट्रैक्टर पंजीकरण में पिछले महीने सालाना आधार पर 57 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। यह नवंबर 2024 की 80,507 इकाइयों की तुलना में पिछले महीने 1,26,033 इकाई रहा। फाडा ने कहा, '' अगले तीन महीनों में भारत की मोटर वाहन खुदरा बिक्री का परिदृश्य सकारात्मक बना हुआ है, जिसे जीएसटी 2.0 कर युक्तिकरण, ग्रामीण आर्थिक संकेतकों में सुधार से निरंतर गति का समर्थन प्राप्त है...वहीं 74 प्रतिशत डीलर को सभी क्षेत्रों में वृद्धि की उम्मीद है....''

नए मॉडल की पेशकश में मांग बढने की उम्मीद

उद्योग निकाय ने कहा कि जनवरी में अपेक्षित मूल्य वृद्धि, 2026 में नए मॉडलों की पेशकश और विवाह संबंधी मांग से बिक्री को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। साथ ही फसल से होनी वाली आय से ग्रामीण क्षेत्रों में खुदरा मांग मजबूत रहने की उम्मीद है।

भारत अपने लिए लाभकारी स्रोतों से तेल खरीदने को आजादः रूस

मॉस्को। रूस ने सोमवार को कहा कि भारत एक संप्रभु राष्ट्र है और वह उन स्रोतों से तेल खरीदने के लिए आजाद है, जिन्हें वह लाभकारी मानता है। इसके साथ ही रूस सरकार ने पूरा भरोसा जताया कि भारत अपने आर्थिक हित सुनिश्चित करने की नीति पर कायम रहेगा। अमेरिका ने रूस से तेल एवं पेट्रोलियम उत्पादों की खरीद जारी रखने के लिए भारत पर 25 प्रतिशत अतिरिक्त शुल्क लगाया है। अगस्त के अंत में भारतीय वस्तुओं और सेवाओं के आयात पर कुल अमेरिकी शुल्क बढ़ाकर 50 प्रतिशत कर दिया गया। रूसी शासन मुख्यालय क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेसकोव ने कहा, ''भारत, एक संप्रभु राष्ट्र के रूप में विदेशी व्यापार करता है और ऊर्जा संसाधन वहीं से खरीदेगा है, जहां से उसे लाभ मिलेगा।'' वह पिछले शुक्रवार को नयी दिल्ली में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बीच हुई शिखर वार्ता के संदर्भ में संवाददाताओं से बात कर रहे थे।

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

धारा 82 सीआरपीसी देखिए

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त **श्याम गुप्ता पुत्रः राम कृष्ण गुप्ता पताः गुप्ता क्लिनिक, झुग्गी नं. 29, बस स्टैण्ड के पास, पुलिस लाइन एफ–ब्लॉक के सामने, मंगोलपुरी, दिल्ली और जी–5, राजीव नगर एक्सटेंशन, बेगमपुर, दिल्ली और गाँव घगुआ, थाना बंसी, सिद्धार्थ नगर, उत्तर प्रदेश** ने **CT No. 6664/2017 U/s 200 Cr. P.C., थानाः मंगोलपुरी, दिल्ली** के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है) और उस पर जारी किये गये गिरफ्तारी के वारंट को यह लिखकर लौटा दिया है कि उक्त अभियुक्त **श्याम गुप्ता** मिल नहीं रहा है और मुझे समाधानप्रद रूप से दर्शित कर दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **श्याम गुप्ता** फरार हो गया है (या उक्त वारंट की तामील से बचने के लिए अपने आप को छिपा रहा है।)

इसलिए इसके द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि **CT No. 6664/2017 U/s 200 Cr. P.C., थानाः मंगोलपुरी, दिल्ली** के उक्त अभियुक्त **श्याम गुप्ता** से अपेक्षा की जाती है कि वह इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए **दिनांक 16.01.2026** को या उससे पूर्व हाज़िर हो।

आदेशानुसार
सुश्री रितिका जैन
न्यायिक दंडाधिकारी प्रथम श्रेणी
उत्तर पश्चिम, रूम नं. 105
रोहिणी कोर्ट, दिल्ली

DP/16498/OD/2025 (Court Matter)

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

धारा 82 Cr Pc/84 भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता-2023 देखें

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त **सद्दाम पुत्र** ज़मील अहमद **निवासीः** म.नं. D-403, गली नं. 1, जनता कॉलोनी, वेलकम, दिल्ली ने **FIR No. 65/18 U/s 25/54/59 Arms Act. थानाः वेलकम, दिल्ली** के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है) और उस पर जारी किए गए गिरफ्तारी वारंट को यह लिख कर लौटा दिया गया है कि उक्त **सद्दाम** मिल नही रहा है और मुझे समाधानप्रद रूप में दर्शित कर दिया गया है कि उक्त **सद्दाम** फरार हो गया है (या उक्त वारण्ट की तामील से बचने के लिए अपने आपको छिपा रहा है)।

इसलिए इसके द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि **FIR No. 65/18 U/s 25/54/59 Arms Act. थानाः वेलकम, दिल्ली** के उक्त अभियुक्त **सद्दाम** से अपेक्षा की जाती है कि वे इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **09.02.2026** को या इससे पहले हाजिर हो।

आदेशानुसार
दिपाक्षी राना, JMFC-03
कमरा नं.19, कड़कड़डूमा कोर्ट, शाहदरा, दिल्ली

DP/16364/NE/2025 (Court Notice)

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

(धारा 82 सीआरपीसी देखिए)

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त **रिंकू पुत्र परमशी पताः बी–47 पहलादपुर बदरपुर, नई दिल्ली ने प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या 245/2010 धारा 279/337/304ए भा.द.स. के तहत** थानाः राजौरी गार्डन, दिल्ली के अधीन दंडनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है) और उस पर जारी किए गए गिरफ्तारी के वारंट को यह लिख कर लौटा दिया गया है कि उक्त **रिंकू** मिल नहीं रहा है और मुझे समाधान प्रद रूप में दर्शित कर दिया गया है कि उक्त **रिंकू** फरार हो गया है (या उक्त वारंट की तामील से बचने के लिए अपने आपको छिपा रहा है)। अतः इसके द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि **प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या 245/2010 धारा 279/337/304ए भा.द.स. के तहत थानाः राजौरी गार्डन, दिल्ली के उक्त रिंकू** से अपेक्षा की जाती है कि वे इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **16.01.2026** को या इससे पहले हाजिर हो।

आदेशानुसार
शशांक नंदन भट्ट
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी–02
पश्चिम कमरा नं.356,
तीस हजारी कोर्ट, दिल्ली

DP/16209/WD/2025

सूचना

सभी पाठकों से अनुरोध है कि हरिभूमि समाचार-पत्र में प्रकाशित विज्ञापनों (डिस्पले/क्लासीफाईड) में दिए गए तथ्यों/दावों के बारे में अपने विवेक से निर्णय लें और विज्ञापन के दावों की विश्वसनीयता को परखें। हरिभूमि समूह के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की विज्ञापनों के तथ्यों से सम्बन्धित कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

सेबी ने किया मर्चेंट बैंकर से संबंधित नियमों में बदलाव

नई दिल्ली। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने मर्चेंट बैंकर के लिए पूंजी पर्याप्तता ढांचा लागू करते हुए नियमों में बदलाव किया है। स्वीकृत गतिविधियों से न्यूनतम राजस्व को अनिवार्य किया जाएगा।

मुनाफावसूली से शेयर बाजार लुढ़का, 1 दिन में 7.5 लाख करोड़ स्वाहा

एजेंसी ▶▶| मुंबई

लगातार दो सत्रों की बढ़त के बाद सोमवार को घरेलू शेयर बाजार में तेज गिरावट हुई और सेंसेक्स 610 अंक लुढ़क गया जबकि निफ्टी 26,000 के स्तर से नीचे आ गया। ऊंचे स्तर पर मुनाफावसूली और विदेशी निवेशकों की बिकवाली जारी रहने से एक ही दिन में निवेशकों के 7.5 लाख करोड़ रुपए स्वाहा हो गए। अमेरिकी फेडरल रिजर्व की नीतिगत बैठक से पहले निवेशकों ने सतर्क रुख अपनाया हुआ है। बीएसई का 30 शेयरों पर आधारित मानक सूचकांक सेंसेक्स 609.68 अंक गिरकर 85,102.69 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय यह 836.78 अंक टूटकर 84,875.59 पर आ गया था। निफ्टी भी 225.90 अंक गिरकर 25,960.55 अंक पर आ गया। जियोजित

- सेंसेक्स 610 अंक लुढ़का, निफ्टी 26 हजार के नीचे आया
- विदेशी निवेशकों की बिकवाली से बाजार पर बना दबाव

इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा, ''बाजार में चौतरफा गिरावट देखने को मिली और निफ्टी 26,000 के स्तर के नीचे आ गया। निवेशक इस सप्ताह की फेडरल रिजर्व की नीतिगत बैठक से पहले सतर्क हो गए। नायर ने कहा कि मजबूत घरेलू वृद्धि आंकड़ों और आरबीआई की हालिया ब्याज दर कटौती के बावजूद छोटी अवधि की धारणा दबाव में है।

कमजोर मांग से सोना गिरकर 1,32,600 रुपये प्रति 10 ग्राम

नई दिल्ली। स्थानीय बाजारों में कमजोर मांग होने से सोमवार को राष्ट्रीय राजधानी के सराफा बाजार में सोने की कीमतें 300 रुपये गिरकर 1,32,600 रुपये प्रति 10 ग्राम रह गईं। अखिल भारतीय सराफा संघ ने यह जानकारी दी है। 99.9 प्रतिशत शुद्धता वाले सोने की कीमत शुक्रवार को 1,32,900 रुपये प्रति 10 ग्राम रही थी। हालांकि, चांदी की कीमतें 1,500 रुपये बढ़कर 1,85,000 रुपये प्रति किलोग्राम (सभी कर मिलाकर) हो गईं, जो लगातार दूसरे दिन की बढ़त दर्शाता है। पिछले कारोबार सत्र में यह 1,83,500 रुपये प्रति किलोग्राम पर बंद हुई थी। वैश्विक स्तर पर, हाजिर सोना भाव 0.18 प्रतिशत बढ़कर 4,205.26 डॉलर प्रति औंस हो गया। मिराए एसेट शेयरखान के जिंस प्रमुख प्रवीण सिंह ने कहा, ''अमेरिकी फेडरल रिजर्व की 10 दिसंबर को नीतिगत बैठक के पहले हाजिर सोना में बहुत ज़्यादा उतार-चढ़ाव देखा गया। यह लगभग 0.20 प्रतिशत की बढ़त के साथ 4,210 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रहा था।'

आधुनिक और भारतीय शिक्षा के समन्वय का मार्ग प्रशस्त करेगा भारतीय शिक्षा बोर्ड : डॉ. एनपी सिंह

प्रयागराज। एएमए कन्वेंशन सेंटर प्रयागराज में आयोजित संगोष्ठी में भारतीय शिक्षा बोर्ड के कार्यकारी अध्यक्ष एवं सेवानिवृत्त आईएएस डॉ. एन.पी. सिंह ने कहा कि भारतीय शिक्षा बोर्ड की स्थापना का उद्देश्य स्वदेशी शिक्षा पद्धति को पुनर्जीवित करते हुए आधुनिक शिक्षा के साथ भारतीय ज्ञान परंपरा का समन्वय स्थापित करना है। उन्होंने कहा कि आज देश को ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो विद्यार्थियों में आत्मगौरव, भारतीयता, नैतिकता, नेतृत्व क्षमता और वैश्विक दृष्टि दोनों का विकास कर सके। इसी उद्देश्य को केंद्र में रखकर भारतीय शिक्षा बोर्ड का गठन किया गया है, जिसे राष्ट्रीय और राज्य बोर्डों के समकक्ष मान्यता प्राप्त है। डॉ. सिंह ने बताया कि बोर्ड के पाठ्यक्रम में वेद, उपनिषद, गीता, जैन और बौद्ध दर्शन, भारतीय शूरवीरों की कथाएँ, संवैधानिक मूल्य, गुरुकुल परंपरा और आधुनिक विज्ञान-प्रौद्योगिकी को संतुलित रूप से जोड़ा गया है। उन्होंने कहा कि छोटे बच्चों को कहानियों और कविताओं के माध्यम से भारतीय दर्शनों से परिचित कराने तथा उच्च कक्षाओं में इन विषयों का विस्तृत अध्ययन कराने की व्यवस्था की गई है।

राशिफल

मेष — मन प्रसन्न रहेगा। नौकरी के लिए परीक्षा एवं साक्षात्कारादि कार्यों में सफलता मिलेगी। सन्तान के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

वृष — आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। नौकरी में कार्यक्षेत्र में सुधार होगा, परन्तु परिश्रम अधिक रहेगा।आय में कमी एवं खर्च अधिक की स्थिति रहेगी।

मिथुन — आत्मविश्वास में कमी रहेगी। परिवार का साथ मिलेगा। धर्म के प्रति श्रद्धाभाव रहेगा। वस्त्रों पर खर्च बढ़ सकते हैं। मन अशान्त रहेगा।

कर्क — परिश्रम अधिक रहेगा। सेहत का ध्यान रखें। कुटुम्ब-परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। भाइयों के सहयोग से कारोबार को गति मिल सकती है।

सिंह — व्यर्थ के क्रोध एवं वाद-विवाद से बचें।वस्त्रों आदि पर खर्च बढ़ सकते हैं। आय की स्थिति में सुधार होगा। सेहत का ध्यान रखें। सन्तान सुख में वृद्धि होगी।

कन्या — क्रोध एवं आवेश के अतिरेक से बचें। परिवार में शान्ति एवं सद्भाव बनाये रखने के लिए प्रयास करें। नौकरी में उच्च पद की प्राप्ति होगी।

तुला — स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। शैक्षिक कार्यों के सुखद परिणाम मिलेंगे। सम्पत्ति में वृद्धि होगी।

वृश्चिक — कार्यक्षेत्र का विस्तार होगा। शैक्षिक कार्यों पर ध्यान दें। मानसिक शान्ति बनाये रखें। माता का सानिध्य मिलेगा। धर्म के प्रति श्रद्धाभाव रहेगा।

धनु — मित्रों के साथ धार्मिक स्थान की यात्रा पर जा सकते हैं। घर-परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य होंगे। भवन की साज-सज्जा पर खर्च अधिक रहेंगे।

मकर — आलस्य में वृद्धि हो सकती है। कारोबार में परिश्रम अधिक रहेगा, लेकनि परिणाम संदिग्ध हैं। शैक्षिक कार्यों में व्यवधान आ सकते हैं।

कुंभ — खर्च बढ़ेंगे। आय के साधन बन सकते हैं। नौकरी में इच्छा-विरुद्ध कोई अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। परिश्रम की अधिकता रहेगी।

मीन — कारोबार में सुधार के लिए भाई-बहनों का सहयोग मिल सकता है। जीवनसाथी से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। रहन-सहन कष्टदायी होगा। तनाव से बचें।

शब्द पहेली - 6072

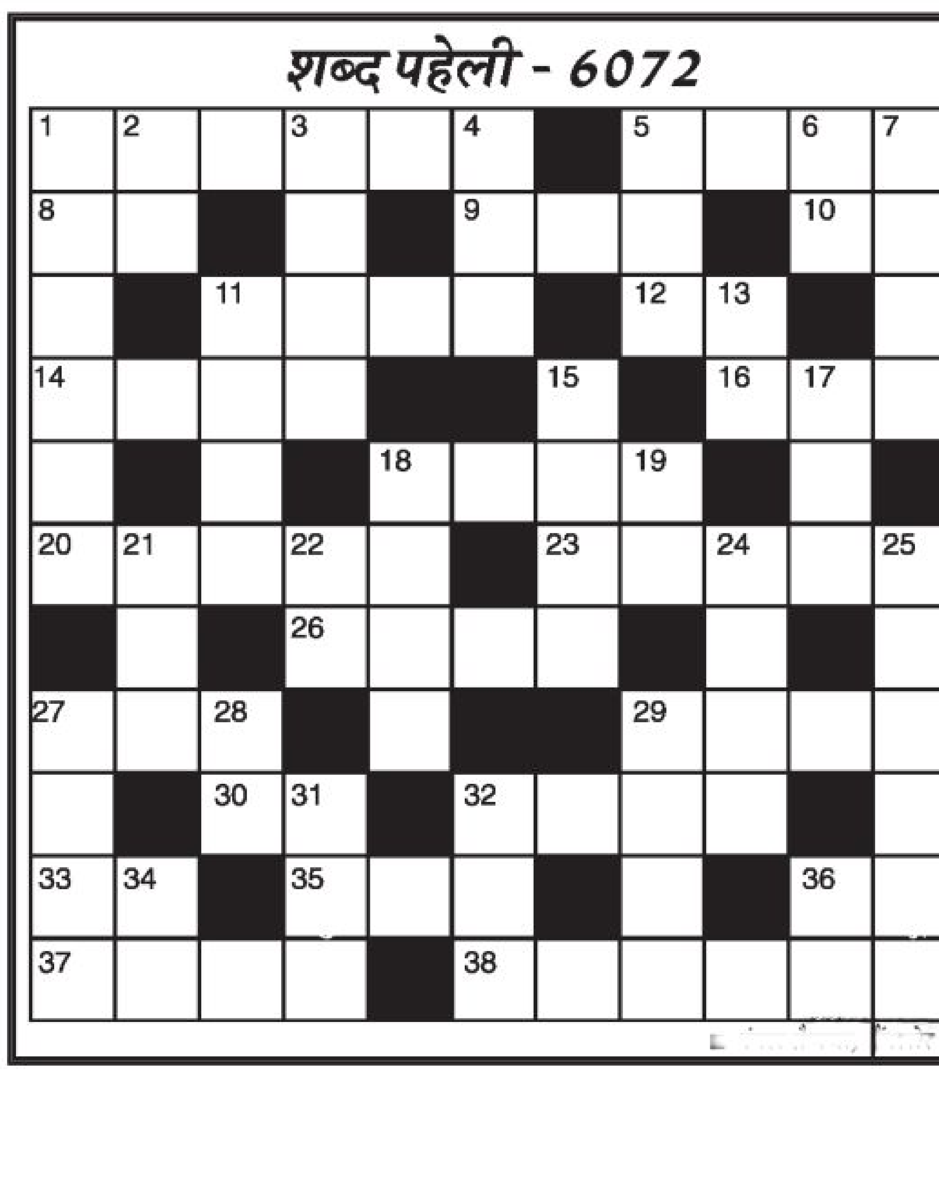

बाएँ से दाए
1.पवनपुत्र,हनुमान-3,3
5.मजार-4
8.बगीचा (अंग्रेजी में-2)
9.तहजीब,तमीज-3
10.सत्य,तेज-2
11.पतंगा-4
12.ईसाई साध्वी-2
14.इंकार करना-4
16.उत्तम,आदर्शवादी-3
18.रोमांच,उद्वेग-4
20.पागलपन,सनक-5
23.पालन-पोषण-5
26.आनंद लेना-2,2
27.बेईमानी,अमानत में खयानत-3
29.अप्रधान,गौण-4
30.ठाठ-बाट-2
32.अति काला,एक प्रकार की लकड़ी-4
33.रहस्य-2
35.गरुड़ जो रावण से लड़ा था-3
36.कमरा,रूम-2
37.जल में रहने वाला-4
38.धर्म के उपदेश देनेवाला-6

ऊपर से नीचे
1.पलायन करने वाला-6
2.जंगल-2
3.दांत से छोटे टुकड़े करना-4
4.जिव्हा,जीभ-3
5.घर,भवन-3
6.यात्री गाड़ी-2
7.चौबीस घंटे का समय-4
11.परीक्षण करना-4
13.भीगा हुआ-2
15.खीजना-4
17.उपस्थिती-3
18.रोमांच,उद्वेग-4
19.संपत्ति-2
21.उचित,सही-3
22.पंख,पराया-2
24.देश निर्वासन-4
25.अंगरक्षक-3,3
27.हाथी-4
28.मद,सरूर-2
29.अनुसार,समान-4
31.निगाह,दृष्टि-3
32.हथियार-3
34.पानी,नीर-2
36.सिगरेट का धुआं खींचना,सुट्टा-2

शब्द पहेली- 6071 का हल

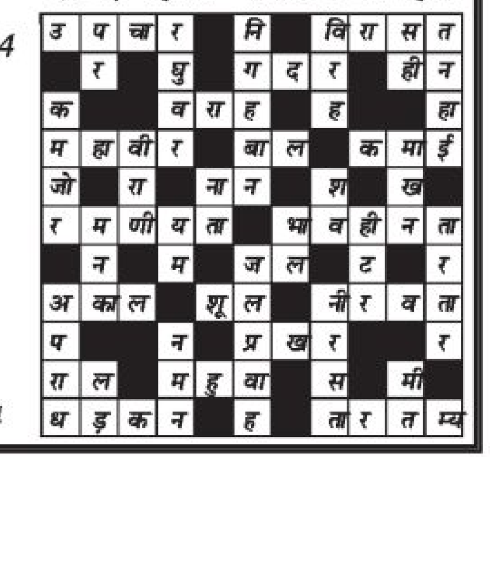

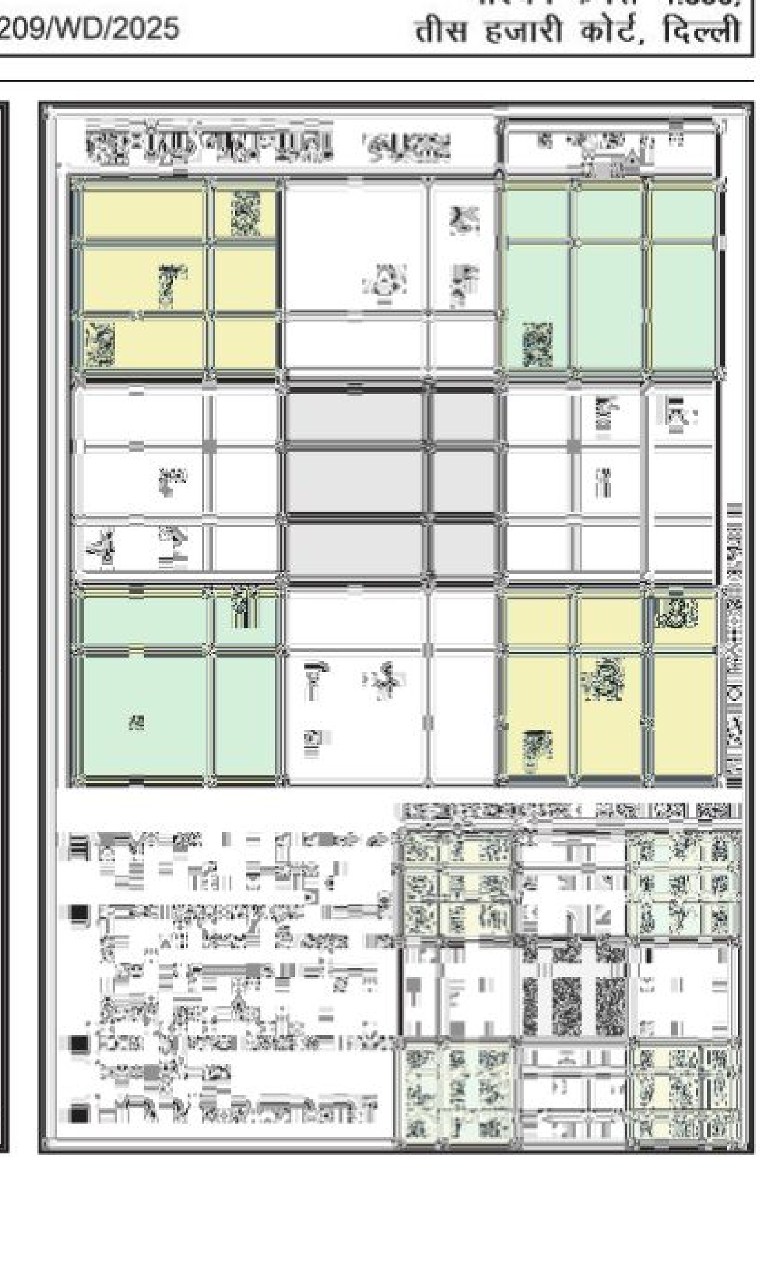

कल्पमेधा

सुंदरता और सच जीवन के दो मुख्य उपहार हैं। सुंदरता मुझे एक प्यार भरे हृदय में मिली और सच्चाई एक मजदूर के हाथों में।

- खलील जिब्रान

लापरवाही की आग

किसी भी हादसे का मुख्य सबक यह होना चाहिए कि उस तरह की घटना से बचने के लिए हर उपाय किए जाएं, ताकि वैसा दोबारा न हो। मगर आए दिन लगभग समान दिखने वाले हादसों की खबरें आती रहती हैं, उसमें नाहक लोगों की जान जाती है और कई बार एक ही प्रकृति की लापरवाही आम पाई जाती है। गोवा के एक नाइट क्लब में शनिवार रात जिस तरह आग लगी और उसमें कम से कम पच्चीस लोगों की जान चली गई, उससे फिर यही पता चलता है कि सुरक्षा और व्यवस्था संबंधी जरूरी पक्ष को लेकर लापरवाही के नतीजे क्या हो सकते हैं। आग लगने के वास्तविक कारण जांच के बाद ही सामने आएंगे, मगर किसी भी जगह ऐसे हादसे में जानमाल की क्षति का मुख्य कारण बचाव के पर्याप्त इंतजाम न होने से आग का तेजी से फैलना होता है। खबरों के मुताबिक, गोवा के उस क्लब में भी आपात स्थिति में बाहर निकलने का रास्ता बेहद संकरा था, जिसमें कई लोग फंस गए। विडंबना यह है कि नाइट क्लब या ज्यादा लोगों के जमावड़े वाली जगहों पर चकाचौंध पैदा करने के लिए भारी खर्च किए जाते हैं, लेकिन आपात स्थिति में बचाव को लेकर अमूमन सभी जरूरी पहलुओं को लेकर घोर लापरवाही बरती जाती है।

किसी भी हादसे की स्थिति में सबसे बुनियादी और प्राथमिक जरूरत बचाव का उपाय होती है। मगर जानमाल के व्यापक नुकसान की लगभग सभी घटनाओं में कारण के तौर पर एक विचित्र तरह की समानता पाई जाती है कि वहां अग्नि शमन की व्यवस्था या तो नहीं थी या फिर वह काम नहीं कर रही थी। निश्चित तौर पर यह संबंधित भवन के मालिक और प्रबंधन की लापरवाही होती है, लेकिन अक्सर लोगों के जमा होने की जगहों पर आग लगने की स्थिति में बचाव इंतजामों की जांच करने के मामले में सरकार या संबंधित महकमों की जिम्मेदारी क्या होती है? गोवा को एक अहम पर्यटक स्थल और अपेक्षया एक सुरक्षित जगह के रूप में देखा जाता रहा है। मगर नाइट क्लब में आग लगने से जिस तरह पच्चीस लोगों की जान चली गई, उसके बाद वहां के जोखिम को लेकर भी अब सवाल उठने लगे हैं। इस हादसे के बाद गोवा के बाकी क्लबों में भी अग्नि शमन, सुरक्षा और बचाव के उपायों की स्थिति की जांच की मांग की जा रही है।

सवाल है कि आग लगने की स्थिति में बचाव या सुरक्षा का इंतजाम एक अनिवार्य व्यवस्था क्यों नहीं होनी चाहिए, जिसमें मामूली लापरवाही की भी गुंजाइश न हो! अव्वल तो समूचा ढांचा ऐसा तैयार होना चाहिए, जिसमें कोई सामान्य तकनीकी गड़बड़ी बड़े हादसे में तब्दील न हो। दूसरे, किसी भी वजह से आग लगने की आशंका के मद्देनजर हर स्तर पर बचाव के ऐसे पुख्ता इंतजाम किए जाएं, ताकि उस पर तुरंत काबू पाया जा सके। यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सभी इमारतों तक अग्नि शमन सेवा के वाहनों की आसान पहुंच हो। कई बार आग व्यापक तबाही का कारण इसलिए बनती है कि उस पर काबू पाने के उपाय अपर्याप्त होते हैं, लोगों के बाहर भागने और अग्नि शमन वाहनों के घटनास्थल पहुंचने का रास्ता संकरा या बाधित होता है। हादसे और उसमें लोगों की मौत के बाद सरकार तथा प्रशासन की ओर से कुछ लोगों के खिलाफ कार्रवाई और हताहतों या उनके परिजनों के लिए मुआवजे की घोषणा की औपचारिकता जरूर पूरी की जाती है, लेकिन नियम-कायदों पर अमल को लेकर अगर प्रशासनिक सक्रियता सामान्य दिनों में भी कायम रहे तो शायद कई त्रासदियों से बचा जा सकता है।

जानलेवा जश्न

शादी समारोहों या जश्न के दौरान खुशी का इजहार करने के लिए हथियारों का प्रदर्शन और गोली चलाने की बढ़ती मानसिकता न केवल सामाजिक स्तर पर भय का वातावरण बना रही है, बल्कि इससे अपराध का एक नया रूप भी उभर कर सामने आ रहा है। खुशी की इस तथाकथित अभिव्यक्ति से आए दिन निर्दोष लोगों की जान जा रही है। उत्तर प्रदेश के एटा जिले में हाल ही में विवाह समारोह के दौरान ऐसी ही एक घटना में दो नाबालिग लड़कों की मौत हो गई और जश्न का माहौल अचानक मातम में बदल गया। सवाल है कि इस तरह की गैर-कानूनी गतिविधियों पर आखिर रोक क्यों नहीं लग पा रही है? पुलिस भी तभी कार्रवाई करती नजर आती है, जब जश्न में गोली चलने से किसी की मौत हो जाती है। अगर कोई अनहोनी न हो, तो समारोह में उत्साह और प्रसन्नता दिखाने के लिए गोली चलाने को आमतौर पर सामान्य माना जाता है। इसी लापरवाही का नतीजा है कि इस तरह की घटनाओं में जान जाने का जोखिम हमेशा बना रहता है।

दरअसल, विवाह समारोहों और अन्य निजी कार्यक्रमों में हथियारों का प्रदर्शन तथा हवा में गोली चलाने का चलन अपनी शान दिखाने का जरिया बन गया है। सामाजिक और मानवीय पहलू से इस बात पर भी विचार करना जरूरी है कि समारोह के आयोजकों की ओर से अपने रिश्तेदारों और संबंधियों को अपने साथ हथियार लाने की अनुमति देना क्या उचित है। जबकि खुशी में गोली चलाने से किसी की मौत हो जाने की खबरें आए दिन आती रहती हैं। शस्त्र (संशोधन) अधिनियम 2019 के मुताबिक, सार्वजनिक समारोहों, धार्मिक स्थलों, शादियों या किसी अन्य कार्यक्रम में गोला-बारूद और आग्नेयास्त्रों के इस्तेमाल पर प्रतिबंध है। इसके बावजूद अगर इनका बेरोकटोक इस्तेमाल हो रहा है, तो इससे पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवाल उठना भी स्वाभाविक है। यह सुनिश्चित करना पुलिस का कर्तव्य है कि लाइसेंसी हथियार का कहीं बेजा इस्तेमाल तो नहीं हो रहा है। अब समय आ गया है कि हथियार लाइसेंस की प्रक्रिया को भी कड़ा किया जाए और इसका दुरुपयोग रोकने के लिए एक मजबूत तंत्र विकसित किया जाए।

कपास किसानों की बढ़ती चुनौतियां

फरवरी, 2021 में किसान आंदोलन के बाद देश के किसानों के हित को ध्यान में रख कर कपास पर आयात शुल्क लगाया गया था। मगर इस वर्ष अगस्त में इसे खत्म कर दिया गया। इससे किसानों को अब अपनी फसलों की चिंता सताने लगी है।

आरके विश्वकर्मा

भारत में कच्चे कपास के आयात पर पहले पांच फीसद मूल सीमा शुल्क, पांच फीसद कृषि अवसंरचना और विकास उपकर तथा इन दोनों पर दस फीसद सामाजिक कल्याण अधिभार, यानी कुल मिलाकर ग्यारह फीसद का सीमा शुल्क लगता था। फरवरी, 2021 में किसान आंदोलन के बाद देश के कपास किसानों के हित को ध्यान में रख कर यह शुल्क लगाया गया था। मगर अब सरकार ने कपड़ा उद्योग की मांग पर कच्चे कपास के आयात पर सभी सीमा शुल्क में 19 अगस्त, 2025 से छूट दे दी है। इस फैसले की सराहना देश के कपड़ा उद्योग ने तो की ही, अमेरिकी कृषि विभाग ने भी बाकायदा बयान जारी करके इसे महत्त्वपूर्ण कदम बताया और कहा कि इससे अमेरिकी कपास का भारत में निर्यात बढ़ेगा। इस निर्णय से भले ही अमेरिका को फायदा हो, लेकिन देश के किसान इससे आहत हैं।

'ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव' (जीटीआरआइ) के मुताबिक, आयात शुल्क में इस छूट का सबसे बड़ा लाभ निश्चित तौर पर अमेरिका को ही होने वाला है। भारत को कपास निर्यात करने वाला अमेरिका सबसे बड़ा देश है, और वहा कपास की नई फसल बाजार में जुलाई-अगस्त से आनी शुरू हो जाती है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आयात शुल्क उस वक्त खत्म किया गया, जब भारतीय किसानों के कपास की नई उपज बाजार में आने ही वाली थी। देश में कपास की फसल अक्तूबर से सितंबर तक होती है। इसी दौरान किसानों को कपास के अच्छे दाम मिलने की उम्मीद होती है। अब विदेश से बड़े पैमाने पर कपास आने से घरेलू कपास की कीमतें गिर जाएंगी।

सीमा शुल्क में छूट की अधिसूचना जारी होने के दिन भारतीय कपास निगम यानी 'काटन कार्पोरेशन आफ इंडिया' (सीसीआइ) ने कपास की कीमत 600 रुपए प्रति कैंडी (एक कैंडी- 356 किग्रा) कम कर दी और उसके दूसरे दिन फिर 500 रुपए प्रति कैंडी कम कर दी। इस तरह महज दस दिनों के भीतर ही कपास के न्यूनतम मूल्य में कुल 1700 रुपए प्रति कैंडी की कमी खुद सरकार की ओर से की गई। अमेरिका की बात की जाए, तो कपास उत्पादन में वह दुनिया में तीसरे स्थान पर है, लेकिन इसकी घरेलू खपत वहां बहुत कम है। कुल उत्पादन का लगभग 85 फीसद कपास वह निर्यात करता है। पहले अमेरिकी कपास का सबसे बड़ा आयातक चीन था, लेकिन डोनाल्ड ट्रंप की शुल्क नीति के कारण चीन वहां से कपास का आयात कम करता जा रहा है। इसलिए अमेरिका को एक वैकल्पिक बाजार की तलाश थी, जो उसे भारत में नजर आ रहा है। हालांकि, भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा कपास उत्पादक देश है और यहां घरेलू खपत कुल उत्पादन का औसतन 95 फीसद है। मगर यहां उच्च गुणवत्ता वाले या ज्यादा लंबे रेशे वाले कपास (ईएलएस) की पैदावार कम होती है और उसकी जरूरत को आयात के जरिए पूरा किया जाता है।

अमेरिकी कृषि व्यापार निकाय काटन काउंसिल इंटरनेशनल (सीसीआइ) तो इस शुल्क को हटाने की मांग लंबे समय से कर रहा था। दरअसल, उच्च गुणवत्ता वाले या अति लंबे रेशे के कपास के आयात पर से ग्यारह फीसद

शुल्क सरकार ने 20 फरवरी, 2024 से समाप्त कर दिया है, लेकिन इससे छोटे रेशे के कपास आयात पर शुल्क जारी था, जिसे इस वर्ष अगस्त में खत्म किया गया। इस कदम से सरकार अमेरिकी शुल्क की मार से भारतीय वस्त्र निर्यातकों के मुनाफे को तो कुछ हद तक सुरक्षित कर लेगी, लेकिन इसका

> **देश में लगभग साठ लाख किसान परिवार कपास की खेती से अपनी आजीविका चलाते हैं। इसके अतिरिक्त 4-5 करोड़ दूसरे लोग भी इसके व्यापार से जुड़े हैं। यहां पिछले वर्ष कुल 114.47 लाख हेक्टेयर कृषि योग्य जमीन पर कपास की खेती की गई, जो पूरी दुनिया में कपास की खेती के रकबे 314.79 लाख हेक्टेयर का 36.36 फीसद है। रकबे के लिहाज से भारत पूरी दुनिया में पहले स्थान पर है और उत्पादन के मामले में चीन के बाद दूसरे स्थान पर है। मगर यहां प्रति हेक्टेयर कपास की पैदावार (437 किग्रा प्रति हेक्टेयर) विश्व की औसत पैदावार (833 किग्रा प्रति हेक्टेयर) से काफी कम है।**

खमियाजा देश के किसानों को भुगतना पड़ेगा। खासकर तब जब किसानों की आय दोगुनी करने का जोर-शोर से दावा किया जा रहा है।

कपास से सीमा शुल्क हटाने को लेकर जारी बयान में कपड़ा निर्माताओं और उपभोक्ताओं के हितों की बात तो कही गई थी, लेकिन कपास किसानों का जिक्र करना सरकार भूल गई। दूसरी बार जारी बयान में कहा गया कि भारतीय कपास निगम लिमिटेड द्वारा संचालित न्यूनतम समर्थन मूल्य व्यवस्था के माध्यम से किसानों के हितों की रक्षा की जाती है, जो यह सुनिश्चित करती है कि किसानों को उनकी उत्पादन लागत से कम से कम पचास फीसद अधिक मूल्य प्राप्त हो। न्यूनतम समर्थन मूल्य किसान की उपज का वह मूल्य है, जिसका निर्धारण सरकार इसलिए करती है कि किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य मिल सके और इसे सुनिश्चित करने के लिए सरकार किसानों से कपास खुद खरीदती है। अब यहां दो बाते हैंः पहली यह कि सरकार कपास का न्यूनतम समर्थन मूल्य कितना तय करती है और दूसरी यह कि इस मूल्य पर सरकार किसानों से कितना कपास खरीदती है!

सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य का निर्धारण ए-2 एफएल फार्मूले के आधार पर करती है। इसके अनुसार, मध्यम रेशे के कपास का न्यूनतम समर्थन मूल्य वर्ष 2024-25 के लिए 7,121 रुपए प्रति कुंतल निर्धारित किया गया है। मगर किसान संगठनों की मांग है कि यह सी-2 फार्मूले के आधार पर निर्धारित किया जाना चाहिए, जिसके अनुसार यह मूल्य 10,075 रुपए प्रति कुंतल होना चाहिए। मालूम हो कि न्यूनतम समर्थन मूल्य के निर्धारण के लिए सी-2 का फार्मूला डा एमएस स्वामीनाथन ने सुझाया था। भारत में कपास की खेती मुख्यतः लगभग 99 फीसद खरीफ फसल के रूप में होती है, जबकि तमिलनाडु और उसके आसपास के दूसरे राज्यों के कुछ हिस्सों में यह रबी की फसल है। भारत में लगभग साठ लाख किसान परिवार कपास की खेती से अपनी आजीविका चलाते हैं। इसके अतिरिक्त 4-5 करोड़ दूसरे लोग भी इसके व्यापार से जुड़े हैं। यहां पिछले वर्ष कुल 114.47 लाख हेक्टेयर कृषि योग्य जमीन पर कपास की खेती की गई, जो पूरी दुनिया में कपास की खेती के रकबे 314.79 लाख हेक्टेयर का 36.36 फीसद है। रकबे के लिहाज से भारत पूरी दुनिया में पहले स्थान पर है और उत्पादन के मामले में चीन के बाद दूसरे स्थान पर है। मगर यहां प्रति हेक्टेयर कपास की पैदावार (437 किग्रा प्रति हेक्टेयर) विश्व की औसत पैदावार (833 किग्रा प्रति हेक्टेयर) से काफी कम है।

पिछले दस वर्षों में सरकार ने न्यूनतम समर्थन मूल्य पर कपास की खरीद पर कुल 1,17,348.13 करोड़ खर्च किए। यह एक निवेश की तरह है, सीसीआइ किसानों से कपास खरीद कर इसे बाजार में बेचती है। मगर किसानों की आर्थिक स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही है। इस साल के पहले तीन माह में महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र के करीब 767 किसानों ने आत्महत्या कर ली। बीते दशक में कपास का कुल उत्पादन 3370.72 लाख गांठें (एक गांठ-170 किग्रा) रहा और न्यूनतम समर्थन मूल्य पर कुल खरीद मात्र 380.58 लाख गांठें। इस तरह कपास का प्रति वर्ष औसत उत्पादन रहा 337 गांठें और न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद केवल 38 गांठें। यानी कुल उपज का मात्र 11.27 फीसद कपास ही सरकार की ओर से खरीदा गया। यही नहीं, प्रति वर्ष कपास की खेती करने वाले लगभग साठ लाख किसानों में से केवल 7.88 लाख किसानों से ही न्यूनतम समर्थन मूल्य पर कपास की खरीददारी की गई। इन हालात में किसानों के हित की रक्षा कैसे होगी?

रिश्तों की डोर

दुनिया मेरे आगे

बेला गर्ग

दुनिया आज ऐसी गति से बदल रही है कि मनुष्य स्वयं को इस परिवर्तन के बीच खोता हुआ महसूस करने लगा है। खाने-पीने से लेकर कपड़ों तक के मामले में हर दिन नए ब्रांड की बड़ी दुकानें बाजार में उतर रही हैं। इसी तरह सौंदर्य प्रसाधन सामग्री, सौंदर्य प्रयोगशालाएं, जिम, योगासन केंद्र जीवन का हिस्सा बन गए हैं। तकनीकी चमत्कारों, उपभोक्तावादी संस्कृति और भौतिक उपलब्धियों की चमक ने जीवन को बाहर से जितना उजला बनाया है, भीतर से उतना ही अंधेरा बढ़ा है। हर ओर चमकते व्यावसायिक माल, ऊंची इमारतें, नामी और महंगी ब्रांड वाली वस्तुएं, नई-नई संभ्रांत कालोनियां- ये सब विकास की तस्वीर के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं, लेकिन इन्हीं चमकीली दीवारों के पीछे इंसानी रिश्तों में गहरी दरारें उभर रही हैं। आज व्यक्ति चारों ओर से घिरा होकर भी अकेला होता जा रहा है। परिवार बिखर रहे हैं, संबंधों में कृत्रिमता बढ़ रही है और मानवीय मूल्य धीरे-धीरे समाप्त हो रहे हैं। चकाचौंध के पीछे एक गहरी अंधेरी सच्चाई छिपी है- इंसानी रिश्तों का क्षरण, मानवीय संवेदनाओं का पतन और मूल्यों की लगातार टूटती हुई परतें।

आज विकास की दौड़ में इंसान जितना बाहर से सफल दिख रहा है, भीतर से उतना ही खाली, अकेला और विखंडित होता जा रहा है। समाज आधुनिक हो रहा है, पर मनुष्य भावनात्मक रूप से गरीब। सारी चहल-पहल, उसका स्तर और गुणवत्ता आधुनिकता की चकाचौंध से आलोकित होकर जीवन को निर्धारित कर रही है। कभी मानव जीवन का सार संवेदनाओं, संवाद और सह-अस्तित्व पर आधारित था, लेकिन आज की व्यस्तता और सुविधावाद ने मनुष्य को इतना यांत्रिक बना दिया है कि जीवन की मूल भावनाएं ही उसके हाथ से फिसल गई हैं। घरों में भी लोग जीवन साझा नहीं करते। आपस में कोई जीवंत संवाद नहीं। माता-पिता के पास बच्चों के लिए समय नहीं, बच्चों के पास माता-पिता की भावनाएं समझने का अवसर नहीं। रिश्तों में गर्माहट की जगह औपचारिकता और दायित्व की जगह सुविधा ने ले ली है। संवाद का स्थान संदेशों ने ले लिया है और संवेदनाओं का स्थान 'इमोजी' ने।

आज इंसान को इस आधार पर आंका जा रहा है कि उसके पास क्या है, इससे नहीं कि वह क्या है। महंगी कारें, बड़े फ्लैट, विदेशी यात्राएं, पांच-सितारा भोजन- इन सबको आधुनिक जीवन का सूचक माना जाने लगा है। आज भौतिक संपन्नता बढ़ी है, पर मानसिक और भावनात्मक गरीबी भयावह रूप से फैल रही है। पहले संयुक्त परिवारों में एक-दूसरे का साथ, सहयोग और सुरक्षा मिला करती थी। जिन रिश्तों में पहले आत्मीयता थी, अब वे लेन-देन और औपचारिकता में बदल रहे हैं। नए-नए धनाढ्य क्षेत्रों और उच्च तकनीकी से लैस कालोनियों में रहने वाले लोगों के घर भले ही बड़े होते जा रहे हों, पर दिलों के कमरे सिकुड़ते जा रहे हैं।

> **आज भौतिक संपन्नता बढ़ी है, पर मानसिक और भावनात्मक गरीबी भयावह रूप से फैल रही है। पहले संयुक्त परिवारों में एक-दूसरे का साथ, सहयोग और सुरक्षा मिला करती थी। जिन रिश्तों में पहले आत्मीयता थी, अब वे लेन-देन और औपचारिकता में बदल रहे हैं।**

अगर विकास का अर्थ केवल तेजी से दौड़ना है, तो यह दौड़ व्यक्ति को भीतर से थका रही है। अगर विकास का अर्थ केवल उपभोग है, तो यह उपभोग व्यक्ति की आत्मा को खोखला कर रहा है। हम उस समाज में पहुंच गए हैं, जहां मनुष्य मशीन की तरह काम करता है और मशीनों से भावनाएं सीखने की कोशिश करता है। प्रतिस्पर्धा इतनी तीव्र हो चुकी है कि व्यक्ति दूसरे से बेहतर होने की चाह में स्वयं से दूर चला गया है। हर कोई अपने पड़ोसी, सहकर्मी, रिश्तेदार से तुलना करता है और उसी तुलना के कारण हीनभावना, जलन और तनाव पनपते हैं। यह प्रतिस्पर्धा केवल आर्थिक या पेशेवर नहीं, बल्कि जीवनशैली की भी हो गई है। कौन किस प्रकार का जीवन जी रहा है, किसके पास कौन-सा ब्रांड है, किसके घर में कौन-सी सुविधा है- इन सब बातों ने समाज को भीतर से तोड़ दिया है।

परिवार कभी जीवन की सुरक्षा-दीवार था। आज वह दीवार दरक रही है। संयुक्त परिवार तो लगभग समाप्त हो चुके हैं और एकल परिवार भी टूटन की कगार पर हैं। तकनीक ने दुनिया को छोटा किया, पर दिलों के बीच की दूरी बढ़ा दी। आज का मनुष्य स्वयं को साबित करने की दौड़ में इतना खो गया है कि उसे अपने ही लोग बोझ लगने लगे हैं। हर कोई दूसरे से आगे निकलना चाहता है- पड़ोसी, रिश्तेदार, मित्र से ही नहीं, बल्कि अपने ही परिवार से। इस तुलना और प्रतिस्पर्धा ने प्रेम, विश्वास, ईमानदारी और सहयोग जैसे मूल्यों को जर्जर कर दिया है। क्या वाकई हम विकसित हो रहे हैं? जब समाज में अवसाद बढ़ रहा हो, बच्चों का बचपन छिन रहा हो, बुजुर्ग अकेले मर रहे हों, पड़ोसी का नाम भी कोई न जानता हो, समाज में हिंसा, लालच और अविश्वास बढ़ रहा हो, तो क्या वह समाज विकसित कहलाने योग्य है? विकास केवल अर्थव्यवस्था, आधारभूत संरचना या तकनीक से नहीं होता, विकास मानवीय रिश्तों से होता है, मूल्यों की मजबूती से होता है, संवेदनाओं के विस्तार से होता है। लेकिन चकाचौंध में पड़ा व्यक्ति आत्मकेंद्रित हो जाता है।

इस बदलते समाज में सबसे ज्यादा नुकसान उन मूल्यों का हुआ है जो मानवता की नींव थे- विश्वास, प्रेम, त्याग, सहयोग, सहिष्णुता और सत्यनिष्ठा। आज इन मूल्यों को पुरातन कहकर भुलाया जा रहा है। जब मनुष्य अपने भीतर की संवेदना खो देता है, तो उसके बाहरी 'विकास' की चमक बेमानी हो जाती है। आज मानवता एक दोराहे पर खड़ी है- एक ओर चकाचौंध, दूसरी ओर चिरस्थायी शांति और प्रेम। हमें तय करना है कि हम किस दिशा में जाना चाहते हैं। अगर विकास की दौड़ में रिश्ते टूटें, मूल्य बिखरें और मनुष्य ही खो जाए, तो वह विकास नहीं, विनाश है। अब समय है कि हम रिश्तों को फिर से जोड़ें, मूल्यों को फिर से अपनाएं और विकास को मानवीय बनाएं।

तानाशाही के जोखिम

पाकिस्तान की सत्ता में सेना का पहले से प्रभाव रहा है। मगर हाल ही में वहां पारित 27वें संवैधानिक संशोधन ने सेना प्रमुख को सुरक्षा नीतियों, राष्ट्रीय निर्णयों और अहम प्रशासनिक मामलों में अंतिम अधिकार प्रदान कर दिया है। इससे एक ऐसी व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त हुआ है जिसे सैन्य तानाशाही की वैधानिक रूपरेखा कहा जा सकता है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय को आशंका है कि इतनी केंद्रित शक्ति किसी भी नेतृत्व को निरंकुश बनाती है। इन घटनाओं के पीछे अमेरिका की भूमिका भी चर्चा का विषय है। पाकिस्तान की भू-रणनीतिक स्थिति, अफगानिस्तान में अस्थिरता तथा चीन को संतुलित करने की अमेरिकी नीति ऐसे कारण हैं, जिनके चलते अमेरिका एक शक्तिशाली पाक सैन्य नेतृत्व को अपने हित में उपयोगी मान सकता है। भारत के लिए यह स्थिति चिंताजनक है। इतिहास गवाह है कि पाकिस्तान की सेना जब भी पूर्ण शक्ति में होती है, सीमा पर तनाव और आतंकी गतिविधियां बढ़ने की आशंका पैदा हो जाती है। वहीं इसी के साथ चीन-पाक गठबंधन के और मजबूत होने की संभावना भी भारत के लिए रणनीतिक चुनौती बन सकती है। लिहाजा भारत को अब और सतर्क रहना होगा।

- मो अजहर आलम अंसारी, पूर्णिया

सवाल और संदेश

ब्राजील में आयोजित सम्मेलन 'काप 30' को 'मानवता का जलवायु मुकदमा' कहा गया। अमेजन की हरियाली से ढके बेलेम शहर में सम्मेलन का माहौल कुछ ऐसा था, मानो पूरी मानवता सुनवाई में खड़ी हो। इस सम्मेलन का विरोधाभास यही रहा कि अमेजन को 'पृथ्वी का फेफड़ा' कहा जाता है, फिर भी वनों की कटाई रोकने का कोई साफ रास्ता अंतिम दस्तावेज में शामिल नहीं किया गया। जलवायु संकट अब केवल विज्ञान का मुद्दा नहीं रहा, यह मानव सभ्यता के अस्तित्व का प्रश्न बन चुका है। यह मसला केवल तापमान के आंकड़ों का नहीं, यह निर्णय है कि आने वाली पीढ़ियां किस दुनिया में सांस लेंगी और पृथ्वी उनके लिए रहने योग्य बचेगी भी या नहीं। 'काप-30' का संदेश यही है कि अब शब्दों के दिन खत्म हो चुके हैं, यह समय कार्रवाई का है और यह तभी संभव है, जब विश्व अपने आर्थिक स्वार्थों से ऊपर उठ कर यह स्वीकार करे कि जलवायु संकट मानवता के अस्तित्व की अंतिम चुनौती है।

- शाहिद हाशमी, जाकिर नगर, दिल्ली

बेकाबू होता अपराध

'बेलगाम अपराध' (संपादकीय, पांच दिसंबर) पढ़ा। इसमें बीते एक पखवाड़े के दौरान बिहार में पैंतालीस से ज्यादा हत्या की खबरों का उल्लेख किया गया है। हाल में अररिया में एक युवा शिक्षिका की हत्या कर दी गई। ऐसे में कानून व्यवस्था पर सवाल उठना लाजिमी है। नई बनी सरकार के दावों में कानून व्यवस्था की बहाली प्रमुख थी। अब तक राजदनीत सरकारों को इसके लिए जिम्मेदार बताया जा रहा था। मगर अब अपराध पर काबू पाने में सरकार नाकाम क्यों हो रही है? इसकी जड़ पर प्रहार क्यों नहीं किया जा रहा है या इसकी जड़ों की तलाश क्यों नहीं कर पा रही है सरकार? दरअसल, बिहार में वैध कारोबार और रोजगार के अवसर सीमित हैं, क्योंकि सरकार इस दिशा में प्रयासरत नहीं है। नतीजा यह कि अपराध लगातार बढ़ रहे हैं। वे तमाम उपाय करने होंगे, जिससे आपराधिक गतिविधियों पर लगाम लगे। पुलिसिया समाधान तात्कालिक जरूर होंगे, पर दीर्घकालिक और कारगर नहीं।

- मुकेश कुमार मनन, पटना

लापरवाही की परतें

चालक दल की कमी के कारण इंडिगो की सैकड़ों उड़ानें पिछले हफ्ते रद्द कर दी गई। अगर पायलटों की कमी महसूस की जाने लगी थी, तब क्या उसका प्रशासन सोया था? दूसरी ओर, अन्य विमानन कंपनियां मुसीबत में पड़े यात्रियों से दोगुना-चौगुना किराया तक वसूल रही हैं। हवाईअड्डों पर अव्यवस्था फैली है। हजारों यात्री बेहाल हैं। क्या यह सब किसी को नहीं दिख रहा? हालात संभालने में जहां हवाई अड्डा प्राधिकरण नाकाम हो रहा है, वहीं सरकार की लापरवाही भी नजर आ रही है। आखिर यात्रियों को जल्द उनके गंतव्य तक पहुंचाने में सरकार की सख्ती भी काम क्यों नहीं कर रही है? हैरत की बात है कि देश की सबसे बड़ी विमानन कंपनी को संचालित करने वाले यह देख नहीं पाए कि कर्मचारियों और चालक दल की कमी हो रही है। लगातार बड़ी संख्या में उड़ानों का रद्द होना गंभीर बात है।

- शकुंतला महेश नेनावा, इंदौर

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

भाजपा को इस माह यूपी व अगले माह नया राष्ट्रीय अध्यक्ष मिलने की संभावना

सुशील राघव
नई दिल्ली, 8 दिसंबर।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव को लेकर एक बार फिर से सुगबुगाहट शुरू हो गई है। पार्टी को उत्तर प्रदेश का प्रदेश अध्यक्ष इसी महीने मिलने की संभावना है। भाजपा को नया राष्ट्रीय अध्यक्ष भी मकर संक्रांति के बाद मिल सकता है। पार्टी के सूत्रों न यह जानकारी दी।

हिंदू पंचांग के अनुसार 16 दिसंबर को सूर्य धनु राशि में प्रवेश करेंगे और इसी तिथि से खरमास की शुरुआत मानी जाती है। यानी 16 दिसंबर से 14 जनवरी (मकर संक्रांति) तक कोई भी नया या शुभ कार्य नहीं किया जाता है। माना जा रहा है कि भाजपा उत्तर प्रदेश के लिए प्रदेश अध्यक्ष का एलान 16 दिसंबर से पहले चुन सकती है। तीन दिसंबर को दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा और संगठन मंत्री बीएल संतोष के साथ प्रधानमंत्री आवास पर एक उच्चस्तरीय बैठक की थी। माना जा रहा है कि इस बैठक में उत्तर प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष के नाम पर अंतिम निर्णय लिया जा चुका है। इससे पहले बीएल संतोष ने उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी और केशव प्रसाद मौर्य सहित कई शीर्ष नेताओं से बातचीत की थी। प्रदेश अध्यक्ष के लिए चयनित नामों पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से भी विचार-विमर्श किया गया था। आरएसएस नेता अरुण कुमार भी उस बैठक में शामिल थे, जिसमें उत्तर प्रदेश के शीर्ष नेताओं के साथ बीएल संतोष ने बैठक की थी। नए प्रदेश अध्यक्ष को संघ की भी पूरी सहमति मिल चुकी है।

> *आरएसएस* नेता अरुण कुमार भी उस बैठक में शामिल थे, जिसमें उत्तर प्रदेश के शीर्ष नेताओं के साथ बीएल संतोष ने बैठक की थी।

सूत्रों का कहना है कि उत्तर प्रदेश में प्रदेश अध्यक्ष चुने जाने के बाद और खरमास की समाप्ति के उपरांत पार्टी को राष्ट्रीय अध्यक्ष भी मिल जाएगा। वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा को कई बार कार्यकाल बढ़ाया जा चुका है। नियमों के मुताबिक, राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव से पहले कम से कम 19 प्रदेशों में संगठनात्मक चुनाव आवश्यक हैं।

इंडिगो संकट पर सुनवाई से सुप्रीम कोर्ट का इनकार, कहा

सरकार ने संज्ञान लिया, समय पर की कार्रवाई

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 8 दिसंबर।

इंडिगो की सैकड़ों उड़ानें लगातार सातवें दिन भी बड़ी संख्या में रद्द हो रही हैं। इस मामले पर सुप्रीम कोर्ट ने याचिका लगाकर दखल देने का आग्रह किया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने मामले में न्यायिक हस्तक्षेप के अनुरोध वाली याचिका पर सोमवार को तत्काल सुनवाई से इनकार कर दिया और कहा कि केंद्र ने स्थिति का संज्ञान लिया है और इसके समाधान के लिए कदम उठाए हैं। शीर्ष अदालत ने यह भी कहा कि वह इस तथ्य से अवगत है कि लाखों लोग विभिन्न हवाई अड्डों पर परेशानी झेल रहे हैं।

प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा कि यह एक गंभीर मामला है। लाखों लोग हवाई अड्डों पर परेशानी झेल रहे हैं। हम जानते हैं कि भारत सरकार ने समय पर कार्रवाई की है और इस मुद्दे का संज्ञान लिया है। हम समझते हैं कि लोगों को स्वास्थ्य संबंधी और अन्य महत्त्वपूर्ण समस्याएं हो सकती हैं। एक वकील ने इस मुद्दे का उल्लेख किया और कहा कि पिछले कुछ दिनों में इंडिगो द्वारा कई उड़ानें रद्द की गई हैं और यात्रियों को परेशानी झेलनी पड़ रही है। उड़ानों के रद्द होने की सूचना यात्रियों को नहीं दी गई। देशभर के 95 हवाई अड्डों पर लगभग 2,500 उड़ानों में देरी के कारण यात्रियों को परेशानी हो रही है।

> *प्रधान* न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा कि यह एक गंभीर मामला है। लाखों लोग हवाई अड्डों पर परेशानी झेल रहे हैं। हम जानते हैं कि भारत सरकार ने समय पर कार्रवाई की है और इस मुद्दे का संज्ञान लिया है। हम समझते हैं कि लोगों को स्वास्थ्य संबंधी और अन्य महत्त्वपूर्ण समस्याएं हो सकती हैं।

> *इंडिगो* दो दिसंबर से सैकड़ों उड़ानें रद्द करने को लेकर सरकार और यात्रियों दोनों की आलोचना झेल रही है। कंपनी ने पायलटों की नई उड़ान ड्यूटी और नियमों में बदलाव का हवाला दिया है।

सूत्रों ने बताया कि इंडिगो की उड़ानों में व्यवधान सातवें दिन भी जारी रहा और सोमवार को विमानन कंपनी ने दिल्ली और बंगलुरु हवाई अड्डों से 250 से अधिक उड़ानें रद्द कर दीं। दिल्ली हवाई अड्डे से कुल 134 उड़ानें रद्द की गईं, जिनमें रवाना होने वाली 75 और पहुंचने वाली 59 उड़ानें शामिल हैं। बंगलुरु हवाई अड्डे से 127 उड़ानें रद्द की गईं, जिनमें रवाना होने वाली 62 और पहुंचने वाली 65 उड़ानें शामिल हैं।

इंडिगो दो दिसंबर से सैकड़ों उड़ानें रद्द करने को लेकर सरकार और यात्रियों दोनों की आलोचना झेल रही है। कंपनी ने पायलटों की नई उड़ान ड्यूटी और नियमों में बदलाव का हवाला दिया है। उड़ानें रद्द होने के कारण लाखों यात्री देशभर के हवाई अड्डों पर फंस गए हैं।

गोगोई ने इंडिगो का मुद्दा लोकसभा में उठाया

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 8 दिसंबर।

लोकसभा में कांग्रेस के उप नेता गौरव गोगोई ने इंडिगो एअरलाइन से जुड़े संकट का विषय सोमवार को लोकसभा में उठाया और सरकार से जवाब की मांग की। इस पर अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू इस संबंध में विस्तृत वक्तव्य देंगे।

गोगोई ने यह विषय उठाते हुए कहा कि नागरिक उड्यन मंत्री बताएं कि हर हवाई अड्डे पर इतनी अव्यवस्था क्यों है? उनका कहना था, 'कहा गया था कि हवाई चप्पल वाले हवाई यात्रा करेंगे, लेकिन आज उड़ानों का किराया 20 हजार रुपए है, काफी के दाम ढाई सौ रुपए हैं।' इस पर बिरला ने कहा, राममोहन नायडू आज राज्यसभा में हैं। वह आज बयान दे रहे हैं, आप लोग चाहेंगे तो मंगलवार को विस्तृत बयान देंगे।

उम्मीद पोर्टल पर सत्यापन के दौरान 10,869 संपत्तियां खारिज

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 8 दिसंबर।

वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन के लिए तैयार किए गए उम्मीद पोर्टल पर कुल 5.17 लाख संपत्तियों का पंजीकरण शुरू किया गया, जिनमें से छह महीने की समय सीमा के दौरान 2,16,905 संपत्तियों को नामित अनुमोदकों द्वारा मंजूरी दे दी गई है। अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों में यह जानकारी सामने आई है।

केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्य मंत्री किरेन रिजीजू ने छह जून 2025 को इस केंद्रीय पोर्टल की शुरुआत की थी और वक्फ अधिनियम, 1995 तथा सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के अनुसार, संपत्तियों का विवरण अपलोड करने की छह महीने की समय सीमा छह दिसंबर 2025 को आधिकारिक रूप से समाप्त हो गई।

> *सर्वाधिक* वक्फ संपत्तियां उत्तर प्रदेश से दर्ज की गईं।

मंत्रालय ने बताया कि अंतिम समय सीमा नजदीक आते ही पंजीकरण की गति में काफी तेजी आई। आंकड़ों के अनुसार, 5,17,040 वक्फ संपत्तियों का पंजीकरण शुरू हुआ, जिनमें से 2,16,905 को मंजूरी मिली। इसके अतिरिक्त 2,13,941 संपत्तियां अंतिम अनुमोदन के लिए लंबित हैं, जबकि 10,869 संपत्तियां सत्यापन के दौरान खारिज कर दी गईं। सर्वाधिक वक्फ संपत्तियां उत्तर प्रदेश (92,830) से दर्ज की गईं, 86,345 सुन्नी व 6,485 शिया वक्फ संपत्तियां शामिल हैं।

महाराष्ट्र (62,939) व कर्नाटक (58,328) का स्थान रहा। रिजीजू ने पंजीकरण के लिए समय सीमा बढ़ाने से इनकार कर दिया लेकिन अगले तीन महीनों के लिए देखभालकर्ताओं पर कोई दंडात्मक कार्रवाई नहीं करने की घोषणा की है। इस चरण की समाप्ति भारत में वक्फ संपत्तियों के डिजिटल प्रबंधन और पारदर्शिता लाने की दिशा में एक मील का पत्थर है।

तैयारी मुंबई में गेटवे आफ इंडिया पर 'नौसेना दिवस बीटिंग रिट्रीट व टैटू समारोह' से पहले पूर्वाभ्यास करते नौसेना के जवान।

पान मसाला वाले उपकर विधेयक को संसद से मंजूरी

सीतारमण ने कहा, विधेयक का माल एवं सेवा कर की व्यवस्था पर असर नहीं पड़ेगा

नई दिल्ली, 8 दिसंबर (ब्यूरो)।

संसद ने पान मसाला पर उपकर लगाने के प्रावधान वाले विधेयक को सोमवार को मंजूरी दे दी। राज्यसभा में स्वास्थ्य सुरक्षा से राष्ट्रीय सुरक्षा उपकर विधेयक, 2025 पर हुई चर्चा का वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा जवाब दिए जाने के बाद इसे ध्वनिमत से लौटा दिया गया। लोकसभा ने इसे पांच दिसंबर को मंजूरी दी थी।

राज्यसभा में चर्चा का जवाब देते हुए वित्त मंत्री ने कहा कि इस विधेयक का माल एवं सेवा कर (जीएसटी) की व्यवस्था पर कोई असर नहीं पड़ेगा तथा पान मसाला के उपभोग पर 40 फीसद की जीएसटी बरकरार रहेगी। 'स्वास्थ्य सुरक्षा से राष्ट्रीय सुरक्षा उपकर विधेयक, 2025' पान मसाला पर लगाए जाने वाले क्षतिपूर्ति उपकर की जगह लेगा। इसका उद्देश्य राष्ट्रीय सुरक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़े खर्चों के लिए अतिरिक्त संसाधन जुटाना है। इसके तहत उन मशीनों या प्रक्रियाओं पर उपकर लगाया जाएगा, जिनके माध्यम से उक्त वस्तुओं का निर्माण या उत्पादन किया जाता है। जब एक जुलाई 2017 को जीएसटी की शुरुआत हुई थी तो जीएसटी कार्यान्वयन के कारण राज्यों को होने वाले राजस्व नुकसान की भरपाई के लिए 30 जून 2022 तक पांच वर्षों के लिए क्षतिपूर्ति उपकर की व्यवस्था लागू की गई। क्षतिपूर्ति उपकर की व्यवस्था को बाद में 31 मार्च 2026 तक चार साल के लिए बढ़ा दिया गया और इसके संग्रह का उपयोग उस ऋण को चुकाने के लिए किया जा रहा है।

> *एक* जुलाई 2017 को जीएसटी की शुरुआत हुई थी तो जीएसटी कार्यान्वयन के कारण राज्यों को होने वाले राजस्व नुकसान की भरपाई के लिए 30 जून 2022 तक पांच वर्षों के लिए क्षतिपूर्ति उपकर की व्यवस्था लागू की गई। बाद में 31 मार्च 2026 तक बढ़ाया गया।

केंद्र ने कोविड महामारी की अवधि के दौरान जीएसटी राजस्व हानि की भरपाई के लिए लिया था। वित्त मंत्री ने स्पष्ट किया कि इस विधेयक के जरिए आम लोगों की बुनियादी जरूरत की किसी वस्तु पर कर नहीं लगाया जा रहा, सिर्फ हानिकारक वस्तुओं पर कर लगाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आज के आधुनिक दौर में जब अत्याधुनिक युद्ध कौशल को अपनाया जा रहा है तो रक्षा पर खर्च करना बहुत जरूरी हो जाता है।

फडणवीस के करीबी होने का आदित्य ठाकरे का दावा

महायुति के 22 विधायक पाला बदलने को तैयार

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 8 दिसंबर।

शिवसेना (उबाठा) विधायक आदित्य ठाकरे ने सोमवार को दावा किया कि महायुति के एक सहयोगी दल के 22 विधायक महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के करीबी हो गए हैं और पाला बदलने को तैयार हैं। उनका परोक्ष तौर पर इशारा उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे नीत शिवसेना की ओर था। जून 2022 में, शिंदे के नेतृत्व में विधायकों के विद्रोह के बाद शिवसेना विभाजित हो गई थी, जिसके परिणामस्वरूप तत्कालीन मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे को अपने पद से इस्तीफा देना पड़ा था।

बाद में जनवरी 2024 में विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर ने कहा था कि एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाला गुट असली शिवसेना है, जो भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और उपमुख्यमंत्री अजित पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के साथ राज्य में सत्तारूढ़ महायुति का एक घटक है। आदित्य ठाकरे ने शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना का नाम लिए बिना दावा किया, 'सत्ता पक्ष की एक पार्टी है और दो गुट हैं। एक गुट के 22 विधायक मुख्यमंत्री के करीबी हो गए हैं।' उन्होंने विधान भवन परिसर में पत्रकारों से बात करते हुए दावा किया कि 22 विधायक पाला बदलने को तैयार हैं। वर्ली से विधायक ठाकरे ने कहा कि इन 22 विधायकों में से एक खुद को उप-कप्तान कहता है। उनका परोक्ष तौर पर इशारा उद्योग मंत्री उदय सामंत की ओर था। अतीत में शिवसेना (उबाठा) ने दावा किया था कि शिंदे और अजित पवार के साथ सामंत राज्य के तीसरे मुख्यमंत्री हो सकते हैं। राज्य विधानमंडल के दोनों सदनों में विपक्ष के नेताओं की नियुक्ति को लेकर निष्क्रियता के मुद्दे पर, आदित्य ठाकरे ने सवाल किया कि सरकार विपक्ष के नेताओं से क्यों डरती है।

> *राज्य* विधानमंडल के दोनों सदनों में विपक्ष के नेताओं की नियुक्ति को लेकर निष्क्रियता के मुद्दे पर, आदित्य ठाकरे ने सवाल किया कि सरकार विपक्ष के नेताओं से क्यों डरती है।

शिवसेना (यूबीटी) नेता भास्कर जाधव को उनकी पार्टी ने विधानसभा में विपक्ष के नेता के पद के लिए नामित किया है, लेकिन विधानसभाध्यक्ष द्वारा कैबिनेट स्तर की इस नियुक्ति पर कोई निर्णय नहीं लिया गया है।

केंद्र ने पिछले 11 वर्ष में अल्पसंख्यकों पर 7,641 करोड़ खर्च किए : कुरियन

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 8 दिसंबर।

राज्यसभा में सोमवार को अल्पसंख्यक मामलों के राज्य मंत्री जार्ज कुरियन ने बताया कि केंद्र ने सिख समुदाय और अन्य अल्पसंख्यकों के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए कुल 10,225.83 करोड़ रुपए खर्च किए हैं, जिसमें से पिछले 11 वर्षों में स्व-रोजगार आय सृजन परियोजनाओं के लिए 7,641 करोड़ रुपए के रियायती ऋण शामिल हैं।

अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विकास और वित्त निगम (एनएमडीएफसी) सिख समुदाय और अन्य अधिसूचित अल्पसंख्यक समुदायों के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए योजनाओं को लागू करता है। उच्च सदन में कुरियन ने प्रश्नकाल के दौरान एक पूरक प्रश्न के उत्तर में कहा, '1994 में अपनी शुरुआत से, एनएमडीएफसी ने अपनी विभिन्न योजनाओं के तहत 10,225.83 करोड़ रुपए वितरित किए हैं, जिनमें से 27.35 लाख परिवारों को कवर किया गया है।' उन्होंने कहा, 'इसमें से, पिछले 11 वर्षों में 7,641 करोड़ रुपए अल्पसंख्यक समुदायों की भलाई के लिए वितरित किए गए हैं, जिनमें सिख समुदाय भी शामिल हैं।'

कुरियन ने यह भी कहा कि भारत सरकार सभी लोगों का ध्यान रख रही है और उसने पाकिस्तान से आए लोगों को 1,073 दीर्घकालिक वीजा (एलटीवी) जारी किए हैं। उन्होंने कहा, 'नागरिकता (संशोधन) अधिनियम (सीएए) के तहत, 337 नागरिकता भी दी गई है।'

पेज 1 का बाकी

भारत, अमेरिका 10-11 दिसंबर को व्यापार समझौते पर वार्ता करेंगे

व्यापार से संबंधित सभी मुद्दों पर होगी।' यह दौरा इस लिहाज से महत्वपूर्ण है कि दोनों ही देश व्यापार समझौते के पहले चरण को अंतिम रूप देने पर काम कर रहे हैं।

अमेरिका के भारतीय वस्तुओं पर 25 प्रतिशत शुल्क और रूस से कच्चा तेल खरीदने के कारण अतिरिक्त 25 प्रतिशत दंडात्मक शुल्क लगाए जाने के बाद अमेरिकी अधिकारियों की यह दूसरी यात्रा है। अमेरिकी अधिकारी पिछली बार 16 सितंबर को भारत आए थे।

ये बातचीत इसलिए भी अहम है, क्योंकि वाणिज्य सचिव राजेश अग्रवाल ने हाल ही में कहा था कि भारत इस साल ही अमेरिका के साथ एक मसौदा व्यापार समझौते पर पहुंचने को लेकर आशावादी है।

ध्यान बंटाने और बंगाल चुनाव के कारण चर्चा

करिए। देश सुन लेगा, आपकी क्या-क्या शिकायतें हैं, इंदिरा जी ने क्या किया, राजीव जी ने क्या किया, परिवारवाद क्या होता है, नेहरू जी ने कौन सी गलतियां कीं, सुना लीजिए, फिर खत्म। उसके बाद बेरोजगारी, महंगाई और महिलाओं से जुड़ी समस्याओं...पर चर्चा करेंगे।' उन्होंने सदन में वंदे मातरम् पर चर्चा में भाग लेते हुए यह भी कहा कि राष्ट्रीय गीत पर चर्चा की जरूरत नहीं होनी चाहिए क्योंकि यह देश के कण-कण में बसा है तथा देश की भावना से जुड़ा है। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी पर कटाक्ष करते हुए कहा कि वह भाषण अच्छा देते हैं, लेकिन तथ्यों में कमजोर हैं।

उन्होंने सत्तापक्ष के कुछ सदस्यों की टोका-टाकी के बीच कहा, 'आज की यह चर्चा सिर्फ ध्यान भटकाने के लिए की जा रही है क्योंकि यह सरकार असलियत छिपाना चाहती है। युवा परेशान हैं, पेपर लीक हो रहे हैं, बेरोजगारी है, महंगाई है, इसकी चर्चा हम क्यों नहीं कर रहे? आरक्षण के साथ हो रहे खिलवाड़ पर चर्चा क्यों नहीं कर रहे?' उन्होंने कहा, प्रदूषण है, लेकिन हम इस सदन में बैठकर छोटी बातें कर रहे हैं। आप अतीत की बात करें, असली समस्याओं की बात नहीं करें, यही छोटी बात है।

प्रियंका गांधी ने कहा, 'सच्चाई यह है कि इनका शासन दमन का शासन है, इनकी राजनीति दिखावे की राजनीति है, 'इवेंट मैनेजमेंट' की राजनीति है। चुनाव से चुनाव तक की राजनीति है, मुद्दों से ध्यान भटकाने की राजनीति है।'प्रियंका गांधी ने दावा किया, 'वंदे मातरम् की सालगिरह पर आयोजित कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी ने अपने भाषण में कहा कि 1896 में गुरूदेव रवींद्रनाथ टैगोर जी ने पहली बार वंदे मातरम् गीत को एक अधिवेशन में गाया। लेकिन प्रधानमंत्री जी यह नहीं बता पाए कि वो कांग्रेस का अधिवेशन था। आखिर मोदी किस बात से कतरा रहे थे?' उन्होंने कहा कि कांग्रेस के हर अधिवेशन में सामूहिक रूप से वंदे मातरम् गाया जाता है, लेकिन भाजपा को बताना चाहिए कि उसके अधिवेशन में यह होता है या नहीं।

वंदे मातरम् के लिए झुके तो बंटवारे के लिए झुकना पड़ा

के सामने घुटने टेक दिए और मुसलिम लीग के दबाव में यह किया। यह कांग्रेस का तुष्टीकरण की राजनीति को साधने का एक तरीका था।' प्रधानमंत्री के मुताबिक, नेहरू ने पत्र में लिखा, 'मैंने वंदे मातरम् गीत की पृष्ठभूमि पढ़ी है। मुझे लगता है कि जो पृष्ठभूमि है, इससे मुसलिम भड़केंगे।' मोदी ने कहा, 'कांग्रेस वंदे मातरम् के बंटवारे पर झुकी, इसलिए उसे एक दिन भारत के बंटवारे के लिए झुकना पड़ा।'

मोदी ने कहा, 'दुर्भाग्य से कांग्रेस की नीतियां आज वैसी की वैसी ही हैं और आज आइएनसी (भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस) चलते-चलते एमएमसी हो गया है।' प्रधानमंत्री ने गत 14 नवंबर को बिहार विधानसभा चुनाव में राजग की जीत के बाद अपने भाषण में कांग्रेस के लिए एमएमसी (मुसलिम-लीगी माओवादी कांग्रेस) शब्द का इस्तेमाल किया था। मोदी ने लोकसभा में कहा, 'वंदे मातरम्, सिर्फ राजनीतिक लड़ाई का मंत्र नहीं था। अंग्रेज जाएं और हम अपनी राह पर खड़े हो जाएं, वंदे मातरम् सिर्फ यहां तक सीमित नहीं था। यह आजादी की लड़ाई थी, इस मातृभूमि को मुक्त कराने की जंग थी। मां भारती को उन बेड़ियों से मुक्त कराने की एक पवित्र जंग थी।' उनका कहना था, 'अंग्रेज समझ चुके थे कि 1857 के बाद भारत में लंबे समय तक टिक पाना उनके लिए मुश्किल होता जा रहा है। वे सपने लेकर तो आए थे, लेकिन उन्हें यह साफ दिखने लगा कि जब तक भारत को बांटा नहीं जाएगा, लोगों को आपस में लड़ाया नहीं जाएगा, तब तक यहां राज करना कठिन है। तब अंग्रेज़ों ने 'बांटो और राज करो' का रास्ता चुना, और उन्होंने बंगाल को इसकी प्रयोगशाला बनाया।' मोदी ने कहा, 'जिस मंत्र ने, जिस जयघोष ने देश की आजादी के आंदोलन को ऊर्जा और प्रेरणा दी थी, त्याग और तपस्या का मार्ग दिखाया था, उस वंदे मातरम् का पुण्य स्मरण करना इस सदन में हम सबका बहुत बड़ा सौभाग्य है। हमारे लिए यह गर्व की बात है कि वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं और हम सभी इस ऐतिहासिक अवसर के साक्षी बन रहे हैं।' उन्होंने कहा, 'वंदे मातरम की 150 वर्ष की यात्रा अनेक पड़ावों से गुजरी है, लेकिन जब वंदे मातरम् के 50 वर्ष हुए थे, तब देश गुलामी में जीने के लिए मजबूर था। जब वंदे मातरम् के 100 वर्ष हुए, तब देश आपातकाल की जंजीरों में जकड़ा हुआ था और जब वंदे मातरम् का अत्यंत उत्तम पर्व होना चाहिए था, तब भारत के संविधान का गला घोंट दिया गया था।' मोदी ने सदन में उपस्थित सदस्यों से कहा, 'हम लोगों पर तो कर्ज है वंदे मातरम् का। उसी ने यहां (संसद में) पहुंचाने का रास्ता बनाया। अब हम आत्मनिर्भर भारत का सपना लेकर चल रहे हैं और वंदे मातरम् हमारी प्रेरणा है। स्वदेशी आंदोलन की भावना आज भी मौजूद है और वंदे मातरम हमें जोड़ता है।' उन्होंने कहा कि आजादी से पहले महापुरुषों का सपना स्वतंत्र भारत का था और आज की पीढ़ी का सपना समृद्ध भारत का है। मोदी ने कहा कि वंदे मातरम् गीत ऐसे समय लिखा गया था, जब 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के बाद अंग्रेज सल्तनत बौखलाई हुई थी।

उन्होंने कहा, 'हमारा सपना है कि 2047 में देश विकसित भारत बनकर रहे। अगर आजादी के 50 साल पहले कोई देश की आजादी का सपना देख सकता था तो 25 साल पहले हम भी समृद्ध, विकसित भारत का सपना देख सकते हैं।' मोदी ने कहा, 'यहां कोई पक्ष, विपक्ष नहीं है। यहां बैठे हम सब लोगों के लिए सोचने का विषय है कि आजादी के आंदोलन के परिणामस्वरूप हम यहां बैठे हैं। हम जन प्रतिनिधियों के लिए वंदे मातरम के ऋण को स्वीकार करने का अवसर है।' प्रधानमंत्री ने वंदे मातरम् की रचना और इसके राष्ट्र गीत बनने में पश्चिम बंगाल की भूमिका का जिक्र करते हुए कहा कि अंग्रेजों ने सबसे पहले बंगाल के टुकड़े करने की दिशा में काम किया और उनका मानना था कि एक बार बंगाल टूट गया तो देश भी टूट जाएगा। उन्होंने कहा, '1905 में अंग्रेजों ने बंगाल का विभाजन किया। जब उन्होंने यह पाप किया तब वंदे मातरम् चट्टान की तरह खड़ा रहा। बंगाल की एकता के लिए वंदे मातरम् गली-गली का नाद बन गया था।' उन्होंने कहा, 'हम देशवासियों को गर्व होना चाहिए कि दुनिया के इतिहास में कहीं भी ऐसा कोई काव्य नहीं हो सकता, ऐसा कोई भाव-गीत नहीं हो सकता जो सदियों तक एक लक्ष्य के लिए कोटि-कोटि लोगों को प्रेरित करता हो।'

यात्रियों की परेशानी सातवें दिन भी जारी, रद्द रहीं 562 उड़ानें

से नियामक बदलावों के कारण सैकड़ों उड़ानें रद्द होने के बाद लाखों यात्री प्रभावित हो रहे हैं। वहीं, एक अन्य घटनाक्रम में इंडिगो की उड़ानों में व्यवधान की जांच कर रहे नागर विमानन महानिदेशालय द्वारा नियुक्त समिति एअरलाइन के सीईओ पीटर एल्बर्स और मुख्य परिचालन अधिकारी इसिड्रे पोरक्वेरस को बुधवार को तलब कर सकती है।

इस बीच राज्यसभा में सोमवार को नागर विमानन मंत्री के राममोहन नायडू ने कहा कि सरकार ने इंडिगो की बड़े पैमाने पर उड़ान रद्द किए जाने के संबंध में जांच शुरू कर दी है और एअरलाइन के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी ताकि अन्य एअरलाइनों के लिए उदाहरण पेश किया जा सके।

वहीं दूसरी ओर एअरलाइन परिचालन सामान्य करने के लिए संघर्ष कर रही है। हालांकि, रविवार को इसका समय-पालन प्रदर्शन सुधरकर 79.9 फीसद रहा, जब कंपनी ने 1,650 उड़ानों का संचालन किया और 650 उड़ानें रद्द कीं। हालांकि इंडिगो ने सोमवार को महानगरों के छह हवाई अड्डों से अपनी 2,300 दैनिक उड़ानों में से 560 उड़ानें पहले ही रद्द कर दीं। एअरलाइन लगभग 90 घरेलू हवाई अड्डों और 40 से अधिक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों के लिए उड़ानों का संचालन करती है।

इंडिगो ने अपनी ओर से सोमवार को रद्द की गई सेवाओं की संख्या सार्वजनिक नहीं की थी। रद्द की गई 560 उड़ानों में से इंडिगो ने बंगलुरु से 76 आगमन और 74 प्रस्थान, तथा दिल्ली से 83 प्रस्थान और 60 आगमन उड़ानें रद्द कीं। वहीं मुंबई और हैदराबाद हवाई अड्डों पर उड़ानों को रद्द करने की संख्या क्रमशः 98 (50 आगमन और 48 प्रस्थान) और 112 (58 आगमन और 54 प्रस्थान) रही। जबकि कोलकाता हवाई अड्डे पर 'इंडिगो' की केवल दो उड़ानें रद्द हुईं, वहीं चेन्नई हवाई अड्डे पर आगमन और प्रस्थान मिलाकर रद्द उड़ानों की कुल संख्या 56 रही।

संयुक्त महानिदेशक संजय ब्राह्मणे, उप महानिदेशक अमित गुप्ता, वरिष्ठ उड़ान परिचालन निरीक्षक (एफओआइ) कपिल मांगलिक और एफओआइ लोकेश रामपाल वाली चार सदस्यीय समिति को इंडिगो की उड़ानों के परिचालन में व्यापक व्यवधानों के मूल कारणों का पता लगाने का काम सौंपा गया है। इसके कार्यक्षेत्र में पायलटों के ड्यूटी और आराम नियमों को लागू करने की एअरलाइन की तैयारी, कर्मचारी योजना और बदलती रोस्टर प्रणाली की समीक्षा करना है।

नवजोत कौर को दिखाया बाहर का रास्ता

है, लेकिन 'जो 500 करोड़ रुपए का सूटकेस देता है, वह मुख्यमंत्री बन जाता है। हालांकि, अपनी टिप्पणी पर राजनीतिक विवाद उठने के बाद नवजोत कौर ने दावा किया कि उनकी सीधी टिप्पणी को तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया। कौर ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर रविवार शाम लिखा कि मैं हैरान हूं कि मेरे सीधे बयान को किस तरह तोड़-मरोड़कर पेश किया गया। मैंने सिर्फ इतना कहा था कि कांग्रेस पार्टी ने हमसे कभी कुछ नहीं मांगा। जब मुझसे पूछा गया कि नवजोत किसी दूसरी पार्टी से मुख्यमंत्री पद का चेहरा बन सकते हैं या नहीं, तो मैंने कहा कि हमारे पास मुख्यमंत्री पद के वास्ते किसी को देने के लिए कोई पैसा नहीं है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और आम आदमी पार्टी (आप) ने उनके बयान पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए दावा किया कि इससे कांग्रेस की कार्यप्रणाली का 'घिनौना सच' सामने आ गया है।

संपादकीय जागरण

मंगलवार, 9 दिसंबर, 2025 : पौष कृष्ण - 5 वि. 2082

ज्ञान का अभिमान अज्ञान ही है

चुनाव आयोग का सही विचार

चुनाव आयोग को केवल इस पर विचार ही नहीं करना चाहिए कि मतदाता सूचियों का विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआइआर एक निश्चित अवधि में हो, बल्कि उसे अपने इस विचार को अमल में लाने के लिए कोई ठोस व्यवस्था भी बनानी चाहिए। यह ठीक नहीं कि 2002-03 के बाद से अब जाकर एसआइआर कराने का फैसला लिया गया। यह मानने के पर्याप्त कारण हैं कि इतने लंबे अंतराल के बाद एसआइआर होने के चलते विपक्षी दलों को यह माहौल बनाने का बहाना मिल गया कि चुनाव आयोग कोई नया-अनोखा काम कर रहा है। औसत लोग भी इससे अवगत नहीं थे कि एसआइआर चुनाव आयोग का एक संवैधानिक दायित्व है और उसे समय-समय पर कराया ही जाना चाहिए। जनगणना की तरह एक निश्चित अंतराल पर एसआइआर केवल इसलिए नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह चुनाव आयोग की जिम्मेदारी है। इसकी आवश्यकता इसलिए भी बढ़ गई है, क्योंकि अब रोजगार, शिक्षा एवं अन्य कारणों से लोग कहीं अधिक संख्या में अन्यत्र प्रवास करते हैं। इनमें से बड़ी संख्या में दूसरे शहर या राज्य में बस भी जाते हैं। इसके अतिरिक्त एक ही शहर में रहने वाले लोग भी अपने ठिकाने बदलते रहते हैं।

जितना जरूरी यह है कि नए वोटर मतदाता सूची में अंकित होते रहें, उतना ही यह भी कि जिनका निधन हो गया हो या फिर जो अन्य कहीं जाकर बस गए हों, उनके नाम उससे हटते भी रहें। यदि यह काम एक निश्चित अंतराल में नहीं किया जाएगा तो मतदाता सूचियों को दुरुस्त किया जाना संभव नहीं होगा और इसके अभाव में उनमें गड़बड़ी की शिकायतों से कभी छुटकारा नहीं मिल पाएगा। अच्छा होगा कि मतदाता सूचियों को सही करना एक सतत प्रक्रिया का हिस्सा बने। नीर-क्षीर ढंग से चुनाव के लिए मतदाता सूचियों का सही होना आवश्यक है। यह हैरानी की बात है कि विपक्षी दल मतदाता सूचियों में गड़बड़ी की शिकायत भी कर रहे हैं और एसआइआर भी नहीं होने देना चाह रहे हैं। उन्हें बताना चाहिए कि एसआइआर के बिना मतदाता सूचियों को सही किया जाना कैसे संभव है? इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि कई राजनीतिक दल एसआइआर के चलते बीएलओ और आम लोगों को हो रही परेशानी का उल्लेख तो कर रहे हैं, लेकिन वे इस प्रक्रिया में सहयोग नहीं कर रहे हैं। यदि सभी राजनीतिक दलों ने अपने बूथ लेवल एजेंट सक्रिय किए होते तो संभवतः बीएलओ का काम कहीं अधिक आसान होता। राजनीतिक दलों के साथ आम लोगों के लिए भी यह आवश्यक है कि वे एसआइआर की प्रक्रिया में सहयोग देने के लिए तत्पर रहें। यह केवल चुनाव आयोग के कर्मियों के तौर पर बीएलओ की ही जिम्मेदारी नहीं कि मतदाता सूचियां दुरुस्त हों। यह जिम्मेदारी आम लोगों को भी उठानी होगी, क्योंकि लोकतंत्र को पुष्ट करना हर नागरिक का दायित्व है।

असुरक्षित दिल्ली

बाहरी दिल्ली क्षेत्र में चार साल की बच्ची से दुष्कर्म और हैवानियत अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। ये घटना दर्शाती है कि निर्भया कांड के 13 साल बीत जाने के बाद भी राजधानी बच्चियों और महिलाओं के लिए सुरक्षित नहीं हो पाई है। वहीं, ये भी चिंता की बात है कि ऐसे मामलों में पुलिस की कार्यप्रणाली लापरवाही वाली और असंवेदनशील होती है। रोहिणी कोर्ट की यह टिप्पणी सर्वथा उचित है कि बच्ची की अत्यंत गंभीर स्थिति होने के बावजूद जांच अधिकारी का कोर्ट में पेश नहीं होना उक्त अधिकारी और थाना प्रभारी की गंभीर लापरवाही है।

> दिल्ली पुलिस को ऐसे ठोस प्रयास करने चाहिए कि दिल्ली की बेटियां और महिलाएं सुरक्षा का भाव साफ महसूस कर सकें

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में महिलाओं की सुरक्षा के मामले में निर्भया कांड से पहले और उसके बाद कोई उल्लेखनीय फर्क नहीं दिखाई देता, जो बेहद निराशाजनक है। घर से बेटी पढ़ाई या नौकरी के लिए निकलती है, तो जब तक वापस नहीं लौट आती, स्वजन चिंतित रहते हैं। ये स्थिति सभ्य समाज में अस्वीकार्य है। दिल्ली पुलिस को ये हालात सुधारने को लेकर गंभीरता दिखानी चाहिए और ऐसे ठोस प्रयास करने चाहिए कि दिल्ली की बेटियां और महिलाएं सुरक्षा का भाव साफ महसूस कर सकें। उन्हें बाहर निकलने में किसी भी तरह का डर न लगे। देश के किसी भी शहर में महिलाओं में सुरक्षा का भाव होना चाहिए और राष्ट्रीय राजधानी को तो इस मामले में आदर्श स्थापित करना चाहिए।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या मोबाइल हैंडसेट का आयात शून्य हो जाना मेक इन इंडिया की सफलता का प्रमाण है?

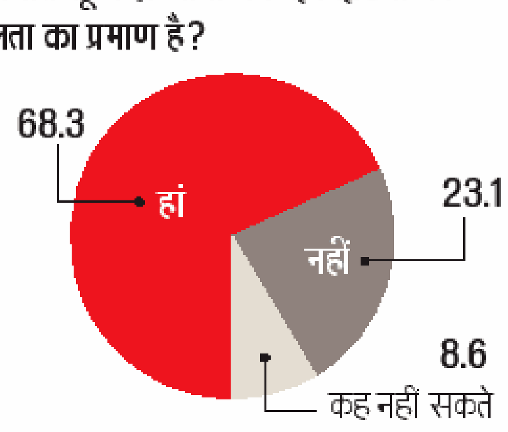

आज का सवाल

क्या वंदे मातरम् के मुद्दे पर कांग्रेस रक्षात्मक नजर आ रही है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है। सभी आंकड़े प्रतिशत में।

एसआइआर पर अनावश्यक आपत्ति

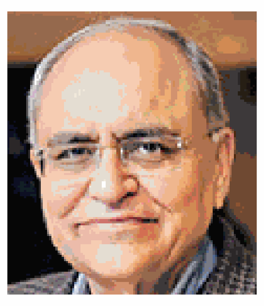

बलबीर पुंज

ईवीएम पर संदेह, वोट चोरी के आरोप और अब एसआइआर का विरोध 'नाच न जाने, आंगन टेढ़ा' वाली कहावत को चरितार्थ करने जैसा है

भारत का लोकतंत्र विश्व की सबसे विशाल जनइच्छा का प्रतिबिंब है। यहां चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का माध्यम नहीं, अपितु एक पवित्र राष्ट्रीय संस्कार है। एक-एक मत स्वस्थ लोकतांत्रिक व्यवस्था की धड़कन है। इसलिए मतदाता सूची की शुद्धता केवल भारतीय निर्वाचन आयोग का प्रशासनिक काम नहीं, बल्कि भारत के संवैधानिक आत्मा की सुरक्षा का भी प्रश्न है। इसी मूल भावना के साथ चुनाव आयोग ने इस वर्ष एक जुलाई से मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआइआर का व्यापक अभियान आरंभ किया, ताकि कोई अपात्र व्यक्ति इस सूची में शामिल न हो और कोई पात्र नागरिक छूट न जाए। बिहार के बाद 12 और राज्यों में यह प्रक्रिया जारी है। इससे पहले देश में वर्ष 2002-04 के बीच एसआइआर हुआ था। यह विडंबना है कि कुछ राजनीतिक दल और उनके शीर्ष नेता संविधान की प्रतियां लहराकर स्वयं को उसका 'रक्षक' साबित करने पर तुले रहते हैं, वहीं संसद के भीतर और बाहर इस वैधानिक चुनाव सुधार प्रक्रिया पर अनर्गल सवाल भी खड़े कर रहे हैं।

देशव्यापी एसआइआर के खिलाफ उच्चतम न्यायालय में भी मामले दायर हो गए हैं। विपक्षी दलों की ओर से इन मामलों की पैरवी कपिल सिब्बल और अभिषेक मनु सिंघवी जैसे दिग्गज कर रहे हैं। उनकी दलील है कि एसआइआर एक गैर-जरूरी प्रक्रिया है और चुनाव आयोग के पास इसे कराने का अधिकार नहीं है। उनकी इस दलील को अदालत ने खारिज कर दिया। इतना ही नहीं, न्यायालय ने 26 नवंबर की सुनवाई में यह भी रेखांकित किया कि बिहार में एसआइआर के दौरान जिन अपात्र मतदाताओं के नाम हटाए गए, उनमें से किसी एक ने भी कोई आपत्ति दर्ज नहीं कराई। अब चुनाव आयोग एसआइआर के दूसरे चरण में 12 राज्यों के 321 जिलों में 1,843 विधानसभा क्षेत्रों के लगभग 51 करोड़ मतदाताओं की समीक्षा कर रहा है। तीन दिसंबर तक इसके लिए 99 प्रतिशत फार्म वितरित और 93 प्रतिशत से अधिक डिजिटाइज किए जा चुके हैं। स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी प्रक्रिया सुनिश्चित करने के लिए आयोग अब तक 4,700 से अधिक सर्वदलीय बैठकों का आयोजन कर चुका है। इनमें 28,000 राजनीतिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अंतिम मतदाता सूची आगामी 16 फरवरी को प्रकाशित होगी। जिन लोगों के नाम सूची से हटेंगे, उन्हें एक माह तक दावा-आपत्ति का अवसर मिलेगा। आखिर इतनी पारदर्शी प्रक्रिया से घबराहट कैसी? विरोधियों द्वारा पहले ईवीएम पर संदेह जताना, वोट चोरी का आरोप मढ़ना और अब एसआइआर का विरोध करना असल में और कुछ नहीं, बल्कि 'नाच न जाने, आंगन टेढ़ा' वाली कहावत को चरितार्थ करने जैसा है।

अवधेश राजपूत

लोकसभा चुनाव में मामूली सफलता के बाद से ही कांग्रेस को एक के बाद एक राज्यों में मुंह की खानी पड़ी है। कांग्रेस का यह क्षरण बिहार चुनाव तक कायम रहा, मगर वह आत्ममंथन के बजाय आरोप-प्रत्यारोप में लगी है। स्वतंत्रता के बाद देश पर कांग्रेस का 50 वर्षों तक प्रत्यक्ष-परोक्ष शासन रहा। इस दौरान कांग्रेस तमिलनाडु (1967), बंगाल (1977), उत्तर प्रदेश (1989), गुजरात (1990), महाराष्ट्र (1995), ओडिशा (2000), गोवा (2012) और दिल्ली (2013) में ही एक बार सत्ता से बाहर हुई, मगर अपने दम पर अब तक सत्ता में नहीं लौट सकी। दिल्ली में 2015, 2020 और 2025 के चुनावों में वह खाता तक नहीं खोल पाई।

पिछले चार लोकसभा चुनाव स्पष्ट रूप से भारत के बदलते राजनीतिक परिदृश्य को रेखांकित करते हैं। 2009 में भाजपा को 18.8 प्रतिशत मत और 116 सीटें मिली थीं। 2014 में भाजपा 31 प्रतिशत मतों के साथ 282 सीटों पर पहुंच गई, तो कांग्रेस 206 से घटकर 44 सीटों और 28.5 प्रतिशत मतों से गिरकर 19.3 प्रतिशत पर आ गई। दोनों चुनावों में केंद्र में कांग्रेसनीत संप्रग सरकार सत्ता में थी। भाजपा के प्रति जनसमर्थन 2019 में और प्रबल हुआ और उसने पहले से अधिक मतों (37.3 प्रतिशत) और सीटों (303) के साथ फिर बहुमत प्राप्त किया। 2024 का चुनाव भी भाजपा ने पीएम मोदी के नेतृत्व में सत्ता-विरोधी लहर, विपक्षी एकजुटता, भारत-विरोधी शक्तियों के प्रपंचों और नकारात्मक प्रचार के बीच लड़ा, जिसमें उसकी सीटें (240) और मत (36.5 प्रतिशत) दोनों घटे, पर सरकार बनाने में सफल रही।

ध्यान देने वाली बात यह भी है कि केंद्र में मोदी सरकार रहते हुए पिछले 11 वर्षों में कई राज्यों में विपक्षी दलों ने भी चुनाव जीते। बंगाल में तृणमूल, तमिलनाडु में द्रमुक, झारखंड में झामुमो, कर्नाटक-हिमाचल-तेलंगाना में कांग्रेस, जम्मू-कश्मीर में नेशनल कांफ्रेंस और केरल में वामपंथी आदि शामिल हैं। यहां तक कि 70 सदस्यीय दिल्ली विधानसभा के चुनाव में आप ने 2015 में 67 और 2020 में 62 सीटें जीतीं, तो 2022 में पंजाब की भी 80 प्रतिशत सीटें भी आप जीतने में सफल रही थी। यदि चुनाव आयोग किसी एक के लिए पक्षपाती होता, तो क्या ऐसे एकतरफा परिणाम संभव होते?

वास्तव में कांग्रेस नेतृत्व सहित अधिकांश विरोधी दल अपनी मूल समस्या को देखने-समझने की क्षमता खो चुके हैं। अहंकार और वंशवादी अधिकारबोध ने इन्हें आत्मविश्लेषण से वंचित कर दिया है। वे कल्पना में जीते हुए वास्तविकता से पूरी तरह कट गए हैं और अपनी हर चुनावी असफलता के लिए प्रधानमंत्री मोदी और चुनाव आयोग पर अनर्गल आरोप मढ़ रहे हैं। एक कटु सत्य यह भी है कि यदि किसी कारण मतदाताओं का भाजपा से मोहभंग होता भी है तो मतदाता कांग्रेस के बजाय अन्य विकल्प खोजते हैं। देखा जाए तो सपा, राजद, तृणमूल, द्रमुक, राकांपा, आप ने कांग्रेस की ही सियासी जमीन हथियार कर ही अपनी राजनीतिक जड़ें मजबूत की हैं। सच यह है कि जब 'लोक' अर्थात मतदाता बार-बार विपक्ष को नकार देता है, तब संगठित राजनीतिक रणनीति के तहत एक 'तंत्र' चुनाव आयोग जैसी संस्थाओं को कठघरे में खड़ा करता है। उद्देश्य केवल इतना है कि जनता से कटाव के बीच अपनी गिरती राजनीतिक प्रासंगिकता किसी तरह बची रहे, भले ही इसके लिए देश की संवैधानिक संस्थाओं की विश्वसनीयता को ही आघात क्यों न पहुंचे।

(लेखक वरिष्ठ स्तंभकार हैं)

response@jagran.com

अर्थव्यवस्था में नई जान फूंकते गांव

डा. जयंतीलाल भंडारी

गरीबी में कमी और छोटे किसानों की साहूकारों पर घटी निर्भरता से ग्रामीण भारत की आर्थिक सूरत बदल रही है

भारत ने 2024-25 में 35.77 करोड़ टन अनाज पैदा करके एक ऐतिहासिक रिकार्ड बनाया है। पिछले दस सालों में भारत का खाद्यान्न उत्पादन 10 करोड़ टन बढ़ा है। यह खेती में आत्मनिर्भरता और गांवों के विकास की तरफ देश की लगातार बढ़ती रफ्तार को दिखाता है। इस समय जहां वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर लगभग तीन प्रतिशत है और जी-7 देशों की अर्थव्यवस्थाएं औसतन करीब 1.5 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है, वहीं भारत में 2025-26 की दूसरी तिमाही में जीडीपी की वृद्धि दर 8.2 प्रतिशत रही है। इन दिनों भारत के आर्थिक परिदृश्य से संबंधित विभिन्न अध्ययन रिपोर्टों में यह तथ्य रेखांकित हो रहा है कि चालू वित्त वर्ष 2025-26 में ग्रामीण भारत से अर्थव्यवस्था को मजबूती मिल रही है। इन रिपोर्टों के अनुसार गांवों में खपत तेजी से बढ़ रही है। ग्रामीण गरीबी में कमी, छोटे किसानों की साहूकारी कर्ज पर निर्भरता में कमी, ग्रामीण खपत में वृद्धि, किसानों का जीवन स्तर बढ़ने जैसी विभिन्न अनुकूलताओं से ग्रामीण भारत मजबूती की राह पर आगे बढ़ रहा है। रिजर्व बैंक ने मौद्रिक नीति समीक्षा की हालिया बैठक में कहा भी कि भारत में महंगाई घटने में कृषि उत्पादन और ग्रामीण विकास का महत्वपूर्ण योगदान है और आगे भी महंगाई नियंत्रण में खाद्यान्न उत्पादन की अहम भूमिका रहेगी।

विश्व बैंक की रिपोर्ट के मुताबिक ग्रामीण सुधार, बेहतर कृषि उत्पादन, ग्रामीण उपभोग में बढ़ोतरी तथा कर सुधार जैसे घटकों के दम पर भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था बना रहेगा। इसी तरह एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स द्वारा प्रकाशित एशिया-पैसिफिक इकोनमिक आउटलुक रिपोर्ट 2025 के मुताबिक ग्रामीण भारत में विकास की सकारात्मकता है। महंगाई घटने और करों में कटौती से भारत की ग्रामीण खपत में सुधार हुआ है। रिजर्व बैंक द्वारा प्रकाशित ग्रामीण उपभोक्ता विश्वास सर्वेक्षण पर आधारित रिपोर्ट के अनुसार पिछले एक साल में 76.7 प्रतिशत ग्रामीण परिवारों में उपभोग वृद्धि और 39.6 प्रतिशत परिवारों में आय में वृद्धि सामने आई है। इसी तरह एसबीआइ रिसर्च द्वारा गरीबी पर जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि गरीबी में कमी शहरी इलाकों की तुलना में ग्रामीण इलाकों में अधिक तेजी से आई है।

समृद्धि से सुधरता ग्रामीणों का जीवन स्तर ● फाइल

जहां 2011-12 में ग्रामीण गरीबी 25.7 प्रतिशत और शहरी गरीबी 13.7 प्रतिशत थी, वहीं 2023-24 में ग्रामीण गरीबी घटकर 4.86 प्रतिशत और शहरी गरीबी घटकर 4.09 प्रतिशत पर आ गई है। हाल में जारी नाबार्ड की सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में अब 54.5 प्रतिशत परिवार औपचारिक स्रोतों-क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों, सहकारी समितियों आदि से ऋण लेते हैं, जो अब तक का सबसे ऊंचा स्तर है। उल्लेखनीय है कि 2019 से शुरू की गई प्रधानमंत्री किसान सम्मान योजना भी करोड़ों छोटे और सीमांत किसानों को वित्तीय मजबूती दे रही है। अप्रैल 2020 से शुरू की गई पीएम स्वामित्व योजना के तहत ग्रामीणों को उनकी जमीन का कानूनी हक देकर उनके आर्थिक सशक्तीकरण का नया अध्याय लिखा जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में औपचारिक ऋण व्यवस्था ने अच्छी प्रगति की है। गांवों में बैंक शाखाओं की संख्या मार्च 2010 के 33,378 से बढ़कर दिसंबर 2024 तक 56,579 हो गई है। इसके साथ ही किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) कृषि इन्फ्रास्ट्रक्चर फंड, सहकारी समितियों और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूह, ग्रामीण बैंकिंग व्यवस्था भी प्रभावी भूमिका निभा रही है। सरकार ने बीते 11 वर्षों में फसलों पर दी जाने वाली सब्सिडी और फसल बीमा राशि को बढ़ाया है।

हालांकि देश का कुल कृषि निर्यात 50 अरब डालर के पार पहुंच गया है, लेकिन हमें अभी भी ग्रामीण भारत के विकास और किसानों की प्रगति के लिए कई बातों पर ध्यान देना होगा। छोटे और सीमांत किसान आधुनिक खेती की तकनीक अपनाने में असमर्थता अनुभव कर रहे हैं। छोटे किसान आनलाइन खरीदारी में बहुत पीछे हैं। अभी भी ग्रामीण जनजीवन के करीब 22 प्रतिशत लोगों की कर्ज के लिए साहूकारों और अन्य अनौपचारिक स्रोतों पर निर्भरता बनी हुई है। यह वर्ग ऊंची ब्याज दर पर कर्ज देता है और उसकी औसत ब्याज दरें लगभग 17-18 प्रतिशत से भी अधिक होती हैं। जब छोटे किसानों को मौसमी जोखिम और सरकार से पर्याप्त धन हस्तांतरण की कमी का सामना करना पड़ता है, तब वे भारी ब्याज के बावजूद साहूकारों की चौखट पर दस्तक देते हैं। कई बार छोटे किसान औपचारिक स्रोतों से ऋण लेना तो चाहते हैं, मगर इसमें दस्तावेजों की कमी, गारंटी दाता का अभाव एवं अन्य शर्तें बाधा डालती हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार लगभग 50 प्रतिशत कृषि परिवार अभी भी कर्ज में डूबे हुए हैं। ऐसे में गांवों में साहूकारों और अनौपचारिक ऋणों पर निर्भरता घटाने के लिए बैंक शाखा विस्तार के अलावा अन्य कदम उठाने की भी जरूरत है।

यह समय की मांग है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था के अंतिम छोर तक मजबूत गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) की भूमिका को प्रभावी बनाया जाए। गांवों में प्रधानमंत्री स्वामित्व योजना का तेजी से विस्तार करना होगा। इससे छोटे किसानों की संस्थागत ऋण तक पहुंच बढ़ाई जा सकेगी। देश को 2047 तक विकसित बनाने के लिए सरकार को ग्रामीण अर्थव्यवस्था को और सशक्त बनाने की डगर पर भी आगे बढ़ना होगा।

(लेखक अर्थशास्त्री हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

आत्मीयता की निर्झरिणी

समस्त जीवों का कल्याण हो-जिस दिन प्रार्थना में यह सम्मिलित हो जाए, तब समझना चाहिए कि उसी दिन से आध्यात्मिक मार्ग का द्वार खुल गया है। मित्रता और शत्रुता-दोनों ही मन के ऐसे बंधन हैं, जो व्यक्ति को उसके मूल स्वरूप से दूर ले जाते हैं। मित्रता में मनुष्य स्वयं को किसी दूसरे में खो देता है और शत्रुता में वह दूसरे को अपने भीतर ठूंसकर रख लेता है। दोनों ही अवस्थाओं में आत्मा का स्वातंत्र्य बाधित होता है। आध्यात्मिक चर्या का प्रथम सूत्र यह है कि व्यक्ति अपनी चेतना को किसी भी बाहरी वस्तु या व्यक्ति के हाथों गिरवी न रखे। सच्चा आध्यात्मिक व्यक्ति किसी के साथ राग या द्वेष नहीं पालता। उसका संकल्प केवल इतना होता है कि वह किसी भी हृदय में पीड़ा का कारण न बने।

करुणा का प्रादुर्भाव तभी होता है जब मनुष्य किसी भी प्रकार के मानसिक व्यापार से मुक्त हो जाता है। करुणा में न अपेक्षा है और न विरोध। वह आत्मीयता की ऐसी निर्झरिणी है जो लाभ-हानि से परे सब पर बरसती है। जब व्यक्ति सबका कल्याण चाहता है, तब वह वास्तव में अपने भीतर की उस निर्मल धारा को पोषित करता है जो समस्त प्राणियों को एक ही चेतना की अभिव्यक्ति मानती है। सबके कल्याण में ही उसका स्वयं का कल्याण भी छुपा होता है। जो मनुष्य सबके लिए निर्विकार भाव से कल्याण की भावना रखता है, वह न किसी के हित का व्यापारी बनता है और न किसी के विरोध का वाहक।

आज व्यक्ति व्यापार, विनिमय, लेनदेन, आकर्षण-विकर्षण के चौराहे पर खड़ा हुआ है। संसार के इस लेनदेन के बीच मनुष्य कब अपने आत्मबोध की पूंजी गंवा देता है, वह जानता ही नहीं। जब मनुष्य किसी से अत्यधिक स्नेह नहीं जोड़ता, तो अपेक्षाओं का विष भी नहीं जन्म लेता और जब वह किसी से बैर नहीं पालता, तो मन की शांत झील में क्रोध की लहरें नहीं उठतीं। निर्लिप्तता मानवीय संबंधों को शुद्ध करती है।

ट्विंकल तोमर सिंह

पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

हादसों को निमंत्रण देती लापरवाही

'जानलेवा लापरवाही' शीर्षक से प्रकाशित संपादकीय पढ़ा। गोवा के एक नाइट क्लब में जो अग्निकांड हुआ, उसके लिए वही लोग सबसे अधिक जिम्मेदार हैं, जिनकी यह जिम्मेदारी होती है कि ऐसे हादसे न हों। वैसे भी यह देश में ऐसा न कोई पहला मामला है और अफसोस कि न अंतिम, क्योंकि हम पिछली गलतियों से कोई सबक ही नहीं सीखते। जो समाज इतिहास से सबक नहीं सीखता, वह उसे दोहराने को ही अभिशप्त होता है। हर हादसे की जांच के आदेश दिए जाते हैं और हादसे के पीड़ितों को मुआवजा देकर कर्तव्य की इतिश्री कर ली जाती है, लेकिन इतना ही पर्याप्त नहीं है। अगर पूर्व में अग्निकांडों से सबक लिया होता तो शायद यह दुर्घटना न होती और इतने लोगों की असमय मौत को टाला जा सकता था। अगर निष्पक्ष जांच की जाए तो सामने आएगा कि देश भर में तमाम इमारतें संवेदनशील हैं, लेकिन इसके बावजूद उनका उपयोग जारी है। यह लापरवाही हादसों को निमंत्रण नहीं तो और क्या है?

raju09023693142@gmail.com

घुसपैठ की साजिश

कश्मीर एक बार फिर उसी चुनौतीपूर्ण मोड़ पर खड़ा दिखाई दे रहा है, जहां सीमापार से होने वाली हलचलें, आतंकी नेटवर्क की गतिविधियां और पाकिस्तान समर्थित संगठनों का दबाव सुरक्षा तंत्र पर असर डालने की कोशिश कर रहा है। पिछले कुछ हफ्तों में नियंत्रण रेखा के पार तेजी से बढ़ती गतिविधियों ने सुरक्षा एजेंसियों को और अधिक सतर्क होने पर मजबूर कर दिया है। विश्व के सबसे संवेदनशील माने जाने वाले इस सीमा क्षेत्र में इन दिनों घुसपैठ की संभावनाएं बढ़ी हैं। खुफिया एजेंसियों के अनुसार सौ से अधिक आतंकी भारत में घुसने की फिराक में हैं, जो पीओके में अलग-अलग लांचपैड से लगातार गतिविधियां बढ़ा रहे हैं। वहीं, भारत ने भी अपनी तैयारियों को और पुख्ता किया है। सुरक्षा एजेंसियों की सतर्कता, सेना की रणनीतिक तैनाती, बीएसएफ की उन्नत निगरानी व पुलिस के साथ समन्वय ने मिलकर एक ऐसा सुरक्षा कवच तैयार किया है, जो किसी भी घुसपैठ के प्रयास को सीमापार ही विफल करने के लिए प्रतिबद्ध है। कश्मीर के संवेदनशील भू-भाग में यह एक कठिन चुनौती तो है, लेकिन भारत की दृढ़ इच्छाशक्ति और बहु-परत सुरक्षा संरचना इस खतरे से निपटने के लिए पर्याप्त रूप से सक्षम दिखाई दे रही हैं। कड़ी निगरानी के साथ कई तकनीकी साधनों का उपयोग बढ़ाया गया है। नाइट विजन कैमरे, हाई-टेक ड्रोन, अत्याधुनिक थर्मल इमेजिंग सिस्टम, ग्राउंड सेंसर व रियल-टाइम मानिटरिंग से जवानों को हर हरकत पर बारीकी से नजर रखने में सहायता प्रदान कर रहे हैं। बीएसएफ ने जम्मू-कश्मीर में वर्ष 2025 में अभी तक 118 पाकिस्तानी चौकियों को ध्वस्त किया है। सीमा पार से सुरक्षा को चुनौती देने वाली संरचनाओं को लगातार समाप्त किया जा रहा है। जम्मू-कश्मीर फ्रंटियर के आइजी शशांक आनंद ने कहा कि सरकार ने शून्य घुसपैठ का लक्ष्य निर्धारित किया है, बीएसएफ इस लक्ष्य को साधने के लिए निरंतर अभियान चला रही है।

कांतिलाल मांडोत, नई दिल्ली

बसपा की रणनीति

उत्तर प्रदेश की राजनीति में बहुजन समाज पार्टी (बसपा) एक बार फिर अपनी खोए हुए जन आधार को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रयास कर रही है। पिछले छह महीने से राज्यवार बैठकों को दौर जारी है। मायावती के नेतृत्व में दलित मुस्लिम और पिछड़े वर्गों को एकजुट करने की रणनीति पर जोर दिया जा रहा है। बसपा सुप्रीमो ने कहा कि बहुजन के आत्मसम्मान व स्वाभिमान वाले अच्छे दिन आखिर कब आएंगे? जातिवादी पार्टियों की सरकारों में बहुजन का हित कभी प्राथमिकता में नहीं रहा। विरोधी दलों द्वारा इस समाज को सत्ता में आने से रोकने की साजिश की जाती है। उन्होंने रुपये के अवमूल्यन को लेकर कहा कि यह आर्थिक से ज्यादा राजनीतिक महत्व का मुद्दा बन गया है। नौ अक्टूबर को कांशीराम की पुण्यतिथि एवं छह दिसंबर को डा. आंबेडकर की पुण्यतिथि पर नोएडा स्थित राष्ट्रीय दलित प्रेरणा स्थल कार्यक्रम भी इसी कड़ी का हिस्सा था। महापरिनिर्वाण दिवस के अवसर पर पार्टी दलित समाज की भावनाओं को मजबूत करने और अन्य समुदायों को जोड़ने का प्रयास किया है, क्योंकि आंबेडकर के विचार बसपा की विचारधारा का आधार हैं। ऐसे कार्यक्रमों से पार्टी अपने कोर वोट बैंक को मजबूत करने के साथ-साथ मुस्लिम और ओबीसी समुदायों तक पहुंच बना रही है। अगर यह रणनीति कामयाब रही तो 2027 में बसपा सत्ता पक्ष के सामने एक मजबूत चुनौती पेश करेगी।

वीरेंद्र कुमार जाटव, दिल्ली

X पोस्ट

इंडिगो की वजह से देश-विदेश में भारत की साख पर बट्टा लगा, लेकिन क्या नागरिक उड्डयन मंत्रालय के किसी अधिकारी पर गाज गिरी?

रवीश रंजन शुक्ला@ravishranjanshu

वंदे-मातरम् पर संसद में होने वाली व्यापक चर्चा सिर्फ एक गीत पर विमर्श नहीं, बल्कि भारत के सांस्कृतिक आत्मा, स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणा और राष्ट्रीय एकता के मूल्यों को दोबारा केंद्र में लाने का प्रयास भी है।

डा. अवनींद्र कुमार राय@avanindra43

कांग्रेस नेतृत्व को बैठकर सोचना चाहिए कि आजादी के समय पार्टी जिस राष्ट्रवादी विचारधारा की वाहक थी, उससे वह कितनी दूर हो गई कि उसके सामने वंदे मातरम् का गीत भी मुद्दा बन जा रहा है।

कामरेड एम.@ComradeMalal

आखिर हुमायूं कबीर ने छह दिसंबर को बाबरी मस्जिद की नींव डाल दी। अब 300 करोड़ रु. में बाबरी मस्जिद और उसके आसपास एक बड़े इस्लामिक केंद्र बनाने की योजना पर काम हो रहा है। देश को इसका उत्तर कैसे देना चाहिए? अवधेश कुमार@Awadheshkum

जनपथ

सीमा पर हो 'बाबरी' का फिर से निर्माण,
लगे सुरक्षा दांव पर रहें हथेली प्राण।
रहें हथेली प्राण जमें आ बंग्लादेशी,
सब करने की छूट दे रही डेमोक्रेसी!
रहा हमायूं बोय जहर इक धीमा-धीमा,
असुरक्षित अब और हो रही अपनी सीमा।

- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर)-विष्णु प्रकाश त्रिपाठी
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय :0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I.No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 144

एक नजर में

8,600 रुपये माह में मिलेगा स्टारलिंक का इंटरनेट

नई दिल्ली: अमेरिका के दिग्गज कारोबारी एलन मस्क की कंपनी स्टारलिंक भारत में वाणिज्यिक संचालन के काफी करीब आ गई है। कंपनी ने अपनी स्थानीय वेबसाइट पर आवासीय प्लान प्रदर्शित कर दिया है। वेबसाइट के अनुसार, कंपनी ने सेटेलाइट आधारित इंटरनेट सेवा की कीमत 8,600 रुपये प्रति महीना तय की है। नए ग्राहकों को 34 हजार रुपये की हार्डवेयर किट भी खरीदनी होगी। आवासीय प्लान में अनलिमिटेड डाटा और 30 दिन की ट्रायल अवधि शामिल है। (आइएएनएस)

टाटा इलेक्ट्रानिक्स और इंटेल के बीच साझेदारी

बेंगलुरु: टाटा समूह की कंपनी टाटा इलेक्ट्रानिक्स और अमेरिका की चिप निर्माता इंटेल के बीच एक साझेदारी हुई है। यह शायद अमेरिकी चिप निर्माता का भारत के मैन्यूफैक्चरिंग लक्ष्यों पर भरोसे का संकेत है। टाटा इलेक्ट्रानिक्स गुजरात में भारत का पहला सेमीकंडक्टर फैब्रिकेशन संयंत्र और असम में एक चिप असेंबली व टेस्टिंग संयंत्र बनाने पर लगभग 14 अरब डालर का निवेश कर रही है। इंटेल और टाटा इलेक्ट्रानिक्स भारत में उपभोक्ता और एंटरप्राइज बाजार के लिए एआइ पीसी समाधान को तेजी से बढ़ाने के मौके तलाशेंगे। (रायटर)

नवंबर में अमेरिका को चीन का निर्यात 29 प्रतिशत घटा

हांगकांग: अक्टूबर की अचानक गिरावट के बाद नवंबर में चीन का निर्यात फिर से बढ़ा है। हालांकि, इस दौरान अमेरिका को होने वाले निर्यात में 29 प्रतिशत की गिरावट आई है। सीमा शुल्क विभाग की ओर से सोमवार को जारी डाटा के अनुसार, नवंबर में डालर के लिहाज से चीन का कुल निर्यात 330.3 अरब डालर रहा है, जो पिछले वर्ष के समान महीने के मुकाबले 5.9 प्रतिशत ज्यादा है। पिछले महीने चीन का आयात 1.9 प्रतिशत बढ़ा है जो इसी वर्ष अक्टूबर की एक प्रतिशत की वृद्धि से बेहतर है। (एपी)

मुनाफावसूली से लुढ़के शेयर बाजार

विशेषज्ञ बोले– फेडरल रिजर्व के नीतिगत निर्णय से पहले निवेशक हुए सतर्क

मुंबई, प्रेट्र: मुनाफावसूली और विदेशी निवेशकों की लगातार बिकवाली के कारण घरेलू शेयर बाजार सोमवार को गिरावट के साथ बंद हुए। बीएसई का मानक सूचकांक सेंसेक्स 609.68 अंक की गिरावट के साथ 85,102.69 के स्तर पर बंद हुआ। दिनभर के कारोबार में सेंसेक्स में 836.78 अंक तक लुढ़का था। इसी तरह, एनएसई का निफ्टी 225.90 अंक गिरकर 25,960.55 पर बंद हुआ। सत्र के दौरान यह 294.2 अंक गिरकर 25,892.25 के निम्न स्तर पर पहुंचा था।

विश्लेषकों का कहना है कि निवेशक इस सप्ताह अमेरिका के केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व के नीतिगत निर्णय से पहले सतर्क हो गए हैं। इससे बाजार की धारणा और कमजोर हुई है। जियोजित इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा कि बाजार में व्यापक गिरावट आई, जिससे निफ्टी 26,000 के स्तर से नीचे गिर गया। निवेशक इस सप्ताह के फेड निर्णय से पहले सतर्क हो गए हैं। मजबूत घरेलू विकास आंकड़ों और आरबीआइ की हालिया ब्याज दर कटौती के बावजूद अल्पकालिक धारणा वैश्विक मौद्रिक नीति चिंताओं, निरंतर विदेशी निकासी और भारतीय मुद्रा में गिरावट से प्रभावित है। सोमवार को अमेरिकी डालर के मुकाबले भारतीय रुपया 10 पैसे की गिरावट के साथ 90.05 के स्तर पर बंद हुआ।

सेंसेक्स में भारत इलेक्ट्रानिक्स, एटरनल, ट्रेंट, टाटा स्टील, बजाज फाइनेंस, अदाणी पोर्ट्स, बजाज फिनसर्व, एसबीआइ, पावरग्रिड, एशियन पेंट्स, टाटा मोटर्स पैसेंजर व्हीकल्स, टाइटन, एनटीपीसी, कोटक महिंद्रा बैंक, लार्सन एंड टुब्रो और भारती एयरटेल के शेयर गिरकर बंद हुए।

दूसरी ओर, टेक महिंद्रा, एचसीएल टेक्नोलाजीज, रिलायंस इंडस्ट्रीज और एचडीएफसी बैंक के शेयर बढ़कर बंद हुए।

609 अंक गिरकर 85,102 पर बंद हुआ बीएसई सेंसेक्स

225 अंक गिरकर 26 हजार से नीचे एनएसई का निफ्टी

7.12 लाख करोड़ घटी संपत्ति

लगातार दूसरे दिन रही गिरावट से निवेशकों की संपत्ति में 7.12 लाख करोड़ रुपये की गिरावट दर्ज की गई। इस गिरावट के बाद बीएसई में सूचीबद्ध सभी कंपनियों का बाजार पूंजीकरण घटकर 464.19 लाख करोड़ रुपये या 5.15 ट्रिलियन डालर रह गया है। बीएसई में 3,348 शेयरों में गिरावट रही, जबकि 950 कंपनियों के शेयर बढ़कर बंद हुए। 187 शेयरों में कोई बदलाव नहीं हुआ।

क्षेत्रवार गिरावट (% में)	
सेवाएं	3.70
रियल्टी	3.50
कैपिटल गुड्स	2.83
दूरसंचार	2.53
औद्योगिक	2.21
यूटिलिटीज	2.10
धातु	1.96
बिजली	1.84

नवंबर में वाहनों की खुदरा बिक्री 2.14% बढ़ी

नई दिल्ली, प्रेट्र: वाहनों की खुदरा बिक्री ने त्योहारों के बाद की अवधि में गति बनाए रखी है और नवंबर 2025 में वाहनों की खुदरा बिक्री में 2.14 प्रतिशत की वृद्धि रही है। इसमें यात्री वाहनों, तीन पहिया वाहनों, वाणिज्यिक वाहनों और ट्रैक्टरों की मजबूत मांग का प्रमुख योगदान रहा है।

वाहन डीलर्स की संस्था फेडरेशन आफ आटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन (फाडा) के अनुसार, पिछले महीने वाहनों कुल 33,00,832 वाहनों की खुदरा बिक्री हुई है। नवंबर 2024 में यह आंकड़ा 32,31,526 इकाई थी। पिछले वर्ष दीपावली और धनतेरस अक्टूबर के अंत में आए थे और वाहन पंजीकरण नवंबर में हुए थे, जिससे मात्रा में काफी वृद्धि हुई थी।

डाटा के अनुसार, पिछले महीने 3,94,152 यात्री वाहनों की पंजीकरण हुआ है जो पिछले वर्ष समान अवधि की 3,29,253 इकाई के मुकाबले 20 प्रतिशत अधिक है। इसमें जीएसटी लाभ, वैवाहिक मांग, उच्च प्रतीक्षा वाले माडलों की बेहतर आपूर्ति और काम्पैक्ट एसयूवी से निरंतर समर्थन के कारण वृद्धि देखी गई। इन्वेंट्री घटकर 44-46 दिनों तक आ गई है जो स्वस्थ मांग-आपूर्ति अनुशासन को दर्शाता है।

दोपहिया वाहनों की खुदरा बिक्री में वार्षिक आधार पर तीन प्रतिश घटकर नवंबर में 25,46,184 इकाई रही है। फाडा का कहना है कि यह बदलाव अक्टूबर में त्योहारी खरीद के कारण हुआ है। वाणिज्यिक वाहनों का पंजीकरण वार्षिक आधार पर 20 प्रतिशत बढ़कर 94,935 इकाई रहा है। तीन पहिया वाहनों की खुदरा बिक्री नवंबर में 24 प्रतिशत बढ़कर 1,33,951 इकाई रही है। इसी प्रकार, ट्रैक्टर की खुदरा बिक्री 57 प्रतिशत बढ़कर 1,26,033 इकाई रही है।

फाडा के प्रेसिडेंट सीएस विग्नेश्वर का कहना है कि जीएसटी दरों में कटौती और कंपनियों व डीलर्स के खुदरा आफरों ने ग्राहकों को शोरूम में खींचने में मदद की है। इससे त्योहारों के बाद भी लगातार ग्राहकों का आना जारी रहा। विभिन्न श्रेणियों में मूल्य में कमी का समर्थन नवंबर में भी मिला है। नवंबर 2025 ने पारंपरिक त्योहारों के बाद की मंदी को चुनौती दी। पिछले वर्ष के असामान्य रूप से उच्च तुलनात्मक आधार के बावजूद वाहनों की खुदरा बिक्री ने मजबूत प्रदर्शन किया है।

33,00,832 वाहनों की खुदरा बिक्री हुई पिछले महीने

32,31,526 वाहनों की बिक्री हुई थी नवंबर 2024 में

बिजनेस से जुड़ी खबरों और अपडेट के लिए स्कैन करें या विजिट करें jagran.com

सेबी ने शुरू की नई जोखिम और रिटर्न सत्यापन एजेंसी

बेंगलुरु, रायटर: निवेश उत्पादों की गलत बिक्री रोकने और मानकीकृत रिपोर्ट के जरिये निगरानी बढ़ाने के लिए सेबी ने सोमवार को एक नई जोखिम व रिटर्न सत्यापन एजेंसी की शुरुआत की। इस तरह का प्लेटफार्म शुरू करने वाला भारत दुनिया का पहला देश है।

सेबी के चेयरमैन तुहिन कांत पांडे ने कहा कि नई पास्ट रिस्क एंड रिटर्न वेरिफिकेशन एजेंसी एक तकनीक आधारित सुधार है। इसका उद्देश्य डिजिटल आडिट ट्रेल्स के माध्यम से रिपोर्टिंग में विश्वसनीयता और स्थिरता लाना है। उन्होंने चेतावनी दी कि फिनफ्लुएंसर्स और गैर-पंजीकृत संस्थाएं अक्सर निवेशकों को बढ़ा-चढ़ाकर या फर्जी रिटर्न के जरिये लुभाती हैं। रायटर ने एक रिपोर्ट में कहा था कि सेबी सरकार से व्यापक शक्तियों की मांग कर रही है ताकि वह वाट्सएप और टेलीग्राम जैसे इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्मों से अनधिकृत वित्तीय सलाह को हटा सके।

6.15 लाख करोड़ के लोन राइट आफ किए

नई दिल्ली, प्रेट्र: केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी ने सोमवार को लोकसभा में बताया कि सरकारी बैंकों ने पिछले साढ़े पांच वर्ष के दौरान 6.15 लाख करोड़ रुपये का लोन राइट आफ यानी बट्टे खाते में डाला है।

एक लिखित जवाब में केंद्रीय मंत्री ने कहा कि वित्त वर्ष 2022-23 से सरकार ने सरकारी बैंकों में कोई पूंजी नहीं डाली है। सरकारी बैंकों ने अपने वित्तीय प्रदर्शन में काफी सुधार किया है। वे लाभ में आए हैं और अपनी पूंजीगत स्थिति मजबूत की है। सरकारी बैंक अब अपनी पूंजीगत जरूरतों के लिए बाजार और आंतरिक स्रोतों पर निर्भर हैं। सरकारी बैंकों ने एक अप्रैल 2022 से 30 सितंबर 2025 तक इक्विटी और बांड के जरिये 1.79 लाख करोड़ रुपये जुटाए हैं। उन्होंने बताया कि आरबीआइ की गाइडलाइंस और बैंकों के बोर्ड से मंजूर पालिसी के मुताबिक, किसी भी एनपीए को चार वर्ष पूरा होने पर उसे राइट आफ किया जाता है और उसके लिए प्रोविजनिंग की जाती है। ऐसे राइट आफ से कर्ज लेने वालों को देनदारी से कोई छूट नहीं मिलती है। राइट आफ किए गए लोन की वसूली एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है और बैंक अपने पास मौजूद अलग-अलग वसूली प्रणाली के जरिये कार्रवाई जारी रखते हैं। एक अन्य सवाल के जवाब में चौधरी ने कहा कि पिछले साढ़े चार वर्ष में धोखाधड़ी के 5,83,291 मामले पंजीकृत हुए हैं। इनमें 3,588.22 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी हुई है। इसमें से 238.83 करोड़ रुपये की वसूली की जा चुकी है।

पंकज चौधरी ● फाइल फोटो

- वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी ने लोकसभा में दी जानकारी
- बीते साढ़े पांच वर्ष में बट्टे खाते में डाली गई यह राशि

2027-28 से पहले अधिसूचित होंगे नए आइटीआर फार्म

नई दिल्ली, प्रेट्र: वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने सोमवार को कहा } कि आयकर अधिनियम, 2025 के आधार पर नए आयकर रिटर्न (आइटीआर) फार्म वित्त वर्ष 2027-28 से पहले अधिसूचित हो जाएंगे। लोकसभा में एक लिखित उत्तर में चौधरी ने कहा कि आइटीआर फार्म के सरलीकरण के लिए बनी सीबीडीटी की समिति कर विशेषज्ञों, संस्थागत निकायों और आयकर विभाग की क्षेत्रीय इकाइयों के साथ व्यापक परामर्श कर रही है। चालू वित्त वर्ष में अर्जित आय के लिए रिटर्न फार्म के संबंध में चौधरी ने कहा कि आइटीआर फार्म का समेकन और सरलीकरण प्रक्रिया में है। इन्हें आयकर अधिनियम, 1961 के प्रविधानों के अनुसार अधिसूचित किया जाएगा।

नवंबर में शाकाहारी व मांसाहारी थाली की लागत 13% घटी

नई दिल्ली, आइएएनएस: रेटिंग एजेंसी क्रिसिल इंटेलिजेंस की ताजा रिपोर्ट के अनुसार, इस वर्ष नवंबर में घर पर बनने वाली शाकाहारी और मांसाहारी थाली की लागत में वार्षिक आधार पर 13 प्रतिशत की गिरावट रही है। इसका मुख्य कारण सब्जियों और दालों की कीमतों में कमी है।

रिपोर्ट के अनुसार, उच्च आपूर्ति के कारण पिछले महीने टमाटर की कीमतों में 17 प्रतिशत की गिरावट रही है। वहीं, उच्च आधार के कारण आलू की कीमतें 29 प्रतिशत कम हुई हैं। रबी स्टाक और सुस्त निर्यात के कारण प्याज के मूल्य में 53 प्रतिशत और दालों की कीमत में 17 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। दालों की कीमत में कमी का प्रमुख कारण बढ़ता भंडारण और चना, पीले मटर और काले चने का भारी आयात है। हालांकि, मासिक आधार पर पिछले महीने शाकाहारी थाली की लागत दो प्रतिशत बढ़ी है और मांसाहारी थाली की लागत एक प्रतिशत घटी है।

अमेरिका के साथ इसी सप्ताह फिर शुरू होगी व्यापार वार्ता

व्यापार समझौते को लेकर फ्रेमवर्क तैयार, जुर्माने वाले 25 प्रतिशत शुल्क को हटवाने पर रहेगा भारत का जोर

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: भारत और अमेरिका के बीच द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) को लेकर इस सप्ताह फिर से बातचीत होने जा रही है। इस वार्ता में दोनों देशों के बीच व्यापार समझौते के पहले चरण के पूरा होने की फिर से उम्मीद की जा रही है। यह वार्ता 10-12 दिसंबर तक चलेगी।

सूत्रों के मुताबिक, अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल के साथ होने वाली बातचीत में भारत मुख्य रूप से जुर्माने के रूप में लगाए गए 25 प्रतिशत शुल्क को तत्काल हटाने की मांग करेगा। अमेरिका ने भारतीय निर्यात पर 50 प्रतिशत का शुल्क लगा दिया है। 25 प्रतिशत शुल्क रूस से तेल खरीदने के कारण जुर्माने के रूप में लगाया था। 50 प्रतिशत शुल्क गत 27 अगस्त से प्रभावी है। अब भारत ने रूस से तेल की खरीदारी काफी कम कर दी है, जबकि अमेरिका से तेल की खरीदारी बढ़ा दी गई है। भारत वस्तुओं के पारस्परिक शुल्क पर किसी प्रकार की वार्ता से पहले जुर्माने वाले शुल्क को समाप्त करवाना चाहता है।

सूत्रों के मुताबिक, दोनों देशों के बीच व्यापार समझौते को लेकर फ्रेमवर्क तैयार हो चुका है और इस सप्ताह इस फ्रेमवर्क के तहत ही बातचीत संभव है। जुर्माने वाला 25 प्रतिशत शुल्क हट जाने पर भी भारतीय निर्यातकों को बड़ी राहत मिलेगी क्योंकि 25 प्रतिशत शुल्क के साथ अमेरिका के बाजार वे दूसरे देशों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं। 50 प्रतिशत शुल्क लगने के बाद अमेरिका के बाजार में भारतीय वस्तुओं के निर्यात में कमी आई है। भारत के कुल वस्तु निर्यात में अमेरिका की हिस्सेदारी 18 प्रतिशत है।

विश्व की शीर्ष टेक सिटी की सूची में बेंगलुरु को मिला 16वां स्थान

नई दिल्ली, आइएएनएस : विकास के पथ पर लगातार तेजी से बढ़ रहा भारत तकनीक के क्षेत्र में भी नई ताकत बनकर उभर रहा है। पहली बार भारतीय शहर बेंगलुरु ने विश्व की शीर्ष 30 टेक सिटी की सूची में स्थान हासिल किया है। इस सूची में बेंगलुरु को 16वां स्थान मिला है।

रिपोर्ट में रियल एस्टेट सलाहकार फर्म सैविल्स इंडिया ने कहा कि इससे एशियाई बाजारों में बढ़ते वैश्विक रुचि का संकेत मिलता है। सोमवार को जारी की गई इस सूची में सैन फ्रांसिस्को और न्यूयार्क ने दुनिया के शीर्ष दो टेक सिटी के रूप में अपनी स्थिति को बरकरार रखा है। प्रत्येक दो साल पर जारी होने वाली इस सूची में दुनियाभर के 100 शहरों का मूल्यांकन किया जाता है, जिसमें व्यापार वातावरण, प्रतिभा की उपलब्धता, तकनीकी ताकत और जीवन की गुणवत्ता शामिल हैं। भारत के 'सिलिकान वैली' के तौर पर मशहूर बेंगलुरु ने मजबूत टेक इकोसिस्टम के साथ तकनीक के क्षेत्र में मुकाम हासिल किया है।

पीलीभीत टाइगर रिजर्व में बाघ को सफारी वाहनों ने घेरा

- साइफन पर दोनों ओर वाहन आने से बाघ हुआ असहज, जांच शुरू
- बाइफरकेशन पर भी वाहन से उतरकर बाघ को देखने लग गए थे पर्यटक

जागरण संवाददाता, पीलीभीत : जंगल सफारी की पहली शर्त है कि वन्यजीवों के स्वतंत्र विचरण में किसी प्रकार की बाधा नहीं आनी चाहिए। इसे दरकिनार करते हुए रविवार को साइफन (खारजा-खीरी ब्रांच नहर के पुल) पर दोनों ओर से आए सफारी वाहनों ने बाघ को घेर लिया। बीच में खड़ा बाघ असहज हुआ। कुछ मिनट बाद एक वाहन पीछे हटा, तब बाघ वहां से गुजरा। विशेषज्ञ बताते हैं कि विचरण में बाधा होने पर बाघ हमलावर भी हो जाते हैं। इससे पर्यटकों की जिंदगी को खतरा हो सकता था। सोमवार को प्रभागीय वनाधिकारी मनीष सिंह ने एसडीओ रुद्रप्रताप सिंह को मामले की जांच सौंप दी है।

पीलीभीत टाइगर रिजर्व की बराही रेंज में खारजा और खीरी ब्रांच नहर ऊपर-नीचे बहती हैं। अंग्रेजी शासनकाल में इस साइफन को बनाया गया था। रविवार को जंगल सफारी वाहन एक छोर से साइफन पर पहुंचा तो सामने बाघ दिखा। इतने में दूसरे छोर से एक अन्य सफारी वाहन भी आ गया। ऐसे में बाघ दोनों वाहनों के बीच खड़ा हो गया। चालकों ने उसे तुरंत रास्ता देने के बजाय पर्यटकों के रोमांच की खातिर वाहन रोक दिए। एक पर्यटक ने वीडियो बनाकर इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित किया, तब अधिकारियों ने संज्ञान लिया।

माधोटांडा क्षेत्र में बाइफरकेशन पर भी पर्यटक पहुंचते हैं। वहां किसी प्रकार का शुल्क नहीं देना होता। इसी रास्ते से माधोटांडा कस्बा के लिए आवाजाही भी होती है। रविवार शाम कई पर्यटक वहां पहुंचे थे। उसी दौरान डैम जाने वाले मार्ग पर बाघ विचरण करते दिखा। सफारी पर सवार कुछ पर्यटक भी आ गए थे। वे बाघ के फोटो और वीडियो बनाने लगे। 15 मिनट बाद बाघ जंगल में चला गया। इसके कुछ देर उपरांत मुस्तफाबाद जाने वाले जंगल मार्ग पर दूसरा बाघ भी दिखा। दोनों स्थानों पर पर्यटक सफारी वाहन से नीचे उतरकर बाघ देखने लगे थे, जो नियमों का उल्लंघन था।

बाइफरकेशन में बाघ को देखते पर्यटक और राहगीर ● सौ. राहगीर

टाइगर रिजर्व में सायफन पर घूमता बाघ ● सौ. वीडियो ग्रैब

'देवी-देवताओं व धार्मिक पुस्तकों के अपमान पर पहले से हैं कानून'

विधि संवाददाता, जागरण. लखनऊ : इलाहाबाद हाई कोर्ट की लखनऊ खंडपीठ ने हिंदू देवी-देवताओं व धार्मिक पुस्तकों के अपमान की घटनाओं को रोकने के लिए कठोर कानून बनाए जाने की मांग को लेकर दायर याचिका पर महत्वपूर्ण टिप्पणी की है। अदालत ने कहा कि इस विषय से जुड़े मामलों को नियंत्रित करने के लिए पहले से ही विधिक प्रविधान मौजूद हैं। यदि याची को लगता है कि ये कानून प्रभावी नहीं हैं, तो वह अपनी आपत्ति व सुझाव केंद्र व राज्य सरकार के समक्ष रखने के लिए स्वतंत्र है। यह आदेश न्यायमूर्ति राजन राय व न्यायमूर्ति इंद्रजीत शुक्ला की खंडपीठ ने 'हिंदू फ्रंट फार जस्टिस' की ओर से दाखिल याचिका का निस्तारण करते हुए पारित किया। अदालत ने याचिका का निस्तारण करते हुए कहा कि नीति निर्माण और कानून की प्रभावशीलता का विषय सरकारों के अधिकार क्षेत्र में आता है। इसलिए याची चाहे तो अपने सुझाव व मांगें सरकार के समक्ष रख सकता है।

मप्र में तीन दिनों में दो शावकों की मृत्यु से कठघरे में निगरानी तंत्र

सौरभ सोनी ● नईदुनिया

- खुले जंगल से बार-बार चीतों का पलायन चिंताजनक, मानव-चीता द्वंद्व रोकने की चुनौती
- चीता प्रोजेक्ट पर अब तक 115 करोड़ रुपये से अधिक खर्च हो चुके

भोपाल : मध्य प्रदेश में चीता प्रोजेक्ट को भले ही केंद्र व राज्य सरकार प्रोत्साहित कर रही हो, लेकिन तीन दिनों में दो शावकों की मौत ने वन विभाग के निगरानी तंत्र को कठघरे में खड़ा कर दिया है। कूनो नेशनल पार्क के खुले जंगल में छोड़े गए गामिनी चीता के तीन शावकों में से एक की गत पांच दिसंबर को किसी हिंसक जानवर के हमले से मृत्यु के दो दिन बाद ही एक और शावक की रविवार सुबह सड़क हादसे में मृत्यु हो गई। तीसरा शावक अभी लापता है।

चीता प्रोजेक्ट पर अब तक 115 करोड़ रुपये से अधिक खर्च हो चुके हैं। बावजूद इसके चीतों की सुरक्षा के कोई खास इंतजाम नहीं हैं। मुख्य वन्यप्राणी अभिरक्षक, सुभरंजन सेन का कहना है कि सड़क दुर्घटना में चीता शावक की मृत्यु की पहली घटना है। हमारा प्रयास होगा कि आगे इस तरह की घटना न हो। सुरक्षा को लेकर और बेहतर इंतजाम करेंगे। चीता प्रोजेक्ट की शुरुआत से लेकर अब तक 19 चीतों की मौत हो चुकी है। अब चीता पुनर्वास परियोजना का पूरा जोर चीतों की वंशवृद्धि पर है। जिस तरह से चीते कूनो के खुले जंगल से पलायन कर आबादी क्षेत्रों में पहुंच रहे हैं और मवेशियों का शिकार कर रहे हैं। इससे मानव-चीता द्वंद्व को लेकर अधिकारी चिंतित हैं। खुले जंगल में छोड़ने से पहले कई उपायों, जैसे घास के मैदानों का विकास और ग्रामीणों के विस्थापन पर ध्यान नहीं दिया गया, जिससे चीतों के पलायन व आबादी के साथ टकराव की संभावनाएं बढ़ीं हैं। चीतों के लिए तेंदुए भी खतरा हैं। कूनो में तेंदुओं की संख्या 110 से अधिक है।

एससी-एसटी एक्ट में फर्जी मुकदमा लिखवाने वाले को पांच वर्ष की सजा

विधि संवाददाता, जागरण ● लखनऊ : जमीन से जुड़े विवाद में एससी/एसटी एक्ट में फर्जी मुकदमा लिखवाने के मामले में दोषी करार दिए गए विकास कुमार को एससी/एसटी एक्ट के विशेष न्यायाधीश विवेकानंद शरण त्रिपाठी ने पांच वर्ष के कारावास की सजा सुनाई है। साथ ही, दस हजार रुपये का जुर्माना लगाया।

न्यायालय ने अपने आदेश में कहा कि वादी मुकदमे का सबसे महत्वपूर्ण साक्षी होता है और उसे न्यायालय के समक्ष सत्य बयान देना चाहिए। यदि फर्जी मुकदमे दर्ज कराने वालों पर कठोर दंड नहीं दिया जाएगा तो कानून का दुरुपयोग बढ़ेगा। सरकारी वकील अरविंद मिश्रा ने बताया कि विकास कुमार ने 29 जून, 2019 को थाना पीजीआइ में प्राथमिकी दर्ज कराई थी। इसमें आरोप लगाया गया था कि उसकी जमीन पर कब्जा करने की नीयत से ओम शंकर यादव, अरुण कुमार, नीतू यादव और अखिलेश पाल मौके पर आए और जातिसूचक गालियां देते हुए उसे जमीन से भगा दिया तथा जान से मारने की धमकी दी। विवेचना के दौरान पुलिस को आरोपितों की घटना स्थल पर मौजूदगी के कोई प्रमाण नहीं मिले। स्वतंत्र गवाहों ने भी इन्कार किया था। सभी साक्ष्यों और बयानों के आधार पर अदालत ने विकास कुमार को दोषी करार दिया।

एससी/एसटी एक्ट के तहत आरोपितों के खिलाफ शुरू की गई कार्यवाही रद

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 के तहत कथित अपराध के लिए कुछ आरोपितों के खिलाफ शुरू की गई कार्यवाही को यह कहते हुए रद कर दिया कि शिकायतकर्ता के घर को सार्वजनिक दृश्य में नहीं माना जा सकता। हालांकि, न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने स्पष्ट किया कि पूर्ववर्ती भारतीय दंड संहिता के तहत कथित अपराधों के लिए उनके खिलाफ कार्यवाही जारी रहेगी।

मतांतरण विरोधी कानून पर राजस्थान सरकार को नोटिस

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट ने राजस्थान में लागू मतांतरण विरोधी कानून की संवैधानिक वैधता को चुनौती देनेवाली याचिका पर सोमवार को प्रदेश सरकार को नोटिस जारी किया है। न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और आगस्टीन जार्ज मसीह की पीठ ने कैथोलिक बिशप्स कांफ्रेंस आफ इंडिया द्वारा दायर याचिका को राजस्थान विधि विरुद्ध धर्म परिवर्तन निषेध अधिनियम, 2025, के प्रविधानों की वैधता को चुनौती देने वाली अलग-अलग लंबित याचिकाओं के साथ संलग्न कर दिया। याचिकाकर्ता ने सुप्रीम कोर्ट से 2025 के अधिनियम को ''अधिकार से परे व असंवैधानिक'' घोषित करने का आग्रह किया है। राजस्थान कानून में धोखे से सामूहिक मतांतरण के लिए आजीवन कारावास तथा धोखाधड़ी से धर्म परिवर्तन के लिए 14 साल तक की जेल की सजा का प्रविधान है। धोखे से नाबालिगों, महिलाओं, एससी-एसटी व विकलांग का मतांतरण कराने पर 20 साल की जेल और 10 लाख रुपये का जुर्माना होगा।

अब 45 मिनट में आ जाएगी डीएनए जांच की रिपोर्ट

जागरण विशेष

आइसर मोहाली के स्टार्टअप इंडोक्स साल्यूशंस ने तैयार की डीएनए जांच के लिए विशेष किट

सुमेश ठाकुर ● जागरण

चंडीगढ़: चिकित्सा, अनुसंधान या अन्य कारणों से बेहद महत्वपूर्ण माने जाने वाली डीएनए जांच की रिपोर्ट के लिए अब 24 या 72 घंटों तक इंतजार नहीं करना होगा। यह 35 से 45 मिनट में मिल जाएगी। विज्ञानियों ने ऐसी किट तैयार की है, जिससे 13 की जगह सिर्फ तीन टेस्ट लेने होंगे। समय की बचत के साथ खर्च भी 60 से 70 प्रतिशत तक कम आएगा। खास यह है कि इस किट को महत्वपूर्ण प्रयोगशाला तकनीक पीसीआर (पालीमरेज चेन रिएक्शन) के लिए भी तैयार किया जा रहा है, जिससे टाइफाइड, तपेदिक, इन्फ्लुएंजा, मलेरिया और डेंगू की जांच भी हो सकेगी।

मोहाली स्थित इंडियन इंस्टीट्यूट आफ साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च (आइसर) के सहयोग से इंडोक्स साल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक जिम्मी भांबरा की टीम ने इसे तैयार किया है। पंचकूला में आयोजित इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल में पेश इस विशेष किट को आइसर की लैब में तैयार किया गया है। इसके तहत सैंपल तैयार करने के लिए इन्नो एक्सट्रैक्ट (तरल रूप) और लैब के काम के लिए विशेष यंत्र (इंस्ट्रूमेंट) विकसित किए गए हैं, जो चंद मिनटों में डीएनए (डीआक्सीराइबोन्यूक्लिक एसिड) जांच की रिपोर्ट दे देंगे।

इस तरह काम करती है तकनीक: जिम्मी भांबरा बताते हैं कि अभी तक रक्त के नमूने लेने के बाद डीएनए निकालने के लिए 13 से 14 जांच की जाती है, जिसमें चार से छह घंटे का समय लग जाता है। नई तकनीक में रक्त से डीएनए निकालने के लिए इन्नो एक्सट्रैक्ट (तरल रूप) का उपयोग किया जाता है, जिसमें दस मिनट के भीतर दो से तीन जांच करने के साथ ही डीएनए अलग हो जाएगा। इसके बाद की जांच के लिए लैब में जाना पड़ता है। लैब के अंदर डीएनए को एक निश्चित तापमान (-40 डिग्री सेल्सियस) में रखना होता है। निर्धारित तापमान पर आने के बाद उसकी जांच होती है, जिसमें 12 से 15 घंटे का समय लग जाता है। नई तकनीक के अनुसार, लैब का काम नए यंत्र से होगा, जो चंद मिनटों में आवश्यक तापमान प्राप्त कर लेगा। इसके बाद अन्य जांच स्वतः होती जाएंगी। 10 से 15 मिनट में परिणाम आ जाएगा। नई किट को एक से दूसरे स्थान पर आसानी से ले जाया जा सकता है क्योंकि इसका आकार छोटा है। भांबरा बताते हैं कि लैब का परिणाम इंस्ट्रूमेंट पर लेने तक का कार्य पूरी तरह से सफल है। अब रिपोर्ट डिजिटल लेने के लिए इंस्ट्रूमेंट में अपडेशन की जा रही है। इसके पूरा होते ही किट को मार्केट में उतार दिया जाएगा। इससे पूरी रिपोर्ट मोबाइल फोन पर डिजिटली उपलब्ध होगी।

पंचकूला में इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल में डीएनए जांच के लिए बनाई किट की जानकारी देते इंडोक्स साल्यूशंस के संस्थापक जिम्मी भांबरा ● जागरण

खर्च में आएगी 60 से 70 प्रतिशत तक की कमी

डीएनए जांच के लिए नई किट को बड़ा परिवर्तनकारी माना जा रहा है। नई किट से डीएनए की जांच करने में समय की बचत के साथ खर्च में 60 से 70 प्रतिशत की कमी आएगी। सैंपल तैयार के बाद आगे की जांच के लिए लैब जाने की आवश्यकता नहीं होगी। इससे काम आसान हो जाएगा।

डीएनए जांच के लिए यह एक बेहतरीन प्रयास है। इसके टेस्ट सफल रहे हैं और इसके आने से समय की बचत होगी, जो आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

–सतेंद्र सिंह चौधरी, सीईओ टेक्नोलाजी बिजनेस इनक्यूबेटर आइसर, मोहाली

अतिरिक्त सामग्री पढ़ने के लिए स्कैन करें।

****

हिन्दुस्तान
1936
सत्य ★ सार्थक ★ सदैव

वंदे मातरम्

लोकसभा में राष्ट्रगीत *वंदे मातरम्* की 150वीं वर्षगांठ पर ऐतिहासिक चर्चा आवश्यक और प्रेरक रही। ऐसा मौका बहुत जरूरी है कि जब सभी नेता मातृभूमि के प्रेम या पक्ष में खड़े नजर आएं। भारत के राष्ट्रगीत *वंदे मातरम्* के रचनाकार बंकिमचंद्र चटर्जी और इस गीत से जुड़े अन्य महापुरुषों को जिस तरह से याद किया गया है, वह लोकसभा की कार्यवाही में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो गया है। आज से पचास साल बाद इस गीत के 200 वर्ष पर जब विशेष आयोजन होंगे, तब निस्संदेह *वंदे मातरम्* पर लोकसभा में अपने विचार रखने वाले नेताओं को याद किया जाएगा। लोकसभा में चर्चा की शुरुआत करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उचित ही स्वीकार किया कि *वंदे मातरम्* के मंत्र ने पूरे देश को शक्ति और प्रेरणा दी, स्वतंत्रता आंदोलन को ऊर्जावान बनाया। उन्होंने यह भी कहा कि आज *वंदे मातरम्* को याद करना इस सदन के सभी सदस्यों और देशवासियों के लिए सौभाग्य की बात है। प्रधानमंत्री ने अपने उद्बोधन में अफसोस भी जताया है कि जब इस गीत को सौ साल हुए थे, तब इसे बहुत भव्यता से याद करना चाहिए था, किंतु दुर्भाग्य से तब देश में आपातकाल लागू था और स्वतंत्रता खतरे में पड़ी हुई थी।

यह भी याद किया जाएगा कि प्रधानमंत्री ने आजादी की लड़ाई के दौर में *वंदे मातरम्* पर समझौता करने के लिए कांग्रेस की आलोचना की। यह एक चर्चित पहलू रहा है कि करीब नब्बे वर्ष से *वंदे मातरम्* को पूरा नहीं गाया जाता है। यह एक स्तर पर अफसोस और दुख की बात हो सकती है, लेकिन कई बार ऐसी मजबूरियां पैदा हो जाती हैं, जब समझौते करने पड़ते हैं। उस दौर के नेतृत्व ने देश को एकजुट रखने के प्रयासों के तहत *वंदे मातरम्* के कुछ हिस्सों से समझौता किया था। तब भी अल्पसंख्यकों में ऐसे नेता थे, जो *वंदे मातरम्* के मूल भारतीय भाव को नहीं समझ पाए थे और आज भी ऐसे नेता हैं। उन्हें इस गीत में अपने धर्म की हानि दिखी थी। तब भी कांग्रेस के नेताओं ने यह समझाने के प्रयास किए थे कि राष्ट्रभक्ति जगाने वाले गीत के प्रति सबका नजरिया व्यापक और उदार होना चाहिए। वैसे, सबसे जरूरी है, समन्वय और सद्भाव की रक्षा।

राष्ट्रगीत थोपा नहीं गया था और न थोपा जा रहा है। फिर भी, 'वंदे मातरम्' पर हुई चर्चा का महत्व है कि बहुत से लोग अब कम से कम इसका विरोध करना छोड़ देंगे।

इस देश में कोई भी गीत किसी पर थोपा नहीं गया था और आज भी नहीं थोपा जा रहा है। फिर भी, *वंदे मातरम्* पर हुई चर्चा का महत्व इस संदर्भ में है कि बहुत से लोग अब कम से कम *वंदे मातरम्* का विरोध करना छोड़ देंगे। हां, हर नागरिक इस गीत को गाए, ऐसी आशा तो देश की तमाम मुख्य पार्टियों में हमेशा से रही है। इस ऐतिहासिक चर्चा में लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने तो उद्बोधन नहीं दिया, किंतु कांग्रेस सांसद गौरव गोगोई ने उचित ही याद किया कि बंगाल के कई लेखकों और कवियों ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान लोगों को प्रेरित करने वाले कई गीत लिखे। यह भी संयोग है कि हमारा राष्ट्रगान *जन गण मन* भी बंगाल में लिखा गया। वैसे, गोगोई ने अफसोस भी जताया कि प्रधानमंत्री ने अपने भाषण के दौरान बहस को राजनीतिक रंग देने की कोशिश की। प्रियंका गांधी ने भी अपने भाषण में सत्तारूढ़ भाजपा को घेरने का मौका हाथ से जाने न दिया। उन्होंने देश की अन्य समस्याओं की ओर भी ध्यान दिलाया। बहरहाल, समग्रता में सभी ने *वंदे मातरम्* के प्रति जो आभार प्रदर्शन किया है, उसे याद किया जाएगा। लोकसभा में बहस ही पर्याप्त नहीं है, देश के हर नागरिक को इस गीत से प्रेरणा लेनी चाहिए। आज जिस तरह के संकट मंडरा रहे हैं, उसमें *वंदे मातरम्* जैसे जीवंत गीत की जरूरत देश को कदम-कदम पर पड़ेगी।

दुनिया में क्यों मची हथियारों की होड़

जी जी द्विवेदी | मेजर जनरल (रिटायर्ड)

यहां स्कैन करें

हथियारों की बिक्री में वृद्धि तीसरे विश्व युद्ध की उल्टी गिनती का संकेत कतई नहीं है। इस समय हो रही ज्यादातर हथियार-खरीद रक्षात्मक है, आक्रामक नहीं।

दुनिया के सबसे धनी उद्यमी एलन मस्क ने हाल ही में यह भविष्यवाणी की है कि अगले दस वर्षों के भीतर तीसरा विश्व-युद्ध छिड़ सकता है। जाहिर है, यह बेहद चिंता की बात है और स्वाभाविक ही इस पर जबर्दस्त बहस भी शुरू हो गई है। मस्क के इस बयान से एक बुनियादी सवाल उठ खड़ा हुआ है कि हथियारों की बिक्री में जो भारी उछाल आई है, कहीं वह दुनिया को एक भयानक युद्ध की ओर तो नहीं ले जा रही?

दरअसल, यह सवाल 'स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट' के एक डाटा से पैदा हुआ है। इस डाटा के मुताबिक, संसार की शीर्ष 100 हथियार कंपनियों द्वारा हथियारों व सैन्य उपकरणों की बिक्री से प्राप्त होने वाले राजस्व में 5.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और यह राशि 670 अरब डॉलर के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई है। हथियारों की बिक्री से होने वाली यह कमाई बिक्री में रुकावटों, महंगाई और औद्योगिक मंदी के बावजूद हुई है। हथियारों की बिक्री का आलम यह है कि साल 2024 में दुनिया की शीर्ष 100 हथियार कंपनियों में शामिल अमेरिका की 43 कंपनियों का कुल राजस्व 3.8 प्रतिशत बढ़कर 334 अरब डॉलर हो गया। इनमें लॉकहीड मार्टिन, नॉर्थरोप, ग्रुम्मन और जनरल डायनेमिक्स आदि शामिल हैं। रूस को छोड़ दें, तो शेष यूरोप की 26 हथियार कंपनियों में से 23 ने हथियारों के राजस्व में 13 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की और उनका राजस्व 151 अरब डॉलर पहुंच गया।

हथियारों की बिक्री असल में रूस द्वारा यूक्रेन पर हमले के साथ नाटो देशों को कथित धमकी और हिंद-प्रशांत क्षेत्र समेत तमाम संघर्षरत देशों के कारण बढ़ी है। केवल एशिया और ओशिनिया ने 2024 में शीर्ष 100 कंपनियों से हथियारों की कम खरीद की। इनकी खरीदारी साल 2023 की तुलना में 1.2 प्रतिशत घटकर 130 अरब डॉलर रही। शीर्ष की दो रूसी कंपनियों- रोस्टेक और यूनाइटेड शिपबिल्डिंग कॉरपोरेशन्स ने अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों के कारण कल-पुर्जों की कमी के बावजूद 23 प्रतिशत की वृद्धि करके अपने संयुक्त राजस्व को 31.2 अरब डॉलर कर लिया। जापानी और दक्षिण कोरियाई कंपनियों ने यूरोप और अपनी घरेलू मांगों की वजह से बढ़त को जारी रखा है। शीर्ष में शामिल जापान की पांच कंपनियों ने अपना राजस्व बढ़ाकर 13.3 अरब डॉलर और दक्षिण कोरियाई कंपनियों ने 14.1 अरब डॉलर कर लिया है। इसी तरह, पश्चिम एशिया की कंपनियों का कुल राजस्व 31 अरब डॉलर रहा, वहीं तीन इजरायली कंपनियों ने 16.2 अरब डॉलर का राजस्व कमाया। इनमें तीन भारतीय कंपनियों ने पहली बार घरेलू मांग की वजह से अपने कुल हथियार राजस्व को 8.2 प्रतिशत बढ़ाकर 7.5 अरब डॉलर कर लिया।

साफ है, दुनिया भर की सरकारें रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की कोशिश में ज्यादा हथियार खरीद रही हैं। वे अपने खत्म हो चुके हथियार भंडार को फिर से भर रही हैं और आपातकालीन तैयारी के तौर पर ऐसी खरीदी कर रही हैं, जिनके बारे में हाल तक सोचा भी नहीं गया था। इसके अलावा, यूक्रेन युद्ध ने तोप के गोलों, ड्रोन, प्रिसिजन मिसाइल और एयर-डिफेंस सिस्टम की भारी मांग पैदा कर दी है। गाजा पर इजरायली हमलों ने भी अनावश्यक हथियारों व युद्धक सामानों की मांग बढ़ा दी है।

साउथ चाइना-सी और ताइवान जलडमरूमध्य में बढ़ते तनाव की वजह से जापान, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण कोरिया और ताइवान जैसे देश लंबी दूरी तक मार करने वाली मिसाइलें, पनडुब्बियां और अगली पीढ़ी के लड़ाकू विमान खरीदने को मजबूर हो रहे हैं। इतिहास पर गौर करें, तो हथियार जमा करने की प्रवृत्ति बड़े संघर्षों से पहले दिखी है। अर्थात, 1914 से पहले, फिर 1930 के दशक में और शीत युद्ध के अंतिम दौर में। मस्क की भविष्यवाणी इसी आलोक में लगती है। हो भी क्यों न। जब बड़ी ताकतें एक ही समय में अपनी-अपनी सेनाओं का आधुनिकीकरण करती हैं, तो गलत अंदाजा लगाया जाना स्वाभाविक है।

हालांकि, हथियारों की बिक्री में बढ़ोतरी तीसरे विश्व युद्ध की उल्टी गिनती का संकेत नहीं है। यहां सबसे बड़ा अंतर इरादे में है। इस समय हो रही ज्यादातर हथियार-खरीद रक्षात्मक है, आक्रामक नहीं। यूरोपीय देश रूस के साथ युद्ध शुरू करने के लिए नहीं, बल्कि मॉस्को को किसी भी गलत कदम से रोकने के लिए हथियार खरीद रहे हैं। इसी तरह, हिंद-प्रशांत क्षेत्र के देश चीन से युद्ध नहीं चाहते, बल्कि बीजिंग को ताइवान या साउथ चाइना-सी में एकतरफा कार्रवाई से रोकना चाहते हैं। इसके अलावा, परमाणु हथियार बड़ी ताकतों के लिए लड़ाई रोकने का बड़ा जरिया बना हुआ है।

यह सही है कि इससे परमाणु हथियारों के इस्तेमाल का खतरा पूरी तरह खत्म नहीं होता। जब पारंपरिक लड़ाइयां बढ़ेंगी, तो परमाणु हथियारों के इस्तेमाल की आशंका भी बनी रहेगी। यूक्रेन-रूस और गाजा-हमास की लड़ाई में कूटनीति बहुत कारगर साबित नहीं हो पा रही है और छद्म संघर्षों का खतरा बना हुआ है। ड्रोन, हाइपरसोनिक मिसाइल, लंबी दूरी के मारक हथियार और 'एआई-इनेबल्ड सर्विलांस' जैसे अत्याधुनिक हथियारों का तेजी से इस्तेमाल खतरे को गंभीर बनाता है। रक्षा उत्पादों को बढ़ावा दिया जा रहा है और सुरक्षा से जुड़े बुनियादी ढांचे विकसित किए जा रहे हैं। इसका मतलब है कि देश किसी लड़ाई की चेतावनी मिलते ही तुरंत कार्रवाई कर सकने में सक्षम हों। संयुक्त राष्ट्र जैसी वैश्विक संस्थाओं के कमजोर पड़ने के साथ बड़ी ताकतों की बढ़ती प्रतिस्पर्द्धा ने बहुपक्षीय कूटनीति में एक बिखराव पैदा किया है, जिससे संघर्ष को टालने की प्रक्रिया पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

ऐसे में, हथियारों की बिक्री में तेजी से खतरा तो बढ़ा है, मगर इससे जंग छिड़ जाए, यह जरूरी नहीं है। विभिन्न देशों द्वारा हथियारों की खरीद आसन्न खतरे से बचने, आधुनिकीकरण और अपनी क्षमता को मजबूत करने के लिए है। असल खतरा किसी एक देश से नहीं, बल्कि कई देशों के एक साथ फिर से हथियार जमा करने में है। एक ऐसी दुनिया में, जहां भरोसा कम हो रहा है और संकट कूटनीतिक संवाद के दायरे से बड़े होते जा रहे हैं, पहले से ज्यादा असरदार संकट प्रबंधन की जरूरत है। ऐसे में, मस्क की भविष्यवाणी को एक संकेत के तौर पर लेना चाहिए, क्योंकि कई तरह की अवांछित गतिविधियों के साथ बिगड़ते वैश्विक सुरक्षा परिदृश्य में हथियारों का निर्माण तेजी से हो रहा है।

हथियारों की बिक्री में बढ़ोतरी गहरी भू-राजनीतिक उथल-पुथल और बदलते शक्ति-संतुलन का लक्षण है। भविष्य के विश्व-युद्ध का फैसला न सिर्फ बनाए जा रहे हथियारों और हार्डवेयर से होगा, बल्कि उस समय के नेताओं के फैसलों पर भी निर्भर करेगा।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

साझेदारी के नए आयाम तलाशते भारत-रूस

संजय मयूख | राष्ट्रीय मीडिया सह-प्रमुख व प्रवक्ता, भाजपा

यहां स्कैन करें

वैश्विक राजनीति इन दिनों तेजी से बदल रही है। पुराने शक्ति-संतुलन खिसक रहे हैं, नई प्रतिस्पर्द्धाएं जन्म ले रही हैं, और वैश्विक गठबंधनों का स्वरूप धुंधला पड़ता जा रहा है। बहुध्रुवीय विश्व की परिकल्पना एक हकीकत बन रही है, हालांकि इस दिशा में अब भी लंबा सफर बाकी है। ऐसे में, यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि भारत अपने उन साझेदारों को साथ रखे, जिन्होंने उसकी रणनीतिक स्वायत्तता को मजबूती दी है। रूस ऐसा ही साझेदार है और राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की हालिया यात्रा ने इस पुराने भरोसे को नए वैश्विक संदर्भ में स्थापित किया है।

जब अमेरिका और चीन के बीच प्रतिद्वंद्विता तीखी हो रही है; रूस पश्चिमी प्रतिबंधों के बीच अपनी वैश्विक भूमिका को फिर से लिख रहा है और अंतरराष्ट्रीय संस्थान अपनी विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न झेल रहे हैं, तब भारत-रूस संबंध एक स्थिर, संतुलित और विवेकपूर्ण विश्व-व्यवस्था के लिए मजबूत साझेदार के रूप में काम कर रहे हैं। आज भी भारत-रूस रक्षा व्यापार दोनों देशों के संबंधों का सबसे मजबूत स्तंभ है। एस-400 मिसाइल प्रणाली से ब्रह्मोस क्रूज मिसाइल जैसी संयुक्त परियोजनाएं, सुखोई एसयू-30एमकेआई से लेकर टी-90 टैंक तक, रूस ने भारत की सैन्य संरचना के विकास में निर्णायक भूमिका निभाई है। पश्चिमी दबावों और सैन्य आपूर्ति की बदलती विश्व-व्यवस्था के बावजूद, यह साझेदारी नए रूप में ढल रही है। राष्ट्रपति पुतिन की इस यात्रा में यह भी पुष्ट किया गया कि भारत अब केवल प्लेटफॉर्म-आधारित रक्षा आयात की ओर नहीं, बल्कि संयुक्त उत्पादन, तकनीकी हस्तांतरण और दीर्घकालीन रक्षा औद्योगिक सहयोग की दिशा में आगे बढ़ना चाहता है। यह परिवर्तन न केवल रणनीतिक रूप से आवश्यक है, बल्कि भारत के 'मेक इन इंडिया' अभियान को वास्तविक मजबूती प्रदान करता है।

जब विश्व में अनेक रिश्ते प्रश्नचिह्न झेल रहे हैं, तब भारत-रूस एक स्थिर और संतुलित विश्व-व्यवस्था के लिए काम कर रहे हैं।

21वीं सदी का वैश्विक वातावरण इन संबंधों के पुनर्निर्माण की मांग करता है। भारत और रूस, दोनों के लिए आवश्यक है कि वे परंपरागत क्षेत्रों से आगे बढ़कर साझेदारी के नए आयाम विकसित करें। इसे पांच आधार पर समझा जा सकता है। सबसे पहले, संयुक्त तकनीकी अनुसंधान क्षेत्र। यह वह क्षेत्र है, जो दोनों देशों को भविष्य की रणनीतिक प्रतिस्पर्द्धा में मजबूती दे सकता है। क्वांटम तकनीक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, साइबर सुरक्षा और उन्नत हथियार प्रणालियां आज की भू-राजनीति के मूल तत्व हैं। रूस इन क्षेत्रों में वैज्ञानिक दक्षता रखता है, जबकि भारत तेजी से उभरती डिजिटल शक्तियों में अग्रणी है। दोनों देशों की साझा प्रयोगशालाएं व अनुसंधान परियोजनाएं न सिर्फ पारंपरिक रक्षा सहयोग को आधुनिक बनाएंगी, बल्कि भविष्य की साझेदारी सुनिश्चित करेंगी।

दूसरा महत्वपूर्ण क्षेत्र है, डिजिटल व साइबर सुरक्षा। रूस विश्व की सबसे उन्नत साइबर क्षमता वाले देशों में से एक है, वहीं भारत दुनिया की सबसे तेजी से विकसित होती डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं में एक। ये दोनों शक्तियां मिलकर वैश्विक डिजिटल शासन, साइबर खतरों से मुकाबले व सुरक्षित डाटा अवसंरचना के निर्माण में अहम भूमिका निभा सकती हैं। तीसरा, आपूर्ति श्रृंखला आज भू-राजनीति का अहम हथियार बन चुकी है। अमेरिका-चीन तनाव, यूरोप की ऊर्जा निर्भरता व वैश्विक अस्थिरता इसके उदाहरण हैं। भारत-रूस सहयोग एशिया से यूरोप तक एक स्थिर व्यापारिक गलियारा स्थापित कर सकता है। चौथा प्रमुख आयाम है, अंतरिक्ष और परमाणु ऊर्जा। गगनयान मिशन, चंद्र अन्वेषण और परमाणु रिएक्टरों के क्षेत्र में रूसी तकनीकी विश्वसनीयता हमारी साझेदारी को और मजबूत कर सकती है।

पांचवां और उभरता हुआ क्षेत्र है आर्कटिक सहयोग। आर्कटिक क्षेत्र भविष्य की ऊर्जा, खनिज संसाधनों और नए नौवहन मार्ग के लिहाज से अहम बनता जा रहा है। रूस इस क्षेत्र का सबसे बड़ा खिलाड़ी है व भारत उभरता हुआ ध्रुवीय अनुसंधान भागीदार। इस क्षेत्र का सहयोग भारत की ऊर्जा सुरक्षा, वैज्ञानिक अनुसंधान व वैश्विक महासागरीय कूटनीति में नई भूमिका तय कर सकता है। राष्ट्रपति पुतिन की इस यात्रा ने दुनिया को संदेश दे दिया है कि भारत-रूस संबंध भू-राजनीतिक परिस्थितियों के दवाब में ढहने वाला नहीं है। यह साझेदारी स्थायी है, क्योंकि यह परस्पर हितों पर आधारित है और परिपक्व है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

चिर-सुख उसी से संभव

मनुष्य पतन के मार्ग पर कब चला जाता है? यह सवाल बहुत लोगों को मथता है। दरअसल, मनुष्य का पतन तभी आरंभ हो जाता है, जब वह अपनी आत्मा के अविनाशी स्वरूप की उपेक्षा कर भोग और भौतिक लालसाओं को जीवन का लक्ष्य बना लेता है। संसार में आपको ऐसे अनेक लोग मिल जाएंगे, जो ब्रह्म के अस्तित्व को मानने का दावा करते हैं, आत्मा पर चर्चा करते हैं, किंतु क्षणिक सुखों के पीछे भागते रहते हैं। ऐसे लोग धीरे-धीरे प्रकाश से अंधकार और मनुष्य से पशुवृत्ति की ओर बढ़ते चले जाते हैं।

प्रश्न उठता है कि जब परमात्मा अनंत और शुद्ध है, तब व्यक्ति की विकृत धारणाएं कहां से उत्पन्न होती हैं? मनुष्य की मूल प्रवृत्ति है- सीमित से अनंत और अंश से पूर्णता की ओर अग्रसर होना। सुख की तलाश इसी प्रवृत्ति से जन्म लेती है। जब तक जीवन का लक्ष्य अनंत नहीं होता, तब तक शाश्वत सुख प्राप्त नहीं किया जा सकता। केवल परमात्मा ही अनादि और अनंत सत्ता है, इसलिए चिर-सुख उसी से संभव है।

सांसारिक वस्तुओं का सुख क्षणिक है, पर हानि का दर्द स्थायी लगता है। यही कारण है कि संसार का समस्त दुख वस्तुओं के खोने की पीड़ा से उपजता है। ज्ञानी व्यक्ति दुख से विचलित नहीं होते, क्योंकि वे जानते हैं कि प्रत्येक वेदना का मूल कारण अपने ही संस्कार हैं। वे संस्कार, जो बीते और वर्तमान कर्मों की प्रतिक्रियाएं हैं। मन के भीतर अंकित ये संस्कार ही सुख-दुख की गति उत्पन्न करते हैं और सूक्ष्म जगत की छाप स्थूल जगत में अनुभव के रूप में प्रकट होती है। इन प्रतिक्रियाओं को परमात्मा पर आरोपित करना उचित नहीं है; यह ईश्वर की विकृति नहीं, बल्कि अपने ही मन का प्रतिबिंब है। साधकों के कष्ट उन्हीं संस्कारों से उत्पन्न होते हैं, जो उन्होंने स्वयं रचे हैं। अतः कठिन समय में भगवान को दोष देना न उचित है, न बुद्धिमानी। 'हे प्रभु! इतना जप-तप करके भी मुझे यह फल दिया?' -ऐसी शिकायतें अज्ञान की श्रेणी में आती हैं। जब तक संस्कार जलते नहीं, विपत्ति की आग शांत नहीं होती। इसलिए दूसरों पर दोषारोपण की प्रवृत्ति त्याज्य है; प्रत्येक कष्ट अपने ही कर्मों का प्रतिफल है। विद्यापति ने कहा है- दुख से घबराओ मत; अनुभवों से सीखो और अगले जीवन की दिशा बदलो।

जब तक संस्कार जलते नहीं, विपत्ति की आग शांत नहीं होती। इसलिए दूसरों पर दोषारोपण की प्रवृत्ति त्याज्य है; प्रत्येक कष्ट अपने ही कर्मों का प्रतिफल है।

विद्वानों ने इसीलिए कहा कि मनुष्य को अनंत सत्ता को चिंतन का केंद्र बनाना चाहिए- वही जिसका न कोई आरंभ है, न अंत। वह सर्वव्यापक है, इसलिए उसमें गति का प्रश्न ही नहीं उठता। वह चल रहा है, फिर भी नहीं चल रहा। वह दूर है, फिर भी अत्यंत निकट। वह मेरे-तुम्हारे भीतर जीवन का जीवन बनकर विद्यमान है। आत्मा का मार्ग यही है- मन की क्षुद्र सीमाओं से उठकर उस असीम सत्ता में विलीन होना, जहां से दुख का अंत और आनंद का आरंभ होता है।

श्री श्री आनंदमूर्ति

एलन मस्क | प्रसिद्ध उद्योगपति

यूरोपीय संघ जनता का प्रतिनिधित्व नहीं करता, बल्कि यह अलोकतांत्रिक नौकरशाही का राज है। यूरोप में बहुत से ऐसे नेता हैं, जो अपने ही लोगों को धोखा दे रहे हैं। इसीलिए यूरोपीय संघ को भंग करके लोगों को उनकी सत्ता लौटाई जानी चाहिए।

हिन्दुस्तान Hindustan | **75 साल पहले** 09 दिसम्बर, 1950

पौंड-पावना की वसूली

भारत के वित्त मंत्री श्री चिन्तामणि देशमुख ने पौंड-पावना की वसूली के संबंध में ब्रिटेन के साथ एक नये समझौते की रूपरेखा भारतीय संसद को बताई है। पौंड-पावने के रूप में भारत की जो रकम ब्रिटेन के पास जमा है, उसकी वसूली एक टेढ़ी समस्या बन चुकी है। ब्रिटेन इस स्थिति में नहीं रह गया है कि वह भारत की आवश्यकता और सुविधा के अनुसार, यह रकम लौटा सके। यदि मजदूर दल के बजाय अनुदार-पंथी ब्रिटेन में सत्तारूढ़ होते, तो इस रकम की वसूली ही खतरे में पड़ जाती। श्री चर्चिल और उनके अनुयायियों का कहना है कि पौंड-पावना की रकम ब्रिटेन के मत्थे कोई व्यापारिक कर्ज नहीं है, बल्कि द्वितीय महायुद्ध के समय जापानी आक्रमण से रक्षा करने के निमित्त यह बोझ ब्रिटेन के सिर पर लद गया है। चर्चिल और उनके साथी, जब कभी यह प्रश्न उपस्थित होता है, तो अपनी इस मान्यता को दुहराते हैं और इस रकम को कम करने की मांग पेश करते हैं। खुशी की बात है कि ब्रिटेन की मौजूदा मजदूर सरकार ने चर्चिल-पंथियों के दबाव में आकर ऐसा कोई कदम उठाने से बराबर इंकार किया है और ब्रिटेन के दायित्व को निभाने की हमेशा तैयारी प्रकट की है। भारत पौंड-पावने की रकम को अपने गाढ़े पसीने की कमाई समझता है। युद्ध के दौरान में उसने अभावों का सामना करके मित्र राष्ट्रों के युद्ध प्रयत्नों में सामान और श्रम के रूप में योग दिया। उसी के फलस्वरूप ब्रिटेन के पास उसकी यह पौंड-पावने की रकम जमा हुई है। वह इस रकम को खुशी-खुशी कदापि नहीं छोड़ सकता। कोई भी राष्ट्र, जिसे अपनी साख कायम रखने का ध्यान है, कर्ज के दायित्व को पूरा करने से इंकार नहीं कर सकता।

भारत पौंड-पावने की रकम का काफी अंश अब तक वसूल कर चुका है। इस समय यह राशि 61 करोड़ 90 लाख पौंड रह गई है। भारत और ब्रिटेन के बीच पौंड-पावने की वसूली के संबंध में एक त्रिवर्षीय समझौता हुआ था और वह 30 जून 1951 को समाप्त हो जायेगा। उसके अनुसार, भारत को प्रति वर्ष 5 करोड़ पौंड वसूल करने की स्वतंत्रता दी गई थी। अब ब्रिटेन के साथ जो नया समझौता होगा, वह 6 वर्ष के लिए होगा और उसके अनुसार, भारत प्रतिवर्ष 3 करोड़ 50 लाख पौंड वसूल कर सकेगा। यदि किसी वर्ष उसने निर्दिष्ट से कम रकम वसूल की, तो बची हुई रकम वह अगले वर्षों में वसूल कर सकेगा।

अनुलोम-विलोम
गोवा हादसा

सरकारी तंत्र की लापरवाही का नतीजा

गोवा के अरपोरा स्थित 'बर्च बाइ रोमियो लेन' नाइट क्लब में शनिवार देर रात आग लग गई थी। आग की चपेट में आने से 25 लोगों की मौत हो गई, जिसमें कई विदेशी पर्यटक भी शामिल हैं। मृतकों में पर्यटक और क्लब कर्मचारी शामिल हैं। कुछ पर्यटक बाहर निकल गए, लेकिन कई लोग नीचे बने किचन की ओर भागे और वहीं फंस गए। बाद में कई की मौत दम घुटने से हुई। इस दर्दनाक अग्निकांड के बाद राज्य सरकार एक्शन में आई है। गोवा पुलिस ने क्लब के मैनेजर समेत चार लोगों को गिरफ्तार किया है और मालिक के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया गया है। यहां सवाल उठता है कि राज्य सरकार ने पहले सतर्कता क्यों नहीं बरती थी? क्या इस हादसे की पूरी जिम्मेदारी लापरवाह प्रशासन और उसके कर्मचारियों की नहीं मानी जानी चाहिए?

प्राथमिक जांच में पता चला है कि आग ऊपरी मंजिल से शुरू हुई और संकरे दरवाजों की वजह से कई लोग बाहर नहीं निकल पाए। जो लोग नीचे की ओर गए, उन्हें हवा नहीं मिली और उनकी मौत हो गई। आग बुझाने में भी बड़ी मुश्किलें सामने आईं। सबसे बड़ी कठिनाई तो यह रही कि क्लब तक पहुंचने वाली गली बेहद संकरी थी और प्रवेश- निकास के लिए एक ही रास्ता था। इससे लोग एक साथ बाहर नहीं निकल पाए और अंदर धुआं भरते ही कई लोगों का दम घुट गया। फायर ब्रिगेड की गाड़ियां भी क्लब तक पहुंच ही नहीं पाईं और उन्हें करीब 400 मीटर दूर रोकना पड़ा। इससे बचाव कार्य धीमा हुआ और नुकसान बढ़ गया। क्या यह क्लब को लाइसेंस और एनओसी देने वाली सरकार की एजेंसियों का अपराध नहीं है? क्यों इन संस्थाओं ने ऐसे नाइट क्लब के लिए अनुमति प्रदान की ?

खबर है कि अब क्लब के निर्माण पर सवाल उठाए जा रहे हैं। क्या यह आपत्ति पहले नहीं की जा सकती थी और उसके निर्माण या उसे अनुमति देने को रोका नहीं जाना चाहिए था? अरपोरा-नगोआ पंचायत के सरपंच के अनुसार, नाइट क्लब के पार्टनर्स में पहले से विवाद चल रहा था और उन्होंने एक-दूसरे के खिलाफ शिकायतें की थीं। पंचायत ने क्लब का निरीक्षण किया था और पाया था कि उसे निर्माण की अनुमति नहीं मिली थी। इस पर पंचायत ने ढहाने का नोटिस भी जारी किया था, लेकिन उच्च अधिकारियों ने कार्रवाई रोक दी। इन तमाम लापरवाहियों के मद्देनजर यह स्पष्ट है कि गोवा का यह हादसा सरकारी तंत्र की लापरवाही और अक्षमता की वजह से हुई है। अगर सरकारी तंत्र और संबंधित प्राधिकरण अपना काम ठीक से करते रहते, तो यह नौबत ही नहीं आती।

हिमांशु कुमार, टिप्पणीकार

इस हादसे के लिए लोग भी जिम्मेदार

गोवा के नाइट क्लब में लगी आग में लगभग 25 लोगों की मौत निस्संदेह बेहद दुखद घटना है और इसके लिए क्लब के प्रबंधन को किसी सूरत में बख्शा नहीं जाना चाहिए, मगर क्या इस हादसे की जिम्मेदारी एक पक्ष पर डाल देने से किसी संतोषजनक नतीजे तक पहुंचा जा सकता है? खबरों के साथ जो ब्योरा सामने आया है, वह बताता है कि इस नाइट क्लब का निर्माण गैर-कानूनी रूप से हुआ था और पंचायत ने इस गिराने का आदेश निकाला था। जाहिर है, प्रशासनिक मिली-भगत से यह खतरनाक क्लब चल रहा था।

सबसे पहला सवाल यह है कि इस क्लब में जो लोग काम कर रहे थे, क्या इस ढांचे या इसके रखरखाव से गाफिल थे? उन्हें नहीं मालूम था कि क्लब में आग से बचाव के पुख्ता इंतजाम नहीं है? ऐसे में, सैलानियों की छोड़िए, उन्हें खुद की जान की परवाह करते हुए क्या वहां काम करने से इनकार नहीं कर देना चाहिए था? आप कह सकते हैं कि अगर इतनी ही जागरूकता आ जाएगी, तो कोई गैर-कानूनी काम ही नहीं हो सकेगा। इसके उलट क्या यह नहीं कहा जाए कि जब अपनी जान को लेकर भी जागरूकता नहीं है, तो फिर क्या अपने घर-परिवार का कोई ख्याल रख सकेगा?

हमारे देश में एक अजीब सी प्रवृत्ति मजबूत होती जा रही है कि लोग खुदकुशी के लिए भी सरकार को जिम्मेदार ठहराने लगते हैं, जबकि यह नितांत निजी मामला है, जिसे कमजोर मन-मस्तिष्क वाले लोग अंजाम देते हैं। अगर कर्ज ही खुदकुशी का कारण होता, तब तो करोड़ों आत्महत्या कर लेते! नहीं, वजह कर्ज नहीं होती, कारण व्यक्ति को अकेले छोड़ देना, उसे मानसिक रूप से प्रताड़ित करना होता है। याद कीजिए, दिल्ली में एक बेसमेंट में चलने वाले कोचिंग संस्थान में कुछ विद्यार्थियों की मौत के बाद कितना हंगामा मचा। बेसमेंट में चलने कई संस्थानों को नोटिस जारी किया गया। मगर क्या यह हकीकत नहीं है कि आज भी बेसमेंट में कोचिंग संस्थान चल रहे हैं और बाकायदा बच्चे उनमें पढ़ने जा रहे हैं। पूर्वी दिल्ली के वेस्ट गुरु अंगद नगर में तो मैंने हाल-फिलहाल में एक संस्थान को खुलते देखा है और बच्चे उनमें पढ़ने जा रहे हैं। तो क्या, वहां दाखिला लेने वाले बच्चों और उनके अभिभावकों ने पड़ताल की है कि वहां सुरक्षा के सारे इंतजाम हैं या नहीं? अगर नहीं, तो इसके लिए क्या सरकार और प्रशासन को जिम्मेदार ठहराना नैतिक है?

हम भारतीयों में अपनी जिम्मेदारी लेने की भावना भी खत्म होती जा रही है, इसलिए गोवा जैसे हादसे बढ़ रहे हैं। आंनद उठाने के लिए मौत के दड़बों में जाने के लिए आपको कौन कह रहा है?

अधीर शर्मा, टिप्पणीकार

अपने मन को बलवान बनाएं

मन को बलवान बनाने के लिए क्या किसी विशेष ध्यान की आवश्यकता है? जो कुछ काम करो, वह तुम्हारा नहीं है। ऐसा खयाल अपने समक्ष रखो, तो पर्याप्त है। इस ध्यान के लिए आरंभ में कठिन प्रयत्न आवश्यक है। धीरे-धीरे यह सहज और स्थिर बन जाता है।

अध्यात्म

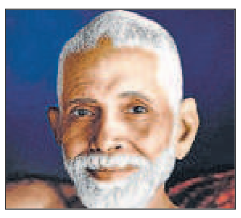

महर्षि रमण

यदि आत्मा का ज्ञान हो जाए, तो मनोनिग्रह करने की बात नहीं रहती। जब मन का नाश हो जाता है, तब आत्मा प्रकाशमान होती है। ज्ञानी का मन चाहे काम करे या न करे, उसके अंदर केवल आत्मा सतत विद्यमान रहती है। मन, शरीर और जगत आत्मा से भिन्न नहीं है। आत्मा से अलग उनका अस्तित्व ही नहीं हो सकता। वे आत्मा से भिन्न हो ही नहीं सकते। आत्मा का भान होने के बाद इन प्रतिच्छायाओं की चिंता ही क्यों करनी चाहिए? इन प्रतिच्छायाओं का आत्मा पर क्या असर पड़नेवाला है?

आत्मा स्वयं प्रकाशित हृदय

आत्मा स्वयं प्रकाशित हृदय में है। प्रकाश (चैतन्य) हृदय से निकलकर बुद्धि तक पहुंचता है, जो मन का अधिष्ठान है। जगत मन के द्वारा देखा जाता है। आत्मा के प्रतिबिंबित प्रकाश से ही तुम जगत को देखते हो। मन की क्रिया द्वारा जगत दृश्यमान होता है। जब मन आत्मा से प्रकाश पाता है, तब उसे जगत का भान होता है। जब वह उससे यह प्रकाश नहीं पाता, तब उसे जगत का भान भी नहीं होता है।

यदि मन को अंदर की ओर, प्रकाश के उद्गम की ओर मोड़ा जाए, तो बाह्यज्ञान विनष्ट हो जाता है और तब 'केवल-आत्मा' हृदय में प्रकाशित होती है।

अपना दीपक स्वयं बनो

चंद्र सूर्य के प्रकाश से जगमगाता है। सूर्य के अस्त होने पर चंद्र के प्रकाश के सहारे वस्तुओं का बोध प्राप्त किया जाता है। जब सूर्य निकल आता है, तब चंद्र की कोई आवश्यकता नहीं रहती, चाहे आकाश में उसकी थाली जैसी आकृति क्यों न बनी रहे। मन और हृदय को इसी प्रकार समझो। मन की उपयोगिता उसके प्रतिबिंबित प्रकाश में है, जो वस्तुओं को देखने के काम में आता है। अंदर की ओर फिराने पर मन स्वयं-प्रकाश ज्योति के स्रोत में समा जाता है। तब उसकी स्थिति दिन में रहनेवाले चंद्र की-सी हो जाती है।

अंधकार में प्रकाश के लिए दीप की आवश्यकता रहती है; पर सूर्योदय के बाद उस दीप की आवश्यकता नहीं रहती। सब वस्तुएं अपने आप दृष्टिगोचर हो जाती हैं और सूर्य को देखने के लिए अतिरिक्त दीप की कोई आवश्यकता नहीं रहती। अपनी आंखें उस स्वयं-प्रकाशित सूर्य की ओर फिराओ, तो वह दिखाई पड़ता है। मन की भी यही बात है। वस्तुओं को देखने के लिए मन से प्रतिबिंबित प्रकाश की आवश्यकता है। हृदय को देखने के लिए मन को उसकी ओर मोड़ना पर्याप्त है। तब मन की कोई गणना नहीं रहती, क्योंकि हृदय स्वयं-प्रकाशित है।

सहज और स्थिर बनें

तुम यदि मन को बलवान बनाओ, तो पहली शांति चालू रहेगी। उसका काल प्रमाण चालू अभ्यास द्वारा प्राप्त मन के बल पर निर्भर है। ऐसा सबल मन ही तेज धारा में टिक सकता है। उस स्थिति में काम में लगे रहो या न रहो, धारा प्रवाह में कोई अंतर या रुकावट नहीं पड़ती। बाधा डालनेवाला कर्म नहीं है, पर 'मैं कर्म करता हूं' यह विचार ही बाधा डालता है।

अब यह प्रश्न हो सकता है कि मन को बलवान बनाने के लिए क्या किसी विशेष ध्यान की आवश्यकता है? जो कुछ काम करो, वह तुम्हारा नहीं है। ऐसा खयाल अपने समक्ष रखो, तो पर्याप्त है। इस ध्यान के लिए आरंभ में कठिन प्रयत्न आवश्यक है। धीरे-धीरे यह सहज और स्थिर बन जाता है। काम अपने आप चलता रहेगा और तुम्हारी शांति निश्चल टिकी रहेगी।

मनुष्य का सहज स्वभाव ध्यान

ध्यान तुम्हारा सच्चा स्वभाव है। अब तुम उसको 'ध्यान' यह विशिष्ट नाम देते हो, क्योंकि तुम्हें विचलित करनेवाले कई तरह के विचार सता रहे हैं। जब इन विचारों को हटा दिया जाएगा, तब तुम अकेले बाकी रह जाओगे अर्थात विचारमुक्त ध्यानावस्था में रहोगे। यही तुम्हारा सच्चा स्वभाव है। दूसरे उन सतानेवाले विचारों से मुक्त होकर तुम इसी स्वाभाविक स्थिति में पहुंचने का प्रयत्न करते हो। उन विचारों को दूर करने की क्रिया को 'ध्यान' कहते हैं।

जब यह अभ्यास पक्का हो जाता है, तब सच्चा स्वभाव सच्चे ध्यान के रूप में व्यक्त होता है। अक्सर ध्यान में लगने पर अन्य विचार बड़े जोर के साथ सताने लगते हैं। ध्यान में सब तरह के विचार उठा करते हैं। यह ठीक हैं। तुम्हारे अंदर जो कुछ विचार छिपे हुए हैं, उन्हें बाहर निकलना ही है। यदि वे नहीं निकलेंगे, तो फिर उनका नाश कैसे होगा? विचार अपने आप उठा करते हैं। वे यथाक्रम विनष्ट होने के लिए ही उठते हैं। इस प्रकार विचारों के नाश होने पर मन बलवान हो जाता है।

शांति और चेतना साथ-साथ

जीवन में ऐसे भी अवसर आते हैं, जबकि मनुष्य या वस्तु का एक धुंधला-सा पारदर्शक-सा रूप सामने आ जाता है, जैसे कि स्वप्न में। हम ऐसे रूप को बाह्य वस्तु नहीं मानते। फिर भी मन में उसके अस्तित्व का निष्क्रिय भान रहता है। तो भी इस अवस्था में किसी प्रकार का कोई सक्रिय भान नहीं होता। मन में एक गंभीर शांति रहती है। क्या यह वही समय है, जबकि हमें आत्मा में डुबकी लगानी चाहिए या यह किसी मोहिनी विद्या- हिप्नोटिज्म का परिणाम है? तात्कालिक शांति के विचार से क्या इस दशा को उत्तेजन देना उचित है?

मन में शांति के साथ-साथ एक चेतनता रहती है। इसी स्थिति की प्राप्ति हमारा लक्ष्य है। वही आत्मा है। इस बात को न पहचान कर इस विषय में प्रश्न पूछना यही सिद्ध करता है कि वह दशा स्थिर नहीं, क्षणिक है।

जब बहिर्मुख प्रवृत्तियां रहती हैं, तब 'डुबकी' मारना शब्द का उपयोग यथार्थ माना जा सकता है। तब मन को वैसा करने के लिए अंदर की ओर चलाना पड़ता है, जिससे वह बाह्य वस्तुओं की सतह के नीचे डूब जाए। चैतन्य में बाधा पहुंचाए बिना यदि शांति बनी रहे, तो फिर डुबकी की क्या आवश्यकता है? यदि इस दशा को आत्मा समझकर प्राप्त न किया जाए, तो वैसे प्रयास को डुबकी मारने की क्रिया माना जा सकता है। उस अर्थ में कहा जा सकता है कि वह दशा आत्म-साक्षात्कार करने या डुबकी लगाने के उपयुक्त है।

सप्ताह के व्रत-त्योहार

09 दिसंबर से 15 दिसंबर 2025

09 दिसंबर (मंगलवार) : पौष कृष्ण पंचमी दोपहर 02.30 मिनट तक पश्चात षष्ठी तिथि। गंडमूल विचार।

10 दिसंबर (बुधवार) : पौष कृष्ण षष्ठी दोपहर 01.47 मिनट तक पश्चात सप्तमी तिथि। भद्रा दोपहर 01.47 मिनट से रात्रि 01.53 मिनट तक। गंडमूल रात्रि 02.45 मिनट तक।

11 दिसंबर (गुरुवार) : पौष कृष्ण सप्तमी दोपहर 01.58 मिनट तक पश्चात अष्टमी तिथि।

12 दिसंबर (शुक्रवार) : पौष कृष्ण अष्टमी दोपहर 02.57 मिनट तक पश्चात नवमी तिथि। शुक्र पूर्व में अस्त रात्रि 02.10 मिनट। रुक्मणि अष्टमी। अष्टका श्राद्ध।

13 दिसंबर (शनिवार) : पौष कृष्ण नवमी सायं 04.39 मिनट तक पश्चात दशमी तिथि। भद्रा रात्रि 05.45 मिनट (सूर्योदय पूर्व) से।

14 दिसंबर (रविवार) : पौष कृष्ण दशमी सायं 06.50 मिनट तक पश्चात एकादशी तिथि। भद्रा सायं 06.50 मिनट तक।

15 दिसंबर (सोमवार) : पौष कृष्ण एकादशी रात्रि 09.21 मिनट तक पश्चात द्वादशी तिथि। सफला एकादशी व्रत। पौष संक्रांति।

-पं. ऋभुकांत गोस्वामी

आस्था-अनास्था

अश्वनी कुमार

खर मास : जब खरों ने खींचा सूर्य का रथ

खर मास किसे कहते हैं? खर मास और मल मास में क्या अंतर है?
-विनोद राठौर, कानपुर

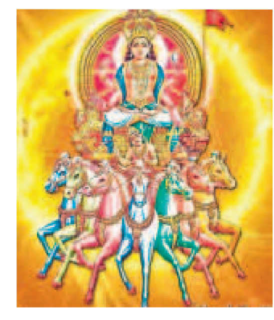

मार्कण्डेय पुराण के अनुसार सूर्य अपने सात घोड़ों के रथ पर बैठ कर पूरे ब्रह्मांड की परिक्रमा करते हैं। इस परिक्रमा के दौरान सूर्य का रथ एक क्षण के लिए भी नहीं रुकता। निरंतर चलने और सूर्य के तेज से घोड़े प्यास तथा थकान से व्याकुल होने लगे। घोड़ों की यह दयनीय दशा देखकर सूर्य देव उन्हें विश्राम देने के लिए और उनकी प्यास बुझाने के उद्देश्य से रथ रुकवाने का विचार करते हैं। इस कार्य में रुकावट उनकी प्रतिज्ञा थी कि वे अपनी इस अनवरत चलने वाली यात्रा में कभी विश्राम नहीं लेंगे। यह विचार करते हुए सूर्य देव का रथ आगे बढ़ रहा था।

कुछ आगे बढ़ने पर सूर्य को एक तालाब के पास दो खर (गधे) दिखाई दिए। उनके मन में विचार आया कि जब तक उनके रथ के घोड़े पानी पीकर विश्राम करते हैं, तब तक इन दोनों खरों को रथ में जोतकर आगे की यात्रा जारी रखी जाए।

ऐसा विचार कर सूर्य ने अपने सारथि अरुण को उन दोनों खरों को घोड़ों के स्थान पर जोतने की आज्ञा दी। सूर्य के आदेश पर उनके सारथि ने खरों को रथ में जोत दिया। खर अपनी मंद गति से सूर्य के रथ को लेकर परिक्रमा पथ पर आगे बढ़ गए।

मंद गति से रथ चलने के कारण सूर्य का तेज भी मंद होने लगा। सूर्य के रथ को खरों द्वारा खींचने के कारण ही इसे 'खर' मास (16 दिसंबर से आरंभ) कहा गया है। खर मास वर्ष में दो बार आता है। एक, जब सूर्य धनु राशि में होते हैं। दूसरा, जब सूर्य मीन राशि में आते हैं। इस दौरान सूर्य का पूरा प्रभाव यानी तेज पृथ्वी के उत्तरी गोलार्द्ध पर नहीं पड़ता। सूर्य की इस कमजोर स्थिति के कारण ही पृथ्वी पर इस दौरान गृह-प्रवेश, नया घर बनाने, नया वाहन खरीदने, मुंडन, विवाह आदि मांगलिक कार्य वर्जित माने जाते हैं। इस मास में किसी नए कार्य को शुरू नहीं किया जाता।

इस मास में सूर्य और बृहस्पति की अराधना विशेष फलदायी होती है। गरुड़ पुराण के अनुसार खर मास में प्राण त्यागने पर सद्गति नहीं मिलती, इसलिए महाभारत के युद्ध में भीष्म पितामह ने अपने प्राण खर मास में नहीं त्यागे थे। उन्होंने सूर्य के उत्तरायण होने का इंतजार किया था।

ध्यान देने की बात है कि खर मास और मल मास में अंतर है। सूर्य के धनु और मीन राशि में आने पर खर मास होता है। यह साल में दो बार आता है।

मल मास तीन साल में एक बार आता है। इसे अधिक मास और पुरुषोत्तम मास भी कहा जाता है। असुर हिरण्यकश्यप को वरदान था कि उसकी मृत्यु बारह मासों में से किसी भी मास में नहीं होगी, इसलिए भगवान विष्णु ने उसके वध के लिए मल मास की रचना की।

भेजें अपने सवाल

स्वर्ग-नरक की कल्पना का आधार क्या है?

पाप क्या है, पुण्य क्या है? धर्म क्या है, अधर्म क्या है? ईश्वर की आराधना कैसे करें? ऐसे सवाल अकसर हमारे मन में उठते हैं, पर इनका जवाब हमारे पास नहीं होता। मन-मस्तिष्क में आने वाले ऐसे ही सवालों के जवाब हमारे पैनल में शामिल धर्माचार्य आपको देंगे।

अपने सवाल हमें इस पते पर भेजें :
धर्मक्षेत्र, हिन्दुस्तान, 11वां तल, द आइकॉन टॉवर, एफ सी-24 सी, फिल्म सिटी, सेक्टर-16ए, नोएडा, गौतम बुद्ध नगर-201301 (उत्तर प्रदेश)

विचार

दिखावा करने से हर हाल में बचिए

रामकिंकर उपाध्याय

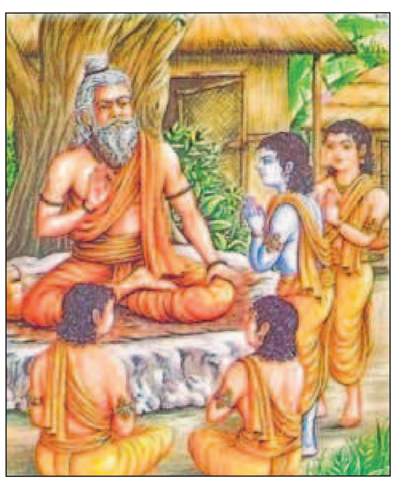

अभिमान की भावना से मुक्त हुए बिना गुरु की सेवा करना प्रदर्शन मात्र है, भक्ति नहीं। ऐसी सेवा का परिणाम कल्याणकारी नहीं हो सकता। 'मानस' में ऐसी गुरुभक्ति का दृष्टांत लंकाधिपति रावण के रूप में हमारे सामने आता है। रावण भगवान शंकर का शिष्य है। उसने भगवान शंकर की स्तुति में ताण्डव स्तोत्र की रचना की है। इसमें जो कामनाएं प्रकट की गई हैं, वे बड़ी उदात्त हैं। रावण के विषय में यह वर्णन भी आता है कि भगवान शंकर की पूजा में उसने अपने सिर काटकर चढ़ा दिए थे।

इसे पढ़-सुनकर कोई भी व्यक्ति आश्चर्यचकित हो जाए, यह स्वाभाविक है, क्योंकि साधारणतया बिल्व पत्र, दूर्वा एवं पुष्प आदि अर्पित कर भगवान शंकर की पूजा की जाती है। 'मानस' में रावण स्वयं इस घटना का बार-बार स्मरण दिलाता है। इसके पीछे रावण की गुरुभक्ति न होकर केवल यह दिखाने की चेष्टा है कि वह भगवान शंकर का कितना श्रेष्ठतम शिष्य है।

'मानस' में वर्णन आता है कि काकभुशुण्डि जी ने भी एक गुरु का वरण किया था। काकभुशुण्डि जी का जन्म अयोध्या में हुआ था। अकाल पड़ने पर वे उज्जैन आ गए। काकभुशुण्डि जी ऐसी दिव्य भूमि में आते हैं और दीक्षा लेते हैं। जिस गुरु से उन्होंने दीक्षा ली, उनके नाम का वर्णन कहीं नहीं किया गया है। ऐसा भी वर्णन कहीं पर नहीं मिलता कि वे बड़े महान थे, लेकिन रावण के गुरु भगवान शंकर तो श्रेष्ठतम गुरु हैं, त्रिभुवन गुरु हैं।

इस प्रकार एक ओर रावण त्रिभुवन गुरु का शिष्य है और दूसरी ओर काकभुशुण्डि जी एक ऐसे गुरु के शिष्य हैं, जिनका नाम तक ज्ञात नहीं है। कई लोग जब अपने गुरु का नाम बड़े गर्व से लेते हैं, तो केवल यह बताने के लिए कि 'हम कितने महान हैं कि ऐसे गुरु के शिष्य हैं।' वस्तुतः इसके द्वारा वे अपनी महिमा का ही विज्ञापन करना चाहते हैं।

गुरु का नाम कितना बड़ा है, उनकी कितनी प्रसिद्धि है, यह महत्वपूर्ण नहीं है। अनाम गुरु से भी व्यक्ति का कल्याण हो सकता है। अपनी महत्ता के प्रदर्शन के लिए विख्यात नामधारी गुरु की खोज करना या वरण करना अकल्याणकारी हो सकता है। शिष्य स्वयं को छोटा माने, तभी कल्याण होगा और कहीं दोनों महान हो गए, तो झगड़ा हो जाएगा।

चिंतन

प्रेम की राह में बाधक विचार

विचार की प्रक्रिया प्रेम को सदैव नकारती है। विचार में ही भावनात्मक जटिलताएं हुआ करती हैं, प्रेम में नहीं। विचार ही प्रेम में सबसे बड़ा बाधक है। हमको विचार द्वारा प्रेम को समझने की बजाय खुद विचार को ही समझना होगा।

जे. कृष्णमूर्ति

भावनाओं और सनसनी से छलकता हुआ विचार प्रेम नहीं है। विचार अपरिहार्य रूप से प्रेम का निषेध करता है। विचार स्मृति पर आधारित है, और प्रेम स्मृति नहीं है। जिससे आपका प्रेम है, जब आप उसके बारे में सोचते हैं, तो वह प्रेम नहीं है। आप किसी मित्र की आदतों का, तौर-तरीकों का, स्वभाव विशेष का स्मरण कर सकते हैं, उस मित्र के साथ अपने संबंध के दौरान हुई सुखद या दुखद घटनाओं के बारे में सोच सकते हैं, किंतु विचार जिन चित्रों को उभारता है, वे प्रेम नहीं हैं। विचार की प्रकृति ही ऐसी है कि यह अलगाव लाता है। समय और अंतराल, अलगाव और दुख का आभास विचार की प्रक्रिया से ही जन्म लेता है और केवल तभी, जब विचार प्रक्रिया थम जाती है, प्रेम संभव है।

विचार से स्वामित्व का भाव उत्पन्न होता है। मालिक होने का यह अहसास ही चेतन अथवा अचेतन तल पर ईर्ष्या को पनपाता है। जहां ईर्ष्या होती है, जाहिर है कि वहां प्रेम नहीं होता; फिर भी अधिकतर लोग ईर्ष्या को प्रेम का एक लक्षण मानते हैं। ईर्ष्या विचार का परिणाम है, यह विचार की भावनात्मक अंतर्वस्तु की प्रतिक्रिया है। जब मालिक बनने या बना लेने की भावना में बाधा आती है, तो इतना सूनापन घेर लेता है कि ईर्ष्या प्रेम का स्थान ले लेती है। चूंकि विचार प्रेम की भूमिका में आ जाता है, हर तरह की उलझनें और दुख जन्म लेते हैं।

विचार की प्रक्रिया प्रेम को सदैव नकारती है। विचार में ही भावनात्मक जटिलताएं हुआ करती हैं, प्रेम में नहीं। विचार ही प्रेम में सबसे बड़ा बाधक है। विचार 'जो है' तथा 'जो होना चाहिए' के बीच विभाजन रचता है और नैतिकता इसी विभाजन पर आधारित होती है, पर न तो नैतिक और न ही अनैतिक प्रेम को जान पाते हैं। सामाजिक संबंधों को व्यवस्थित बनाए रखने के लिए मन ने जिस नैतिक संरचना को खड़ा किया है, वह प्रेम नहीं है, वह तो सीमेंट की तरह कड़ा-कठोर करने वाली प्रक्रिया है। विचार प्रेम की ओर नहीं ले जाता। विचार प्रेम को पोषित-विकसित नहीं करता।

यदि आप थोड़े भी सजग हैं, तो देख पाएंगे कि विचार की आपके जीवन में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। निश्चित ही विचार की अपनी एक जगह है, लेकिन यह किसी भी तरह प्रेम से संबंधित नहीं है। जिसका विचार से संबंध है, उसे विचार द्वारा समझा जा सकता है, पर जो विचार से संबंधित नहीं है, वह मन की पकड़ में नहीं आता है। आप पूछेंगे, तब प्रेम है क्या? प्रेम अस्तित्व की, 'होने' की एक अवस्था है, जिसमें विचार नहीं है; किंतु प्रेम की परिभाषा तो विचार की प्रक्रिया ही है और इसलिए यह प्रेम नहीं है।

हमको विचार द्वारा प्रेम को समझने की बजाय खुद विचार को ही समझना होगा। विचार का नकार प्रेम को जन्म नहीं देता। विचार से मुक्ति तभी होती है, जब इसकी गहन सार्थकता को पूरी तरह से समझ लिया जाता है; इसके लिए गहरे स्वबोध की, स्वयं को जानने की आवश्यकता होती है, न कि व्यर्थ तथा उथले दावों की।

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष : मन परेशान रहेगा। जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें। माता का सान्निध्य मिलेगा। कारोबार के प्रति सचेत रहें। भागदौड़ अधिक रहेगी। खर्च भी बढ़ेंगे।

वृष : आत्मसंयत रहें। अपनी भावनाओं को वश में रखें। बातचीत में संतुलित रहें। नौकरी में अफसरों का सहयोग तो मिलेगा, परंतु कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है।

मिथुन : वाणी में मधुरता तो रहेगी, फिर भी व्यर्थ के क्रोध से बचें। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार में वृद्धि होगी, परंतु किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं।

कर्क : आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा, परंतु धैर्यशीलता में कमी रहेगी। नौकरी में बदलाव के अवसर मिल सकते हैं। आय में वृद्धि होगी। स्थान परिवर्तन भी हो सकता है।

सिंह : आत्मसंयत रहें। व्यर्थ के क्रोध से बचें। नौकरी में अफसरों से सद्भाव बनाकर रखें। तरक्की के योग बन रहे हैं। आय में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में बदलाव होगा।

कन्या : मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। लंबे समय के बाद किसी पुराने मित्र से भेंट हो सकती है। कारोबार में वृद्धि होगी। लाभ में भी वृद्धि होगी। परिवार का साथ मिलेगा।

तुला : आत्मविश्वास में कमी रहेगी। माता की सेहत का ध्यान रखें। भागदौड़ अधिक रहेगी। रहन-सहन अव्यवस्थित रहेगा। मित्रों के सहयोग से कारोबार बढ़ेगा।

वृश्चिक : मन परेशान रहेगा। आत्मसंयत रहें। अपनी भावनाओं को वश में रखें। बातचीत में संतुलित रहें। कारोबार में वृद्धि होगी। लाभ के अवसर भी मिलेंगे।

धनु : आत्मसंयत रहें। व्यर्थ के क्रोध से बचें। परिवार में भी शांति बनाए रखने का प्रयास करें। सेहत का भी ध्यान रखें। आय में कमी व खर्च अधिक की स्थिति हो सकती है।

मकर : मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। कारोबार के लिए किसी दूसरे स्थान पर जा सकते हैं। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार में लाभ की वृद्धि हो सकती है।

कुंभ : मन परेशान रहेगा। आत्मसंयत रहें। व्यर्थ के क्रोध व वाद-विवाद से बचें। नौकरी में तरक्की के अवसर मिल सकते हैं। आय में वृद्धि होगी।

मीन : मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। तरक्की के अवसर मिलेंगे। आय में वृद्धि होगी, परंतु कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है।

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

09 दिसंबर, मंगलवार, **शक संवत्:** 18 मार्गशीर्ष (सौर) 1947, **पंजाब पंचांग:** 24 मार्गशीर्ष मास प्रविष्टे 2082, **इस्लाम:** 17 जमादि-उल्सानी, 1447, **विक्रमी संवत्:** पौष कृष्ण पंचमी दोपहर 02.30 मिनट तक। मघा नक्षत्र, ऐंद्र योग दोपहर 02.33 मिनट तक पश्चात वैधृति योग, तैतिल करण। चंद्रमा कर्क राशि में रात्रि 02.23 मिनट तक उपरांत सिंह राशि में।

सूर्य दक्षिणायन। हेमंत ऋतु। अपराह्न 03 बजे से सायं 04.30 मिनट तक राहुकालम्। गंडमूल विचार।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

टीवी को अलग-अलग दिशाओं में लगाने के क्या परिणाम होते हैं? -जिज्ञासु, बरेली

■ टीवी दक्षिण पूर्व दिशा में लगा हो, तो लोग वित्त या क्राइम संबंधित प्रोग्राम ज्यादा देखते हैं। टीवी पूर्व दक्षिण पूर्व दिशा में हो, तो लोग डिस्कवरी, इतिहास संबंधी प्रोग्राम ज्यादा देखते हैं। टीवी दक्षिण दक्षिण पश्चिम दिशा में होने पर कई बार टीवी से ली गई जानकारी के आधार पर लिए गए निर्णय प्रतिकूल परिणाम देते हैं। टीवी दक्षिण पश्चिम दिशा में हो, तो व्यक्ति स्किल्स बढ़ाने वाले प्रोग्राम देखते हैं। टीवी पश्चिम दिशा में हो, तो लोग धन संबंधी निवेश आदि के प्रोग्राम देखते हैं। पश्चिम उत्तर पश्चिम दिशा में टीवी हो, तो लोग भावुक या दुख वाले या डिप्रेशन वाले प्रोग्राम ज्यादा देखते हैं।

वर्ग पहेली : 8173

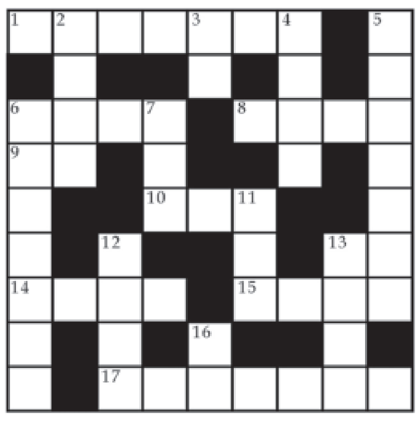

ऊपर से नीचे
2. स्थान जहां सिक्के ढाले जाते हैं (4)
3. कतार; तारतम्य; पंक्ति; माला; श्रृंखला; हार (2)
4. गज; गजानन; हाथी जैसे मुख वाला (4)
5. राहत हेतु प्राप्त आर्थिक सहायता (3,4)
6. उग्र प्रतिरोध; प्रबल विरोध; प्रचंड प्रतिरोध (3,4)
7. जहन्नुम; दोजख; पापियों के लिए निर्धारित; बहुत गंदा स्थान (3)
11. पाठ; शिक्षा; नसीहत (3)
12. साहस करने वाला; दिलेर; निडर; निर्भीक (4)
13. कागज पर वृत्त बनाने वाला यंत्र (4)
16. आक्रमण के लिए अवसर की तलाश; चोट; ताक; प्रहार (2)

बाएं से दाएं
1. रूठकर काम धंधा छोड़ कर कहीं बैठ जाना; स्त्रियों का क्रोध या हठ के कारण काम धंधा छोड़ देना (4,3)
6. बनाव; श्रृंगार कर्म; श्रृंगार किया जाना; सजाया जाना; श्रृंगार सामग्री (4)
8. जनता की आवाज; जनता की राय; लोकमत; लोगों के विचार (4)
9. ताकत; शक्ति; सेना; ऐंठन; टेढ़ापन (2)
10. अंदाज; अटकल; अनुमान (3)
13. ठौर; रहने की जगह; निवास का ठिकाना; खोज; सुराग (2)
14. पौधे जिनके बीजों से तेल निकलता है (4)
15. कपड़े के छोटे टुकड़े; कागज काटने के बाद बचा अंश (4)
17. अचरज में डालना; कला दिखाना; करामात करना; चमत्कार करना; लीला करना (4,3)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली : 8172

सुडोकू : 8155

* आसान

	1	6		9		5	3	
	9						1	
			3		7			
5			2		1			4
		4	5		9	3		
8			7		3			6
			1		4			
	8						4	
	6	3		5		1	7	

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

सुडोकू : 8154

5	9	8	2	1	7	4	6	3
1	6	7	4	3	5	8	2	9
3	2	4	8	6	9	7	5	1
8	7	5	6	4	3	9	1	2
6	1	3	9	7	2	5	4	8
9	4	2	1	5	8	3	7	6
2	5	9	7	8	6	1	3	4
7	8	1	3	2	4	6	9	5
4	3	6	5	9	1	2	8	7

कैंपस डायरी

डूटा ने जंतर-मंतर पर दिया धरना

प्रदर्शन करते डूटा के सदस्य और शिक्षक। अमर उजाला

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू) के शिक्षकों ने दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षक संघ (डूटा) के तत्वावधान में विभिन्न मांगों को लेकर धरना दिया। इसमें केंद्र सरकार से उच्च शिक्षा आयोग बिल पर विचार करने, कॉलेज इंफ्रास्ट्रक्चर को अपग्रेड करने, 25 फीसदी ईडब्ल्यूएस सीटों का विस्तार करने सहित कई मांगें हैं। डूटा अध्यक्ष प्रो. वी. एस. नेगी ने कहा कि बिना पर्याप्त शिक्षण पदों की मंजूरी, इंफ्रास्ट्रक्चर और रिसर्च ग्रांट के राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का सार्थक कार्यान्वयन नहीं हो सकता है। डूटा सचिव प्रो. बिमलेंदु तीर्थंकर ने निर्धारित स्क्रीनिंग मानदंडों का सख्ती से पालन करने, शॉर्टलिस्टिंग के लिए मान्यता प्राप्त प्रकाशनों पर विचार करने मांग की। ब्यूरो

आगरा की सोसाइटी का पंजीकरण रद्द

नई दिल्ली। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने आगरा स्थित सीबीएसई बोर्ड स्कूल गेम्स वेलफेयर सोसाइटी का पंजीकरण रद्द कर दिया। सीबीएसई के अनुसार संस्था द्वारा बिना अनुमति के सीबीएसई नाम का दुरुपयोग और भ्रामक रूप से प्रचार किया गया। सीबीएसई ने स्पष्ट किया है कि बोर्ड का इस सोसाइटी के साथ कोई संबंध या मान्यता नहीं है। बोर्ड के इस संबंध में अधिसूचना जारी कर स्कूलों को निर्देश दिए हैं। जिसमें कहा गया है कि इस संस्था द्वारा किए किसी भी दावे, गतिविधि या आयोजन को अनधिकृत और अमान्य माना जाए। बोर्ड ने सभी संबद्ध स्कूलों को विशेष रूप से निर्देश दिए हैं कि वह इस सोसाइटी द्वारा आयोजित या प्रचारित किसी भी खेल आयोजन, गतिविधि या कार्यक्रम में छात्रों को भेजने, सहयोग करने या प्रायोजित करने से बचें। ब्यूरो

ऑस्ट्रेलिया में यूएई की तर्ज पर खोले जाएंगे सीबीएसई स्कूल

न्यू साउथ वेल्स यूनिवर्सिटी बंगलूरू में खोलेगी कैंपस, प्री-स्कूल से पीएचडी व कौशल पर करेंगे काम

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया में अब यूएई की तर्ज पर केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) के स्कूल खोले जाएंगे और ऑस्ट्रेलिया की यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू साउथ वेल्स (यूएनएसडब्ल्यू) बंगलूरू में अपना कैंपस खोलेगी। इसके लिए उसे सरकार से पत्र भी मिल चुका है। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने सोमवार को ऑस्ट्रेलिया के शिक्षा मंत्री जेसन क्लेयर की मौजूदगी में एक समारोह में यह घोषणा की।

यूएनएसडब्ल्यू, ऑस्ट्रेलिया की सबसे अच्छी यूनिवर्सिटी में से एक है और क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग में दुनिया की शीर्ष -20 में शामिल है। भारत-ऑस्ट्रेलिया शिक्षा व कौशल परिषद की तीसरी बैठक की सह अध्यक्षता करते हुए प्रधान ने यह भी कहा कि शिक्षा, कौशल और अनुसंधान भारत- ऑस्ट्रेलिया रणनीतिक साझेदारी के प्रमुख स्तंभ हैं। कार्यक्रम में कौशल विकास मंत्री जयंत चौधरी भी मौजूद रहे।

इस बैठक में उन्नत कंप्यूटिंग, ऊर्जा, जलवायु, स्वास्थ्य सेवा व चिकित्सा प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष व रक्षा क्षेत्र में शीर्ष ऑस्ट्रेलियाई विश्वविद्यालयों के साथ आईआईटी, एनआईटी के बीच करीब 9.84 करोड़ रुपये की 10 अनुसंधान परियोजनाओं पर समझौते हुए। इस दौरान भारत और ऑस्ट्रेलिया ने प्री-स्कूल से पीएचडी, उच्च शिक्षा में खेल पाठ्यक्रम, तकनीक, स्कूली शिक्षकों की ट्रेनिंग, कौशल विकास, अनुसंधान से लेकर रोजगार बढ़ाने पर मिलकर काम का फैसला किया है।

इस अवसर पर प्रधान ने कहा, दोनों देश शिक्षा, प्रौद्योगिकी अपनाने, खेल शिक्षा, संस्थागत क्षमता निर्माण, कौशल, शिक्षकों को सशक्त बनाने, युवाओं को महत्वपूर्ण और उभरते क्षेत्रों जैसे एआई, ऊर्जा और स्थिरता के लिए तैयार करने के लिए एकसाथ काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

किशोरों को सशक्त बनाने के लिए जुटे विशेषज्ञ

नई दिल्ली। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने द्वारका स्थित मुख्यालय में नेशनल एडोलसेंट समिट 2025 आयोजित किया। जिसमें दिल्ली-एनसीआर सहित दूसरे प्रदेशों के 800 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। जबकि 750 से ज्यादा प्रिंसिपल, वाइस प्रिंसिपल, काउंसलर और वेलनेस शिक्षक भी शामिल हुए। यह समिट किशोरों को सशक्त बनाना : आवाज, विकल्प और कल्याण की थीम पर था। समिट की टैगलाइन हर किशोर के लिए सुरक्षित जगह बनाना थी। इस समिट के अलग-अलग सेशन में मानसिक स्वास्थ्य, डिजिटल सुरक्षा, पहचान और समावेशन, स्वस्थ जीवन शैली के विकल्प और भविष्य के रास्ते जैसे दूसरे विषयों पर चर्चा हुई। जाने-माने मनोवैज्ञानिकों, स्वास्थ्य पेशेवरों और काउंसलिंग विशेषज्ञों ने सीबीएसई स्कूलों के प्रिंसिपलों के साथ मिलकर सभा को संबोधित किया। इस समिट में छात्रों ने नुक्कड़ नाटक, कविता, नृत्य नाटक और संगीत प्रस्तुतियां भी दीं। ब्यूरो

भारत जैसा सहयोग किसी अन्य के साथ नहीं: ऑस्ट्रेलिया

ऑस्ट्रेलिया के शिक्षा मंत्री, जेसन क्लेयर ने कहा, यह दोनों देशों के बीच संबंधों की मजबूती का एक बड़ा संकेत है। शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र में किसी अन्य देश के साथ ऐसा सहयोग नहीं है। यह भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच गहरे विश्वास और भरोसे को दर्शाता है। बता दें कि अभी तक ऑस्ट्रेलिया के कुल सात विश्वविद्यालय भारत में अपना कैंपस स्थापित कर चुके हैं। इसमें गिफ्ट सिटी अहमदाबाद, मुंबई, गुरुग्राम और बंगलूरू आदि शामिल हैं।

शिक्षकों ट्रेनिंग में मदद करेगा ऑस्ट्रेलिया: ऑस्ट्रेलिया, भारत के स्कूली शिक्षकों को ट्रेनिंग देने पर भी मदद करेगा। इसका मकसद, स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और आधुनिक तकनीक से छात्रों को पढ़ाने पर फोकस करना है। इसमें एनसीईआरटी और सीबीएसई के साथ मिलकर काम होगा। इसमें तकनीक, स्किल आदि शामिल है।

विद्यार्थियों को देना होगा गर्म मिड डे मील व गुनगुना पानी

स्कूलों के लिए विंटर रेडीनेस प्लान हुआ जारी

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। सर्दी के मद्देनजर छात्रों के लिए विंटर रेडीनेस प्लान (सर्दियों की तैयारी की योजना) जारी कर दिया गया है। इस संबंध में शिक्षा निदेशालय की स्कूल शाखा ने सर्कुलर जारी किया है। स्कूलों को छात्रों के लिए गुनगुना पानी उपलब्ध कराने से लेकर मिड डे मील में ताजा और गर्म खाना परोसने, सर्द हवा को रोकने के लिए कक्षाओं की टूटी खिड़कियों की मरम्मत कराने सहित कई दूसरे दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं।

सर्कुलर के अनुसार स्कूलों में बच्चों को गर्म, पौष्टिक और समय पर परोसा जाने वाला मिड-डे मील उपलब्ध कराना अनिवार्य होगा। साथ ही संभव हो तो छात्रों को गुनगुना पीने का पानी भी उपलब्ध कराया जाए। शिक्षक हर दिन यह सुनिश्चित करेंगे कि बच्चे पर्याप्त ऊनी कपड़े स्वेटर, मफलर, टोपी और दस्ताने के साथ स्कूल आएं। जिन छात्रों के पास पर्याप्त गर्म कपड़े नहीं हैं, उनकी मदद के लिए स्कूल प्रबंधन समितियों, स्वयंसेवी संस्थाओं और स्थानीय निकायों से सहयोग लिया जाएगा।

खांसने की स्थिति में पहनना होगा मास्क

स्कूलों को बच्चों के बीच ठंड, फ्लू और श्वसन संबंधी बीमारियों से बचाव पर छोटे-छोटे जागरूकता सत्र आयोजित करने होंगे। हाथ धोने, खांसने-छींकने का शिष्टाचार और आवश्यकता पड़ने पर मास्क उपयोग की सलाह दी गई है। स्कूल प्रमुखों को प्रतिदिन व्यवस्थाओं की समीक्षा करने के निर्देश दिए गए हैं। जबकि जिला और जोन स्तरीय अधिकारी अचानक निरीक्षण करेंगे। सरकार ने स्पष्ट किया है कि बच्चों की सुरक्षा और स्वास्थ्य से समझौता नहीं किया जाएगा।

सुरक्षाकर्मियों को उपलब्ध कराने होंगे हीटर : साथ ही कक्षा की स्थिति से लेकर मिड डे मील, गर्म पानी की रोजाना स्कूल प्रमुख निगरानी करेंगे। कड़ी ठंड के दिनों में सुबह की प्रार्थना सभा को कक्षा या हॉल में स्थानांतरित करने के निर्देश दिए गए हैं। टूटी खिड़कियों और दरवाजों की तत्काल मरम्मत की भी हिदायत दी गई है ताकि ठंडी हवा कक्षाओं में न जाएं। सुरक्षा कर्मियों के लिए हीटर उपलब्ध कराना भी स्कूलों की जिम्मेदारी होगी।

200 से अधिक स्कूलों ने दाखिला मानदंड नहीं किए अपलोड, निदेशालय करेगा कार्रवाई

अमर उजाला ब्यूरो

अमर उजाला मिशन एडमिशन

नई दिल्ली। शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए दिल्ली के निजी स्कूलों में नर्सरी से लेकर पहली कक्षा में दाखिला आवेदन की प्रक्रिया जारी है। अभी भी 200 से ज्यादा स्कूलों ने नर्सरी दाखिला के मानदंड अपलोड नहीं किए हैं। इसमें सबसे ज्यादा पश्चिम-बी जिला के 62 स्कूल हैं।

अभी तक 1756 स्कूल में से 1539 स्कूल दाखिला मानंदड अपलोड कर चुके हैं। जबकि सोमवार शाम तक 217 स्कूलों द्वारा दाखिला मानदंड अपलोड किया जाना बाकी था।

दाखिला मानदंड अपलोड न करने वाले स्कूलों के खिलाफ शिक्षा निदेशालय कार्रवाई करेगा। स्कूलों को जल्द दाखिला मानदंड अपलोड करने के निर्देश दिए गए हैं। ऐसा न करने पर स्कूलों पर उचित कार्रवाई होगी। इसमें स्कूलों को दाखिला की दौड़ से भी बाहर किया जा सकता है।

वहीं निदेशालय दिशा-निर्देशों के खिलाफ दाखिला मानदंड अपलोड करने वाले स्कूलों की निगरानी भी कर रहा है। स्कूलों को ऐसे मानदंड हटाने के निर्देश दिए जा रहे हैं। बता दें कि अभिभावक स्कूलों में दाखिला के लिए 27 दिसंबर तक आवेदन कर सकते हैं। स्कूल दाखिला आवेदन करने वाले उम्मीदवारों की सूची नौ जनवरी को जारी करेंगे। जबकि दाखिला को लेकर पहली सूची 23 जनवरी को जारी होगी।

सस्टेनेबिलिटी और लीडरशिप कैंप में पहुंचे युवा और विशेषज्ञ। अमर उजाला

जलवायु कौशल और नेतृत्व क्षमता के बारे में सीखने के लिए जुटे युवा

नई दिल्ली। एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट (टेरी) ने ब्रिटिश काउंसिल और एचएसबीसी के साथ मिलकर जलवायु परिवर्तन और सस्टेनेबिलिटी पर युवाओं को प्रशिक्षित करने के लिए पांच दिन का सस्टेनेबिलिटी और लीडरशिप कैंप शुरू किया। यह कार्यक्रम क्लाइमेट स्किल्स : सीड्स फॉर ट्रांजिशन इंडिया प्रोजेक्ट के तहत आयोजित है, जिसका उद्देश्य ऐसे युवाओं को तैयार करना है, जो स्थानीय स्तर पर जलवायु कार्रवाई में योगदान दे सकें। कैंप का उद्घाटन इंडिया हैबिटेट सेंटर में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत में टेरी की महानिदेशक डॉ. विभा धवन ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि छोटे-छोटे कदम भी बड़े बदलाव ला सकते हैं। इसके बाद टेरी के सीनियर डायरेक्टर डॉ. दीपांकर सहारिया ने कहा कि देश के 2030 और 2070 के जलवायु लक्ष्य तभी पूरे होंगे जब युवा आगे आएंगे। ब्यूरो

वेलकम ने रोहताश को नौ विकेट से हराया

city sports

नई दिल्ली। उत्तर पूर्वी दिल्ली में सांसद मनोज तिवारी द्वारा आयोजित सांसद खेल महोत्सव के दूसरे दिन चार मुकाबलों के साथ खेल प्रतिस्पर्धाओं की शुरुआत की हुई। पहले मैच में रोहतास नगर टीम ने निर्धारित 10 ओवर में 5 विकेट खोकर 88 रन बनाए। जवाबी पारी में वेलकम टीम ने 5.4 ओवर में 1 विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर लिया। दूसरे मैच में कर्दमपुरी टीम ने नेहरू विहार टीम पर 29 रन से जीत दर्ज की। तीसरे मुकाबले में सुंदर नगरी टीम ने नंद नगरी टीम को 6 विकेट से मात दी। वहीं चौथे मैच में मुस्तफाबाद मंडल ने सबोली को 8 विकेट से हराया। मैच का शुभारंभ यमुना पार विकास बोर्ड के अध्यक्ष अरविंदर सिंह लवली ने खजूरी चौक स्थित डीडीए मैदान में किया। इस दौरान अध्यक्ष डॉ. यू के चौधरी, मास्टर विनोद कुमार, विधायक अजय महावर, पूर्वांचल मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष आनंद त्रिवेदी सहित कई लोग मौजूद रहे। इस अवसर पर सांसद मनोज तिवारी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी से प्रेरित यह आयोजन गली-मोहल्लों की प्रतिभाओं को आगे लाने का प्रयास कर रहा है। संवाद

अत्याधुनिक स्टेम लैब का उद्घाटन : फरीदाबाद। शहर के पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नंबर तीन में लर्निंग लिंक्स फाउंडेशन द्वारा स्थापित सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (अत्याधुनिक स्टेम लैब) का उद्घाटन किया गया। केंद्रीय विद्यालय संगठन के उपायुक्त वरुण मित्रा और वकालत और नियामक मामलों की प्रमुख सारा खू मौजूद रहीं। संवाद

कार्यालय, नगर पालिका परिषद हापुड़, (जनपद - हापुड़)

पत्रांक- 262/23/ जलकल / 2025-26 दिनांक:- 08/12/2025

" ई-टैण्डरिंग प्रणाली के अन्तर्गत निविदा आमन्त्रण सूचना "

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है, कि नगर पालिका परिषद हापुड़ द्वारा 15 वां वित्त आयोग के अन्तर्गत निविदा आमंत्रण सूचना संख्या- 261 /23/जलकल 2025-26 दिनांक - 08/12/2025 में वर्णित कार्य हेतु निविदायें आमन्त्रित की जाती । निविदा सम्बन्धी समस्त विवरण व शर्ते वेबसाइड www.etender.up.nic.in पर दिनांक- 09/12/2025 प्रातः 11:00 बजे से दिनांक - 29/12/2025 दोपहर 2:00 बजे तक अपलोड व डाउनलोड की जा सकती है जोकि दिनांक - 29/12/2025 को सॉय 04:00 बजे खोली जायेगी। किसी परिवर्तन, संशोधन व अतिरिक्त सूचनाओ के लिए उक्त वेबसाइट देखते रहे।

जलकल अभियन्ता नगर पालिका परिषद हापुड़ | अधिशासी अधिकारी नगर पालिका परिषद हापुड़ | अध्यक्ष नगर पालिका परिषद हापुड़

कार्यालय, नगर पालिका परिषद हापुड़, (जनपद - हापुड़)

पत्रांक- 264 /23/जलकल /2025-26 दिनांक:- 08/12/2025

" ई-टैण्डरिंग प्रणाली के अन्तर्गत निविदा आमन्त्रण सूचना "

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है, कि नगर पालिका परिषद हापुड़ द्वारा 15 वां वित्त आयोग के अन्तर्गत निविदा आमन्त्रण आमंत्रण सूचना संख्या - 263 /23/जलकल/2025-26 दिनांक- 08/12/2025 मे वर्णित कार्य हेतु निविदायें आमन्त्रित की जाती है। निविदा सम्बन्धी समस्त विवरण व शर्ते वेबसाइड www.etender.up.nic.in पर दिनांक- 09/12/2025 प्रातः 11:00 बजे से दिनांक 18/12/2025 दोपहर 2:00 बजे तक अपलोड व डाउनलोड की जा सकती है जोकि दिनांक - 18/12/2025 को सॉय 04:00 बजे खोली जायेगी। किसी परिवर्तन, संशोधन व अतिरिक्त सूचनाओ के लिए उक्त वेबसाइट देखते रहे।

जलकल अभियन्ता नगर पालिका परिषद हापुड़ | अधिशासी अधिकारी नगर पालिका परिषद हापुड़ | अध्यक्ष नगर पालिका परिषद हापुड़

आरोपी व्यक्ति की उपस्थिति के लिए आवश्यक उद्घोषणा
(अपराध प्रक्रिया संहिता की धारा 82)
माननीय विशेष न्यायिक मजिस्ट्रेट, सी.बी.आई. के न्यायालय में गाजियाबाद (उ.प्र.)

शिकायतकर्ता : सीबीआई, ईओ-I, नई दिल्ली

बनाम

आरोपी सं. 13 : कुंवरजीत सिंह, एफ 13-14, गोखले मार्केट, दिल्ली-54, एसएफएस, 33, अशोक विहार, नई दिल्ली
आरोपी सं. 9 : पंकज चानना, आई-49, ब्लॉक-आई, लाजपत नगर, नई दिल्ली
आरोपी सं. 15 : संजीव वर्मा, डी-140, अजय एन्क्लेव, तिलक नगर, नई दिल्ली
आरोपी सं. 19 : विवेक नाय्यर, (i) 2076, जीएफ, सैनिक कॉलोनी, सेक्टर-49, फरीदाबाद (ii) एफ, 161, एनआईटी, फरीदाबाद

चूंकि मेरे पास शिकायत दर्ज करवाई गई है कि आरोपी सं. 13 कुंवरजीत सिंह, आरोपी सं. 9 पंकज चानना, आरोपी सं. 15 संजीव वर्मा और आरोपी सं. 19 विवेक नाय्यर ने आईपीसी की धारा 120(बी), r/w 406, 420,468, 471 एवं 411 के तहत दंडनीय आईपीसी की धारा 120(बी), r/w 406, 420,468, 471 एवं 411 के तहत अपराध किया है और उनके खिलाफ जारी किये गिरफ्तारी वारंट को यह कहते हुए वापिस प्राप्त किया गया है उक्त आरोपी सं. 13 कुंवरजीत सिंह, आरोपी सं. 9 पंकज चानना, आरोपी सं. 15 संजीव वर्मा और आरोपी सं. 19 विवेक नाय्यर को ढूंढा नहीं जा सका है और चूंकि मेरी संतुष्टि हेतु यह दर्शाया गया है कि उक्त आरोपी सं. 13 कुंवरजीत सिंह, आरोपी सं. 9 पंकज चानना, आरोपी सं. 15 संजीव वर्मा और आरोपी सं. 19 विवेक नाय्यर भगोड़े हैं और उक्त वारंट की सर्विस को टालने के लिए अपने आप को छुपा रहे हैं।

एतद्द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि उक्त आरोपी सं. 13 कुंवरजीत सिंह, आरोपी सं. 9 पंकज चानना, आरोपी सं. 15 संजीव वर्मा और आरोपी सं. 19 विवेक नाय्यर को 09.12.2025 को सुबह 09.00 बजे इस कोर्ट के समक्ष उपस्थित होना आवश्यक है।

CBC 32205/11/0081/2526

उत्तर पश्चिम रेलवे

खुली ई-निविदा सूचना

ई टेन्डर नोटिस नं. **04-Mech-cnw-2025-26** दिनांक **05.12.2025** मण्डल रेल प्रबंधक (कै. व वै.) उ. प. रे. बीकानेर, भारत के राष्ट्रपति महोदय एवं उनकी ओर से **खुली निविदा संख्या: 04-Mech-cnw-2025-26 दिनांक 05.12.2025** जिसकी बंद होने की तिथि 29.12.2025 समय 15:00 बजे तक का है, के लिए ई निविदा आमन्त्रित की जाती है। कोई भी मैनुअल टेन्डर स्वीकार नहीं किया जाएगा और अगर कोई मैनुअल टेन्डर प्राप्त होता है तो उस पर विचार नहीं किया जाएगा। **1. कार्य का नाम व स्थान:** बीकानेर मंडल (बीकानेर डिपो) में 2 वर्ष की अवधि के लिए एफआरपी नोज कपलर कवर एवं एफआरपी साइड वॉल्स के रिक्लेमेशन, मरम्मत, पेंटिंग एवं फिटमेंट का कार्य। **2. अनुमानित लागत:** रु. 24,65,274.65/- **3. बयाना राशि:** रु. 49,400/- ऑन लाइन नेट बैंकिंग पेमेंट और पेमेंट गेट्वे के माध्यम से वरि. मण्डल वित्त प्रबंधक, उ. प. रे. बीकानेर के पक्ष में। **4. टेन्डर फॉर्म जमा करवाने का समय व तारीख:** दिनांक 29.12.2025 समय 15:00 बजे **5. निविदा खुलने की तारीख व समय:** दिनांक 29.12.2025 समय 15:00 बजे **6. टेन्डर फॉर्म शुल्क:** रु. 0/- **7. वेबसाइट का विवरण:** www.ireps.gov.in 1576-AJ/25

हमें /NWRailways NWRailways_ पर फॉलो करें

पूर्व मध्य रेल

ई-निविदा सूचना

WAG9 लोकोमोटिवों में पारंपरिक ब्रेक रिगिंग का प्रावधान

भारत के राष्ट्रपति की ओर से वरीय मंडल यांत्रिक अभियंता/ पतरातू पूर्व मध्य रेल, पतरातू सुयोग्य एवं अनुभवी प्रतिष्ठानों या ठेकेदारों से ई-निविदा सं. **BulkRSP24-25BrakeRigging** हेतु खुला ई-निविदा आमंत्रित करती है। विवरण निम्नलिखित है। **क्रम सं०-(1) कार्य का नाम तथा स्थान-** WAG9 लोकोमोटिवों में पारंपरिक ब्रेक रिगिंग का प्रावधान। स्थान-पतरातू। **(2) कार्य का अनुमानित लागत : रू.** 5,90,80,837.79 (पाँच करोड़ नब्बे लाख अस्सी हजार आठ सौ सैंतीस रूपये और उनहत्तर पैसे मात्र) **(3) अग्रधन राशि :** रू. 4,45,400.00 (चार लाख पैंतालीस हजार चार सौ मात्र) (4) निविदा जमा करने तथा बंद होने की तिथि तथा समय : 22.12.2025 से 05.01.2026 को 15:00 बजे निविदा बंद होने तक। **(5) वेबसाईट का विवरण जहां निविदा दस्तावेज उपलब्ध है :** IREP वेबसाईट: www.ireps.gov.in / निविदा भरने वाले उनका मूल या परिशोधित निविदा प्रस्ताव केवल इसी वेबसाईट के माध्यम से ऑनलाइन प्रस्तुत कर सकते हैं। इस निविदा के तहत मैनुअल (हस्तनिर्मित) निविदा प्रस्ताव स्वीकार्य नहीं हैं तथा ऐसे किसी भी मैनुअल निविदा प्रस्ताव को नजरअंदाज कर दिया जाएगा। **सम्पूर्ण विस्तृत निविदा देखने के लिए सूचना पट्ट की स्थिति :** डीजल लोको शेड, पतरातू का सूचना पट्ट। **वरीय मंडल यांत्रिक अभियंता, पूर्व मध्य रेल/पतरातू** पीआर/1405/लोको शेड पतरातू/एमईसीएच/टी/25-26/40

जामिया हमदर्द
(सरकारी सहायता प्राप्त डीम्ड यूनिवर्सिटी)
नैक द्वारा 'ए+' ग्रेड मान्यता प्राप्त
हमदर्द नगर, नई दिल्ली- 110062

निविदा आमंत्रण सूचना

एतद्द्वारा डिजीटल रेडियो स्टेशन, प्रथम तल, एचएमएससीएल बिल्डिंग, जामिया हमदर्द में आवश्यक **स्टूडियो लाईटें, एयरकंडीशनिंग और विद्युतीय कार्यो** के लिए सरकारी, अर्ध सरकारी के साथ कार्य करने वाले या कार्यरत प्रतिष्ठित ठेकेदारों अथवा प्रतिष्ठित संस्थानों से एकल बोली प्रणाली में मोहरबंद निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं।

ईच्छुक बोलीदार वेबसाईट www.jamiahamdard.ac.in. से निविदा दस्तावेज प्राप्त कर सकते हैं। विस्तृत विनिर्देशन, शर्तें व नियम निविदा दस्तावेजों में दिए गए हैं।

बोलियां जमा करने की अंतिम तिथि 22.12.2025 को अप. 3:00 बजे तक है।

CBC21265/12/0001/2526 रजिस्ट्रार

फोन: 011-26059688 (12 लाईन्स) विस्तार: 5383/5374

OFFICE OF THE COMMISSIONER
NAGAR PALIK NIGAM, CHIRMIRI
Malviya Nagar, West Chirmiri, Distt.- M.C.B.(C.G.)
E-procurement Tender Notice (1st Call)
Main Portal: https://eproc.cgstate.gov.in

NIT. No./3185/Tech.-11/NPN Chirmiri/2025-26 Chirmiri, Dated- 04/12/2025

Online bids are invited for followings works up to 26/12/2025.

Sr. No.	System Tender No.	Name of work	Last Date for online bid Submission	Last Date for Physical Submission	Probable Amount of Contract (In Lakh)
1.	181184	Construction of C.C.Road, Drain & Culvert, From Bada Ground to Siddh Baba Mandir, W.No. 08, Koriya Colliery.	26/12/2025	30/12/2025	Rs 200.47

The details can be viewed and downloaded online directly from Government of Chhattisgarh e-Procurement System Portal (https://eproc.cgstate.gov.in) from 05/12/2025 at 10:00 Hours (IST) on wards.
For more details on the tender and bidding process you may please visit the above-mentioned portal.

Executive Engineer
Nagar Palika Nigam Chirmiri District- M.C.B (C.G)

SAMVAD-46165/3

हरियाणा सरकार **निविदा सूचना**

क्र. सं.	बोर्ड/निगम/ प्राधि. का नाम	कार्य सूचना निविदा का नाम	आरंभिक तिथि अंतिम तिथि (समय)	राशि/ईएमडी (अनुमानित) रु. में	बोर्ड/निगम प्राधि. की वेबसाइट	नोडल अधिकारी/ संपर्क जानकारी/ ईमेल
1	हरियाणा पर्यटन निगम लिमिटेड, चंडीगढ़	39वें सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय क्राफ्ट मेला-2026 में होटलों में ठहरने एवं खाने-पीने के प्रावधान हेतु एजेंसी किराये पर लेना।	09.12.2025 23.12.2025	EMD Rs. 5.00 LACS	www.haryanatourism.gov.in	8816040444 haryanatourism@gmail.com
2	हरियाणा पर्यटन निगम लिमिटेड, चंडीगढ़	39वें सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय क्राफ्ट मेला-2026 के लिये गेट सं. 1 (55 अदद) एवं गेट सं. 2 (20 अदद) के समीप वाणिज्यिक स्टालों को स्थापित करने हेतु लाईसेंस।	09.12.2025 23.12.2025	EMD Rs. 10.00 LACS	www.haryanatourism.gov.in	8816040444 haryanatourism@gmail.com

अग्रिम जानकारी हेतु कृपया वेबसाईट www.haryanaeprocurement.gov.in या www.etenders.hry.nic.in पर जाएं। SAMVAD:- 13/2026/40/40991/I/1/7 Dt. 08/12/2025

हरियाणा सरकार **निविदा सूचना**

क्र. सं.	बोर्ड/निगम/ प्राधि. का नाम	कार्य सूचना निविदा का नाम	आरंभिक तिथि अंतिम तिथि (समय)	राशि/ईएमडी (अनुमानित) रु. में	बोर्ड/निगम प्राधि. की वेबसाईट	नोडल अधिकारी/ संपर्क जानकारी/ ईमेल
1	नगर परिषद बहादुरगढ़	नगरपालिका की भूमि एमआईई पार्ट-बी, नगर परिषद, बहादुरगढ़ में डॉग शेल्टर एवं स्क्रैप यार्ड का निर्माण + 8 कार्य।	Closing Date 16.12.2025	Rs. 1021.11 LACS	https://etenders.hry.nic.in	9812433393 eo-bahadurgarh@ulbharyana.gov.in
2	नगर परिषद बहादुरगढ़	एमसी बहादुरगढ़ में दिल्ली रोहतक रोड मैट्रो पिलर संख्या 839 से मेन बाजार (एमएलए वाली गली) तक सीसी गली का निर्माण + 6 कार्य।	Closing Date 12.12.2025	Rs. 43.25 LACS	https://etenders.hry.nic.in	9812433393 eo-bahadurgarh@ulbharyana.gov.in

अग्रिम जानकारी हेतु कृपया वेबसाईट www.haryanaeprocurement.gov.in या www.etenders.hry.nic.in पर जाएं। SAMVAD:-13/2026/40/40971/I/1/7 Dt. 08/12/2025

हरियाणा सरकार **निविदा सूचना**

क्र. सं.	विभाग का नाम	कार्य सूचना निविदा का नाम	आरंभिक तिथि अंतिम तिथि	राशि/ईएमडी (अनुमानित) रु. में	विभाग की वेबसाईट	नोडल अधिकारी /संपर्क जानकारी/ईमेल
1	लोनिवि भवमा हिसार	हरियाणा में (सीआरआईएफ स्कीम के तहत) 30.55 कि.मी. से 48.57 किमी. तक दादरी चिरया रोड (रोड आईडी-2440) (एमडीआर 124) को चौड़ा व पक्का करना। (केवल सजावटी स्ट्रीट लाईट आदि का प्रावधान करना) +2 कार्य।	05.12.2025 11.12.2025	986.18 LACS	https://etenders.hry.nic.in	01662225651 pwd-eeed-hissar@hry.nic.in
2	पंचायती राज भिवानी	गांव-राजगढ़ ब्लॉक व जिला-भिवानी में स्कीम डी प्लान के तहत बैरागी चौपाल का निर्माण (रेलिंग व विद्युतीय कार्य) + 7 कार्य।	06.12.2025 11.12.2025	157.93 LACS	https://etenders.hry.nic.in	01664243927 prexeeng.bhw@hry.nic.in
3	पंचायती राज करनाल	घड़ी भराल स्कीम वीएनजीवाई 2024-25 के तहत गांव देवीपुर ब्लॉक घरौंडा, जिला करनाल में महिला चौपाल/महिला एसएचजी मीटिंग हॉल का निर्माण + 1 कार्य।	05.12.2025 15.12.2025	27.08 LACS	https://etenders.hry.nic.in	9896202019 prexeeng.krl@hry.nic.in
4	पंचायती राज कुरुक्षेत्र	ब्रह्म सरोवर के दक्षिणी तरफ (बाहर) तथा ज्योतिसर तीर्थ ब्लॉक थानेसर, जिला कुरुक्षेत्र में टॉयलेट ब्लॉक के सीवरेज कनेक्शन हेतु केडीबी कार्य।	05.12.2025 18.12.2025	8.37 LACS	https://etenders.hry.nic.in	9896224357 prexeeng.krk@hry.nic.in
5	पंचायती राज रेवाड़ी	गांव जीतपुरा ब्लॉक धारूहेड़ा जिला रेवाड़ी में जीतपुरा से रोजका की तरफ लिंक रास्ते का निर्माण + 8 कार्य।	05.12.2025 11.12.2025	342.72 LACS	https://etenders.hry.nic.in	9466112077 prexeeng.rwr@hry.nic.in
6	पंचायती राज फतेहाबाद	गांव मानावाली ब्लॉक व जिला फतेहाबाद एचजीवीवाई में मानावाली सूरज राम धाक्करवाल से खैराती रोड।	05.12.2025 11.12.2025	69.80 LACS	https://etenders.hry.nic.in	01667230855 prexeeng.ftb@hry.nic.in
7	सिंचाई व जल संसाधन विभाग, हरियाणा, सिरसा	आरडी 0 से - 73740-टेल तक सहारन डिस्टी. की आंतरिक सफाई हेतु आकलन + 3 कार्य।	CLOSING DATE 11.12.2025	5.91 LACS	https://etenders.hry.nic.in	9996665761 xensrs.swd1925@yahoo.com
8	सिंचाई व जल संसाधन विभाग, हरियाणा, करनाल	ऑगमेंटेशन कैनल पर आरडी- 74.080 पर वीआर ब्रिज का निर्माण।	04.12.2025 18.12.2025	162.77 LACS	https://etenders.hry.nic.in	0184-2258008 xeninddivn@yahoo.in
9	जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी, मंडी डबवाली	कलांवाली एसटीपी :- संग्रहण टैंक का निर्माण पंप मशीनरी का संस्थापन तथा विद्युतीय संस्थापन, एसटीपी से घग्गर ड्रेन को 500 एमएम ओ/डी एचडीपीई राईजिंग मेन का प्रावधान व बिछाई तथा हाईड्रेंट आदि का प्रावधान व संस्थापन। प्रभारणीय शीर्षक - कलांवाली टाऊन :- जिला सिरसा में मौजूदा 9.50 एमएलडी एसटीपी कलांवाली टाऊन से रोरी घग्गर ड्रेन गांव फागू के समीप तक राईजिंग मेन का प्रावधान व बिछाई।	05.12.2025 29.12.2025	2112.75 LACS	https://etenders.hry.nic.in	8730000001 ee.mandidabwali@gmail.com
10	वन विभाग भिवानी	पिल्लर और कंटीली तारयुक्त बाड़ के सहित ईंट की चारदीवारी के निर्माण हेतु निविदा।	27.11.2025 12.12.2025	113.08 LACS	https://haryanaeprocurement.gov.in	9416251743 dfo.bhiwani@yahoo.com

अग्रिम जानकारी हेतु कृपया वेबसाईट www.etenders.hry.nic.in पर जाएं। PRDH:- 11/2026/200/40982/I/1/7 Dt. 08/12/2025

भाषा किसी संस्कृति का रोडमैप होती है, जो बताती है कि उसके लोग कहां से आए हैं और कहां जा रहे हैं। -रीटा मे ब्राउन

हवाई यात्रा का अभूतपूर्व संकट इंडिगो की मनमानी का नतीजा है, जिसका खामियाजा देश के विभिन्न हवाई अड्डों पर लाखों यात्री भुगत रहे हैं। सवाल यह है कि ऐसे मुद्दों पर सामूहिक आवाज क्यों नहीं उठती।

आसमान पर कब्जा

पिछले कुछ दिनों से देश की सबसे बड़ी एयरलाइन इंडिगो जिस अभूतपूर्व संकट से गुजर रही है, वह तो दुर्भाग्यपूर्ण है ही, इससे बेबस यात्रियों को जिस तरह से मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है, वह और भी शर्मनाक है। देश के विभिन्न हवाई अड्डों पर लाखों यात्री बेहद बुरी स्थितियों में फंसे रहे, किसी की परीक्षा छूटी, किसी की नौकरी का इंटरव्यू, तो कोई गंभीर मरीज डॉक्टर तक वक्त पर नहीं पहुंच सका। इस अफरा-तफरी में एक पिता की अपनी बेटी के लिए सेनेटरी पैड के लिए गुहार तक सुनने वाला कोई नहीं था। यात्रियों के मार्गदर्शन की व्यवस्था किस हद तक चौपट हो सकती है, यह हवाई अड्डों पर फैली अराजकता में साफ दिखा। किसी भी तरह की सेवा में संवेदना अनिवार्य होती है, लेकिन इंडिगो के नियामक तंत्र और सरकार की तरफ से भी इस पूरे संकट को लेकर जैसी धीमी प्रतिक्रिया आती दिखी, वह हैरान करने वाली है। इस तस्वीर को अगर आज की भारतीय मध्यवर्गीय जिंदगी का आईना कहा जाए, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। इसे अभिशाप कहें या वरदान कि हमने अपने जीवन को इतना तेज बनाया है कि चीजें आपस में उलझ गई हैं, तभी तो एक हवाई अड़चन ने मानो जीवन को ही ठप कर दिया। समस्या की मूल वजह डीजीसीए द्वारा सभी एयरलाइंस के लिए पायलटों व अन्य क्रू सदस्यों के आराम और ड्यूटी के नियमों में किए गए बदलावों को बताया गया। हालांकि, सभी एयरलाइनों के पास नियमों के अनुपालन की तैयारी के लिए करीब बीस महीने का समय था, लेकिन इंडिगो के वरिष्ठ प्रबंधन ने शायद सोचा होगा कि वे अपने विशाल बाजार आकार के बल पर सरकार को नए नियमों को स्थगित करने के लिए मजबूर कर देंगे। इंडिगो आज अकेली नहीं जूझ रही, यह तो बस उस पूरे तंत्र का प्रतिबिंब है, जिसमें हम रह रहे हैं। एक एयरलाइन 65 से 70 फीसदी घरेलू बाजार पर कब्जा जमाए बैठी है, जिसे विशुद्ध

अर्थशास्त्र में एकाधिकार कहा जाता है, जिस पर अंकुश लगना चाहिए। इंडिगो बोर्ड को आत्मचिंतन करने की जरूरत है, क्योंकि उसकी गलतियों की जिम्मेदारी कोई और नहीं ले सकता। जरूरी है कि जो दोषी हैं, उन्हें सजा भी मिले। यह पूरा हंगामा सरकार के लिए भी सबक है। उसकी सख्ती से इंडिगो को यात्रियों को रिफंड देने पर मजबूर होना पड़ा, लेकिन सवाल तो यह भी है कि अगर पहले सक्रियता दिखाई गई होती, तो यह आपदा आती ही क्यों। आखिर ऐसे मुद्दों पर सामूहिक आवाज क्यों नहीं उठती?

मैकाले गो वेंट गोन

अंग्रेज आज बिना भारतीयों के अपने घर तक को नहीं चला पा रहे, तो मैकाले हमें कैसे चला सकता है! एक न एक दिन तो जाना ही है, इसलिए अंग्रेजी भी अपनी सीमा में रहे!

एक बड़े मीडिया घराने के एक समारोह में प्रधानमंत्री मोदी ने जैसे ही मैकाले की शिक्षा की रीति-नीति को धोया, वैसे ही मैकाले की कुछ ज्ञानी संतानें प्रधानमंत्री की मैकाले की आलोचना पर मेहरबान हुईं। प्रधानमंत्री ने जो कहा, उसका आशय यह था कि मैकाले की शिक्षा की रीति-नीति, 1835 ने भारतीयों के आत्मविश्वास को तोड़ दिया, उनमें हीन भावना भर दी, उनमें गुलामी की मानसिकता घर कर गई। आजादी के बाद यह और पुख्ता हुई। भारतीय भाषाओं का अवमूल्यन हुआ। 2035 तक इस मानसिकता को खत्म होना चाहिए।

जबाव में एक ज्ञानी ने कहा कि यों मोदी का निशाना ठीक था, लेकिन भाजपा व संघ की मानसिकता मैकाले की मानसिकता से अलग नहीं। ऐसे लोग भला 'वि-उपनिवेशीकरण' की बात कैसे कर सकते हैं? भाजपा व संघियों के बच्चे अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ते हैं। असली 'वि-उपनिवेशवादी' तो गांधीजी थे। दूसरी 'ऑनलाइन' टिप्पणी में कहा गया कि प्रधानमंत्री की भाषा अर्ध-सत्य कहती है। 'मानसिक गुलामी' का कारण सिर्फ अंग्रेजी नहीं। भाषा बहुलार्थक होती है। कई लोगों के लिए वह आजादी की भाषा है।

सुधीश पचौरी
वरिष्ठ आलोचक

अपने यहां जब-जब मैकाले की बात होती है, इसी तरह होती है। एक ओर उसके आलोचक होते हैं, जो अक्सर 'राष्ट्रवादी' होते हैं, 'भारतवादी' होते हैं और भारत के 'स्वत्व' की वापसी के दावेदार होते हैं। ऐसे सभी, उन 'ज्ञानियों' के निशाने पर आ जाते हैं, जो अपने को 'वैज्ञानिक दृष्टि से संपन्न' व 'सेक्युलर' मानते हैं और अंग्रेजी को 'ज्ञान विज्ञान' की भाषा मानते हैं।

लेकिन कुछ हमारे जैसे हिंदी वाले भी हैं, जो ऐसे 'देसी अंग्रेजों' से सहमत नहीं होते। उनको भी 'अंध हिंदीवादी' खित्ते में डाल दिया जाता है, फिर 'हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान' के उस 'मुहावरे' में बंद कर दिया जाता है, जिसे एक शताब्दी से कुछ पहले हिंदी लेखक प्रताप नारायण मिश्र ने चलाया था। तब हिंदी-उर्दू के बीच 'मुकदमे' चलते थे और अंग्रेजी वाले मजे लेते थे, क्योंकि अंग्रेज और अंग्रेजी ही उस 'ओरिएंटलिस्ट योजना' की पुरस्कर्ता थी,

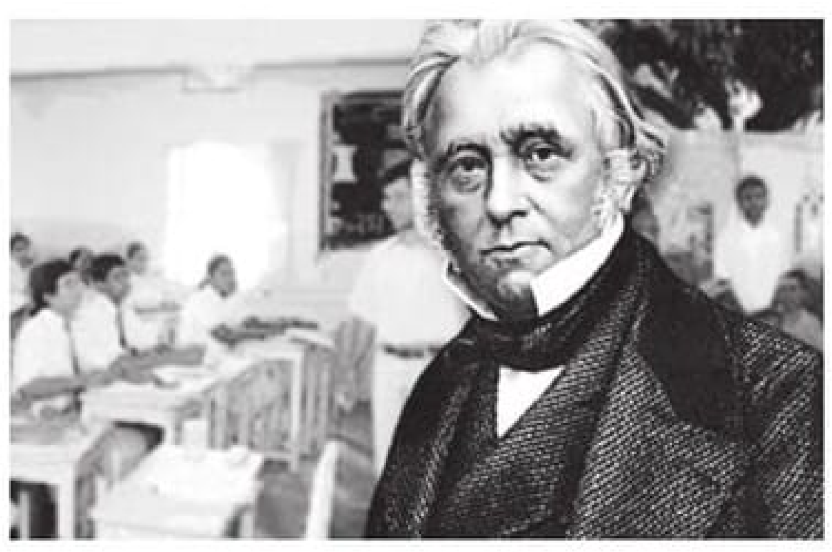

जिसके जरिये 'अंग्रेज उपनिवेशवादी' भारत को अपनी तरह का बनाते हुए 'हांकना' चाहते थे।

एडवर्ड सईद के अध्ययन *ओरिएंटलिज्म* के मर्म को समझें, तो मैकॉले सारे ओरिएंटलिस्टों का उस्ताद नजर आता है, जिसने अंग्रेजी शिक्षा प्रदान करने की रीति-नीति के जरिये औपनिवेशिक भारत को नियंत्रित करने के शिष्ट तरीके बताए, जिनका एक बड़ा औजार अंग्रेजी भाषा और शिक्षा रही। अंग्रेज चले गए, लेकिन अंग्रेजी छोड़ गए! और यही मैकाले का जलवा है कि आज भी वह हमारे दिलो-दिमाग पर राज करता है कि हम अब भी अंग्रेजी को 'प्रामाणिक ज्ञान का भंडार' मान कर चलते हैं।

चाहे 'अंग्रेजी स्पीडली स्पीकिंग कोर्स' से अंग्रेजी बोलना सीखें या 'तीस दिन में अंग्रेजी' सीखें, हम 'अधकचरे अंग्रेज' होकर ही अपने को 'कामयाब' समझते हैं और असली 'ब्लू ब्लड', जो बचपन से ही नामी मिशनरी स्कूलों-कॉलेजों में अंग्रेजी पढ़ता है, फिर ऑक्सफोर्ड-हार्वर्ड से पढ़-पढ़ाकर साल में एक महीने हमें यहां ज्ञान देने आता रहता है, मैकाले को अपना बाप समझता है, जबकि ऐसों को भी असली अंग्रेज 'ब्राउनी' ही कहते हैं, 'ब्लडी इंडियन' ही मानते हैं, भले खुलकर न कहते हों।

इस तरह एक दर्द इन 'ब्लडी इंडियंस' को भी महसूस होता होगा, जिसे ये कह नहीं सकते। मैं अपने दर्द में इनका दर्द मिलाकर चलना चाहता हूं, भले ये मेरे जैसों के दर्द को अपना न मानें। शायद इसी 'दर्द' को समझकर हिंदी के कवि रघुवीर सहाय ने एक कविता में इसे 'एक दर्जा नीचे रहने का दर्द' कहा है। अंग्रेज कहें न कहें, लेकिन देसी अंग्रेज जरूर कहता है कि यह दर्द अंध 'राष्ट्रवादी' है, 'हिंदूवादी' है, 'जातिवादी' है, 'डेंगू' है, 'मलेरिया' है, 'एचआईवी' है, जिसे हर हाल में खत्म किया जाना चाहिए। लेकिन वह इसे ही 'फासिस्ट' भी कहता है! ये कैसा 'वैज्ञानिक ज्ञान' है भाई, जो 'एक दर्जा नीचे' जीता है, जो डेंगू है, मलेरिया है, वह 'फासिस्ट' भी है! कहीं आप भी तो अपनी तरह के 'फासिस्ट' नहीं?

और अब यह विडंबना देखें-जो 'दर्द' औपनिवेशिक शासन में कभी हास्य-व्यंग्य के जरिये व्यक्त किया जा सकता था, उसे अब अगर कोई कहता है, तो सीधे 'पिछड़ा', 'प्रतिक्रियावादी', 'बहुसंख्यकवादी' और 'फासिस्ट' कहकर किनारे कर दिया जाता है। अगर इस पर भी कोई शर्मिंदा नहीं होता, तो हमें ऐसे पर शर्म आती है और यह तब और बढ़ जाती है, जब मैकाले की ये औरस संतानें उसकी आलोचना करने वालों को एकदम 'पैदल' से तर्क देने लगती हैं कि ये कैसे मैकाले विरोधी हैं, जो अपने बच्चों को अंग्रेजी स्कूलों या विदेशों में पढ़ाते हैं। अरे भई, जब अंग्रेजी का वर्चस्व है, तो रोटी कमाने के लिए तो उसे जानना ही होगा। क्या उसका यह हक चला जाता है कि वह अंग्रेजी पढ़े और उसके जरिये की जाती ज्यादतियों को कोसे भी?

अपने यहां एक कहावत चलती है कि 'मियां की जूती मियां के सिर।' जब आजादी के आंदोलनकारियों ने यही नीति अपनाई, तो आजादी के बाद इसे अपनाने की मनाही है क्या और उसे प्रधानमंत्री मोदी या संघी या कोई और क्यों नहीं अपना सकते?

मैकालेबाजी से मुक्ति पाने के इस प्रसंग में हमें प्रेमचंद की एक कहानी याद आती है, जिसका शीर्षक है *ये मेरा देश नहीं*। इस कहानी के हिसाब से चलें, तो हम उस वृद्ध की तरह, जो कुछ नया है, आधुनिक है, उसे कोस सकते हैं और किसी गुफा में वास कर सोच सकते हैं कि हम मैकाले से मुक्त हो गए, लेकिन मुक्त नहीं होने के। इसमें हम राजकपूर के उस गाने को भी जोड़ लें, जो आजादी के ऐन बाद की 'अवशिष्ट औपनिवेशिकता' से मुक्ति का एक नया पूरक आख्यान गढ़ते हुए कहता है कि *मेरा जूता है जापानी ये पतलून इंगलिस्तानी! सर पे लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिंदुस्तानी!!*

बहुत ज्ञान बघारने की जगह मैं इसे भारतीय लोगों की 'जुगाड़ू तरकीब' मानता हूं, जो बिना किसी अपराधबोध के अपनी जुगाड़बाजी से बड़े-बड़ों को मात देती आई है। यह 'वि-उपनिवेशीकरण' इस जुगाड़बाजी से शुरू होता है, शेष 'मियां की जूती मियां के सिर' से खत्म होता है। अंग्रेज आज बिना भारतीयों के अपने घर तक को नहीं चला पा रहे, तो मैकाले हमें कैसे चला सकता है! एक न एक दिन तो जाना ही है, इसलिए अंग्रेजी भी अपनी सीमा में रहे! आप अपने घर को संभालें। हमारी चिंता न करें, उसकी हम कर लेंगे!

edit@amarujala.com

जीवन धारा

ओरिसन स्वेट मार्डेन

प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मुस्कान बनाए रखना किसी भी धन-दौलत से कीमती है। यह वही चमत्कारिक औषधि है, जो साधारण मनुष्य को असाधारण बना सकती है।

खुश रहना जीवन जीने की महान कला है

हर बात में शिकायत ढूंढना, आलोचना करना और छोटी-सी बात में भी बुराई खोज लेना, आत्मा का धीरे-धीरे क्षय करने वाली सबसे घातक आदत है। यदि यह आदत जीवन की शुरुआत में ही पड़ जाए, तो व्यक्ति अनजाने में इसका कैदी बन जाता है। उसका आत्मबल क्षीण हो जाता है, उसका मन नकारात्मकता की धुंध से घिर जाता है, और फिर उसका पूरा जीवन निराशा और निंदकता की दलदल में फंस जाता है। जीवन में किसी भी क्षेत्र में कामयाबी हासिल करने का सबसे पहला नियम है-हर परिस्थिति में उजियारा देखने की आदत डालना। चाहे विपरीत हवा कितनी भी प्रचंड क्यों न हो, अपने मन को यह वचन दीजिए कि मैं हर दिन को एक नई भोर की तरह देखूंगा।

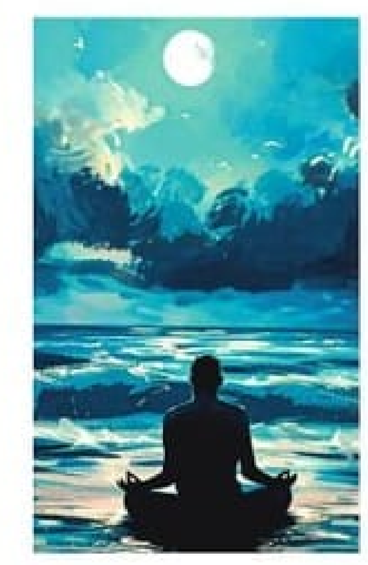

सफलता केवल मेहनत या कौशल का परिणाम नहीं होती, बल्कि यह आपके दृष्टिकोण का प्रतिबिंब भी होती है। चाहे जीवन में कितनी भी चुनौतियां आएं, यदि आप यह संकल्प ले लें कि हर दिन का भरपूर आनंद लेंगे और हर अनुभव में कुछ न कुछ सीखने योग्य ढूंढेंगे, तो आपके भीतर अद्भुत शक्ति जागृत होने लगती है। सकारात्मकता कोई साधारण आदत नहीं, बल्कि आत्मा को ऊंचा उठाने वाला अमृत है। कठिन से कठिन माहौल में भी यदि आप ध्यान से देखें, तो आपको कोई न कोई ऐसा पहलू अवश्य दिखेगा, जो मन को संतोष दे और आगे बढ़ने का रास्ता दिखाए। युवाओं के लिए यह क्षमता कि वे प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मुस्कान बनाए रखें, किसी भी धन-दौलत से अधिक कीमती है। यह वही शक्ति है, जो साधारण मनुष्य को असाधारण बनाने का सामर्थ्य रखती है। इसलिए संकल्प लें कि जीवन में आशावाद आपका स्थायी साथी होगा, निराशा को आपके भीतर घर करने की अनुमति कभी नहीं मिलेगी, और जहां भी जाएंगे, अपने साथ प्रकाश, ऊर्जा और प्रसन्नता लेकर जाएंगे।

खुशी का प्रभाव किसी चमत्कारिक औषधि की तरह होता है। यह केवल मन को ही नहीं, शरीर को भी स्वस्थ बनाती है। एक खुशमिजाज व्यक्ति की उपस्थिति से पूरा माहौल बदल जाता है, वहां मौजूद लोगों के मन में उत्साह और वातावरण में नई ऊर्जा का संचार हो जाता है। जैसे एक संगीतकार बनने के लिए केवल इच्छा नहीं, बल्कि निरंतर अभ्यास आवश्यक है, वैसे ही खुश रहना भी एक कला है, एक अनुशासन है। मन में यह विश्वास जगाएं कि हमारे भीतर बाधाओं को पार करने की अपार क्षमता है।

दृष्टिकोण बदलने भर से जीवन का हर दृश्य बदल जाता है। हर बुरी से बुरी घटना में भी कोई न कोई संदेश होता है, कोई सीख छिपी होती है, जो आगे बढ़ना सिखाती है। सच्चाई यही है कि प्रसन्न मनुष्य सबसे अधिक ताकतवर होता है। मैसिलन के शब्दों में 'स्वास्थ्य व अच्छा मूड इन्सान के लिए वही हैं, जो पेड़-पौधों के लिए धूप। खुश रहना कमजोरी नहीं, बल्कि जीवन जीने की सबसे महान कला है।

हमेशा सकारात्मक रहें

सूत्र

जीवन में सफलता का आधार केवल मेहनत नहीं, बल्कि सकारात्मक दृष्टिकोण भी है। जो व्यक्ति हर परिस्थिति में उजाला देखने की आदत विकसित कर लेता है, वही जीवन की कठिनाइयों को अवसरों में बदल पाता है। शिकायत और आलोचना हमें भीतर से कमजोर करती हैं, जबकि आशावाद आत्मा को शक्ति देता है।

दूसरा पहलू

मेरे 40वें जन्मदिन का जश्न महीनों से प्लान हो रहा था, लेकिन अचानक से सब कुछ थम गया।

जिंदगी भर नहीं भूलूंगी अपना वह जन्मदिन

मेरे 40वें जन्मदिन का जश्न महीनों से प्लान हो रहा था। मेरे पति फिलिप लॉस एंजिलिस के पहाड़ों पर बसे एक खूबसूरत रेस्टोरेंट में एक शानदार पार्टी का आयोजन करने वाले थे-डीजे, फोटो बूथ, तीन लेयर वाला चॉकलेट केक और मेरी पसंदीदा डिशों का मेन्यू। उसके बाद अपनी तीन सबसे करीबी सहेलियों के साथ सांता बारबरा की रोड ट्रिप। लेकिन अचानक से सब कुछ थम गया।

जन्मदिन से तीन दिन पहले मुझे अपने 15 वर्षीय बेटे लूका के लिए पुलिस बुलानी पड़ी। वह अवसाद और आत्महत्या के विचारों से जूझ रहा था और नशे का आदी हो गया था। इसलिए, उसे मनोरोग अस्पताल भेज दिया गया। जन्मदिन मनाना मुझे हमेशा से पसंद रहा है। लूका के छह महीने पूरे होने पर मैंने उसका 'हाफ बर्थडे' मनाया था, यानी आधा केक और आधा हैप्पी बर्थडे वाला गाना। यह परंपरा मेरे बाकी बच्चों के मामले में भी जारी रही। लेकिन अब मेरे दिल में जश्न की जगह चिंता थी। मैंने अपने पति फिलिप से सारी तैयारियां रद्द करने को कहा, पर उसने मुझे आश्वस्त किया कि लूका अब सुरक्षित है, फिर मैं अनमने मन से राजी हो गई।

क्रिस्टीना कुज्मीक

जन्मदिन से तीन दिन पहले मुझे अपने 15 वर्षीय बेटे लूका के लिए पुलिस बुलानी पड़ी। वह अवसाद से जूझ रहा था।

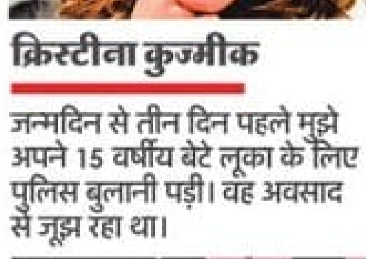

उस खास जन्मदिन के बाद से पांच सालों में हमारे परिवार में बहुत कुछ घटा। एक दिन मैंने लूका से अपने जन्मदिन के बारे में पूछा। उसने मुस्कराकर कहा 'मां, तुम इसके लायक थीं।'

मेहमान आए। उन्हें सारी स्थिति पता थी, फिर भी मुझे लग रहा था, जैसे मुझे सबको यह यकीन दिलाना है कि सब ठीक है। सब पार्टी के मजे ले रहे थे, पर मेरा दिल लूका पर लगा था। मैं उसके बारे में सोच ही रही थी कि तभी एक दोस्त मुझे डांस फ्लोर पर ले गई। मैं तब तक नाची, जब तक कि मेरे पैरों में छाले नहीं पड़ गए। कुछ क्षण के लिए यह मुझे अच्छा लगा, लेकिन तुरंत ही अपराधबोध महसूस हुआ कि क्या ऐसी मां नाच सकती है, जिसका बेटा अस्पताल में हो? अपनी तीन दिवसीय ट्रिप के दौरान मैं हर दिन लूका से मिलने जाती रही।

दस दिन बाद उसे आवासीय उपचार केंद्र में शिफ्ट कर दिया गया। इससे मुझे लूका के ठीक होने की एक उम्मीद दिखी। एक दिन अपने दोस्त जैक से मिलते हुए मैंने माना कि लूका के हॉस्पिटल में भर्ती होने के दौरान अपना जन्मदिन मनाने के लिए मुझे अब भी बुरा लगता है। पर उसने मुझे सांत्वना देते हुए कहा कि अगर तुम अपना जन्मदिन न मनातीं, तो उसे और बुरा लगता। उस खास जन्मदिन के बाद से पांच वर्षों में हमारे परिवार में बहुत कुछ घटा। लूका ने अपनी राह खुद बनाई। ग्रेजुएशन किया, नौकरी की और कार खरीदी। बाकी बच्चे भी पढ़ रहे हैं। एक दिन यों ही मैंने लूका से पूछा कि मेरे उस जन्मदिन के बारे में वह क्या सोचता है। उसने बस मुस्कराकर कहा 'मां, तुम इसके लायक थीं।' शायद वह सही था।

©The New York Times 2025

आंकड़े

संघर्ष और मौतें

2024 में दुनिया भर में हुए संघर्षों में आम नागरिकों की मौत में 40 फीसदी की वृद्धि हुई है। पिछले साल, हर बारह मिनट में एक आम नागरिक मारा गया।

2024	48,384
2023	34,488
2022	20,540
2021	14,447
2020	14,442

आंकड़े संघर्ष में मरने वाले नागरिकों के, संख्या में | स्रोत : यूएन ह्यूमन राइट्स ऑफिस

कनकदास जी को मंदिर में प्रवेश से रोक दिया गया। वह बाहर बैठ कर कृष्णनाम का जप करने लगे। अंत में मंदिर की दीवार फट गई और भगवान ने उन्हें दर्शन दिए।

श्रीकृष्ण के दर्शन

भक्त कनकदास जी गरीब थे, पर उनके हृदय में प्रभु श्रीकृष्ण के लिए अगाध प्रेम भरा था। वह अक्सर वीणा की मधुर ध्वनि के साथ प्रभु का स्मरण करते हुए भजन गाया करते थे। एक बार वह उडुपी पहुंचे, जहां श्रीकृष्ण का भव्य मंदिर था। उनके मन में एक आकांक्षा जगी कि बस एक बार कन्हैया के दर्शन हो जाएं, तो यह जीवन सार्थक हो जाए। पर उस समय के कठोर जातिगत नियमों के कारण उन्हें मंदिर में प्रवेश की अनुमति नहीं मिली। वह बिना किसी शिकायत या क्षोभ के मंदिर की पिछली दीवार के पास बैठकर रात-दिन कृष्णनाम का जप करने लगे।

उनकी भक्ति की पवित्र तरंगें पूरे मंदिर में गूंजने लगीं, और स्वयं श्रीकृष्ण उनके प्रेम से अभिभूत हो उठे तथा मंदिर में स्थित अपनी मूर्ति की दिशा ही बदल दी। पहले श्रीविग्रह पूर्व की ओर था, पर अचानक पीछे की दीवार की ओर मुड़ गया, जहां कनकदास जी बैठकर भजन गा रहे थे। जिस स्थान पर भगवान ने उन्हें दर्शन दिए, वहां की दीवार फट गई और एक छोटा झरोखा बन गया। इसे कनकनकिंडी, यानी कनकदास के लिए बना एक अनोखा झरोखा कहा जाता है।

अंतर्यात्रा
संकलित

जब पुजारियों ने यह चमत्कार देखा, तो वे समझ गए कि सच्ची भक्ति जाति-नियम नहीं देखती। कनकदास जी को विशेष श्रद्धा व आदर के साथ बुलाया गया और उन्हें श्रीकृष्ण के दर्शन का अधिकार मिला। भगवान उन्हीं पर कृपा बरसाते हैं, जिनका मन प्रेम से निर्मल व अहंकार से मुक्त हो।

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 9 दिसंबर, 1965

कश्मीर के मामले में अन्य देशों को बोलने का हक नहीं

काश्मीर में विदेशी ताकत को बोलने का अधिकार नहीं

राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा कि दुनिया की बाहरी ताकतों को कश्मीर के मसले पर बोलने या हस्तक्षेप करने का कोई हक नहीं है। कश्मीर की कठिनाइयों को जनता की इच्छानुसार ही हल किया जाए।

खाप पंचायतों का प्रगतिशील चेहरा

खाप पंचायतों की प्रासंगिकता पर सवाल हैं, पर यदि वे वक्त की नजाकत को समझकर समस्याओं पर विचार कर रही हैं, तो यह स्वागत योग्य है।

रोहित कौशिक | **मुद्दा**

हाल ही में, उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जनपद के सोरम गांव में एक बहुत बड़ी सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत आयोजित की गई। इसमें उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर के 36 बिरादरियों के खाप चौधरी, थांबेदार और हजारों किसानों ने सामाजिक सुधार से जुड़े 11 महत्वपूर्ण प्रस्तावों पर सर्वसम्मति से मुहर लगाई। कुछ वर्ष पहले खाप पंचायतों के प्रेम विवाह व प्रेमी-युगलों से संबंधित कुछ फैसलों को लेकर कई सवाल उठे थे। इस पंचायत में भी माता-पिता की सहमति से प्रेम विवाह करने की बात की गई और लिव-इन-रिलेशनशिप का विरोध किया गया। साथ ही, सुप्रीम कोर्ट से प्रेम विवाह को कानूनी मान्यता न देने की अपील की गई। सवाल यह है कि इस दौर में इस तरह के फैसले कितने प्रासंगिक हैं?

21वीं सदी में पंचायत के इन दो-तीन फैसलों पर समाज के लोगों और बुद्धिजीवियों के विचारों में मतभेद हो सकता है, लेकिन इसमें ज्यादातर ऐसे फैसलों पर भी मुहर लगाई गई, जो इस दौर में काफी प्रासंगिक हैं। सोरम

पंचायत में मृत्यु भोज, दहेज प्रथा व कन्या भ्रूण हत्या पर प्रतिबंध, नशा मुक्ति, पर्यावरण और जल संरक्षण पर महत्वपूर्ण फैसले लिए गए। इसके अतिरिक्त, शिक्षा का स्तर ऊंचा करने और लड़कियों की शिक्षा पर विशेष बल दिया गया। पंचायतों में महिलाओं और युवाओं की भागीदारी बढ़ाने की बात भी कही गई।

21वीं सदी में खाप पंचायतों की प्रासंगिकता और उनके परंपरागत रवैये पर कई सवाल उठ चुके हैं, लेकिन यदि खाप पंचायतें समय की जरूरत को भांप कर वर्तमान समस्याओं पर मंथन कर रही हैं, तो इसका स्वागत किया जाना चाहिए। अब गांवों में बड़े पैमाने पर मृत्यु भोज का चलन बढ़ता जा रहा है। शहरों में आमतौर पर लोग तेरहवीं में शोक सभा के समय ही पहुंचते हैं और भोजन नहीं करते। आमतौर पर रिश्तेदार ही भोजन करते हैं। लेकिन ग्रामीण इलाकों में पूरे गांव को मृत्यु भोज में आमंत्रित करने का चलन बढ़ता जा रहा है। पहले मृत्यु भोज में बहुत कम व्यंजन परोसे जाते थे। मसलन उत्तर भारत में नीचे पंगत में बैठाकर आलू, पूड़ी, कद्दू, मट्ठा और लड्डू परोसे जाते थे, लेकिन आज मृत्यु भोज में काफी ज्यादा व्यंजन परोसे जाने लगे हैं। लगता है कि जैसे यह भोज मृत्यु के अवसर पर नहीं, बल्कि शादी के अवसर पर हो रहा है। ग्रामीण इलाकों में तेरहवीं में बड़ी-बड़ी दावतों के आयोजन को स्टेटस सिंबल बना दिया गया है। तेरहवीं की इन दावतों में राजनेताओं को भी आमंत्रित किया जाता है और समाज में अपना रुतबा दिखाने की कोशिश की जाती है। खाप पंचायतें मृत्यु भोज पर रोक लगाने की बात पहले से ही कहती रही हैं, लेकिन इसे ग्रामीणों ने उस तरीके से स्वीकार नहीं किया, जिस तरीके से किया जाना चाहिए था। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गुर्जर समाज के कुछ गांवों में जरूर मृत्यु भोज बंद कर दिया गया है।

सोरम की सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत में चौधरियों ने कहा कि मृत्यु भोज से छोटे किसानों पर अतिरिक्त आर्थिक दबाव पड़ रहा है। छोटे किसान बड़े किसानों की देखादेखी बड़े स्तर पर मृत्यु भोज का आयोजन करना चाहते हैं, भले ही रुपये उधार लेकर उन्हें यह काम करना पड़े। इसी वजह से पंचायत में मृत्यु भोज को खत्म करने की अपील की गई। खेती की लागत निरंतर बढ़ती जा रही है। ऐसे में, किसानों पर अतिरिक्त आर्थिक दबाव पड़ता है, तो उनका आर्थिक गणित गड़बड़ा जाता है। इस दौर में कुछ अपवादों को छोड़कर किसानों के बच्चे ही खेती नहीं करना चाहते हैं। गांव में किसानों ने पशु रखने बंद कर दिए हैं या फिर कम पशु रखने लगे हैं। परिवार में जब विभाजन होता है, तो पीढ़ी दर पीढ़ी खेतों का आकार कम होता चला जाता है। गांवों में नशे की बढ़ती लत के कारण कई किसान परिवार बर्बाद हो गए हैं। यही कारण है कि खाप पंचायतें बच्चों को नशे से दूर रहने का आह्वान कर रही हैं। कन्या भ्रूण हत्या की वजह से लैंगिक अनुपात बिगड़ रहा है। लड़कों की शादी के लिए उस अनुपात में लड़कियां नहीं मिल पा रही हैं। इसलिए खाप पंचायतें भ्रूण हत्या को रोकने की बात भी कह रही हैं। शादी में दहेज देने के लिए कर्ज लेना पड़ता है, जिससे उबरने में किसानों को कई साल लग जाते हैं। इसी वजह से दहेज प्रथा को खत्म करने की बात भी कही गई है।

बड़ी बात यह है कि खाप पंचायतें पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण और पंचायतों में युवाओं की भागीदारी बढ़ाने का प्रयास करती हुई दिखाई दे रही हैं। इन सारी समस्याओं को देखते हुए खाप पंचायतें यह समझ रही हैं कि शिक्षा के बिना किसानों के बच्चों का उद्धार नहीं हो सकता। इसी तरह कई मुद्दों पर सोरम पंचायत में दिशा-निर्देश तैयार किए गए। इन सभी दिशा-निर्देशों का असली उद्देश्य यही है कि किसान अपने बच्चों को अधिक से अधिक पढ़ाएं।

खाप पंचायतों के इन प्रयासों का निश्चित रूप से स्वागत किया जाना चाहिए। लेकिन देखना यह होगा कि खाप पंचायतों के ये फैसले ग्रामीण समाज किस हद तक स्वीकार कर पाता है। कुछ अपवादों के बावजूद क्या खाप पंचायतें प्रगतिशीलता की तरफ बढ़ रही हैं?

एजुकेशन & कॅरिअर

मुश्किलें तो आएंगी, लेकिन आपको हमेशा उनका डटकर सामना करना चाहिए।

अमर उजाला Job Alert

Real-time job alerts
amarujala.com/jobs

कर्मचारी चयन आयोग

कॉन्स्टेबल व राइफलमैन के पदों पर उम्मीदवार करें आवेदन

25487 पद

आवेदन की अंतिम तिथि : 31 दिसंबर, 2025
वेतनमान : रुपये 21,700 से लेकर रुपये 69,100 तक निर्धारित
यहां आवेदन करें : ssc.gov.in

इंटेलिजेंस ब्यूरो में रिक्तियां ■ 362 पद

मल्टी टास्किंग स्टाफ के पदों पर नौकरी के मौके
आवेदन की अंतिम तिथि
14 दिसंबर, 2025
वेतनमान
रुपये 18,000 से लेकर रुपये 56,900 प्रतिमाह
यहां आवेदन करें
mha.gov.in

ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड ■ 300 पद

एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर के पदों पर रोजगार के अवसर
आवेदन की अंतिम तिथि
15 दिसंबर, 2025
योग्यताएं
ग्रेजुएशन, पोस्ट-ग्रेजुएशन व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
orientalinsurance.org.in

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ■ 996 पद

स्पेशलिस्ट कैडर ऑफिसर के पदों पर रिक्तियां
आवेदन की अंतिम तिथि : 23 दिसंबर, 2025
योग्यताएं : ग्रेजुएशन, एमबीए व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें : sbi.bank.in

सीएसआईआर में आवेदन आमंत्रित ■ 15 पद

वैज्ञानिक के पदों पर रोजगार के अवसर
आवेदन की अंतिम तिथि
12 जनवरी, 2026
वेतनमान
रुपये 67,700 से लेकर रुपये 2,08,700 तक निर्धारित
यहां आवेदन करें
cecri.res.in

एलिम्को में रोजगार की संभावनाएं ■ 10 पद

अप्रेंटिसशिप के लिए करें अप्लाई
आवेदन की अंतिम तिथि
12 दिसंबर, 2025
पात्रताएं
दसवीं, बारहवीं, आईटीआई व अन्य निर्धारित योग्यताएं
यहां आवेदन करें
alimco.in

यहां भी रोजगार की संभावनाएं ...

- जीसस एंड मेरी कॉलेज, नई दिल्ली : कॉलेज शारीरिक शिक्षा और खेल निदेशक का पद खाली।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 27 दिसंबर, 2025
- jmc.ac.in
- राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) : सीनियर कंसल्टेंट के पदों पर रिक्तियां।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 14 दिसंबर, 2025
- ndma.gov.in

अपनी प्रतिक्रियाओं और सुझावों के लिए हमें udaan@amarujala.com पर ई-मेल करें।

जब छंटनी का डर हावी होने लगे

एआई के बढ़ते इस्तेमाल से असुरक्षा का डर हावी होने लगे, तब छोटे-छोटे कदम उठाकर आप अपनी रचनात्मकता की रक्षा कर सकते हैं

दीना डेनहम स्मिथ
हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू

Harvard Business Review

आज कार्यस्थल पर एआई के बढ़ते इस्तेमाल, बार-बार होने वाली छंटनी और अनिश्चितता के कारण नौकरी को लेकर असुरक्षा तेजी से बढ़ रही है। इसका असर कर्मचारियों के व्यवहार में दिखता है, वे चुप रहने लगते हैं, जोखिम और नए विचारों से बचते हैं, और समाधान के बजाय आत्म-सुरक्षा पर ध्यान देने लगते हैं। अगर लीडर इस अनकहे डर को नहीं समझते, तो गलत जानकारी, कम सहभागिता और कमजोर प्रदर्शन जैसी समस्याएं बढ़ती हैं। कई लीडर खुद तनाव में होने के कारण स्थिति को और कठिन बना देते हैं। नौकरी चले जाने का डर खुद पर या कर्मचारियों पर हावी न होने लगे, तो ऐसी स्थिति में लीडर और कर्मचारी, दोनों कुछ छोटे-छोटे कदम उठा सकते हैं।

■ डर को स्वीकारें
भावनाओं को शब्दों में कहना तनाव घटाता है और डर को हल्का करता है। अपनी और टीम की भावनाओं को पहचानें, उनके डर को स्वीकारें और हाल की चुनौतियों पर संवेदनशील बातचीत शुरू करें। डर स्वीकारने से वह बढ़ता नहीं, बल्कि कम होता है। समूह में बात मुश्किल लगे, तो व्यक्तिगत रूप से बात करें। आपका उद्देश्य हर चिंता हल करना नहीं, बल्कि यह दिखाना है कि आप सुन रहे हैं और साथ खड़े हैं। गोपनीय जानकारी हो तो उसे साझा न करें, बस शांत, स्पष्ट और नैतिक रूप से सहयोगी रहें।

■ भरोसेमंद आश्वासन दें
अनिश्चित समय में चिंता बढ़ना स्वाभाविक है, लेकिन आपका स्पष्ट और ईमानदार संवाद टीम को स्थिरता देता है। उन्हें हर जवाब नहीं चाहिए, बल्कि दिशा और नियमित अपडेट चाहिए। साफ बताएं कि क्या निश्चित है और क्या अभी अनिश्चित, ताकि अफवाहें न फैलें। समय-सीमा बताते रहें और जितना संभव हो उतना भरोसेमंद आश्वासन दें, लेकिन बिना आवश्यकता बड़े वादे न करें। जब आप टीम को सारी जानकारी साझा नहीं कर सकते, तब समय और अपेक्षाओं पर फोकस करना आपकी जिम्मेदारी है।

■ छोटे-छोटे विकल्प रखें
जब भविष्य अस्पष्ट होता है, तो लोग अक्सर सबसे बुरा सोचने लगते हैं। ऐसे समय में टीम को वे काम सौंपें, जिन्हें वे अच्छी तरह कर सकते हैं और मिलकर छोटे-छोटे अगले कदम तय करें। इससे एकजुटता बढ़ती है और चिंता कम होती है। ध्यान से सुनें, प्राथमिकताएं साथ तय करें, और जहां तक संभव हो टीम को छोटे विकल्प दें, जैसे मीटिंग की आवृत्ति या अपडेट का तरीका, जिससे उन्हें नियंत्रण और सुरक्षा का एहसास मिलता है।

■ जुड़ाव जैसा माहौल
आपकी भावनाएं टीम के माहौल को सीधे प्रभावित करती हैं। चाहे आपका तनाव हो या शांति। आप नींद, व्यायाम, माइंडफुलनेस जैसी आदतों से शांति विकसित कर सकते हैं। बात करते समय धीमी और स्पष्ट आवाज रखें, और लिखित संदेश भेजने से पहले सोचें कि टीम उन्हें कैसे समझेगी। अनिश्चित समय में जुड़ाव तनाव कम करता है। इसलिए मीटिंग की शुरुआत व्यक्तिगत बातचीत से करें और 'हम साथ हैं' जैसे वाक्य कहें। यह माहौल बनाकर टीम को लचीलेपन की ओर ले जा सकते हैं।

खुद को परखें

1. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान किस राज्य में स्थित है?
   (a) राजस्थान
   (b) गुजरात
   (c) कर्नाटक
   (d) महाराष्ट्र

2. टेंसर प्रोसेसिंग यूनिट किस संस्था द्वारा विकसित की गई है?
   (a) गूगल
   (b) माइक्रोसॉफ्ट
   (c) मेटा
   (d) अमेजन

3. भारत में डिजिटल एड्रेसिंग सिस्टम बनाने के लिए डाक विभाग द्वारा प्रस्तावित पहल का नाम क्या है?
   (a) भुवन
   (b) ध्रुव
   (c) सरल
   (d) डिजी-पोस्ट

उत्तर-1.a, 2.a, 3.b

वियना बायोसेंटर का समर रिसर्च प्रोग्राम-2026

आवेदन आमंत्रित

वियना बायोसेंटर द्वारा समर रिसर्च प्रोग्राम-2026 के लिए आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं। इस प्रोग्राम का उद्देश्य जीवन विज्ञान से प्रेरित छात्रों को व्यावहारिक अनुसंधान अनुभव देने और जीवन विज्ञान परिसरों में पीएचडी के लिए तैयार करने का अवसर प्रदान करना है। इसके लिए अभ्यर्थियों का जीवन विज्ञान से संबंधित डिग्री में अध्ययनरत होना, कम से कम तीन महीने का शोध अनुभव रखना और मजबूत शैक्षणिक रिकॉर्ड के साथ उच्च स्तर की अंग्रेजी दक्षता प्रदर्शित करना आवश्यक है। चयनित छात्रों को 1,400 यूरो का स्टाइपेंड और अन्य सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। आवेदक आधिकारिक लिंक training.vbc.ac.at/how-to-apply/ पर जाकर 11 जनवरी, 2026 तक आवेदन कर सकते हैं।

एचआर और एडमिन सपोर्ट में इंटर्नशिप

इंटर्नशिप प्रोग्राम

प्रारी वर्कफोर्स सॉल्यूशन एलएलपी की ओर से एचआर और एडमिन सपोर्ट टीम में इंटर्नशिप प्रोग्राम के लिए छात्रों से आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। इस इंटर्नशिप का उद्देश्य छात्रों को कॉरपोरेट वर्किंग कल्चर का वास्तविक अनुभव प्रदान करना है। डिप्लोमा, आर्ट्स, कॉमर्स, साइंस, इंजीनियरिंग, बीबीए, बीकॉम, एमबीए या किसी भी शैक्षणिक पृष्ठभूमि के छात्र इसमें भाग ले सकते हैं। कार्यक्रम के दौरान इंटर्न डाटा मैनेजमेंट, इंटरव्यू कोऑर्डिनेशन, कर्मचारी सहायता, ऑफिस प्रशासन और कम्युनिकेशन जैसे कार्यों को सीखेंगे। इंटर्नशिप की अवधि छह महीने निर्धारित की गई है, जिसमें प्रशिक्षुओं को प्रतिमाह 8,000 रुपये का स्टाइपेंड दिया जाएगा। कार्यक्रम पूर्ण होने पर इंटर्न को प्रमाण-पत्र भी प्रदान किया जाएगा। इच्छुक उम्मीदवार आधिकारिक लिंक tinyurl.com/492mfr5z पर जाकर 15 जनवरी, 2026 तक इस इंटर्नशिप प्रोग्राम में अप्लाई कर सकते हैं।

एग्जाम अलर्ट | हफ्ते की परीक्षाएं

एमपीपीएससी खाद्य सुरक्षा अधिकारी परीक्षा

- **परीक्षा की तिथि :**
  14 दिसंबर, 2025
- परीक्षा में खंड-ए के सामान्य अध्ययन से 50 प्रश्न होंगे, जिनके कुल 150 अंक होंगे। खंड-बी में खाद्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी से जुड़े 100 विषय-विशिष्ट प्रश्न होंगे, जिनके कुल 300 अंक निर्धारित हैं।
- **यहां से प्रवेश-पत्र डाउनलोड करें**
  mponline.gov.in/

एनटीए स्वयं परीक्षा (उद्यमिता कौशल)

- **परीक्षा की तिथि :**
  15 व 16 दिसंबर, 2025
- यह परीक्षा 100 अंकों के लिए सीबीटी मोड में आयोजित की जाएगी। इसमें प्रत्येक प्रश्न दो अंकों का होगा। प्रश्न-पत्र का माध्यम केवल अंग्रेजी होगा। परीक्षा की कुल अवधि तीन घंटे होगी।
- **यहां से प्रवेश-पत्र डाउनलोड करें**
  tinyurl.com/24w9p6na

एस्ट्रोसैट

सामान्य ज्ञान

■ क्या है
यह पहला भारतीय खगोल विज्ञान मिशन है।

■ चर्चा में क्यों
हाल ही में भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान ने एस्ट्रोसैट के अल्ट्रावायलेट इमेजिंग टेलीस्कोप के दस वर्ष पूरे होने का जश्न मनाया।

■ अवलोकन करना संभव
इसका उद्देश्य एक्स-रे, ऑप्टिकल और पराबैंगनी तरंगों में खगोलीय पिंडों को एक साथ देखने का है। इसके पेलोड यूवी, सीमित ऑप्टिकल और 0.3-100 केवी एक्स-रे रेंज को कवर करते हैं, जिससे एक ही उपग्रह से कई पिंडों को अलग-अलग तरंगदैर्ध्यों में एक साथ देखना संभव होता है।

■ इसके प्रमुख उपकरण
इसमें यूवीआईटी, एलएएक्सपीसी, सीजेडटीआई, एसएक्सटी और एसएसएम जैसे कुछ प्रमुख उपकरण शामिल हैं। यूवीआईटी में दो दूरबीनें होती हैं। एक निकट-पराबैंगनी और दृश्य तरंगदैर्ध्य के लिए तथा दूसरी दूर-पराबैंगनी अवलोकन के लिए।

ऊर्जा

Life Dream Love

इस मौसम में मन उदास क्यों है?

सीजनल अफेक्टिव डिसऑर्डर एक मानसिक विकार है। इसमें मौसम बदलने के साथ व्यक्ति की मानसिक स्थिति में भी बदलाव आने लगता है और वह उदासी एवं खालीपन महसूस करने लगता है।

मौसमी भावनात्मक विकार यानी सीजनल अफेक्टिव डिसऑर्डर अवसाद का ही एक विशेष रूप है, जो वर्ष के खास मौसम में उभरता है। आम तौर पर यह सर्दी के महीनों में अधिक देखा जाता है, जब दिन छोटे और धूप कम होती है। कुछ मामलों में यह गर्मियों में भी दिखाई दे सकता है, लेकिन ऐसा कम ही होता है। यह समस्या केवल मनोदशा को ही नहीं, बल्कि व्यक्ति की ऊर्जा, कार्यक्षमता और सामाजिक जीवन को भी प्रभावित करती है। सीजनल अफेक्टिव डिसऑर्डर एक मूड डिसऑर्डर है, जिसमें मौसम परिवर्तन के साथ व्यक्ति की मानसिक स्थिति में भी बदलाव आने लगता है। यह मनोविकार सर्दियों में विशेषकर व्यापक रूप से पाया जाता है। वैज्ञानिक शोध के अनुसार, धूप की कमी से शरीर में सेरोटोनिन और मेलाटोनिन जैसे हार्मोन के स्तर प्रभावित होते हैं, जो हमारे मूड, नींद और रोजमर्रा की गतिविधियों को नियंत्रित करते हैं। धूप कम मिलने पर इन हार्मोन्स का संतुलन बिगड़ता है, जिससे अवसाद जैसे लक्षण उभरते हैं।

डॉ. संजय तेवतिया
वरिष्ठ चिकित्सक

■ वजह कई हैं : सीजनल अफेक्टिव डिसऑर्डर होने के पीछे कई शारीरिक और पर्यावरणीय कारण माने जाते हैं जैसे- धूप की कमी, सर्दियों में धूप कम मिलने से मस्तिष्क में सेरोटोनिन की मात्रा घट जाती है, जिससे मूड प्रभावित होता है। जैविक घड़ी का बिगड़ना, सूरज की रोशनी शरीर की अंदरूनी घड़ी को नियंत्रित करती है। जब मौसम बदलता है, तो यह घड़ी असंतुलित हो सकती है, जिससे व्यक्ति थकान, नींद और उदासी महसूस करता है।
कुछ लोगों में अवसाद या मूड डिसऑर्डर का पारिवारिक इतिहास होता है, जिससे सीजनल अफेक्टिव डिसऑर्डर की संभावना बढ़ जाती है। सीजनल अफेक्टिव डिसऑर्डर के लक्षण सामान्य अवसाद जैसे होते हैं, लेकिन ये मौसम के अनुसार दिखाई देते और खत्म होते हैं। सर्दी का मौसम आने पर मेलाटोनिन के स्तर में बदलाव हो जाता है। यह हार्मोन हमारी नींद-जागरण की प्रक्रिया को नियंत्रित करता है। मेलाटोनिन का स्तर बढ़ने से अत्यधिक नींद और सुस्ती आती है।

■ लक्षणों की पहचान : सीजनल अफेक्टिव डिसऑर्डर प्रमुख लक्षणों में लगातार उदासी या खालीपन महसूस होना, ऊर्जा और सक्रियता में कमी, किसी भी काम में रुचि का कम हो जाना, अधिक सोना या सुबह उठने में कठिनाई, अत्यधिक थकान या आलस्य, भूख का बढ़ जाना, विशेषकर कार्बोहाइड्रेड की लालसा, वजन का बढ़ना, ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई, चिड़चिड़ापन या सामाजिक गतिविधियों से दूरियां हो सकते हैं। यदि ये लक्षण हर साल एक ही मौसम में हों और दिनचर्या को प्रभावित करें तो यह सीजनल अफेक्टिव डिसऑर्डर का संकेत हो सकता है।

■ किन्हें है जोखिम : सीजनल अफेक्टिव डिसऑर्डर से जुड़े कई कारण हैं। कुछ व्यक्ति अन्य लोगों की तुलना में सीजनल अफेक्टिव डिसऑर्डर के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं जैसे- ठंडे और कम धूप वाले क्षेत्रों में रहने वाले लोग, अट्ठारह से तीस वर्ष की आयु के युवा। महिलाओं में पुरुषों की तुलना में सीजनल अफेक्टिव डिसऑर्डर की संभावना अधिक होती है। पहले से अवसाद या मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं वाले लोगों को इसके होने की संभावना अधिक होती हैं।

■ उपचार भी जान लें : सीजनल अफेक्टिव डिसऑर्डर से बचाव और उपचार में लाइट थेरेपी का उपयोग किया जाता है। यह सीजनल अफेक्टिव डिसऑर्डर का सबसे प्रभावी उपचार है। विशेष लाइट बॉक्स की मदद से सुबह के समय तेज रोशनी ली जाती है, जो प्राकृतिक धूप जैसा प्रभाव देती है। इससे जैविक घड़ी और हार्मोन का संतुलन सुधरता है। कॉग्नेटिव बिहेविरल थेरेपी इस बीमारी के लिए काफी प्रभावी मानी जाती है। यह नकारात्मक विचारों को पहचानकर उन्हें बदलने में मदद करती है। जरूरत पड़ने पर डॉक्टर अवसादरोधी दवाइयां लिखते हैं, लेकिन बिना चिकित्सक की सलाह के दवा न लें।

■ क्या करें : इस मनोविकार से बचने के लिए आप कुछ उपाय जैसे- धूप में समय बिताना, सर्दियों में यदि संभव हो, तो सुबह की धूप में बीस से तीस मिनट टहलना लाभदायक होता है। यह प्राकृतिक रूप से सेरोटोनिन के उत्पादन को बढ़ाती है और मूड को स्थिर करती है। मौसम ठंडा होने के बावजूद प्रतिदिन हल्का-फुल्का व्यायाम, योग या तेज चलना मनोदशा को बेहतर करता है। व्यायाम से तनाव घटता है और शरीर में एंडोर्फिन का स्तर बढ़ता है।
कार्बोहाइड्रेट की लालसा पर नियंत्रण रखते हुए प्रोटीन, फल, सब्जियां और ओमेगा-3 से भरपूर भोजन करना मन को स्थिर रखता है। समय पर सोना और समय पर जागना शरीर की आंतरिक घड़ी को संतुलित करता है। देर रात तक जागने से सीजनल अफेक्टिव डिसऑर्डर के लक्षण बढ़ सकते हैं।

योग टिप्स

हार्मोन संतुलन में मददगार है शीर्षासन

शीर्षासन को आसनों का राजा कहा जाता है। यह संस्कृत के दो शब्दों 'शीर्ष' (सिर) और 'आसन' (मुद्रा) से मिलकर बना है। शीर्षासन सबसे अधिक लाभ देने वाला आसन माना गया है। शीर्षासन का नियमित रूप से अभ्यास करने से चेहरे पर चमक आती है। बालों का झड़ना रुकता है और वे घने एवं काले बनते हैं। इससे पाचन तंत्र मजबूत होता है। अंतःस्रावी ग्रंथियां सक्रिय होकर हार्मोन का संतुलन बनाती है, जिसका संपूर्ण शरीर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शीर्षासन करने के लिए सबसे पहले एक कंबल या चटाई लें। अब हाथों की उंगलियों को आपस में फंसा लें और कोहनियों को कंधों की चौड़ाई जितना खोलें। अब कोहनियों और उंगलियों को मिलाकर त्रिकोण बनाएं। सिर के सबसे ऊपरी भाग को जमीन पर रखें और हथेलियां सिर के उभरे हुए हिस्से पर टिकाएं। कमर सीधी रखें, दोनों घुटनों को मोड़ते हुए पैरों को धीरे-धीरे ऊपर उठाएं। फिर पैरों को सीधा करें और शरीर को संतुलित करें। श्वास सामान्य रखें। आसन से बाहर आते समय धीरे-धीरे पैरों को मोड़ें और शशांक आसन में आएं। सिर को हाथों पर रखकर कुछ समय विश्राम करें। इसके बाद शवासन में लेटकर शरीर को पूर्ण आराम दें। ध्यान रखें कि गर्दन पर अधिक तनाव न पड़े, इसके लिए कंधों को हल्का ऊपर उठाकर रखें। कभी भी जल्दबाजी या झटके से पैरों को ऊपर न उठाएं और न ही गर्दन पर अधिक दबाव डालें।

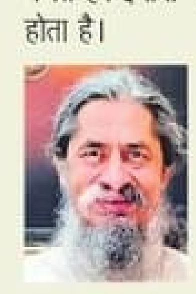

ढाकाराम
योगाचार्य

आज का दिन

9 दिसंबर, 1979

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा चेचक के विरुद्ध वैश्विक टीकाकरण कार्यक्रम शुरू करने के लगभग 10 वर्ष बाद इस रोग को आधिकारिक तौर पर पूरी तरह खत्म घोषित कर दिया गया था।

- **1934 :** ब्रिटिश अभिनेत्री जूडी डेंच का जन्म हुआ था।
- **1965 :** 'ए चार्ली ब्राउन क्रिसमस' शो पहली बार अमेरिकी टेलीविजन पर प्रसारित हुआ था।
- **1990 :** लेक वाल्सा पोलैंड के राष्ट्रपति चुने गए थे।
- **1998 :** संयुक्त राष्ट्र महासभा ने यहूदी विरोध को नस्लवाद का रूप घोषित किया था।

व्रत त्योहार

आज : पौष कृष्ण पक्ष पंचमी।
कल : हेमंत ऋतु, सूर्य दक्षिणायने, दक्षिण गोले।
राहुकाल : दिन में 12.00 से 13.30 तक।

■ सूर्योदय : 07.07
■ सूर्यास्त : 17.20
(भारतीय मानक समयानुसार)

कल का पंचांग

विक्रमी संवत 2082, 19 मार्गशीर्ष मास शक 1947, मार्गशीर्ष मास 25 प्रविष्टे, 18 जमादिउस्सानी हिजरी 1447, पौष कृष्ण पक्ष षष्ठी 13.46 तक उपरांत सप्तमी, मघा नक्षत्र 26.43 तक उपरांत पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, वैधृति योग 12.45 तक उपरांत विष्कुम्भ योग, वणिज करण 13.46 तक उपरांत विष्टि (भद्रा) करण, चंद्रमा सिंह राशि में दिन-रात।

amarujala.com/astrology

राशिफल

■ पं. विनोद त्यागी

मेष : मानसिक उथल-पुथल बनी रहेगी। उतावलेपन पर नियंत्रण रखें। कार्यविशेष में आंशिक सफलता मिलेगी।

वृष : प्रगति का नया मार्ग मिल सकता है। आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी। नौकरी में सम्मान बना रहेगा।

मिथुन : मन खिन्न रहेगा। स्वजनों से निराशा होगी। आर्थिक दबाव बना रहेगा। नौकरी में मन नहीं लगेगा।

कर्क : मनोकामना पूर्ति का हर्ष होगा। नौकरी में पद प्रतिष्ठा बढ़ सकती है। अर्थ प्राप्ति का अवसर मिलेगा।

सिंह : स्वास्थ्य का ध्यान रखें। स्वजनों से निराशा हो सकती है। बढ़ते व्यय से चिंतित रहेंगे। नौकरी में सावधानी बरतें।

कन्या : सामाजिक मान-सम्मान बना रहेगा। नई योजना सफल होगी। व्यावसायिक साख बढ़ेगी।

तुला : आत्मविश्वास बनाए रखें। कार्यविशेष में सफलता मिलेगी। नौकरी में उन्नति का अवसर मिल सकता है।

वृश्चिक : निराशा से मुक्ति मिलेगी। अटका कार्य बनेगा। व्यवसाय में धन लाभ होगा। धर्म में आस्था रहेगी।

धनु : अतिउत्साह पर नियंत्रण रखें। उतावलेपन में बनता कार्य अटक सकता है। नौकरी में सम्मान बना रहेगा।

मकर : भविष्य के प्रति आशान्वित रहेंगे। कार्यक्षेत्र में सम्मान बढ़ेगा। नए कार्य का प्रस्ताव आ सकता है।

कुंभ : नौकरी प्राप्ति के अवसर मिलेंगे। विरोधी पक्ष से सावधानी बरतें। महत्वपूर्ण कार्य में सफलता मिलेगी।

मीन : किसी इच्छा की पूर्ति होगी। शुभचिंतकों का सहयोग मिलेगा। नौकरी में वरिष्ठ सहायक रहेंगे।

जन्मदिन

डीनो मोरिया, अभिनेता

इस वर्ष मन में व्याप्त निराशा से मुक्ति मिलेगी। आत्मबल बढ़ेगा। अटकी योजना में सफलता से उत्साहित रहेंगे। विरोधी पक्ष पर दबाव बना रहेगा। जमीन-जायदाद में वृद्धि के अवसर मिलेंगे। आर्थिक दृष्टि से वर्ष अनुकूल रहेगा। राजनीतिक इच्छा की पूर्ति का अवसर मिल सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

सुडोकू

1					4		9	2
	3			2	7	8		1
	2			9		4		
	1	8						
9		4				5		6
						1	4	
		3		5			1	
8		1	7	4			3	
7	9		3					4

सुडोकू 81 वर्गों का ग्रिड है, जो 9 वर्गों के ब्लॉक में बंटा हुआ होता है। कुछ वर्गों के अंक लिखे हैं और खाली वर्गों में 1 से लेकर 9 तक के अंक लिखने होते हैं। कोई नंबर 1 पंक्ति, कॉलम या 9 वर्ग वाले छोटे ब्लॉक में दोबारा नहीं आ सकता है।

उत्तर

1	8	7	5	3	4	6	9	2
4	3	9	6	2	7	8	5	1
5	2	6	1	9	8	4	7	3
6	1	8	4	7	5	3	2	9
9	7	4	2	1	3	5	8	6
3	5	2	8	6	9	1	4	7
2	4	3	9	5	6	7	1	8
8	6	1	7	4	2	9	3	5
7	9	5	3	8	1	2	6	4

डेली हेल्थ कैप्सूल

रोगों से दूर रखे हींग और तेल की मालिश

हींग का सेवन करने के कई लाभ मिलते हैं। इसे तेल में मिलाकर नाभि में लगाने से भी कई समस्याएं दूर होती हैं।

सरसों के तेल में हींग मिलाकर नाभि में लगाने से शरीर को कई फायदे मिलते हैं। इससे पाचन संबंधी समस्याएं दूर होती हैं। सरसों के तेल और हींग में मौजूद विटामिन और फैटी एसिड त्वचा से जुड़ी समस्याओं से छुटकारा दिलाते हैं। इससे मुंहासे और दाग-धब्बे दूर होते हैं। साथ ही त्वचा में निखार भी आता है। नाभि में सरसों का तेल और हींग लगाने से रक्त संचार बेहतर होता है, जिससे पीरियड्स की समस्याओं में आराम मिलता है। इसकी मालिश से पीरियड्स में होने वाले दर्द और ऐंठन में भी आराम मिलता है। हींग-तेल की मालिश से शरीर में जमा विषाक्त पदार्थ बाहर निकल जाते हैं और बॉडी डिटॉक्स होती है। हींग मिश्रित तेल एंटीवायरल और एंटीबैक्टीरियल गुणों से भरपूर होता है, जो संक्रमण से लड़कर गंभीर बीमारियों का खतरा कम करता है। इस तेल से जोड़ों के दर्द और सूजन में भी आराम मिलता है। यह तेल विशेष रूप से बुजुर्गों के लिए लाभकारी है। इसके लिए एक चम्मच सरसों के तेल को हल्का गरम कर लें। इसमें एक चुटकी हींग मिलाएं। रात को सोने से पहले इसे नाभि के आस-पास लगाएं और थोड़ी देर तक मालिश करें।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ

उष्ण होने के कारण हींग त्वचा की बीमारियों को बढ़ा सकती है। इससे अम्ल पित्त की समस्या भी हो सकती है। अगर कोई बीमारी या एलर्जी है, तो उपयोग से पहले आयुर्वेद चिकित्सक से सलाह लें। -डॉ. राजीव पुंडीर
वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सक

राष्ट्रीय
सहारा
पटना। मंगलवार • 9 दिसम्बर • 2025
www.rashtriyasahara.com

अनमोल वचन

हर आदमी कहता है कि मैं अच्छा हूं, लेकिन लोग क्या मानते हैं, महत्वपूर्ण यह है।
-अज्ञात

राष्ट्रहित और सुरक्षा की अनिवार्य प्रक्रिया

उत्तर प्रदेश में जारी एसआईआर (विशेष गहन पुनरीक्षण) की प्रक्रिया को लेकर कई तरह की चर्चाएं स्वाभाविक है, परंतु किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में चुनावी शुचिता, राष्ट्रीय सुरक्षा और नागरिक अधिकार। यह तीनों समान रूप से महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। ऐसे में एसआईआर की पहल को केवल प्रशासनिक कार्रवाई या तकनीकी प्रक्रिया समझना भूल होगी। यह एक ऐसा प्रयास है जो राष्ट्रहित, पारदर्शिता और मतदाताओं के अधिकारों की रक्षा को मजबूत करने का कार्य करता है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में मतदान सूची की शुद्धता, मतदाताओं की सही पहचान और उनके संवैधानिक अधिकारों की सुरक्षा बेहद चुनौतीपूर्ण कार्य है। उत्तर प्रदेश में एसआईआर का लक्ष्य इसी चुनौती को सरल और अधिक विश्वसनीय बनाना है। यह प्रक्रिया

सुनिश्चित करती है कि किसी भी प्रकार की फर्जी प्रविष्टियाँ, दोहराव, या गैर-प्रामाणिक सूचनाएँ हटाई जा सकें, ताकि वास्तविक मतदाता अपने अधिकारों का उपयोग बिना किसी बाधा के कर सकें।

यह भी स्पष्ट है कि राष्ट्रीय सुरक्षा केवल सीमाओं की रक्षा भर नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक ढांचों की मजबूती से भी जुड़ी होती है। यदि मतदाता सूची शुद्ध रहे, पहचान प्रमाणिक हो और प्रत्येक नागरिक को सही ढंग से दर्ज किया जाए, तो लोकतंत्र अधिक सुरक्षित बनता है। ऐसे में एसआईआर केवल प्रशासनिक औपचारिकता नहीं, बल्कि व्यापक सुरक्षा तंत्र का हिस्सा बनकर उभरता है। आवश्यक है कि इस पूरी प्रक्रिया को पूर्ण पारदर्शिता के साथ संचालित किया जाए। जनता का विश्वास किसी भी सरकारी पहल की सबसे बड़ी शक्ति होता है। इसलिए सरकार और प्रशासन को चाहिए कि प्रत्येक चरण की जानकारी नागरिकों तक समय से पहुंचाई जाए, किसी भी संदेह का निवारण खुले मंचों पर किया जाए, और यह भी स्पष्ट किया जाए कि यह प्रक्रिया किसी भी वर्ग, मत या क्षेत्र के खिलाफ नहीं, बल्कि सभी नागरिकों के हित में है। साथ ही जनता की जिम्मेदारी भी कम नहीं। नागरिकों को चाहिए कि वे एसआईआर प्रक्रिया में सहयोग करें। अपने दस्तावेज समय पर उपलब्ध कराएं और जागरूकता फैलाने में प्रशासन के साथ खड़े हों। लोकतंत्र तभी मजबूत होता है जब सरकार, विपक्ष और जनता दोनों एक-दूसरे के हितों और कर्तव्यों को समझते हुए साथ चलें। अंततः, एसआईआर एक ऐसा कदम है जो न केवल भविष्य के चुनावों को अधिक विश्वसनीय बनाएगा, बल्कि देश की सुरक्षा और लोकतांत्रिक ढांचे को भी मजबूत करेगा। आवश्यकता केवल इतनी है कि यह प्रक्रिया पारदर्शिता, संवेदनशीलता और जनसहयोग के साथ आगे बढ़े-तभी इसका वास्तविक उद्देश्य पूरा हो सकेगा।

करुणा, शांति और मानवता का शाश्वत संदेश

भारत की आध्यात्मिक और दार्शनिक परंपराओं में बौद्ध धर्म का स्थान अत्यंत व्यापक और प्रेरणादायी है। गौतम बुद्ध ने न केवल मानव मन की जटिलताओं को समझा, बल्कि उसके समाधान के लिए एक व्यवहारिक मार्ग भी दिखाया। आज जब दुनिया अशांति, संघर्ष, प्रतिस्पर्धा और कटुता से घिरी हुई है, तब बुद्ध के विचार पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक दिखाई देते हैं। आधुनिक समाज को आत्मावलोकन, संतुलन और करुणा की दिशा में ले जाने की क्षमता यदि किसी दर्शन में है, तो वह बौद्ध धर्म का मध्यम मार्ग ही है।

बुद्ध का पूरा चिंतन अनुभव और करुणा पर आधारित है। उन्होंने जीवन के दुखों को स्वीकार कर उनसे मुक्ति का मार्ग खोजने की प्रेरणा दी। चार आर्य सत्य दुःख, दुःख का कारण, दुःख की निरोध अवस्था और निरोध के मार्ग आज भी मनोविज्ञान और मानव व्यवहार के अध्ययन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। साथ ही अष्टांगिक मार्ग, जिसमें सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सत्य, आचरण, आजीविका, प्रयास, स्मृति और समाधि शामिल हैं। व्यक्ति को संतुलित, अनुशासित और नैतिक जीवन की ओर ले जाता है। बुद्ध का दर्शन किसी चमत्कार या अंधविश्वास पर नहीं, बल्कि तर्क, विवेक और आत्मानुशासन पर आधारित है। इसी विचारधारा का प्रथम उद्घोष हुआ सारनाथ में। वाराणसी से कुछ ही दूरी पर स्थित वह पावन स्थल, जहां बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद अपना पहला उपदेश दिया। धम्मचक्कपवत्तन सूत्र के रूप में ज्ञात यह उपदेश वास्तव में मानव कल्याण के नए युग की शुरुआत थी। सारनाथ केवल एक ऐतिहासिक स्थल नहीं, बल्कि यह मनुष्य की विवेकपूर्ण चेतना का प्रतीक है। यहां का सिंह स्तंभ जो आज भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है-दर्शाता है कि हमारा राष्ट्र भी शांति, साहस, धैर्य और सत्यनिष्ठा के उन्हीं मूल्यों पर आधारित है, जिनका संदेश बुद्ध ने दिया था। सारनाथ की धरा आज भी विश्वभर से आने वाले श्रद्धालुओं, पर्यटकों और शोधकर्ताओं के कारण जीवंत है। यहां के स्तूप, संग्रहालय और प्राचीन अवशेष न केवल इतिहास का साक्ष्य प्रस्तुत करते है, बल्कि यह स्मरण भी कराते है कि भारत ने विश्व को ज्ञान, करुणा और अहिंसा का मार्ग दिखाया है। वैश्विक स्तर पर बढ़ती हिंसा, अतिवाद और मानसिक तनाव के बीच सारनाथ एक ऐसी जगह है जो मन को स्थिर करती है और शांति का अनुभव कराती है।

आज हमें बुद्ध के विचारों को केवल ग्रंथों और स्मारकों तक सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि उन्हें समाज और शासन के व्यवहार में उतारना चाहिए। शिक्षा में करुणा, पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी, और निर्णय प्रक्रियाओं में संतुलित दृष्टिकोण-ये सभी बुद्ध के सिद्धांतों से प्रेरित होकर ही सुदृढ़ हो सकते हैं। भारत जब वसुधैव कुटुंबकम की भावना के साथ विश्व को नेतृत्व देने की बात करता है, तब बुद्ध का मार्ग ही उसका आधार बनता है। इसलिए बौद्ध धर्म केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि मानवता के उत्थान का शाश्वत दर्शन है और सारनाथ उसकी जीवित आत्मा जहां से करुणा का चक्र घूमना शुरू हुआ और आज भी समूची दुनिया को दिशा दे रहा है।

प्रवासन व मानव तस्करी के बीच संबंध

वैश्विक समस्या

राजेश मणि

आज यह वैश्विक समस्या बनता जा रहा है और यह केवल अब मज़दूर वर्ग में ही नहीं है उससे ऊपर उठ चुका है बच्चों के उच्च शिक्षा के मामले में भी ये समस्याएं आने लगी है विदेशों की डिग्री का सब्ज़बाग दिखा कर दलाल इसका लाभ उठा रहे है। मजदूर वर्ग ख़ास कर माइग्रेशन और ट्रैफ़िकिंग के बीच फंस रहा है अपने परिवार के आर्थिक सामाजिक उन्नति के लिए मज़दूर वर्ग पासपोर्ट व वीज़ा बनवाकर विदेश जाता है लेकिन कुछ फर्जी प्लेसमेंट एजेंसी पूरा नेटवर्क फैलाकर बैठी हुई है उनके एजेंट ऐसे लोगों को पहचान कर उन्हें अधिक लालच दे कर पासपोर्ट वीज़ा बनवा कर उन्हें विदेश भेज रहे हैं। लेकिन तकनीकी जो कमी होती है वह मजदूर वर्ग नहीं जान पा रहा है वर्किंग वीज़ा की जगह उन्हें टूरिस्ट वीजा पर भेजा जा रहा है जो विदेशों में जा कर फँस जा रहा है और विभिन्न तरह के शोषण के शिकार हो रहे है।

सबसे अधिक समस्या तब हो जा रही है जव मजदूर वर्ग सुध व्याज पर पैसा ले कर, गहने और खेत गिरवी रख कर वीज़ा पासपोर्ट बनवा रहे है और जब एजेंट और एजेंसिया उन्हें फंसा दे रही है उनके सारे सपने टूट जा रहे है और विदेशों से वापसी की गुहार लगाने के लिए ये मज़दूर वर्ग विवस हो जा रहे है आए दिन वीडियो उनके सोसल मीडिया पर वायरल हो रहे है। माइग्रेशन (प्रवासन) और ह्यूमन ट्रैफिकिंग (मानव तस्करी) के बीच गहरा संबंध (नेक्सस) है, क्योंकि कई प्रवासी, विशेषकर जो असुरक्षित परिस्थितियों में या अवैध तरीकों से यात्रा करते है, वे मानव तस्करी का शिकार बन सकते हैं; प्रवासियों की मजबूरी, जैसे रोज़गार की तलाश, उन्हें तस्करों के जाल में फंसा सकती है, जहाँ उन्हें शोषण, ज़बरदस्ती श्रम, या यौन शोषण का सामना करना पड़ता है, और प्रवासन नीतियां अक्सर इस संबंध को ठीक से संबोधित नहीं करतीं, जिससे दोनों के बीच की रेखा धुंधली हो जाती है।

जो लोग बेहतर जीवन, रोज़गार या सुरक्षा की तलाश में अपने देश छोड़ते है, वे अक्सर आर्थिक और कानूनी रूप से कमज़ोर होते है, जिससे तस्करों के लिए उन्हें निशाना बनाना आसान हो जाता है। अवैध या अनियमित मार्गो से यात्रा करने वाले प्रवासियों को अक्सर तस्करों की मदद लेनी पड़ती है, जो उन्हें शोषण और धोखाधड़ी के जोखिम में डालता है। तस्कर अक्सर प्रवासियों को झूठे वादे (जैसे नौकरी या बेहतर जीवन) करके फंसाते है, और फिर उन्हें बंधक बना लेते है, जो कि मानव तस्करी का मूल है। प्रवासन (स्वैच्छिक या मजबूरी में एक स्थान से दूसरे स्थान जाना) और तस्करी (शोषण के उद्देश्य से लोगों का अवैध अधिग्रहण और परिवहन) अलग-अलग अवधारणाएँ है, लेकिन व्यावहारिक रूप से ये अक्सर आपस में मिल जाती है। कई देशों की प्रवासन नीतियां प्रवासियों को तस्करी के खिलाफ पर्याप्त सुरक्षा प्रदान नहीं करतीं, जिससे वे शोषण के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते है।

माइग्रेशन (प्रवासन) और ह्यूमन ट्रैफिकिंग (मानव तस्करी) के बीच गहरा संबंध (नेक्सस) है, क्योंकि कई प्रवासी, विशेषकर जो असुरक्षित परिस्थितियों में या अवैध तरीकों से यात्रा करते हैं, वे मानव तस्करी का शिकार बन सकते हैं; प्रवासियों की मजबूरी, जैसे रोज़गार की तलाश, उन्हें तस्करों के जाल में फंसा सकती है, जहाँ उन्हें शोषण, ज़बरदस्ती श्रम, या यौन शोषण का सामना करना पड़ता है, और प्रवासन नीतियां अक्सर इस संबंध को ठीक से संबोधित नहीं करतीं, जिससे दोनों के बीच की रेखा धुंधली हो जाती है।

इन मामलों को लेकर सरकारें संवेदन शील तो हुई है विदेश मंत्रालय इसको लेकर पॉलिसी तथा पत्र भी राज्य सरकारों को जारी किए है की ऐसे फर्जी प्लेस मेंट एजेंसी जो है उन पर नज़र रखी जाये जो मंत्रालय में प्लेसमेंट एजेंसी पंजीकृत है उसी के द्वारा लोग प्रवासन करे लेकिन यह शत प्रतिशत संभव नहीं हो पा रहा है पुलिस के अधिकारी को भी पत्र जारी किए गए हैं इसको मॉनिटर करने के लिए। माइग्रेशन को लेकर अलग अलग राय भी बनती रहती है माइग्रेशन राइट ह्यूमन राइट्स के नज़रिये से भी देखा जाता है सुरक्षित माइग्रेशन होना चाहिए इस पर बल दिया जाना चाहिए असुरक्षित माइग्रेशन पर पूर्णत नियंत्रण जरूरी है। जो पंजीकृत प्लेसमेंट एजेंसी है उन्हें प्रशिक्षण के साथ-साथ जागरूकता भी करते रहने चाहिए विशेष कर जब मजदूर वर्ग विदेश जा रहा हो तो वह अपने वीज़ा पासपोर्ट की जाँच करा सके इसके लिए जगह जगह मुख्य शहरों में माइग्रेशन काउंसलिंग सेंटर होने चाहिए। वर्क वीज़ा के साथ साथ यह स्पष्ट होना चाहिए किस जगह कौन सा कार्य करना है क्या मानदेय है क्या सुविधाएं है इंश्योरेंस होना चाहिए।

इसमें श्रम मंत्रालय व श्रम विभाग को भी विशेष रूप से रुचि ले कर सतही तौर कार्य करने की जरूरत है ऐसे स्पॉट का चिन्हीकरण कर की कहा से किस देश के लिए उनका माइग्रेशन हो रहा है प्री डिपार्चर की ट्रेनिंग मिलनी चाहिए इसमें स्वैच्छिक संगठनो के साथ-साथ पंचायत नगर निकाय को भी आगे आना चाहिए की माइग्रेशन सुरक्षित हो सके कोई भी हमारा देशवासी विदेश में जा कर किसी भी तरह का शोषण का शिकार न हो, मानव तस्करी का शिकार न हो। जिन लोगों को मजबूरन पलायन करना पड़ता है, उनके लिए यह यात्रा अक्सर कठिन और असुरक्षित होती है। सीमित कानूनी विकल्पों के कारण, कई लोगों को तस्करी, दुर्व्यवहार और शोषण का खतरा रहता है। अकेले यात्रा करने वाली महिलाएँ और बच्चे विशेष रूप से असुरक्षित होते है। हम ऐसी प्रवासन नीतियों का आह्वान करते है जो संरक्षण को प्राथमिकता दें, अंतर्राष्ट्रीय कानून को कायम रखें और मानव गरिमा सुनिश्चित करें। इसमें अंतर्राष्ट्रीय कानून का उचित अनुप्रयोग और सुरक्षा और स्थिरता चाहने वालों के लिए व्यावहारिक समर्थन शामिल है।

हालाँकि प्रवास, तस्करी और मानव तस्करी अलग-अलग घटनाएँ है, फिर भी ये आपस में गहराई से जुड़ी हुई है। जब आव्रजन कानून कानूनी तरीकों से लोगों की का समर्थन नहीं करते, तो लोगों को अनियमित रास्ते अपनाने के लिए मजबूर किया जा सकता है जो मानव तस्करों और कभी-कभी मानव तस्करों पर निर्भर हो सकते है जिससे वे आधुनिक गुलामी के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते है। संक्षेप में, जब सरकारें आव्रजन कानूनों को सख्त करती है, तो वे तस्करी और मानव तस्करी से होने वाले मुनाफे को बढ़ा देती है और आम लोग इसकी कीमत चुकाते है।

प्रवासियों को आधुनिक गुलामी के खतरों से बचाने के लिए, हमें सुरक्षित प्रवास का समर्थन करना होगा और प्रवास के लिए और अधिक कानूनी रास्ते खोलने होंगे। सरकारों और नागरिक समाज को प्रवासियों को उनके अधिकारों के बारे में शिक्षित करना होगा, और नियोक्ताओं के साथ मिलकर नैतिक भर्ती पद्धतियाँ, सभ्य कार्य परिस्थितियाँ बनाने और किसी भी संभावित दुर्व्यवहार की रिपोर्ट करने में श्रमिकों की क्षमता का समर्थन करने के लिए काम करना।

(लेख में विचार निजी हैं)

मानसून में त्वचा की हर परेशानी का हल शहद

- अमेरिका की नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन के अनुसार, शहद गाढ़ा, मीठा तरल होता है, जो मुख्य रूप से फ्रक्टोज और ग्लूकोज नाम की प्राकृतिक शर्करा से बना होता है। इसमें प्रोटीन, अमीनो एसिड्स, विटामिन्स, एंजाइम्स, मिनरल्स और कई अन्य पोषक तत्व भी होते हैं
- शहद में मौजूद एंटीबैक्टीरियल और एंटीफंगल गुण इसे मानसून में स्किनकेयर के लिए परफेक्ट बनाते हैं। नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन के अनुसार, शहद का काम इस बात पर भी निर्भर करता है कि वह किस पौधे या फूल से प्राप्त हुआ है

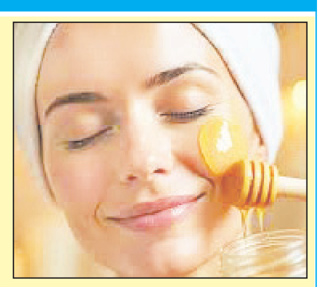

(मीडिया इनपुट्स)

क्वाड की बैठक में भारत के विदेश मंत्री ने पाकिस्तान का नाम लेने या सीमा-पार आतंकवाद की बात करने की बजाय 'आतंकवाद' का जिक्र भर किया। वास्तविकता यह है ट्रंप प्रशासन पीड़ित और साजिशकर्ता के बीच ज्यादा भेद नहीं करता। उस पर ट्रंप तो यह भी दावा कर चुके हैं, 'आई लव पाकिस्तान'।

ब्रह्म चेलानी, सामरिक चिंतक
@Chellaney

हेलीकाप्टरों की गड़गड़ाहट से जैव विविधता को नुकसान

मनुष्य अपनी यात्रा को आरामदायक और जल्दी पूरा करने के लिए हेली सेवाओं का इस्तेमाल बड़ी तेजी से कर रहा है। आजकल मध्य हिमालय की देवभूमि उत्तराखंड स्थित चारधाम के दर्शन करने पहुंच रहे यात्री भी हेली सेवाओं के उपयोग करने में पीछे नहीं हैं। अनेक कंपनियों के हेलीकॉप्टर यहां बड़ी संख्या में उड़ान भर रहे हैं, जिनके लिए गाइडलाइंस बनाई गई हैं। बावजूद इसके यात्रा शुरू होने के पिछले 40 दिनों में पांच हेलीकॉप्टर क्रैश हो गए हैं, अनेक तीर्थ यात्रियों की जान गई है।

इस उच्च हिमालयी क्षेत्र की संकरी घाटियों और ऊंचे-ऊंजे पर्वतों के बीच से गुजर रहे हेलीकॉप्टर्स पहले भी दुर्घटनाग्रस्त हुए हैं। अंधाधुंध उड़ानें और उनकी तेज आवाज हिमालय की पारिस्थितिकी पर विपरीत प्रभाव डाल रही हैं। हेलीकॉप्टरों की उड़ान के लिए मंदाकिनी नदी के तट से 600 मीटर की ऊंचाई तक का मानक है। यात्रियों की सुरक्षा के विषय पर भी विशेष सावधानी बरतने के लिए दिशा-निर्देश दिए गए हैं, लेकिन हेलीकॉप्टरों की गड़गड़ाहट से उच्च हिमालयी क्षेत्रों की जैव-विविधता को भारी नुकसान पहुंच रहा है। भारतीय वन्य जीव संस्थान द्वारा भी इस हिमालय क्षेत्र में उड़ानों के संबंध में सुझाव दिए गए हैं, जिन्हें केदारनाथ की हेली सेवाओं की गाइडलाइंस में शामिल किया गया है। यहां एक बार में दो हेलीकॉप्टर ही आना-जाना कर सकते हैं। सायं के समय की उड़ान पर प्रतिबंध लगाया गया है। इसके बावजूद यहां पर स्थित दुर्लभ वन्य जीव हिम तेंदुए, कस्तूरी मृग, भरड़, भालू, मोनाल समेत अनेक वन्य जीवों व पक्षियों के झुंड के बीच नीची उड़ान के कारण भगदड़ मच जाती है, जिस कारण असुरक्षित दिशा में भागने से इन बेजुबान जानवरों की चट्टानों से गिर कर मौत हो जाती है। वन विभाग भी इस बाबत चेतावनी देता रहता है, लेकिन जीव-जंतुओं का जान गंवाना जारी है।

चिंताजनक है कि हजारों हैक्टेयर में फैले केदारनाथ अभयारण्य, गंगोत्री वन्य जीव पार्क के जीव-जंतु सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि हेलीकॉप्टरों की नीची उड़ान के कारण वन्यजीवों के सहवास पर भी विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। इस कारण उनकी संख्या भी घट सकती है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि नीची उड़ान के कारण ग्लेशियरों के पिघलने की दर भी बढ़ सकती है जबकि पर्यटकों और सैलानियों के सैर-सपाटे लिए ओम पर्वत जैसे ग्लेशियरों के ऊपर भी उड़ानें भरी जा रही हैं। अनियंत्रित पर्यटकों की आवाजाही इसका सबसे बड़ा कारण है क्योंकि बहुत समय से अनुभव किया जा रहा है कि चारधाम के यात्रियों को नियंत्रित करने के लिए जब-जब राज्य सरकार और पर्यावरणविद् पहल करते हैं, तो स्थानीय स्तर पर पर्यटन से आय प्राप्त करने वाले संस्थान विरोध पर उतारू हो जाते हैं।

मध्य हिमालय में पहुंच रहे पर्यटक कम पैसे, कम समय में आरामदायक दर्शन करने के लिए हेली सेवाओं का इस्तेमाल करते हैं, ऐसे में में सावधानी के लिए बनाई गई गाइडलाइंस का इस्तेमाल नहीं होता है तो उत्तराखंड में हेलीकॉप्टर की क्रैश होने की घटनाओं को रोका नहीं जा सकेगा। लापरवाही और मानकों की अनदेखी से दुर्घटनाएं हो रही हैं। अंधाधुंध हेली सेवाओं के ऊपर विशेष जांच और मॉनिटरिंग की आवश्यकता है जिसमें तकनीक आदि को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। मौसम विभाग की अधिकतर सूचनाएं सही साबित हो रही हैं। इसको भी ध्यान में रख कर उड़ानों पर नियंत्रण हो।

चारधाम में मई और जून के महीने में हेलीकॉप्टर दुर्घटनाओं ने बहुत चिंताजनक स्थिति खड़ी की है जिसमें सबसे पहले 8 मई को उत्तरकाशी के गंगनानी में हेलीकॉप्टर क्रैश में 6 लोग मारे गए थे जिसके चार दिन बाद बद्रीनाथ से लौट रहा एक अन्य हेलीकॉप्टर क्रैश हो गया। 17 मई को एम्स की हेली एंबुलेंस किसी यात्री को लिफ्ट करने केदारनाथ जा रही थी, लेकिन क्रैश हो गई। 8 जून को केदारनाथ जाने वाला एक और हेलीकॉप्टर क्रैश हो गया। 15 जून को केदारनाथ से गुप्तकाशी जा रहा है एक हेलीकॉप्टर गौरीकुंड के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया था जिसमें सात लोगों की जान चली गईं। दूसरी ओर देखा जाए तो केंद्र सरकार ने चारधाम के लिए चौड़ी सड़कों का निर्माण लगभग पूरा कर दिया है, और इसमें दो बड़ी गाड़ियों के लिए आने- जाने की सुविधा है। जितने अधिक से अधिक लोग बस, टैक्सी और जमीन पर चलने वाले वाहनों से यात्रा करेंगे उससे स्थानीय होटल और ढाबों को भी रोजगार मिलेगा। पर्यटकों, यात्रियों, सैलानियों को भी यहां की प्रकृति का नजारा देखने को मिलेगा। बाहर से आने वाले लोगों की मुलाकात स्थानीय लोगों से होगी, वे यहां की संस्कृति और प्रकृति के साथ अनुकूल व्यवहार भी करेंगे। उत्तराखंड हिमालय की संवेदनशील स्थिति और यहां के पर्यावरण से प्लास्टिक उन्मूलन को ध्यान में रखते हुए बाहर से आने वाले लोगों की जिंदगी को बचाने के साथ ही हिमालय के इकोसिस्टम को भी बचा कर रखना होगा।

अभियान

श्रीराम शर्मा आचार्य

एक घर के मुखिया को यह अभिमान हो गया कि उसके बिना उसके परिवार का काम नहीं चल सकता। उसकी एक छोटी-सी दुकान थी उससे जो आय होती थी, उसी से उसके परिवार का गुजारा चलता था। चूंकि परिवार में कमाने वाला वह अकेला ही था, इसलिए उसे हमेशा लगता था कि उसके बगैर कुछ नहीं हो सकता। वह लोगों के सामने डींग हांका करता था। एक दिन वह एक संत के सत्संग में पहुंचा। संत कह रहे थे, 'दुनिया में किसी के बिना किसी का काम नहीं रुकता। यह अभिमान व्यर्थ है कि मेरे बिना परिवार या समाज ठहर जाएगा। सभी को अपने भाग्य के अनुसार प्राप्त होता है।' सत्संग समाप्त होने के बाद मुखिया ने संत से कहा, 'मैं दिन भर कमा कर जो पैसे लाता हूं, उसी से मेरे घर का खर्च चलता है। मेरे बिना तो मेरे परिवार के लोग भूखे मर जाएंगे।' संत बोले, 'यह तुम्हारा भ्रम है। हर कोई अपने भाग्य का खाता है।' इस पर मुखिया ने कहा, 'आप इसे प्रमाणित करके दिखाइए।' संत ने कहा, 'ठीक है। तुम बिना किसी को बताए घर से एक महीने के लिए गायब हो जाओ।' उसने ऐसा ही किया। संत ने यह बात फैला दी कि उसे बाघ ने अपना निवाला बना लिया है। मुखिया के परिवार वाले कई दिनों तक शोक-संतप्त रहे। गांव वाले आखिरकार, उनकी मदद के लिए सामने आए। एक सेठ ने उसके बड़े लड़के को अपने यहां नौकरी दे दी। गांव वालों ने मिल कर लड़की की शादी कर दी। एक व्यक्ति उसके छोटे बेटे की पढ़ाई का खर्च उठाने को तैयार हो गया। एक महीने बाद मुखिया छिपता-छिपाता रात के वक्त अपने घर आया। घर वालों ने भूत समझ कर दरवाजा नहीं खोला। जब वह बहुत गिड़गिड़ाया और उसने सारी बातें बताईं तो उसकी पत्नी ने दरवाजे के भीतर से ही उत्तर दिया, 'हमें अब तुम्हारी जरूरत नहीं है। अब हम पहले से ज्यादा सुखी हैं।' उस व्यक्ति का सारा अभिमान और वहम चूर-चूर हो गया। संसार किसी के लिए भी नहीं रुकता!! यहां सभी के बिना भी काम चल सकता है। संसार सदा से चला आ रहा है, और आगे भी चलता रहेगा। जगत को चलाने की हाम भरने वाले बड़े-बड़े सम्राट, मिट्टी हो गए, जगत उनके बिना भी चला है। इसलिए अपने बल का, अपने धन का, अपने कार्यों का, अपने ज्ञान का अभिमान करना व्यर्थ है। इस प्रकार के भ्रम से निकलना ही श्रेयस्कर है।

रीडर्स मेल

सोशल मीडिया पर कम वक्त दें

सोशल मीडिया ने हमारे जीवन का बड़ा हिस्सा घेर लिया है इससे जीवंत संवाद सिकुड़ता जा रहा है। आज अधिकांश लोग दिन की शुरुआत से लेकर रात तक मोबाइल स्क्रीन पर ही उलझे रहते हैं। एक ओर यह हमें सूचनाएं, सुविधा और वैश्विक संपर्क देता है वहीं यह मानवीय रिश्तों में दूरी भी पैदा कर रहा है। सोशल मीडिया पर लोग जितना अधिक समय बिताते हैं उतना ही वे वास्तविक संवाद और व्यक्तिगत मुलाकातों से दूर होते जाते हैं। ऑनलाइन शॉपिंग और डिजिटल सेवाओं ने सुविधा तो दी है, लेकिन इसके कारण बाजार, पड़ोस और समाज से मिलने-जुलने के मौके कम हुए हैं। इस कमी से धीरे-धीरे अकेलेपन की भावना गहराने लगती है। मानवीय संबंध जब केवल आभासी और संवाद में पसंद तक सीमित हो जाते हैं तब आत्मीयता और भावनात्मक जुड़ाव कमजोर होने लगता है। यही कारण है कि सोशल मीडिया के अधिक उपयोग से सामाजिक बिखराव और मानसिक थकान बढ़ रही है।

चन्द्र प्रकाश, प्रयागराज

सराहनीय फैसला

एक ऐतिहासिक फैसले में सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों को छोड़कर अन्य सभी कर्मचारियों की सीधी भर्ती एवं पदोन्नति के समय आरक्षण व्यवस्था लागू कर दी गई है। अनुसूचित जाति को 15 फीसद एवं अनुसूचित जनजाति को 7.5 फीसद संविधान सम्मत आरक्षण प्रदान किया गया है। प्रधान न्यायाधीश के आदेशानुसार जारी परिपत्र के अनुसार, सुप्रीम कोर्ट के रजिस्ट्रार से लेकर चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों तक पर यह नियम लागू होगा। देखा जाए तो यह ऐतिहासिक कदम है, क्योंकि जुलाई, 1997 में दिए गए एक आदेश को लगभग 29 वर्ष बाद अब जाकर लागू किया गया है। आजादी के 78 वर्ष बाद सुप्रीम कोर्ट द्वारा लिया गया यह निर्णय स्वागतयोग्य है, क्योंकि इस प्रावधान के तहत अब अनुसूचित जाति/जनजाति के कर्मचारियों को प्रतिनिधित्व का अवसर मिलेगा जो संविधान की मूल भावना है। सुप्रीम कोर्ट से यह भी अपेक्षा की जाती है कि कॉलेजियम के माध्यम से उच्च न्यायालय एवं सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों की नियुक्ति के संदर्भ में भी तत्करू एक सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया जाए और इस वर्गो को देश के सभी उच्च न्यायालयों एवं सुप्रीम कोर्ट में उचित प्रतिनिधित्व जल्द से जल्द प्रदान किया जाए।

राम नारायण रस्तोगी, दिल्ली

तत्काल कदम उठाएं

प्रलोभन देख कर धर्मांतरण कराने के मामले हमारे देश में बढ़ते ही जा रहे हैं। इस प्रकार का धर्मांतरण किसी सिद्धांत से प्रेरित नहीं होता है। मनुष्य की आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों का बेजा फायदा उठा कर अवैध रूप से धर्मांतरण के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया जाता है। इसके पीछे उद्देश्य किसी धर्म विशेष के लोगों की संख्या बढ़ाना होता है। शक्ति प्रदर्शन के अवसरों पर यह भीड़ काम आती है। सरकार को इस प्रकार के धर्मांतरण को रोकने के लिए तत्काल समुचित कदम उठाना चाहिए।

ललित मोहन जायसवाल, इंदौर
letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा
• राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण
वर्ष - 20, अंक 6855
सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **जिया कादरी** द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन द्वारा हिन्दुस्तान मीडिया वेन्चर्स लिमिटेड प्रेस, मौजा-दरियापुर, पुलिस स्टेशन-शाहपुर, दानापुर, पटना से मुद्रित तथा चतुर्थ तल, सहारा इण्डिया विहार, बोरिंग रोड क्रासिंग, पटना से प्रकाशित। । **स्थानीय संपादक - संजय त्रिपाठी** *।
पटना कार्यालय- 3911448/417/454/422, **फैक्स :** 2535935,2520760 **विज्ञापन**-3911455/434, **प्रसार**- 3911451/428
आर.एन.आई. सं. -बीआईएचएचआईएन/2006/18082 Postal Reg. No. : R-10/NP-50/06-07
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु उत्तरदायी

एमीटैक के इतिहास में पहली महिला तकनीकी प्रमुख बनी महिषी निवासी तुषा तान्या

सहरसा शहर। जिले की महिषी गांव की बेटी तुषा तान्या को अमेरिकी कंपनी एमीटैक इन्सट्रूमैंट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड में "टैकनिकल लीड मिक्स्ड सिगनल डिजाइन" का ऑफर लेटर मिला है जिसमें उन्हें 70 लाख रूपये वार्षिक की सेलरी पैकैज दिये जाएंगे। इसके अतिरिक्त उन्हें ज्वाइनिंग वोनस के रूप में 10 लाख रूपए की अतिरिक्त राशि भी दिये जाऐंगे। वह एमीटैक के इतिहास में पहली महिला तकनीकी प्रमुख होंगी। तुषा तान्या ने आधुनिक विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में उच्चस्तरीय और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का परिचय देकर यह साबित किया है कि बेटों की तरह हम अपने बेटियों पर गर्व कर सकते हैं। —— एक रिपोर्ट

लगमा में पूर्व मंत्री सह स्थानीय विधायक रत्नेश सादा का नागरिक अभिनंदन

सोनवर्षाराज (सहरसा) (एसएनबी)। प्रखंड क्षेत्र अन्तर्गत लगमा पंचायत अन्तर्गत बाबा बजरंगबली धाम लगमा मंदिर प्रांगण में सोमवार को बिहार सरकार के पूर्व मंत्री सह स्थानीय विधायक रत्नेश सादा का नागरिक अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया।

सोनवर्षा विधानसभा क्षेत्र से लगातार चौथी बार चुनाव में ऐतिहासिक जीत दर्ज करने के उपरांत पूर्व मंत्री एवं स्थानीय विधायक रत्नेश सादा का प्रथम बार विधानसभा प्रवेश के अवसर पर लगमा पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि कुंदन सिंह एवं संवेदक मुकेश झा के नेतृत्व में भव्य नागरिक अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान पूरे गांव में उत्साह का माहौल था, लोग दूर-दूर से शामिल होने पहुंचे। अभिनंदन समारोह में विधायक रत्नेश सादा को पूर्व जिला पार्षद सह व्यापार मंडल सहयोग समिति के अध्यक्ष देवेंद्र कुमार सिंह उर्फ ललन बाबू ने मंच पर मिथिला की संस्कृति के अनुसार पाग, चादर और माला पहनाकर स्वागत किया गया। इस दौरान सरल स्वभाव, जनता के प्रति समर्पण और विकास के प्रति उनकी दूरदर्शी सोच की सराहना की। इस दौरान नवनिर्वाचित विधायक रत्नेश सादा ने आमजनता के प्रति आभार व्यक्त करते हुए नमन् किया और अपने संबोधन में भरोसा दिलाया कि क्षेत्र के चौमुखी विकास के लिए वे निरंतर प्रयासरत रहेंगे और जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरने का हरसंभव प्रयास करते हुए अधूरे विकास के कार्यों को गति देंगे। इस दौरान गांव के बुजुर्गों, युवाओं, महिलाओं एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं ने फूल-मालाओं और जयघोष के साथ जोरदार स्वागत किया। इस दौरान मंदिर परिसर तालियों और आनंद के स्वर से गुंजायमान रहा।

मौके पर समाजसेवी, पूर्व जिला पार्षद सह व्यापार मंडल के अध्यक्ष देवेंद्र कुमार सिंह उर्फ ललन जी, जदयू प्रखंड अध्यक्ष जयकुमार सिंह, मुखिया प्रतिनिधि कुंदन सिंह, संवेदक मुकेश झा, भाजपा के मंडल अध्यक्ष वीर अभिमन्यु सिंह, समिति प्रतिनिधि बालकृष्ण झा, मुखिया प्रतिनिधि बौआ खां, पूर्व पैक्स अध्यक्ष चंदन सिंह, जदयू जिला महासचिव नंदकिशोर झा उर्फ पप्पू झा, धिरेन्द्र सिंह, घनश्याम सिंह सहित सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद थे।

विधायक का अभिनंदन करते स्थानीय नागरिक।

अभिनंदन समारोह में उमड़ी जनता।

संक्षिप्त खबरें

बनमा ईटहरी में 13 को राष्ट्रीय लोक अदालत

बनमा ईटहरी (सहरसा)। प्रखंड कार्यालय में सोमवार को व्यवहार न्यायालय सहरसा द्वारा 13 दिसंबर को सुबह 10:30 बजे राष्ट्रीय लोक अदालत आयोजित की जाएगी। इसके व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए विशेष कैंप लगाने की घोषणा की गई है, ताकि अधिक से अधिक लोग इस पहल से जुड़ सकें। सहरसा से आए अधिवक्ता देवेंद्र कुमार ने उपस्थित लोगों को लोक अदालत की प्रक्रिया और इसके लाभों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि लोक अदालत में किसी भी प्रकार के मुकदमों और शीघ्र निपटारा संभव है। आपसी सुलह के माध्यम से एक ही दिन में मामलों को समाप्त किया जा सकता है, जिससे समय और धन दोनों की बचत होती है। उन्होंने "मुफ्त में मुकदमे का एक दिन में निपटारा झटपट अपनाएं" के संदेश के साथ लोगों में जागरूकता फैलाने का आग्रह किया और अधिक से अधिक लोगों से अपील की कि वे लोक अदालत का लाभ उठाएं।

बैठक में विशेष कैंप के कर्मी।

बिराटपुर पंचायत के गाजीपैता में आग से दो घर जले

सोनवर्षाराज (सहरसा)। अंचल क्षेत्र के बिराटपुर स्थित गाजीपैता गांव में सोमवार की सुबह आग लगने से लाखों की संपत्ति जलकर राख होने की सूचना मिली है।इस संबंध में मिली जानकारी अनुसार बिराटपुर पंचायत के गाजीपैता गांव में सुबह अज्ञात कारणों से आग लगी। जिसमे दो परिवारों के घर जलने की चपेट में आ गया। पहले आग स्व महेंद्र यादव के घर में लगी, जहां उनकी पत्नी गुलाब देवी अकेली सो रही थीं। आग तेजी से फैली और बगल में स्थित राहुल यादव के घर को भी अपनी चपेट में ले लिया। इस दौरान आग लगने की सूचना पर ग्रामीणों ने शोर सुनकर एकजुट होकर आग बुझाने का प्रयास किया और आखिरकार उस पर काबू पा लिया। जबतक लोग कुछ समझ पाते तब तक दोनों घरों का घरेलू उपयोग के सामान, टीवी, अनाज, कपड़े और बांस खर की छतें जलकर खाक हो चुकी थीं। सोनवर्षा अंचल के आरओ सैयद बादशां ने बताया कि पंचायत के राजस्व कर्मचारी को मौके पर भेजकर वास्तविक क्षति का आकलन करवाया जा रहा है।

जले घर में पीड़ित महिला।

चोरों ने चोरी कर अपशिष्ट प्रसंस्करण इकाई मोहनपुर में लगाई आग, बीडीओ ने की जांच

मनसाही/कटिहार। प्रखंड के मोहनपुर पंचायत के खरसाई में अवस्थित अपशिष्ट प्रसंस्करण इकाई डब्लूपीयू में बीते रात्रि अज्ञात चोरों ने चोरी की घटना को अंजाम देने के बाद उसे आग के हवाले कर दिया। इस घटना की सूचना मिलते ही दमकल की गाड़ी घटनास्थल पर पहुंचकर आग पर काबू पाया। घटना की जानकारी देते हुए स्वच्छता पर्यवेक्षक सुनील कुमार शर्मा ने बताया कि दरवाजे को तोड़कर अज्ञात चोरों ने अपशिष्ट प्रसंस्करण इकाई में रखें 6540 रूपये जहां चुरा लिया। वहीं प्रोसेसिंग इकाई के अलग-अलग खटाल में रखें प्लास्टिक कार्टून जैसे कचरे को जहां आग लगा दिया वहीं कचरा ढोने में उपयोग होने वाले ठेले, डस्टबिन तथा इकाई के ऑफिस में रखें सरकारी कागजातों को भी जला दिया। घटना की जानकारी मिलने के बाद रविवार को मनसाही के बीडीओ सुमन कुमारी एवं अन्य पदाधिकारी ने घटनास्थल की जांच की और वरीय पदाधिकारी को इसकी सूचना देते हुए आवश्यक कार्रवाई की बात कही। वहीं इस मामले में स्वच्छता पर्यवेक्षक सुनील कुमार शर्मा ने मनसाही थाने में लिखित आवेदन देते हुए अज्ञात चोरों के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई की मांग की।

कटिहार नगर निगम की ओर से होल्डिंग टैक्स के लिए 'वन टाइम सेटलमेंट' कैंप शुरू

बकाया टैक्स पर ब्याज व शुल्क माफ

कटिहार नगर/कटिहार (एसएनबी)। नगर निगम ने होल्डिंग टैक्स के पुराने बकायेदारों को बड़ी राहत देते हुए सोमवार से वन टाइम सेटलमेंट कैंप की शुरुआत कर दी है। नगर आवास विभाग के निर्देश पर शुरू किए गए इस विशेष राजस्व वसूली अभियान में नागरिकों को बकाये पर लगने वाला पूरा ब्याज और अन्य अतिरिक्त शुल्क माफ कर दिया जाएगा। लोगों को अब केवल मूलधन ही जमा करना होगा।

वार्ड संख्या - 22 स्थित दुर्गा स्थान सामुदायिक भवन में महापौर उषा देवी अग्रवाल, उपमहापौर मंजूर खान और नगर आयुक्त संतोष कुमार ने संयुक्त रूप से फीता काटकर और दीप प्रज्वलित कर इस 12 दिवसीय विशेष शिविर का शुभारंभ किया। इस शिविर में बकायेदारों को वर्षों से जमा हुए ब्याज और जुर्माने से पूरी तरह छूट मिलेगी।5,7 या 10 साल से बकाया टैक्स वाले भी केवल मूलधन जमा कर सकते हैं। लेकिन ये सभी सुविधा केवल कैंप की निर्धारित अवधि तक ही उपलब्ध है। मौके पर मेयर उषा देवी अग्रवाल ने सभी बकायेदारों से अपील की है कि वे इस सीमित समय की सुविधा का लाभ उठाएं और निर्धारित तिथियों पर शिविर में पहुंचकर अपना टैक्स जमा करें। घ्नगर आयुक्त संतोष कुमार ने बताया कि यह विशेष कैंप अगले 12 दिनों तक नगर निगम क्षेत्र के लगभग सभी वार्डों में लगाया जाएगा। रेलवे क्षेत्र के तीन वार्डों को छोड़कर बाकी 42 वार्डों में ओटीएस शिविर आयोजित होंगे। घ्वकायेदार इस योजना का लाभ उठाये। उपमहापौर मंजूर खान ने होल्डिंग टैक्स कलेक्टरों को निर्देश दिया कि वे करदाताओं को सुविधा प्रदान करने के लिए डोर-टू-डोर जाकर सहायता करें।

कैम्प का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते अतिथिगण व अन्य।

कैम्प मे मौजूद नगर आयुक्त, मेयर, डिप्टी मेयर व अन्य।

केनगर पुलिस ने 4 लीटर चुलाई संग शराब कारोबारी को दबोचा

केनगर/पूर्णिया (एसएनबी)। के नगर थाना पुलिस ने संध्या गश्ती के दौरान एक बार फिर साबित कर दिया कि अवैध शराब कारोबार करने वालों की अब खैर नहीं। इलाके में तैनात गश्ती दल की पैनी निगाहों से बचने की कोशिश कर रहा देशी चुलाई शराब तस्कर आखिरकार पुलिस के शिकंजे में आ ही गया। थानाध्यक्ष मुन्ना कुमार पटेल ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी टिंकू महलदार, पिता सूर्यनारायण महलदार, उम्र 39 वर्ष, काझा पंचायत के काझा गांव का निवासी है। पुलिस के अनुसार टिंकू अपने घर से 4 लीटर देशी चुलाई शराब बेचान के लिए निकल चुका था, लेकिन गश्ती टीम की त्वरित कार्रवाई ने उसकी पूरी योजना ध्वस्त कर दी। पुलिस ने मौके से शराब जब्त कर आरोपी को हिरासत में लिया और सभी आवश्यक कानूनी प्रक्रियाओं के बाद जेल भेज दिया। अवैध शराब कारोबार के खिलाफ केनगर पुलिस की यह कार्रवाई क्षेत्र में एक सख्त संदेश के रूप में देखी जा रही है.अब कानून तोड़ने वालों की शामत तय है।

गति की गलियों में बुझ गया एक चिराग

स्टेट हाईवे पर घरारी मोड़ के पास दो बाइक की भीषण टक्कर, 16 वर्षीय युवक की मौत, तीन गंभीर घायल

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

केनगर/पूर्णिया।

रविवार की शाम केनगर थाना क्षेत्र एक बार फिर दर्दनाक हादसे की गूंज से दहल उठा। गणेशपुर पंचायत अंतर्गत घरारी मोड़ स्थित पूर्णिया.धमदाहा एसएच-65 पर दो बाइक की आमने-सामने भीषण टक्कर में एक मासूम भविष्य की सांसें थम गई, जबकि तीन लोग बुरी तरह जख्मी होकर अस्पताल पहुंचाए गए। हादसा इतना अचानक और भयावह था कि आसपास मौजूद लोग स्तब्ध रह गए। स्थानीय लोगों ने तत्परता दिखाते हुए गंभीर रूप से घायल तीनों व्यक्तियों को नजदीकी निजी स्वास्थ्य केंद्र भेज दिया।

सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों क्षतिग्रस्त बाइकों को कब्जे में ले लिया। पुलिस ने मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजने का प्रयास किया, लेकिन परिजन रोते.बिलखते शव को जबरन लेकर घर चले गए और पोस्टमार्टम कराने से स्पष्ट इनकार कर दिया। मृतक की पहचान काझा पंचायत वार्ड संख्या 16, काझा नद्याफ टोला निवासी मो. कलीम के 16 वर्षीय पुत्र मो. असरारूल के रूप में हुई है। वही घायलों में मो. सुलेमान नद्याफ (पुत्र मो. डोमी नद्याफ), मृतक का छोटा भाई मो. आशिफ, और परोरा गांव के एक अन्य व्यक्ति का नाम शामिल है। परिजनों और ग्रामीणों के अनुसार हादसे से कुछ देर पूर्व असरारूल अपने छोटे भाई मो. आशिफ की शादी बनभाग गांव में संपन्न कराकर स्प्लेंडर बाइक से सुलेमान नद्याफ को पीछे बैठाकर घर लौट रहा था। इसी दौरान घरारी मोड़ के पास भोज खाकर अपने गांव लौट रहे दूसरी बाइक सवार से उसकी आमने-सामने टक्कर हो गई। भीषण टक्कर में असरारूल की घटनास्थल पर ही मौत हो गई, जबकि पीछे बैठे तीनों युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। बताया गया कि असरारूल काझा चौक पर मुर्गा.मांस की दुकान चलाकर परिवार का सहारा बना हुआ था। उसकी मौत से पूरे परिवार में कोहराम मचा हुआ है। घर में मातम पसरा है और परिजन इस असहनीय क्षति से अब तक उबर नहीं पाए है। थानाध्यक्ष मुन्ना कुमार पटेल ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि घरारी मोड़ के पास दो बाइकों की टक्कर में एक युवक की मौत हुई है और तीन लोग घायल हैं। उन्होंने बताया कि परिजन पोस्टमार्टम नहीं कराने की जिद पर अडिग रहे और पुलिस की समझाइश के बावजूद शव को जबरन अपने साथ ले गए। यह हादसा एक बार फिर सड़क सुरक्षा और तेज गति से चलने वाले वाहनों पर चिंतन की जरूरत को रेखांकित करता है।

कृषि क्षेत्र में नवाचार के माध्यम से किसानों को नयी कृषि तकनीक अपनाने का प्रशिक्षण

कटिहार ग्रामीण/कटिहार(एसएनबी)। जिला पदाधिकारी कटिहार मनेश कुमार मीणा कृषि क्षेत्र में नवाचार को बढावा देने को लेकर सजग सक्रिय रहे है। श्री मीणा के दिशा निर्देश के आलोक में जिला कृषि पदाधिकारी मिथिलेश कुमार के नेतृत्व में जिले के कदवा,अमदाबाद, मनिहारी प्रखंड के सूदूरवर्ती ग्रामीण क्षेत्र के सैकडों किसानों को प्रगतिशील किसान प्रभुनाथ सिंह के प्रक्षेत्र पर ले जाकर समेकित कृषि प्रबंधन तकनीक अपनाने की जाधकारी दी गयी।आत्मा के उप परियोजना निदेशक शशिकांत झा ने उक्त किसानों को डहेरिया स्थित कृष्क प्रक्षेत्र भ्रमणकर प्रशिक्षण दिया।उप परियोजना निदेशक श्री झा ने कम भू भाग मे भी समेकित कृषि प्रवंधन कतनीक अपनाकर एक साथ कई उद्यानिक फसलों को लगाकर आर्थिक लाभ प्राप्त करने के गूढ बताये।उन्होने कहा कि न केवल फसलों बल्कि मत्स्य, दूग्ध, सब्जी, सहित अन्य तकनीक अपनाकर लाभ अर्जित करने के जानकारी दी। किसान श्री प्रभु नाथ सिंह ने अपने प्रक्षेत्र में लगे दर्जन भर से अधिक फल, सब्जी, ड्रेगन फ्रुट,गोल मिर्च, अमरूद की व्यावसायिक खेती करने की जानकारी दी। कहा कि कम भू भाग मे एक साथ एक से अधिक फल, सब्जी, ऊद्यानिक फसल लगाकर किसान अधिक आय प्राप्त कर सकते है। श्री सिंह ने जानकारी दी कि आत्मा की ओर से बेहतर तकनीकी जानकारी व प्रशिक्षण सहित कृषि व जिला प्रशासन की इस दिशा मे सक्रियत सजगता से कृषि, बागवानी, उद्यान के क्षेत्र मे नवाचार के माध्यम से बेहतर परिणाम सामने आये है।इस मौके आदित्य कुमार सहायक तकनीकी प्रबंधक कटिहार, निर्भयकांत प्रखंड तकनीकी प्रवंधक मनिहारी, रकीबुल सहायक तकनीकी प्रबंधक अमदाबाद उत्तम कुमार सहायक तकनीकी प्रबंधक मौजूद रहे।

प्रक्षेत्र का अवलोक करते पदाधिकारी और उपस्थित किसान व अन्य।

बरारी में नवसाक्षर महिलाओं की बुनियादी साक्षरता महापरीक्षा

बरारी/कटिहार(एसएनबी)। बरारी प्रखंड क्षेत्र में अक्षर आंचल योजना के तहत नवसाक्षर महिलाओं की बुनियादी साक्षरता महापरीक्षा पूरे अनुशासन और शांत वातावरण में आयोजित की गई। प्रखंड अंतर्गत कुल 36 संकुल, उप केंद्र निर्धारित किए गए थे, जिनमें 35 केंद्रों पर परीक्षा का संचालन किया गया। इस महापरीक्षा में निर्धारित लक्ष्य 2381 के सामने 1911 महिलाओं ने उपस्थिति दर्ज कराई। परीक्षार्थियों में महादलित वर्ग से 646, दलित वर्ग से 157 तथा अल्पसंख्यक एवं अति पिछड़ा समुदाय से 1108 नवसाक्षर महिलाएं शामिल हुईं। परीक्षा संचालन के लिए प्रखंड संसाधन केंद्र, बरारी को नियंत्रण कक्ष के रूप में निर्धारित किया गया। नियंत्रण कक्ष में शशि शेखर, राकेश कुमार,अखिलेश कुमार, राजीव कुमार तथा लेखापाल संतोष कुमार पासवान लगातार मॉनिटरिंग में जुटे रहे।प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी सह बीपीआरओ राजकुमार सिंह पूरे दिन विभिन्न केंद्रों पर जाकर व्यवस्थाओं की समीक्षा करते रहे। उन्होंने परीक्षा केंद्रों पर मौजूद प्रभारी केआरपी अनूप कुमार के साथ परीक्षा-संबंधी आवश्यक निर्देश साझा किए और संपूर्ण प्रक्रिया की प्रगति पर संतोष व्यक्त किया।उत्क्रमित मध्य विद्यालय दासग्राम भैसदीरा के केंद्राधीक्षक पीताम्बर मंडल ने बताया कि नवसाक्षर महिलाएं परीक्षा को लेकर अत्यधिक उत्साह में थीं और निर्धारित समय पर केंद्रों पर पहुँचीं। वहीं गुरुनानक कन्या उच्च विद्यालय के केंद्राधीक्षक भगत सिंह ने बताया कि परीक्षा के दौरान किसी भी प्रकार की बाधा नहीं आई और सभी कक्षाओं में व्यवस्था संतोषजनक रही।परीक्षा संचालन में केआरपी, शिक्षा सेवकों तथा नियंत्रण कक्ष के कर्मियों विशेषकर शशिशेखर, अखिलेश कुमार और लेखापाल संतोष कुमार की भूमिका अहम रही। सभी की अहम प्रयासों से बरारी प्रखंड में बुनियादी साक्षरता महापरीक्षा पूरी तरह व्यवस्थित और सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

मधेपुरा को अंडर-14 बालक हॉकी में तीसरा स्थान

मधेपुरा (एसएनबी)। मधेपुरा की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए राजगीर खेल परिसर में आयोजित राज्य स्तरीय अंडर-14 बालक हॉकी प्रतियोगिता में तीसरा स्थान हासिल किया है। कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार के तत्वावधान में जिला प्रशासन राजगीर द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता में मधेपुरा ने तीसरे स्थान के लिए खेले गए मुकाबले में सीवान को छह गोल के अंतर से पराजित किया।

शुरुआत से ही मधेपुरा के खिलाड़ियों ने आक्रामक खेल दिखाते हुए गेंद पर लगातार नियंत्रण बनाए रखा। पहले क्वार्टर में ही बढ़त बनाकर टीम ने मैच का रुख अपनी ओर मोड़ लिया, जिसके बाद सीवान की टीम मुकाबले में लौटने का मौका नहीं पा सकी। फॉरवर्ड लाइन के बेहतरीन तालमेल और लगातार आक्रामक हमलों के कारण मधेपुरा ने एक के बाद एक गोल दागे। वहीं डिफेंस और गोलकीपर ने पूरी मजबूती के साथ सीवान के सभी प्रयासों को नाकाम कर दिया। जीत के बाद जिले में खुशी का माहौल है। टीम मैनेजर सह प्रशिक्षक कृष्णमणि दीक्षित ने खिलाड़ियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना करते हुए कहा बच्चों ने मेहनत, अनुशासन और टीम भावना के बल पर यह उपलब्धि हासिल की है। यह जीत उनके कठिन परिश्रम का परिणाम है। मधेपुरा हॉकी संघ के सचिव रामपुकार कुमार ने टीम को बधाई देते हुए कहा नन्हें खिलाड़ियों ने साबित कर दिया कि अवसर मिलने पर मधेपुरा की प्रतिभा राज्य स्तर पर चमक सकती है। संघ आगे भी खिलाड़ियों को हर संभव सहयोग देता रहेगा। हॉकी संघ की चेयरमैन प्रीति यादव ने कहा, 'इस जीत ने पूरे जिले का गौरव बढ़ाया है। बच्चों ने खेल के प्रति समर्पण और जज्बे का उम्दा उदाहरण प्रस्तुत किया है। भविष्य में ये बच्चे और भी बड़े मंचों पर चमकेंगे।' हॉकी संघ के अध्यक्ष इंजीनियर नरेंद्र चंद्र नवीन ने कहा, 'मधेपुरा टीम का प्रदर्शन राज्य स्तर पर बेहद प्रेरणादायक रहा। हमारे खिलाड़ी लगातार प्रगति कर रहे हैं और यह जीत उनके उज्जवल भविष्य का संकेत है।' हॉकी संघ के कोषाध्यक्ष विकास कुमार अकेला ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि 6-0 के अंतर से मिली यह जीत अभूतपूर्व है। खिलाड़ियों ने पूरे टूर्नामेंट में बेहतर खेल दिखाया। संघ उनकी हर जरूरत पर साथ खड़ा है। नीलमणि रेजिडेंशियल स्कूल के प्राचार्य सत्यनारायण मेहता ने कहा, 'छोटे-छोटे बच्चों का इतना शानदार प्रदर्शन उत्साहवर्धक है। जिले के युवाओं में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है, बस उन्हें सही मार्गदर्शन की जरूरत है। मधेपुरा के इन बच्चों ने पूरे क्षेत्र का मान बढ़ाया है।

मधेपुरा राजद के जिला अध्यक्ष जयकांत यादव, जिला पार्षद प्रतिनिधि डॉ विनीत कुमार आर्यन, मधेपुरा हैंडबॉल संघ के अध्यक्ष व मुखिया विमल कुमार, समिति तरुण देव, पैक्स अध्यक्ष अंगद आनंद, समाजसेवी राजेश यादव, भाजपा के मंडल अध्यक्ष देव मोहन नेहरू व कई सम्मानित जनप्रतिनिधियों ने खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दिया।

खबरें एक नजर में

मोबाइल व नकदी चोरी का पर्दाफाश
आरोपी शेखर विश्वास धराया

अमौर/पूर्णिया (एसएनबी)। थाना क्षेत्र के पोठिया गांव में लगातार हो रही मोबाइल व नकदी चोरी की घटनाओं का पुलिस ने खुलासा करते हुए एक चोर को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। थानाध्यक्ष अवधेश कुमार ने बताया कि गिरफ्तार युवक की पहचान शेखर वि वास, पिता शंभु वि वास, ग्राम छपरेली, थाना अमौर, जिला पूर्णिया निवासी के रूप में हुई है। घटना का खुलासा तब हुआ जब पोठिया गांव के शुभम शर्मा द्वारा 7 दिसंबर को मोबाइल चोरी को लेकर थाना में लिखित आवेदन दिया गया। आवेदन में उन्होंने बताया कि 6 दिसंबर की रात वे अपने चचेरे भाई के साथ सोए हुए थे और दोनों अपने मोबाइल तकिया के नीचे रखकर सो गए थे। सुबह उठने पर दोनों मोबाइल गायब थे। इसी बीच गांव में ही जानकारी मिली कि विजय चौधरी के घर से भी एक मोबाइल तथा पैंट की जेब से 11,000 रुपये नकद चोरी कर लिए गए है। जब इस संबंध में विजय चौधरी से पूछताछ की गई तो उन्होंने बताया कि चोरी का संदेह शेखर वि वास पर है, जो इन दिनों पोठिया गांव में अपने रिश्तेदार के घर ठहरा हुआ था। इसके बाद ग्रामीणों ने शेखर वि वास को खोजते हुए उसके रिश्तेदार के घर पहुंचकर उसे संदिग्ध अवस्था में भागने की कोशिश करते देखा। तत्काल ग्रामीणों ने उसे पकड़ लिया और उसकी तलाशी ली, जिसमें चोरी हुआ मोबाइल तथा 2,000 रुपये नकद बरामद हुए। इसकी सूचना अमौर थाना को दी गई। सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची और आरोपी को हिरासत में लेकर थाना ले आई। पुलिस ने विधिसंगत कार्रवाई करते हुए अमौर थाना कांड संख्या 511/25 दर्ज किया तथा आरोपी शेखर वि वास को न्यायिक हिरासत में भेज दिया।

कृषि क्षेत्र में नवाचार के माध्यम से किसानों को परम्परागत कृषि के साथ नयी कृषि तकनीक अपनाने का प्रशिक्षण

कटिहार ग्रामीण/कटिहार(एसएनबी)। जिला पदाधिकारी कटिहार मनेश कुमार मीणा कृषि क्षेत्र में नवाचार को बढावा देने को लेकर सजग सक्रिय रहे है। श्री मीणा के दिशा निर्देश के आलोक में जिले के कदवा, अमदाबाद, मनिहारी प्रखंड के सूदूरवर्ती ग्रामीण क्षेत्र के सैकडों किसानों को प्रगतिशील किसान प्रभुनाथ सिंह के प्रक्षेत्र पर ले जाकर समेकित कृषि प्रबंधन तकनीक अपनाने की जाधकारी दी गयी।आत्मा के उप परियोजना निदेशक शशिकांत झा के मार्गदर्शन मे उक्त किसानों को डहेरिया स्थित कृष्क प्रक्षेत्र भ्रमणकर प्रशिक्षण दिया गया। उप परियोजना निदेशक श्री झा ने कम भू भाग मे भी समेकित कृषि प्रवंधन कतनीक अपनाकर एक साथ कई उद्यानिक फसलों को लगाकर आर्थिक लाभ प्राप्त करने के गूढ बताये। उन्होने कहा कि न केवल फसलों बल्कि मत्स्य, दूग्ध, सब्जी, सहित अन्य तकनीक अपनाकर लाभ अर्जित करने के जानकारी दी। किसान श्री प्रभु नाथ सिंह ने अपने प्रक्षेत्र में लगे दर्जन भर से अधिक फल, सब्जी, ड्रेगन फ्रुट, गोल मिर्च, अमरूद की व्यावसायिक खेती करने की जानकारी दी। कहा कि कम भू भाग मे एक साथ एक से अधिक फल, सब्जी, ऊद्यानिक फसल लगाकर किसान अधिक आय प्राप्त कर सकते है। श्री सिंह ने जानकारी दी कि आत्मा की ओर से बेहतर तकनीकी जानकारी व प्रशिक्षण सहित कृषि व जिला प्रशासन की इस दिशा मे सक्रियत सजगता से कृषि, बागवानी, उद्यान के क्षेत्र मे नवाचार के माध्यम से बेहतर परिणाम सामने आये है। इस मौके आदित्य कुमार सहायक तकनीकी प्रबंधक कटिहार, निर्भयकांत प्रखंड तकनीकी प्रवंधक मनिहारी, रकीबुल सहायक तकनीकी प्रबंधक अमदाबाद उत्तम कुमार सहायक तकनीकी प्रबंधक मौजूद रहे ।

काढ़ागोला घाट गंगा किनारे गंगा समग्र का 360वां स्वच्छता अभियान, 14 दिसंबर तक संघ का जनसंपर्क अभियान चलेगा

बरारी/कटिहार(एसएनबी)। काढ़ागोला घाट पर गंगा समग्र के स्वयंसेवकों द्वारा 360 वां स्वच्छता अभियान चलाया गया। नियमित रूप से संचालित इस कार्यक्रम में घाट परिसर की सफाई के बाद स्वयंसेवकों ने गंगा तट पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का पत्रक और साहित्य वितरित कर व्यापक जनसंपर्क किया। स्वयंसेवकों ने उपस्थित लोगों को संघ के 100 वर्ष की यात्रा,उद्देश्य और समाज के प्रति उसके योगदान की संक्षिप्त जानकारी दी।इस अवसर पर संघ के प्रचारक अनिमेष पाल और गंगा समग्र के जिला संयोजक नवीन चौधरी बाबा ने हिंदू समाज में व्यापक परिवर्तन लाने हेतु पांच महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की। उन्होंने सामाजिक समरसता पर विशेष जोर देते हुए समाज से हर प्रकार के भेदभाव को दूर करने का आह्वान किया। कुटुंब प्रबोधन के तहत परिवार को एकजुट रहने, भजन-भोजन और मंदिर दर्शन एक साथ करने की प्रेरणा दी गई। साथ ही स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग को बढ़ावा देने, पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण,जल संरक्षण और सिंगल यूज़ प्लास्टिक के परित्याग पर बल दिया गया। नागरिक शिष्टाचार का पालन कर समाज में अनुशासन और सद्भाव स्थापित करने की अपील भी की गई।मौके पर जिला संयोजक नवीन चौधरी बाबा और जिला सह संयोजक मनोज साह ने बताया कि संघ का यह व्यापक संपर्क अभियान 22 नवंबर से 14 दिसंबर तक चलेगा। इस दौरान हिंदू समाज के बीच संघ की उपलब्धियों और 100 वर्ष की कार्ययात्रा से अवगत कराया जाएगा। अभियान का उद्देश्य समाज को जागरूक करना, सकारात्मक सोच विकसित करना और व्यापक जनभागीदारी सुनिश्चित करना है।कार्यक्रम में जीवछ गुप्ता, मनोज गुप्ता, मुन्ना चौधरी,योगेश पाल, फकीर पंडित, मुनिलाल साह सहित कई स्वयंसेवकों ने सक्रिय भागीदारी निभाई।

गंगा किनारे गंगा समग्र टीम के साथ संघ प्रचारक।

पूर्णिया में जिलाधिकारी ने विकास योजनाओं को लेकर अधिकारियों को दिये दो-टूक निर्देश, हर विंदु पर नजर

पूर्णिया में आयोजित समीक्षा बैठक में न्यायालयीय प्रकरणों से लेकर पंचायत भवनों तक हर बिंदु पर पैनी नजर

पूर्णिया (एसएनबी)। जिला पदाधिकारी अंशुल कुमार की अध्यक्षता में महानंदा सभागार में साप्ताहिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया, जहां विभिन्न विभागीय अधिकारियों के साथ जिले की विकासात्मक और जनकल्याणकारी योजनाओं की वास्तविक प्रगति को कठोरता से परखा गया। बैठक की शुरुआत में डीएम ने पटना मुख्यालय से प्राप्त पत्रों के निष्पादन की अद्यतन स्थिति जानी और स्पष्ट निर्देश दिया कि प्रशासनिक कार्यों में किसी भी प्रकार की ढिलाई स्वीकार्य नहीं है। विभागों से प्राप्त महत्वपूर्ण पत्रों के निस्तारण, प्रखंड स्तरीय आउटडोर खेल मैदानों के निर्माण, लंबित मामलों के निष्पादन और आरटीपीएस सेवाओं की स्थिति को लेकर विभागवार समीक्षा की गई। लोक सेवाओं के अधिकार अधिनियम के क्रियान्वयन पर भी जिलाधिकारी ने गंभीरता प्रदर्शित करते हुए कहा कि जनता को समयबद्ध सेवाएं मिलनी चाहिए और किसी प्रकार की देरी प्रशासनिक जवाबदेही को कमजोर करती है। न्यायालय से संबंधित लंबित मामलों, मानवाधिकार आयोग और राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग से जुड़े प्रकरणों का उल्लेख करते हुए डीएम ने सख्त चेतावनी दी कि इन मामलों का निष्पादन निर्धारित समयसीमा के भीतर हर हाल में सुनिश्चित किया जाए। पूर्णिया एयरपोर्ट से जुड़े बिंदुओं की भी विस्तृत समीक्षा की गई और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। पंचायत सरकार भवन से जुड़े मुद्दों पर जिलाधिकारी ने तीखी नाराजगी जताते हुए कहा कि जो भवन पूर्ण हो चुके है उन्हें तुरंत क्रियाशील बनाया जाए और संबंधित कर्मचारियों की उपस्थिति बायोमेट्रिक से अनिवार्य रूप से दर्ज की जाए। जिला पंचायत राज पदाधिकारी को निर्देश दिया गया कि सभी पंचायत सरकार भवनों की विस्तृत सूची उपलब्ध कराएं जिसमें यह स्पष्ट रूप से दर्ज हो कि कितने भवन सक्रिय है, कितने पूर्ण हो चुके है, कितने निर्माणाधीन है और किन-किन भवनों का निर्माण कार्य लंबित है। जिलाधिकारी ने सभी अनुमंडल पदाधिकारियों को निर्देशित किया कि पंचायत सरकार भवनों की नियमित स्थलीय जांच सुनिश्चित करें ताकि किसी प्रकार की अनियमितता की गुंजाइश न रह जाए।खेल विभाग की समीक्षा के दौरान जिला खेल पदाधिकारी ने बताया कि 11 से 13 दिसंबर 2025 तक राज्य स्तरीय विद्यालय साइकिल खेल प्रतियोगिता आयोजित की जानी है जिसमें लगभग 250 प्रतिभागियों के शामिल होने की संभावना है। इस पर जिलाधिकारी ने खेल विभाग को निर्देशित किया कि प्रतियोगिता के आयोजन में सुरक्षा की .ष्टि से पुख्ता व्यवस्था की जाए और प्रतिभागियों के आवासन की समुचित तैयारी सुनिश्चित की जाए। बैठक में अपर समाहर्ता सीलिंग रामे वर राम, अपर समाहर्ता रवि राकेश, जिला लोक शिकायत निवारण पदाधिकारी जयचंद यादव, गोपनीय प्रभारी राजकुमार गुप्ता सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे, जबकि अनुमंडल व प्रखंड स्तरीय अधिकारी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े रहे।